विरोधकृत् संवत्सर

शास्त्रीयदृक्सिद्ध

श्रीभोजराजपञ्चाङ्ग

प्रधान सम्पादक

प्रो. एम्. चन्द्रशेखर

प्राचार्य

सम्पादक

प्रो.हंसधर झा — आचार्य एवं अध्यक्ष

डॉ.श्यामदेव मिश्र — सहायक आचार्य

सह सम्पादक

पञ्चाङ्गपूर्वपीठिका लेखन

डॉ.अवधेश कुमार श्रोत्रिय — अं.सहायक आचार्य

पञ्चाङ्गगणित साधन

डॉ.नीलमाधव दाश — अं.सहायक आचार्य

विषय समायोजन एवं सचिव

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय — अं.सहायक आचार्य

मुहूर्त्त परिचय लेखन

डॉ. आशीष कुमार चौधरी — अं.सहायक आचार्य

वास्तुशास्त्र विषय समायोजन

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल — अं.सहायक आचार्य

अक्षर संयोजन एवं तकनीकी सहयोग

श्री रोहित पचौरी — (J.R.F.)पञ्चाङ्ग परियोजना

छात्र सम्पादक

(1) प्रतिभा — शिक्षाचार्य

(2) शिल्पी उपाध्याय — आचार्य

(3) सोहन आर्य — शिक्षाशास्त्री

(4) सुहाली जैन — शास्त्री

(5) श्री गणेश सिन्दे — प्राक् शास्त्री

प्रकाशक विवरण

प्रकाशक

© **प्राचार्य**, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल (म.प्र.)

प्रकाशन वर्ष - 2018-2019, अङ्क - अष्ट, ISSN 2277-2030

संख्या - 1000 **मूल्य - 80/-**

प्राप्ति स्थान : विक्रयविभाग, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, संस्कृत मार्ग, बाग सेवनिया, भोपाल - 462043

दूरभाष: 0755-2418043

फैक्स:0755-2418003

ई.मेल: bhojrajpanchang@gmail.com

वेबसाइट - www.rsksbhopal.ac.in

इस पञ्चाङ्ग का निर्माण भारत सरकार के मौसम विज्ञान विभाग के अन्तर्गत कार्यरत कोलकाता स्थित खगोल विज्ञान केन्द्र के गणकाङ्कों पर आधारित है। अतः उनके प्रति परिसर आभार व्यक्त करता है।

पञ्चाङ्ग का परिचय

अक्षांश 23°/16' पलभा 05/09/35 वर्षारम्भ में अयनांश 24°/6'/36''

यह पञ्चाङ्ग भोपाल शहर के कालमान (अक्षांश और रेखांश) के अनुसार निर्मित है। तिथि और नक्षत्र के आगे निर्दिष्ट घटीपल उसके सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है, इसी तरह घटी-पल के आगे निर्दिष्ट घंटा मिनट उसके अन्त काल को दर्शाता है। पञ्चाङ्ग में दिए गए समस्त घंटा मिनट स्टैण्डर्ड मानक समय में ही दिये गये हैं। जनसामान्य इस पञ्चाङ्ग के समय को अपनी घड़ी के अनुरूप मिलाकर समय का उपयोग कर सकते हैं, अर्थात् घड़ी के समय के अनुरूप मानक समय में ही तिथ्यादि के अन्तकाल दर्शाये गये है। पञ्चाङ्ग में तिथ्यादि के जो समय दिये गये हैं, वे सभी रेडियो टाइम के अनुसार समझना चाहिए।

इस पञ्चाङ्ग के गणित और ग्रह गणना का आधार भारतीय मौसम विज्ञान विभाग कोलकाता स्थित खगोल विज्ञान केन्द्र के द्वारा निर्मित भारत मध्यस्थानीय गणांक है।

इस पञ्चाङ्ग में भारत के कुछ शहरों के अक्षांश-रेखांश तथा मध्यप्रदेश के कुछ शहरों के रेखांश, अक्षांश, देशान्तर, पलभा एवं लग्नप्रमाण दिये गये हैं, साथ ही किसी भी स्थान के लिए सूर्योदय और सूर्यास्त साधन हेतु चरसारणी आदि दिया गया है। इसके आधार पर उन प्रदेशों में तिथ्यादि मान जाना जा सकता है। इसमें राश्यादि स्पष्ट दैनिकग्रह, दैनिकलग्नान्तकाल, ग्रहों का राशि प्रवेश, उदयास्त, द्वितीया एवं चतुर्थी तिथि का चन्द्रोदय एवं चन्द्रदर्शन, विवाहादि शुभकर्म हेतु मुहूर्त दिये गये हैं, साथ ही मेलापक,षोडशोपचारपूजनविधि, ग्रहशान्ति,तर्पण तथा अशौचादि आवश्यक विषयों का भी विवरण दिया गया है, जिसके आधार पर विज्ञजन निर्णय लेने में सक्षम होगें।

विशेष - इस पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन के मुहूर्त्त के साथ कुछ उपयोगी ज्योतिषीय विचार व निर्णय दिये गये हैं। जो पूर्णतया शास्त्रानुसार हैं यह पञ्चाङ्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी हो और सरल हो एतदर्थ सभी अपेक्षित प्रयास किये गये हैं फिर भी विद्वज्जनों और सुधी पाठकों से अपेक्षित सुझाव व परामर्श आमन्त्रित है।

सूचना - पञ्चाङ्ग से सम्बन्धित सभी न्यायिक मामले भोपाल न्यायपालिका कार्यक्षेत्र के ही अन्तर्गत होगा।

विषयसूची

क्र.	विषय	पृ.स.	क्र.	विषय	पृ.स.
01	पञ्चाङ्ग का परिचय	01	32	नक्षत्र कष्टावली-यात्रानक्षत्रविचार	50
02	सम्पादक मण्डल की ओर से ...	02	33	स्वप्नविचार	51
03	पञ्चाङ्ग पूर्वपीठिका	04	34	द्वादशभावस्थ ग्रहफलविचार	51
04	धान्यादि का समर्घविचार	08	35	वर्षकुण्डली में ग्रहफल	52
05	द्वादशराशियों घात चक्र	08	36	ग्रहों के दानपदार्थ	52
06	वार्षिक राशिफल	08	37	ग्रहों के शान्तिमन्त्र	52
07	ग्रहणविवरण	11	38	पञ्चसूक्त	52
08	चूडाकर्म	14	39	यज्ञोपवीत धारण विधि	54
09	विद्यारम्भ, उपनयन मुहूर्त्त	14	40	षोडशोपचार-देवपूजनविधि	54
10	विवाह मुहूर्त्त	14	41	तर्पण प्रयोग विधि	56
11	वधूप्रवेश/द्विरागमन	14	42	नवग्रहस्तोत्र	58
12	गृहारम्भ मुहूर्त्त	14	43	श्रीकनकधारास्तोत्र	58
13	नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त	14	44	अंक्षाश-रेखांश सारिणी	59
14	जीर्णोद्धार गृहप्रवेश मुहूर्त्त	14	45	परिसरीय गतिविधियाँ	61
15	सर्वदेवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त	14			
16	ग्रहों का उदयास्त वक्री, मार्गी	15			
17	अभीष्ट स्थान के सूर्योदय साधनविधि	16			
18	अक्षांश से सारिणी द्वारा पलभाज्ञान	16			
19	चरसारिणी	16			
20	क्रान्तिसारिणी	17			
21	वेलान्तरसारिणी	17			
22	भोपाललग्नसारिणी	18			
23	अक्षांश, रेखांश, देशान्तर...	18			
24	**पञ्चाङ्ग तिथ्यादिविवरण 2017-18 स्पष्टग्रह, दैनिकमुहूर्त्त, सिद्धियोगादि**	19-44			
25	विवाह मेलापक विचार	45			
26	विवाह मुहूर्त्त के १० दोषों का विचार	45			
27	शतपदचक्र, ग्रह उच्च-नीच चक्र	47			
28	अष्टविध मेलापकचक्र	47			
29	वरवधूगुणबोधकचक्र	48			
30	ग्रहों की दशा अन्तर्दशा सारिणी	48			
31	चौघड़िया-नष्टवस्तु-अंगस्फुरण आदि	49			

यथा शिखा मयूराणां
नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां
ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्।।

सम्पादक मण्डल की ओर से .....
पञ्चाङ्ग प्रकाशन की अनिवार्यता

प्रो.हंसधर झा
डॉ. श्यामदेव मिश्र

संस्कृत को देववाणी कहते हैं और यह वाणी अमर मानी जाती है। इसको कल्पना या कोई पौराणिक आख्यान के रूप में न देखकर इसके वैज्ञानिक तथ्य को ढूंढने के लिये प्रयास करने की आवश्यकता है। इतिहास का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है, कि विश्व की अनेक नागरिकताएं तथा भाषाएं उसकी गोद में समा गयीं। उनका कोई नमूना भी नहीं बचा है। किन्तु भारतीय सभ्यता अजर और अमर है। विज्ञान को दैनिक जीवन में समाविष्ट रखना ही उस अमरता का महत्त्वपूर्ण कारण है। इस अभियान में उसका पूरा साथ दिया है संस्कृत ने, जो एक भाषा ही नहीं एक विज्ञान भी है, और गम्भीर ज्ञान भी। अब जरूरत है आधुनिक उपलब्ध वैज्ञानिक साधनों से इस बात को सिद्ध करने की। इस महनीय कार्य का एक छोटा सा प्रयत्न आपके समक्ष यह पञ्चाङ्ग प्रस्तुत है।

आयुर्वेद, धनुर्वेद, यन्त्रविज्ञान, पशुविज्ञान, कृषिविज्ञान, वृक्षविज्ञान, अन्तरिक्षविज्ञान - इस प्रकार लिखते जाय तो इनका कोई अन्त नहीं है। ये सभी संस्कृतवाणी में समाहित हैं। महाभारत में ठीक ही कहा गया है **"यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।"** "जो यहाँ पर है, वह सर्वत्र है, और जो यहाँ नहीं है वह कहीं भी नहीं है।" त्योहारों के नाम से, व्रतों के नाम से और पर्वों के नाम से हम पांच महाभूतों की सदैव रक्षा करके पर्यावरण, प्रकृति एवं प्रत्येक व्यक्ति की रक्षा करने का सतत प्रयास करते हैं। हमारा नारा है "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।" वैज्ञानिक ही नहीं हमारा मनोवैज्ञानिक पक्ष भी हमेशा दृढ रहा है। यही प्रबल कारण था संस्कृत को अमरवेल बनाने में।

धीरे-धीरे आज हम उस वैज्ञानिक जीवनशैली से दूर होते हुए नजर आ रहे हैं। अब वह समय आ गया है, जिसमें संस्कृत की वैज्ञानिकता का रागालापन करने के साथ-साथ विकसित आधुनिक विज्ञान की सहायता से इसकी वैज्ञानिकता सिद्ध करें। हम सब जानते हैं कि संस्कृत में विज्ञान निहित है, किन्तु प्रत्यक्षप्रमाण को ही मानने वाली आज की पीढ़ी को यदि इस वैज्ञानिकता का लाभ लेना है, तो इसे सिद्ध करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इसका लाभ न लेने की स्थिति में जीवन यापन करना कठिनतम हो जायेगा, यह भी सत्य है। अतः आवश्यकता है, इसके वैज्ञानिकस्वरूप को उजागर करने की।

भोजराज पञ्चाङ्गः का सप्ताङ्ग

वेदेषु विद्यासु च ये प्रदिष्टाः धर्मादयः कालविशेषतोऽर्थाः।
ते सिद्धिमायान्त्यखिलाश्च येन तद्वेदनेत्रं जयतीह लोके।।(आर्ष्टिसेनिः)

कालविशेष से वेदों में और विद्याओं में जो धर्मादि उपदिष्ट हैं, उनकी सिद्धि जिस वेदनेत्ररूपी ज्योतिष से होती है, वह लोक में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करता है।

लगभग १००० वर्ष पहले राजा भोज ने भोपाल शहर का निर्माण किया था। राजा भोज मध्यकालीन भारत के महान् विभूतियों में से एक हैं। संस्कृत के विद्वानों के भरण पोषण एवं प्रोत्साहन में सदैव तत्पर राजा भोज महान् वास्तुविद् और ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ भी थे। साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि अनेक शास्त्रों में इन्होनें ८४ से अधिक ग्रन्थ लिखे हैं, जो प्रायः सभी प्रसिद्ध हैं। उस महान् ज्योतिर्विद् के स्मरण में उसी की महानगरी से प्रकाशित होने वाले इस पञ्चाङ्ग का नाम भोजराज पञ्चाङ्ग किया गया है।

यह पञ्चाङ्ग भोपाल को मुख्य मानकर बनाया गया है। तिथ्यादि का मान मानक (स्टैण्डर्ड टाइम) समय के अनुसार लिखा गया है, तथा तिथि एवं नक्षत्र का घटत्यादि मान भी दिया गया है। विषयावबोध की दृष्टि से विद्वानों के द्वारा लिखे गये पञ्चाङ्ग से सम्बन्धित विभिन्न शोधलेख भी इस अङ्क में समाविष्ट किये गये हैं, जो निश्चय ही जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी होगें। इस पञ्चाङ्ग के निर्माण का उद्देश्य आम जनता तक इसे पहुंचना है। अतः इसमें अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है, और प्रायः सभी अंगों के नामों को पूरा लिखा गया है। इस पञ्चाङ्ग में अपेक्षित सुधार से सम्बन्धित सभी सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

राजा भोज संस्कृत के महान् विद्वान् और पोषक थे। उन्होंने सन् १०१० के आसपास अनेक प्रकार के सांस्कृतिक एवं शैक्षिक प्रतिष्ठानों की स्थापना की। इनके अनेक ग्रन्थ आज भी प्रचलन में हैं। उनके द्वारा निर्मित समरांगणसूत्रधार वास्तुशास्त्र का एक महान् ग्रन्थ है। राजा भोज के बारे में जितना भी लिखा जाय वह कम ही होगा। पञ्चाङ्ग के प्रथम अंक में राजा भोज का विस्तृत परिचय एवं संस्कृत एवं संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान के सम्बन्ध में विस्तृत विचार प्रस्तुत किया गया है। यह उस पञ्चाङ्ग परम्परा का षष्ठ वर्ष है।

पञ्चाङ्ग की प्रासंगिकता

भारतीय परम्परा में पञ्चाङ्ग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में भी प्रायः अधिकतम भारतवासी प्रतिदिन किसी न किसी कार्यवश पञ्चाङ्ग के सम्पर्क में आते हैं। पञ्चाङ्गस्थ जानकारी का अनुसरण जनता आँख मूँदकर करती है। ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता पूर्णतः पञ्चाङ्ग में सन्निहित है।

इतिहास का अवलोकन करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि संस्कृत भाषा का प्रचलन शास्त्रीय प्रचलन में ही रहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक संस्कृत भाषा परम्परागतरूप से अविच्छिन्न रूपेण विद्यमान है। विश्व की अनेक संस्कृति और भाषाएँ व्यवहार के अभाव में लुप्त हो गयीं। किन्तु भारतीय संस्कृति और संस्कृत लोक में व्यवहृत रहने के कारण अविच्छिन्न विद्यमान है। इसका प्रबल कारण इसकी वैज्ञानिक संरचना ही है।

पञ्चाङ्ग इस वैज्ञानिक संरचना का एक मुख्य उदाहरण है। उपवास, व्रत, पर्व, शुभकार्य, मेलापक आदि अनेक वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्य इससे सम्बद्ध हैं। दिन प्रतिदिन व्यवसायीकरण बढ़ने से एवं अध्ययन अध्यापनादि का प्रचलन कम होने से आज के विकसित विज्ञान के आधार पर अनुसन्धान न कर पाने के कारण अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न होती दिख रही हैं।

इन्हीं विसङ्गतियों के कारण पञ्चाङ्गों में भी वैमत्य दिख रहे हैं। इन वैमत्यों के कारण आम जनता भ्रमावस्था में पड़ जाती है। इतना ही नहीं ग्रहण जैसे अनेक वैज्ञानिक दृग्विषय अब सत्य से दूर होते हुए नजर आ रहे हैं। भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री के द्वारा सराहनीय प्रयास के बावजूद पञ्चाङ्गो में एकरूपता नहीं हो पायी है। इतना ही नहीं आज पर्व, त्यौहारों का कोई वैज्ञानिक अध्ययन भी नहीं हो पा रहा है।

दीपावली, संक्रान्ति, दशहरा, गणेशचतुर्थी आदि सभी त्यौहारों का अपना वैज्ञानिक पक्ष है। इन वैज्ञानिक पक्षों का अनुसरण सभी प्रकार के संक्रामक रोगों के निवारण में पूर्ण मददगार स्थापित हो सकता है। कृषि क्षेत्र में आज उत्पन्न होने वाली प्रायः बहुत सारी समस्याओं का कारण है, प्राचीन वैज्ञानिक नियमों का पालन नहीं करना। पञ्चाङ्ग के अनेक पक्ष कृषि क्षेत्र को ध्यान में रखते हुये बनाये जाते है, किन्तु उनका प्रचार-प्रसार एवं अनुसरण कितना होता है, यह हम सभी जानते है।

अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सस्यों में कीटप्रकोप, वायु में विकार आदि की पूर्वसूचना ज्योतिष के इस अभिन्न अंग के द्वारा दी जाती है, किन्तु आज ये विचार केवल छापने तक सीमित रह गये है। इस अनुसन्धान का प्रमुख लक्ष्य है, आधुनिक विज्ञान की सहायता से प्राचीन विधाओं का अध्ययन करके उनको आज के परिप्रेक्ष्य में लोकोपयोगी बनाना। साथ ही यह भी लक्ष्य है, कि निकोलस कोपर्णिकस से लेकर २०वीं सदी के जीन्स जैसे महान् वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट आविष्कार का भारतीय विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में और भारतीय विज्ञान का आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अनुसन्धान करके परम्परागत पञ्चाङ्ग निर्माण विधा को पूर्ण रूप से वैज्ञानिक सिद्ध करना। इस तरह पञ्चाङ्ग के प्रति लोगों के हृदय में विश्वास पैदा करना तथा जनसामान्य के लिये इसे अत्यन्त उपयोगी बनाना, इस अनुसन्धान का मुख्य उद्देश्य है।

उद्देश्य - अधिकतम भारतीयों के लिये पञ्चाङ्ग एक आवश्यक एवं अनिवार्य उपकरण है। आज भारत में विभिन्न भाषाओं में १०० से ज्यादा पञ्चाङ्ग मुद्रित हो रहे है, किन्तु मध्ययुग से आज तक पञ्चाङ्गों में अनेकों वैमत्य चले आ रहे है। वस्तुतः पञ्चाङ्ग निर्माण की साम्प्रतिक विधाओं ने आधुनिक विज्ञान के प्रादुर्भाव से पहले ही जन्म ले लिया था। इस पञ्चाङ्ग निर्माण के अन्तर्गत अनेक वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन आज तक आधुनिक विज्ञान के आधार पर नही हो पाया है, जो कि आवश्यक है।

प्राचीन मौसम विज्ञान के आधार पर अनेक सूचनायें पञ्चाङ्ग में दी जाती हैं। वे सूचनायें कृषिक्षेत्र से लेकर अनेक प्रकार के कार्यों में उपयोगी हो सकती हैं। यात्रा सम्बन्धी सूचनायें अत्यन्त वैज्ञानिक हैं। विवाहादि के मुहूर्त और मेलापक आदि अनेक विषय वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्ट्या महत्त्वपूर्ण हैं। इन सभी सूचनाओं का पालन व आचरण अनेक प्रकार की समस्याओं को दूर करने वाला होता है।

बढ़ते हुये वैज्ञानिक उपकरणों के प्रचलन ने प्राचीन विज्ञान के प्रति उदासीनता को बढ़ाया है। प्राचीन विज्ञान के प्रति अनुकूल अवधारणा के अभाव में इसका अध्ययन आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नही हो रहा है। फलतः प्राचीन मान्यताओं का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। सामाजिक मान्यताओं की आवश्यकता के बारे में अलग से कहने की जरूरत नहीं है। वे सुस्थिर एवं समृद्ध जीवन निर्माण के आधार स्तम्भ हैं।

अतः यह समय प्राचीन विज्ञान का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने के लिये अत्यन्त प्रासंगिक है। विज्ञान के दिन-प्रतिदिन हो रहे विकास को इस समय में प्राचीन एवं आधुनिक विज्ञानों का संगम व अनुसन्धान अवश्य ही एक उत्तम व्यवस्था को प्रदान करने में सक्षम होगा।

व्रत पर्व एकादशी आदि का निर्णय - इस पञ्चाङ्ग में व्रतादि का निर्णय पूर्णरूप से शास्त्र एवं परम्परा के अनुरूप दिया गया है। एकादशी, गणेशचतुर्थी, संकष्टहरचतुर्थी, बुधाष्टमी आदि पर्वों के पालन में शास्त्रमर्यादा के अनुरूप पालन हो, साथ ही परम्परा का भी विरोध न हो, इसका ध्यान रखते हुये धर्मशास्त्रसम्मत निर्णीत विषय को प्रस्तुत किया गया है।

आधुनिकविज्ञान पर पूर्णविश्वास रखने वाले आज के पाठकगण व्रतादि में अन्तर्निहित वैज्ञानिक तथ्यों का भी आकलन करने का प्रयास करेगें। आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण से व्रत त्यौहार आदि के पूर्ण ढांचे का अवलोकन किया जाय, तो अवश्य ही इन प्राचीन परम्पराओं में छिपी हुई वैज्ञानिकता का अनुभव किया जा सकता है। अतः पाठकगण उक्त मार्ग में भी प्रयास करेगें जिससे व्रतादि पालन का अधिकाधिक फल प्राप्त होगा।

सोऽनुष्ठीयो भवेद्धर्मो यो लोके श्रुतिसम्मतः। शास्त्रशिष्टविरुद्धस्तु धर्मस्त्याज्यः सदा बुधैः।।

-ज्योतिषरत्नमाला, सीतारामझा

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।ज्ञात्वा शास्त्रविधानं हि कर्म कर्तुमिहार्हसि।।

- भगवद्गीता

आकाशस्थ सूर्यादि ग्रहनक्षत्रों की गति, स्थिति एवं उनके द्वारा प्राणी मात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचन कर शुभाशुभ का बोध कराने वाला शास्त्र ज्योतिषशास्त्र है। हमारे प्राचीन मनीषी ऋषि-मुनियों की स्पष्ट मान्यता रही है, कि प्राणी मात्र के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का सम्बन्ध ग्रहनक्षत्रादि की गति स्थित्यादि से है। हमारे ऋषि-मुनियों ने आकाश में स्थित ग्रह-नक्षत्रों की गति स्थित्यादि के साथ ग्रहण, धूमकेतु, उल्कापात इत्यादि आश्चर्यजनक घटनाओं का भी दीर्घकाल तक सतत अनुसंधान किया है। उसी के फलस्वरूप प्राणी के जीवन पर विशेषत: मानव जीवन पर उसके द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करते हुए, भारतीय ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। ज्योतिष शास्त्र का मुख्य उद्देश्य है, मानव जीवन एवं समाज में आने वाले सुख-दु:खादि का पूर्वानुमान करके उन्हें अपने कर्तव्यों द्वारा अनुकूल बनाने के लिये प्रेरित करना। अत एव भास्कराचार्य द्वितीय ने भी कहा है कि- **ज्योतिश्शास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।।** त्रिस्कन्ध ज्योतिष शास्त्र के संहिता स्कन्ध में समष्टिगत अर्थात् सामूहिक रूप से किसी समाज, स्थान, निवासियों अथवा देश का शुभाशुभ फल विवेचित होता है। इसी समष्टिगत फल का विवेचन पञ्चाङ्गपत्रक में आकाशीय मंत्रिपरिषद् (नृपादि फल), संवत्सर फल, समर्घ-मर्ह्घ (महंगाई) विवेचन, वृष्टि विवेचन इत्यादि के रूप मे दिया जा रहा है, जो मानव समाज के लिये भावी शुभाशुभ को जानकर तदनुसार कर्तव्य सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

पञ्चाङ्ग का स्वरूप एवं आवश्यकता -

मानव जीवन के लिए यह एक प्रमुख उपकरण है "समय"। जिसे हम काल भी कहते हैं। यह काल कब उत्पन्न हुआ और कब तक चलेगा यह कोई नहीं कह सकता है। इसीलिये विद्वान लोग इसे अनादि और अनन्त कहते हैं। जैसे आचार्य आर्यभट ने कहा है - **अनादिरनन्तोऽयं काल: ग्रहभैरनुमीयते क्षेत्रे**(आर्यभटीयम्) प्राणियों को काल ही उत्पन्न करता है, और काल ही उन्हें अपने में समा भी लेता है। विष्णुपुराण के अनुसार काल विष्णु का स्वरूप ही है। अर्थात् इस अनादि और अनन्त काल की इयत्ता के बारे में हम न जान सकते हैं न सोच सकते है, केवल हम उसकी आराधना ही कर सकते हैं। यही काल का कलनात्मक स्वरूप है। अर्थात् इस काल का हम अनुमान लगा सकते हैं, ग्रह-नक्षत्र और राशियों के आधार पर। इसी गणना से प्राप्त काल के विभिन्नांगों को जहां हम सुरक्षित करते हैं, उसे पञ्चाङ्ग के रूप में प्रतिपादित किया जा सकता हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण इन पाँच अङ्गों का समाहार ही पञ्चाङ्ग है। ये पाँच अङ्ग स्पष्ट ग्रहों से सिद्ध होते हैं। इन पाँच अङ्गों के समाहार से उत्पन्न काल का स्वरूप एवं प्रभाव अनेकधा विश्लेषित किया जाता है। उन प्रभावों के मद्दे नजर इन पाँचों के आनुषांगिक रूप में अन्य विषय भी पञ्चाङ्ग के नाम से एकत्रित कर सुरक्षित एक स्टोरेज डिवाइज के रूप में किया जाता है।

पञ्चाङ्ग के सामान्य भाग

पञ्चाङ्ग में विविधविधियों का समाहार होता है। जिसमें राजादिवर्णन, व्यक्तिगत एवं समष्टिगतफल, मुहूर्तादिवर्णन, मुहूर्तनिर्णय स्नान-दान आदि धर्मशास्त्रोक्त विषयों का निर्देश, चैत्रादि १२ मासों के २४ पक्षों का तिथ्यादिमान, सूर्योदय–सूर्यास्त, दिनमान, सूर्यादि ग्रहों का दैनिकमान, लग्नान्तकाल, तिथिनिर्णय, व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करने वाले अनेक अंशो का विवरण एवं मार्गदर्शन प्रस्तुत किया जाता है, जो परम्परा में आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में मददगार साबित होता है। इसी प्रकार विवाहमेलापक कैसे करना है, मांगलिक दोष क्या होता है और उसका परिहार कैसे होगा, रत्न पहनें तो क्या पहनें, अशौच का निर्णय कैसे होगा, शिशुजन्म लिया है तो शान्ति करनी पड़ेगी क्या, जन्मलिये बच्चे का क्या नाम रखेंगे, यात्रा किस दिन करें आदि अनेक विषयों का उल्लेख किया जाता है।

आवश्यकता - भारतीय संस्कृति का मूल वेद है। वेद यज्ञाचरण का निर्देश देता है। यज्ञ कालाश्रित होते हैं। अर्थात् यज्ञों के निर्वहण के लिए समय का प्रतिबन्ध है। समय का ज्ञान ज्योतिष से ही होता है।

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता: यज्ञा: प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात्कालबोधो यत: स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।।

जो लोग ज्योतिष जानते हैं, वे ही यज्ञ को विश्लेषित कर सकते हैं। इसका तात्पर्य इतना ही है कि यज्ञानुष्ठान हेतु ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य रूप से होना चाहिए है। यथा -

वेदेषु विद्यासु च ये प्रदिष्टा: कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञा:।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्।।

(ज्योतिर्निबन्ध, पृ.सं - ०१)

वेदोक्त कार्यों के सुचारुनिर्वहण का दायित्व स्मृति पर है। स्मृति अर्थात् धर्मशास्त्र ब्राह्म, दैव एवं अन्य संस्कारों का पालन करने में मार्गदर्शन कराता है। ये सभी कार्य उपयुक्त काल में ही किये जाते हैं। श्रुति जिन कार्यों का निर्देश करता है उसे श्रौत कार्य तथा स्मृति विहित कार्यों को स्मार्त कर्म के नाम से व्यवहार प्राप्त होता है। इस सन्दर्भ में महर्षि नारद का कथन है कि ज्योतिष के बिना श्रौत एवं स्मार्त कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती। जैसे -

विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म न सिद्ध्यति ।तस्माज्जगद्धितायेदं रचितं ब्रह्मणा पुरा।।

(नारदसंहिता)

काल के सन्दर्भ में अनेक ऋषि वचन उपलब्ध होते हैं। समय पूर्ण रूप से निर्दोष नहीं रहता है। इन्हीं कारणों को लक्ष्य करके कहा जा सकता है, कि विहितकाल में एक आहुति भी कामना सिद्धि के लिये पर्याप्त होती है तथा निषिद्धकाल में करोड़ो आहुतियां भी किसी काम की नहीं होती हैं।

गणितात् सिद्ध्यते काल: काले तिष्ठन्ति देवता:। वरमेकाहुति: काले नाकाले कोटिसंमित:।।
अतीतानागते काले दानहोमजपादिकम् ।ऊषरे वापितं बीजं तद्वद्भवति निष्फलम्।।

(चतुर्विंशतिमते, ज्योतिर्निबन्ध, पृ. ०२)

इससे यह स्पष्ट हो जाता है, कि विहितकाल में कार्य करना चाहिये निषिद्धकाल में नहीं। उचितकाल, अनुचितकाल का निर्णय धर्मशास्त्रकारों द्वारा किया जा चुका है, जो अनादि काल से प्रचलित है। उचितानुचित का निर्णय करने के लिये काल के विभिन्नांगों का साधन करना अनिवार्य होता है। साधित अंगों का विश्लेषण और उनके आधार पर भिन्न-भिन्न कार्यों के लिये उचित समय का निर्णय किया जाता है।

इस प्रकार साधित काल एवं उचितानुचित समय का निर्णय व निर्देश एकत्रित करके उपलब्ध कराया जाता है। परम्परा का पालन करने के लिये उपलब्ध साधन ही पञ्चाङ्ग है जो अनादिकाल से प्रचलित है, और आज भी उतना ही महत्त्व रखता है, जितना वैदिक काल में था।

वर्तमान में विभिन्न पञ्चाङ्ग - महामहोपाध्याय बापूदेवशास्त्री जी ज्योतिष, प्राचीन गणित एवं पाश्चात्य गणित के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनके द्वारा उन्नीसवीं सदी के मध्यकाल में एक नयी प्रथा प्रारम्भ की गयी। जन मानस में उनके द्वारा प्रवर्तित पञ्चाङ्ग बहुत प्रचलित हो गया। सम्भवत: तब से पञ्चाङ्ग रचना की दो मुख्य धारायें बहने लगीं। वस्तुत: विषय का अवलोकन गम्भीरता से करने पर इस अन्तर का ज्ञान निष्पन्न हो जाता है, साथ ही यह भी सिद्ध हो जाता है, कि वास्तव में ये दो धारा नही है, बल्कि शास्त्रीय पद्धति ही है।

बापूदेव शास्त्री जी के द्वारा सम्पादित दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग का प्रथम संस्करण विक्रम संवत् १९३३ में अर्थात् सन् १८७६ में प्रकाशित हुआ था। जिसका सम्पादन काशीराज ईश्वरीनारायण सिंहजी की अनुमति से हुआ। इस सन्दर्भ में १९३३ विक्रम संवत् के ज्येष्ठ शुक्ल नवमी के दिन काशी में एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें श्री शास्त्री जी नें १५-१६ पृष्ठों का अपना उपपादन पढ़ के सुनाया। इस सन्दर्भ में श्री शास्त्रीजी ने प्रमाण के रूप में वसिष्ठ संहिता का निम्नोक्त वचन प्रस्तुत किया। **यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम् ।दृश्यते येन पक्षेण कुर्यात् तिथ्यादिनिर्णयम्।।** (वसिष्ठसंहिता) इसका अर्थ इस प्रकार है। जिस किसी के मत में, जिस काल में, जिस गणित से दृष्टि और गणित इनका ऐक्य दिखाई पड़े, उसी मत से तिथि आदि के काल का निर्णय करना चाहिए। **काशी की पण्डित परम्परा, श्री बापूदेव शास्त्री, पृ. १९६**

स्पष्ट है कि श्री शास्त्री जी द्वारा इस नये सम्पादन के बाद भारत के पञ्चाङ्गकार प्राचीन भेदों को भूलकर दो नये भागों में बट गये हैं। इस मतान्तर के कारण आज जनता के सामने दो प्रकार के पञ्चाङ्ग उपस्थित हैं, जहाँ तिथ्यादि मानों में स्पष्ट अन्तर देखने को मिलता है। जो वसिष्ठसंहिता का वचन यहाँ दिया गया है, उसी के अनुरूप प्रत्येक सिद्धान्त ग्रन्थ में वचन उपलब्ध है जिनका समावेश इस पत्र में किया गया है। बापूदेव शास्त्रीजी के ही समय के विद्वान है, श्री वेङ्कटेश बापूकेतकर। केतकर महोदय की अनेक कृतियाँ हैं, जो बाद के पञ्चाङ्गकारों को अनेक प्रकार से प्रभावित किया है। श्री शास्त्रीजी नें ज्योतिर्गणितम् नामक ग्रन्थ का निर्माण किया जो दृग्गणितावलम्बियों के लिये आज भी एक आधार बना हुआ है। आचार्य केतकर जी के द्वारा रचित केतकी ग्रहगणित भी उतना ही प्रचलन में रहा है। विगत सौ वर्षों में इस ग्रन्थ का प्रभाव इतना रहा है कि परम्परागत विधि-विधान का पालन करने वाले भी कालान्तर में श्री शास्त्रीजी के कृतियों का पालन करने लगे। आज के समय में श्री शास्त्रीजी के द्वारा प्रचलित चित्रापक्षीय अयनांश का ही प्रचलन सर्वत्र दिखाई पड़ता है। श्री शास्त्रीजी के विधानों का अनुपालन स्वत: प्रमाण है, पञ्चाङ्ग सुधार समिति को पञ्चाङ्ग कर्ताओं के द्वारा समर्पित विवरण। आचार्य के द्वारा जो पञ्चाङ्ग बनाया गया उसे दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग कहा गया था। इसमें आचार्य ने पाश्चात्य गणित की यथा सम्भव मदद ली है। उसी समय में बीजापुर के गणिताध्यापक पण्डित वेङ्कटेश बापू केतकर के द्वारा दो ग्रन्थों की रचना की गयी। अपने ज्योतिर्गणितम् नामक ग्रन्थ में आचार्य केतकर के द्वारा पाश्चात्य गणितज्ञों के गणित तालिकाओं (लघुरिक्थ तालिका) के आधार पर ग्रह, ग्रहण आदि का साधन वर्णित किया गया। बापूदेव शास्त्री जी के बाद केतकर की ये तालिकायें प्रसिद्ध हुई और उनका अनुपालन व्यवहार में आया। जिन आचार्यों नें बापूदेव शास्त्री जी व केतकर महोदय का अनुसरण न करते हुये प्राचीन पद्धति से ही पञ्चाङ्ग का प्रकाशन किया है लोग उनके पञ्चाङ्गों को ही परम्परागत पञ्चाङ्ग के रूप में स्वीकार करने लगे। तब से भारत वर्ष में दृक्सिद्ध तथा परम्परागत के नाम से दो प्रथायें प्रचलन में आ गई।

वास्तविक भेद - वास्तविकता को समझने के लिये शास्त्र के कुछ आधार भूत सिद्धान्तों को जानना अत्यन्त आवश्यक होता है। जन सामान्य में इन सिद्धान्तों का प्रचलन न होने के

कारण यह भ्रम फैला हुआ है, कि ये दोनों पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। पाश्चात्य पद्धति के प्रवेश से फैला यह भ्रम विषय के अध्ययन के अभाव में विस्तार रूप को प्राप्त कर गया।

गणित के आधार पर ग्रहों का साधन होता है। इन ग्रहों का मेलन दृगुपलब्ध ग्रहों से किया जाता है। यदि दोनों बराबर है, तो उन ग्रहों को स्पष्टग्रह मानते है। यदि अन्तर है, तो इनमें अन्तर का संस्कार करके ग्रह को दृक्तुल्य बनाया जाता है। इसी अन्तर को हम फल कहते हैं, तथा फल से संस्कृत ग्रह को स्पष्ट ग्रह कहा जाता हैं। इन स्पष्ट ग्रहों द्वारा उपलब्ध तिथ्यादि मान से ही पर्व व्रत आदि का पालन करना चाहिये। जैसे भास्कराचार्य कहते हैं -

यात्रा विवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।

(सिद्धान्तशिरोमणि)

इस आचार्यवचन में स्पष्टग्रह की आवश्यकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। साथ हीस्पष्ट ग्रह का लक्षण भी वर्णित है। स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या। दृगुपलब्ध ग्रह एवं गणितागत ग्रह दोनों जिस प्रक्रिया से बराबर तुल्य अथवा एक होते हैं, उसी प्रक्रिया को ग्रहस्पष्टीकरण कहते हैं। यही वचन प्रायः सभी सिद्धान्तग्रन्थों में प्राप्त होता है। जैसे -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः। प्रयान्ति तत् प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्।।

(सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लो१४)

यस्मान्न मध्यतुल्यं प्रतिदिवसं दृश्यते ग्रहो भगणे।तस्माद् दृक्तुल्यकरं वक्ष्ये मध्यस्फुटीकरणम्।।

(ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लो -०१)

आचार्योक्त ग्रन्थारम्भप्रयोजन भी समय-समय पर सिद्धान्तों में आवश्यक बीज संस्कार करने की बात अन्य आचार्यों की बात को पुष्ट करती है। जैसे -

ब्राह्मोक्तं ग्रहगणितं महता कालेन यत् श्लथीभूतम्। अभिधीयते स्फुटं तज्जिष्णुसुतब्रह्मगुप्तेन।।

(ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लो - २)

पञ्चाङ्ग सुधार समिति के प्रयास

इस समस्या का समाधान निकालने के लिये स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं.जवहरलाल नेहरु के द्वारा एक पञ्चाङ्ग सुधार समिति का गठन सन् १९५२ में किया गया। जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन CSIR के अध्यक्ष आचार्य मेघनाथ सहाय ने की थी। इस समिति ने सन् १९९५ में अपने विचार प्रगट किये तथा एफेमेरीज और नाटीकल-अल्मनाक बनाने का सुझाव प्रस्तुत किया। फलस्वरूप भारत मौसम विज्ञान विभाग ने सन् १९५८ से राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग का प्रकाशन प्रारम्भ किया। वर्तमान में इस कार्य को स्वतन्त्र प्रतिपत्ति से युक्त Positional Astronomy Centre करने लगा।

इस समिति ने अनेक प्रस्तावों को पारित किया एवं भारत सर्वकार से इस सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश पञ्चाङ्गकारों को देने के लिए कहा गया है। इन सुझावों को बहुत से लोगों ने स्वीकार किया तो बहुत से लोग इसका विरोध भी किये। उस समिति के पास कुल ६० पञ्चाङ्गकर्ता अपने पञ्चाङ्ग भेजें। बाद में समिति के द्वारा सुधार हेतु सुझाव मांगने पर केवल ४८ लोग अपने सुझाव भेजें। यह समिति मुख्यरूप से १३ सुझाव सर्वकार के समक्ष प्रस्तुत की थी। इस समिति में डा.के.एल दफ्तरि एवं डा.गोरखप्रसाद भी थे, जो स्वयं पञ्चाङ्गकर्ता भी थे, किन्तु इन तमाम प्रयासों के बावजूद भी यह समस्या किसी समाधान की ओर नहीं पहुँच पायी थी।

ग्रहसाधन वेधप्रक्रिया की निरन्तरता को अनिवार्यतः अपेक्षा करता है, जो आज के समय में न के बराबर है। ग्रहों का साधन सिद्धान्तोक्त विधान से बनाने चाहिये और उनको दृक्तुल्य भी बनाना चाहिये। आज यह बात स्पष्ट है, कि प्राचीन सिद्धान्तों से बने ग्रह कुछ शिथिलता को प्राप्त कर रहे है। यही कारण है कि ग्रहलाघवकार को ग्रहलाघव ग्रन्थ बनाने की आवश्यकता पड़ी। कालक्रम में उत्पन्न होने वाली शिथिलता को दूर करने की बात प्रायः हरेक सिद्धान्तकार प्रस्तुत किये थे। अतः दृक्तुल्य ग्रहों का साधन करना ही इस समस्या का समाधान है। दूसरी विकट समस्या है, अयनांश की। इस समस्या का भी निदान वराहमिहिर आदि प्राचीन आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर साधित अयनांश को अपना कर एक प्रयास किया जा सकता है।

आकाश का अवगमन एवं आकाशस्थ पिण्डों का वेध आदि प्रक्रिया प्रारम्भ कर तदनुसार स्वकीय ग्रहगणित को प्रामाणिक बनाना चाहिये, क्योंकि प्रत्यक्ष होने के कारण वाद-विवाद का अवसर ही नहीं मिलेगा। एक बार गवेषणा की प्रथा के अनुरूप सिद्ध करके तदनुरूप संस्कार परम्परागत विधिविधानों में करना ही एक मात्र विकल्प है। इस सन्दर्भ में प्रमाणों की कमी नही है। नलिकादियन्त्रों के आधार पर ग्रहों के वेध करके बीजसंस्कार करने का सुझाव प्रायः सभी आचार्यों ने प्रस्तुत किया है।

ज्योतिष में वेध एक अनिवार्यपरम्परा है। स्पष्टग्रह के लक्षण यदि सम्यग - समझते है, तो साथ ही इतना भी समझ में आ जाता है कि वेध के अभाव में ग्रहस्पष्टीकरण करना सम्भव नहीं है। इससे यह बात भी पुष्ट हो जाती है, कि आज के विसंगतियों का प्रधान कारण वेधपरम्परा का छूटना ही है। विभिन्न स्रोतों से ग्रह प्राप्त किये जाते है। साथ ही परम्परागत ग्रहों का भी साधन किया जाय और दोनों का वेध के द्वारा पुष्टि कर परम्परागत ग्रहों में अपेक्षित संस्कार किया जाय। उसी परम्परा को आगे ले जाने के उद्देश्य से श्रीभोजराजपञ्चाङ्ग का प्रारम्भ किया गया। इस महनीय पञ्चाङ्ग कार्य में **डॉ.पी.वी.बी.सुब्रमण्यम, प्रो.वासुदेवशर्मा, डॉ. अशोक थपलियाल** आदि मनीषियों का भी महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। एतदर्थ सम्पादकमण्डल इनके प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करता है।

पञ्चाङ्गपूर्वपीठिका

कलिगताब्द	: 5119	ख्रिस्त सन्	: 2018 - 2019
फसली	: 1425 - 26	शालिवाहन शक	: 1940
हिजरी	: 1439 - 40	विक्रम संवत्	: 2075
सप्तर्षिसंवत्	: 5094	श्री महावीरजैननिर्वाण संवत्	: 2543-2544
श्री बुद्धसंवत्	: 2641-42	भारतीय गणराज्यवर्ष	: 68 - 69

वर्षादिकृत्य

अब्दादौ प्रातरुत्थाय दन्तधावनपूर्वकम्। स्नानं सन्ध्याविधिं कृत्वा वर्णाचारक्रमेण तु।।
अब्दादौ मित्रसंयुक्तो मङ्गलस्नानमाचरेत्। वस्त्रैराभरणैर्देहमलङ्कृत्य ततश्शुचिः।।
अब्दादौ ग्रहपूजाञ्च पूजाञ्च चिरजीविनाम्। मृष्टान्नेन द्विजान् बन्धून् पितॄन् सन्तर्पयेत्ततः।।

वर्षारम्भ के दिन प्रातःकाल में दन्तधावनादि कार्योपरान्त मंगलस्नान करके सन्ध्यादि कृत्य पूरा करने के बाद नववस्त्र धारण करके ग्रहादि का पूजन करना चाहिए। साथ ही बन्धुजन, ब्राह्मण और पितरों को मिष्ठान्नादि से सन्तृप्त करना चाहिए।

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणम्। स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम्।। देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवाऽलङ्कारवस्त्रादिभिः।सम्पूज्यो गणकः फलञ्च श्रुणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्।। परिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः। सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।। मरीचिर्लवणं हिंगुजीरकेण च संयुतम्।
अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये।। यद् वर्षादौ निम्बसुमं शर्करामलघृतैर्युतम्। भक्षितं पूर्वयामे स्यात् तद्वर्षं सौख्यदायकम्।।

संवत्सरादि फलश्रवण का माहात्म्य

राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलम्। धान्येशाद् कमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात्।। धर्मे बुद्धिरधिष्ठिता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत्। सस्येशाद् विमला मतिः शुभकरी वर्षावली श्रूयताम्।। अर्थात् वर्षारम्भ में संवत्सर के राजा का फल सुनने से राज्य स्थिर होता है। मन्त्री का फल सुनने से कुशलता बढती है। धान्येश का फलश्रवण से लक्ष्मी स्थिर होती है, मेघाधिपति के फल श्रवण से वाणी रम्य होती है। रसपति के फलश्रवण से धार्मिक बुद्धि होती है, एवं सस्येश के फलश्रवण से दीर्घायु मिलती है। अतः शुभ एवं कल्याणकारी वत्सरावली का श्रवण करना चाहिये।

संवत्सरादि फलश्रवणविधि

उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा दैवज्ञस्य तु सन्निधौ । विघ्नेशं भारतीं खेटान् दैवज्ञं ब्राह्मणान् गुरून्।। सम्पूज्य वत्सरफलं साङ्गोपाङ्गं यथाक्रमम्। विकासवदनो भूत्वा ब्रह्मणो जन्मतः फलम्।। अब्दाधीशचमूनाथसस्यपानां बलाबले। तत्कालग्रहचारांश्च सम्यक् ज्ञात्वा फलं लभेत्।। अर्थात् दैवज्ञ के समीप में पूर्वमुख वा उत्तरमुख होकर गणेश, सरस्वती, नवग्रह, गुरु, ब्राह्मण आदि का पूजन करके सांगोपांग वर्ष का फल सुनना चाहिए।

ब्रह्मायुर्निरूपणम् - श्रीमद्भगवतो विष्णोः नाभिकमलोद्भवस्य ब्रह्मणो ब्राह्ममानेन परमायुः १०० वर्षाणि। ३११०४०००००००००सौरवर्षाणि ब्रह्मणः परमायुः। ब्रह्मणः जन्मादि गतसौरवर्षाणि १५५५२१९७२९४९११९, कल्पादितः गतसौरवर्षाणि १९७२९४९११९, सृष्ट्यादितः गतवर्षाणि १९५५८८५११९, अथ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तविंशतिमहायुगानि व्यतीतानि। अष्टाविंशमहायुगस्य च कृतत्रेताद्वापराख्ययुगचरणत्रयं व्यतीतम्।

कृतयुगवर्णनम् - कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमयामे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् १७२८००० सौरवर्षाणि। अस्मिन् युगे श्रीविष्णोः मत्स्यकच्छपवाराहनृसिंहाः चत्वारोऽवताराः। तत्र पापम् ० पुण्यम् २०।

त्रेतायुगवर्णनम् - वैशाखशुक्लतृतीयायां द्वितीययामे रोहिणीनक्षत्रे शोभनयोगे त्रेतायुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् १२,९६००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः वामनपरशुरामरामास्त्रयोऽवताराः। तत्र पापम् ५ पुण्यम् १५।

द्वापरयुगवर्णनम् - माघकृष्णामावस्यायां तृतीययामे धनिष्ठानक्षत्रे वरीयानयोगे द्वापरयुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् ८६४००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः श्रीकृष्णबलरामावतारौ। तत्र पापम् १० पुण्यम् १०।

कलियुगवर्णनम् - भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां निशीथे कृत्तिकानक्षत्रे व्यतीपातयोगे कलियुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् ४,३२,००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः बुद्धाऽवतारोऽभवत्। कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारो भविष्यति। तत्र पापम् १५ पुण्यम् ५। सम्प्रति कलेः ५११८ सौरवर्षाणि गतानि। भोग्यवर्षाणि ४२६८८२ कलिसंवत् ५११९।

बार्हस्पत्यवर्षफलम् - तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये **विरोधकृत** नाम संवत्सरः, एषः एव सङ्कल्पादौ वर्षान्तं यावत् प्रयोक्तव्यः। तत्र मेषार्कसमये गतमासादयः ०/१९/०६/१४ भोग्यमासादयः ११/१०/५३/४६।। सङ्कल्पादौ वर्षान्तं यावत् कीलकः नाम संवतसरः प्रयोक्तव्यः।

विरोधकृत संवत्सर का फल - विरोधिकृद्वत्सरे तु परस्परविरोधिनः। सर्वे जना नृपाश्चैव मध्यास्सस्यार्घवृष्ट्यः।। अर्थात् विरोधकृत् नाम संवत्सर में राजाओं लोगों में परस्पर विरोध रहता है

इस संवत्सर में मध्य धान्योत्पादन और मध्यम वृष्टि होती है। बृहत्संहिता के अनुसार - यः पञ्चमो रोधकृदित्यथाब्दश्चित्रं जलं तत्र च सस्यसम्पत्। अर्थात् रोधकृत (विरोधकृत्) संवत्सर में विचित्र जल (कहीं - कहीं पर वृष्टि और कहीं पर अवृष्टि) एवं धान्य की उत्पत्ति होती है।

गुरूदयाब्दफलम् - गुरुणा सहोदयनक्षत्रवशाद्वर्ष वैशाखाब्दः। तस्य फलम् - **वैशाखे धर्मपरा विगतभयाः प्रमुदिताः प्रजाः सनृपाः। यज्ञक्रियाप्रवृत्तिर्निष्पतिस्सर्वसस्यानाम्।।** अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में गुरु उदय होने के कारण यह वर्ष वैशाखाब्द वर्ष है। इस वर्ष में प्रजा के साथ राजा भयरहित होकर आनन्दित रहते हैं। यज्ञ क्रियायें तथा धार्मिक कार्य निरन्तर चलते हैं एवं सभी प्रकार के धान्योत्पादन होते हैं।

वर्षाधिपति व फल - सौम्यदैवतं युगं पञ्चसंवत्सराणां मध्ये इद्वत्सरः, तस्याधिपः रुद्रदेवता। संवत्सरस्य नृपः रविः। तस्य वाहनम् अश्वः। वर्ष का स्वामी सूर्य है। **वर्ष स्वामी सूर्यफल - अन्योन्यवैरं क्षितिपालकानां नात्याम्बु मुञ्चन्ति बलाहकाश्च।भूपाद्भायं शस्त्रभयं प्रजानां लोकेऽग्नि बाधाब्दपतौ पतङ्गे।।** वर्षेश सूर्य होने से राजाओं में परस्पर वैर होता है। तथा उत्पातादि के द्वारा अधिक वृष्टि नही होती है । प्रजा में राजभय, शस्त्रभय तथा अग्निभय की सम्भावना रहती है । **नागः -** द्वादशनागानां मध्ये नरेन्द्रभुजगेन्द्रः। फलम् - **बहुवृष्टिः।** अर्थात् द्वादशनाग के मध्य में नरेन्द्रभुजगेन्द्र होने से पर्याप्त वर्षा होती है। **रोहिणीवासः -** सन्धौ, फलम् - **खण्डवृष्टिः।** समयनिवासः -वैश्यगृहे। रोहिणीवास सन्धि में एवं वैश्यगृह में होने से खण्ड वृष्टि होती है। **वायु, तटित्, समुद्र, शेष -** सप्तवायूनां मध्ये उद्वाहः वायुः, फलम् - उद्वाहे तु सुवृष्टिः स्यात्, तटितसंज्ञक विद्युत् मध्या वृष्टिर्विद्युति। तत्र चतुर्विधसमुद्राणां मध्ये- घृतोदधौ सुभिक्षं स्यात्। गर्जितानां मध्ये-अब्दः, फलम्- अब्दश्चैव सुभिक्षकृत्, अष्टभूवाहक शेषानां मध्ये-विराटः, फलम् - भूमिवाहे विराटे तु भूमिः स्वस्य सुभिक्षकृत्। अर्थात् विराट नामक भूवाहक शेष होने पर भूमि में सुभिक्ष एवं सभी मनुष्य स्वस्थ रहते है। **पशुपालक और उसका फल - "भानौ भौमे यमो राजा"** अर्थात् इस वर्ष पशुपालक यम हैं। इस कारण पशुहानि, अल्पवृष्टि गोदुग्ध में कमी होती है। अपि च - अनर्घश्चाल्पवृष्टिश्च स्वल्पक्षीरं तथा गवाम्। पशुपीडा भवेन्नित्यं यमे तु पशुनायके।।

राजा मन्त्री आदि की निर्णयविधि - चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो वारः स उक्तो नृपतिस्तदब्दे। मेषप्रवेशः किल भास्करस्य यस्मिन्दिने स्यात् स तु राजमन्त्री।। कर्कसङ्क्रान्तेर्यो वारः स अग्रधान्येश्वरः। धनुसङ्क्रान्तेर्यो वारः स पश्चिमधान्येश्वरः।। कर्कप्रवेशे दिनपस्य वारः सस्यस्य नाथो मुनिभिः पुराणैः। आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो मेघाधिपः प्राक्तनविप्रवर्यैः।। सिंहसङ्क्रान्तिवारेशो दुर्गेशः परिकीर्तितः। कन्यासङ्क्रान्तिदिनपो धनेशः परिकीर्तितः।। तुलाप्रवेशेऽहनि यस्य वारो रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः। चापप्रवेशे दिवसाधिनाथे धान्याधिपो वै कथितो मुनीन्द्रैः।। नक्रसङ्क्रान्तिदिनपः फलेशः परिकीर्तितः।। **राजादिश्रवणमाहात्म्यम् -** यशःश्रृणोति मधुशुक्लपक्षके वर्षनाथसचिवादिकं फलम्। प्राप्नुयाद्दुरितमुक्तविग्रहः चायुरर्थमतुलं यशस्सुखम्।। राजा सूर्यफलम्- अन्योन्यवैरं क्षितिपालकानां नात्यम्बुमुञ्चन्ति बलाहकाश्च।भूपाद्भयं शास्त्रभयं प्रजानां लोकेऽग्निबाधाब्दपतौपतङ्गे।।

शनिफलम्- मध्यवृष्टिमन्दस्य सर्वे पापरता नराः।प्रजापीडा भवेन्नित्यं सूर्यपुत्रे तु मन्त्रिणा।।

अर्घेशशुक्रफलम्- अर्घाधिपे यदा शुक्रे सर्वधान्यर्घवृष्ट्यः। श्वेतधन्यं सुफलितं सुभिक्षं स्याच्च भूतले।।

सस्येशचन्द्रफलम्- जलधान्यानि सर्वाणि स्थलधान्यानि यानि च। कृक्षजातिस्सुफलिता चन्द्रे सस्याधिपे सति।।

सेनाधिपशुक्रफलम्- सुवृष्टिरत्यन्तसमृद्धसस्यं सुभिक्षमर्घो बहुलो धरित्र्याम्।
नराः स्त्रियः कामरताः प्रवृत्तास्सैन्याधिपत्ये खलु भार्गवस्य।।

रसेशबुधफलम्- घृततैलगुडक्षौद्र ये चान्ये मधुरादयः।अर्घविद्याप्रजायन्ते बुधे यदि रसाधिपे।।

धान्येशरविफलम्- मध्यावृष्टिः फलं स्वल्पम् अनर्घश्च महद्भयम्।
रक्तसस्यानि जायन्ते सूर्यधान्याधिपे सति।।

नीरशेषभोमफलम्-नीरसपेक्षितितनये नीरसवृक्षाश्च पुष्पफलिताःस्युः।स्वर्णमणिरक्तचन्दनकाष्टादीनां महर्घताशून्यम्।।

मेघेशशुक्रफलम्- अतिवृष्टिस्सुभिक्षं च सस्यवृद्धिर्निरामया। क्षीरप्रदास्सदा गावश्शुक्रे मेघाधिपे सति।।

राजा	मन्त्री	अर्घेश	सस्येश	सेनाधिप	रसेश	धान्येश	नीरसेश	मेघेश
रवि	शनि	शुक्र	चन्द्र	शुक्र	बुध	रवि	भौम	शुक्र

अथ सूर्यस्यार्द्रानक्षत्रे प्रवेशकालविचारः- प्रवेशकाले यदि रौद्रभस्य वृष्टिर्भवेदीतिरनर्घता च। शेषेषु पादत्रितयेषु भीतिरत्यल्पवृष्टिर्महती गदा च।। आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश करते समय यदि वर्षा होती है तो अनर्घता अर्थात् मन्दी जानना चाहिए। आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृष्टि होने पर भय, तृतीयचरण में अत्यल्पवृष्टि तथा चतुर्थचरण में भयंकर रोग की सम्भावना बनती है। **आर्द्रा प्रवेशे वृष्टिरश्चेद्दिवा वा यदि वा निशि। स्तोकवृष्टिरनर्घत्वमवृष्टौ सस्यसम्पदः।।**
आर्द्रायाः प्रथमे पादे यदि वर्षति वासवः। तुषारमल्पवृष्टिः स्यादित्येव केचिदूचिरे।।
सूर्ये मेषगते वृष्टिरार्द्रायाश्चाद्यपादके एकादशसु ऋक्षेषु त्रिपक्षे वृष्टिनाशनम्।।
विक्रम संवत् २०७५ शाके १९४० ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ चित्रानक्षत्रे परिघयोगे तैतिलकरणे शुक्रवासरे २२जून २०१८ दिनाङ्के मार्तण्डमण्डलोदयादिष्टकालः १३/५०(घं.१ ५० मि.) कन्यालग्ने वृश्चिराशौ तुलानवांशे च सूर्यस्यार्द्रा नक्षत्रे प्रवेशः।

अथ प्रवेशकालफलविचारः- दशम्यां शुभदः प्रोक्तः। शुक्रे कान्तिकरः। चित्रायां चित्रधान्यदः। परिघे त्वर्थनाशः। कन्यायां मध्यवृष्टिकृत्। तैतिले शुभकृन्नित्यम्
षण्मण्डलेषु प्रथममण्डलम् - आर्द्राप्रवेशे सूर्यस्य चन्द्रः पित्र्यादिपञ्चके। तृतीये मण्डले तिष्टन् मध्यवृष्टिफलप्रदः।।

आर्द्राप्रवेश कालिक ग्रहस्थिति

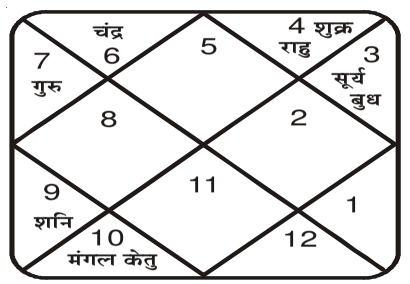

विक्रमसंवत् २०७५ शक १९४० ज्येष्ठशुक्लपक्ष (शुद्ध) में शुक्लपक्ष दशमीतिथि, शुक्रवार चित्रानक्षत्र परिघ योग में दिनांक २२ जून २०१८ में ११घ.११मि. पर सिहं लग्न में आर्द्राप्रवेश हो रहा है। लग्नेश सूर्य के एकादश भाव में बुध के साथ मिथुनस्थ होने से अच्छी वर्षा की सम्भावना है तथा जलकारक शुक्र के चर राशि में द्वादशस्थ में होने से वर्षा में कहीं कहीं अधिकता होगी तथा द्वादशस्थ राहु के कारण कुछ क्षेत्रों में वृष्टि की न्यूनता भी सम्भावित है। मेघेश शुक्र होने से धान्योत्पादन में वृद्धि होगी तथा काली वस्तुओं (धान्यादि) का उत्पादन अधिक होगा। मंगल का षष्ठभाव में उच्चस्थ होने से तथा केतु के साथ होने से राज्यों में वैचारिक मतभेद एवं विद्रोह की सम्भावना है। बलशाली देश का वर्चस्व रहेगा। धार्मिककार्यों के प्रति लोगों की आस्था रहेगी। धार्मिक कार्यक्रमों के साथ राष्ट्र निर्माण में सन्त-महात्माओं का विशेष योगदान रहेगा। राजा सूर्य एवं मन्त्री शनि होने से प्रजा व शासकवर्ग में विरोधभास होता रहेगा।

मेघादि निर्णय और फल - अस्मिन्नब्दे आवर्तादिनवमेघानां मध्ये द्रोणो नामको मेघः। तस्य फलम् - द्रोणे पूर्व तथैव च। आढकादि निर्णय और फल- द्वयाढकं रविभौमौ। तत्र **आढक प्रमाणम् -** षष्टियोजन विस्तीर्णं शतयोजनमुन्नतम्। आढकस्य प्रमाणं तु देवमानेन गण्यते।।
द्रयाढकभागनिर्णयः - दशभागास्समुद्रेषु भूधरेषु च सप्त च। द्वौ भागौ भुविपर्जन्यश्चैवं वर्षति च त्रिधा।।

सप्तफणिचक्रं सप्तनाडीचक्रं वा

नाडीनाम	स्वामी	सौम्ययाम्यादिसंज्ञा	नक्षत्राणि
चण्डा	शनि	याम्य	कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा, भरणी
वाता	रवि	याम्य	रोहिणी, स्वाती, ज्येष्ठा, अश्विनी
दहना	मंगल	याम्य	मृगशिरा, चित्रा, मूल, रेवती
सौम्या/शुद्धा	गुरु	मध्यम	आर्द्रा, हस्त, पू.षा, उ.भा.
नीरा/धीरा	शुक्र	सौम्य	पुनर्वसु, उ.फा., उ.षा., पू.भा.
जला	बुध	सौम्य	पुष्य, पू.फा., अभिजित, शतभिषा
सुधा	चन्द्र	सौम्य	आश्लेषा, मघा, श्रवण, धनिष्ठा

आर्द्रा प्रवेशकालिकग्रहाणां नाडीसु संस्थितिवशाद् फलविचारः

ग्रहाः	नाडीनाम	संज्ञा	ना.स्वामी	फलम्
सूर्य	सौम्या	मध्यम	गुरु	मध्यमजलवर्षणम्
चन्द्र	दहना	याम्य	मंगल	अग्निभयम्
मङ्गल	सुधा	सौम्य	चन्द्र	मध्यमजलवर्षणम्
बुध	नीरा	सौम्य	शुक्र	वृष्टिदः
गुरु	वाता	याम्य	रवि	वायुभयम्
शुक्र	जला	सौम्य	बुध	वृष्टिदः
शनि	दहना	याम्य	मंगल	अग्निभयम्
राहु	जला	सौम्य	बुध	मध्यमजलवर्षणम्

ग्रहोदयास्तादि में विशेष वृष्टिनिर्णय

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसंक्रमे च। पक्षद्वये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्रात्।। प्रायः भौमादि पञ्चताराग्रहों के सूर्य सान्निध्य के कालांश वश होने वाले उदय एवं अस्त काल में, चन्द्रमा के साथ ग्रहों के समागम में सङ्क्रान्ति काल में, दोनो पक्षों के आदि में, उत्तरायणारम्भ एवं दक्षिणायनारम्भ में आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश करने के दिन वर्षा होने की सम्भावना रहती है। **समागमे पतति जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्च संगमे। यमारयोः पवनहुताशजं भयं यदि द्वयोरसहितयोश्च सद्ग्रहैः।।** चन्द्र के साथ भौमादि ग्रहों के समागम में, बुध और शुक्र, बुध और गुरु तथा गुरु और शुक्र की युति होने पर भी वर्षा की सम्भावना बनती है। यदि मङ्गल व शनि की युति हो रही हो एवं अन्य कोई शुभग्रह उनके साथ न हो तो वायु एवं अग्नि से भय उत्पन्न होता है।

ग्रहकृत् वृष्टियोग - वर्षा ऋतु में शुक्र से सप्तम चन्द्र हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा

शनि से पाँचवें, सातवें घर या नवम में चन्द्र हो तो वर्षा होने का योग होता है। जब सब ग्रह सूर्य के पीछे होकर आगे हो जायें तो पृथ्वी पर जल की वर्षा हो। आगे की राशि पर मङ्गल हो और पिछली राशि पर सूर्य हो तो वर्षा नहीं होती। वर्षाकाल में ४, १०, १२ लग्न में शुक्र हो या शुक्लपक्ष में शुक्र केन्द्र में हो तथा शुक्र पर शुभ दृष्टि हो तो इच्छानुसार जल वर्षा। शुक्र पर पाप दृष्टि हो तो अल्प वर्षा हो। चन्द्रमा से यदि ५,७ स्थान में मङ्गल शनि हो तो प्रचण्ड वायु युक्त वर्षा भूमि पर होती है। जलराशि में स्थित चन्द्रमा हो सप्तम या नवम में शनि या मङ्गल हो तो अधिक वर्षा होती है। सूर्य के आगे स्थित ग्रहान्तरित शुक्र प्रचुर वृष्टि करता है। इसी प्रकार सूर्य के आगे या पीछे स्थित बुध एवं शुक्र अत्यन्त समीपस्थ हो तो प्रचुर वृष्टिकारक होते हैं। शुक्लपक्ष का चन्द्र जलराशि में हो या प्रश्नलग्न के केन्द्र में सूर्य से सप्तम शुक्र व शनि यथाक्रम से होवें या चौथे घर में और आठवें घर में होंवे या लग्न से इन्हीं घरों में होवें या लग्न से ३, १०, ११ घर में हो तो वर्षाकाल में वर्षा होती है। बुध शुक्र का समागम (एक राशि में) हो या गुरु शुक्र का समागम हो या बुध गुरु का समागम हो तो निःसन्देह वर्षा होगी। वर्षाकाल में चन्द्र यदि जलराशि कर्क, कुम्भ, मीन, कन्या और मकर के उत्तरार्ध में लग्न या केन्द्र में हो शुभग्रहों की दृष्टि हो तो बहुत वर्षा होती है। यदि चौमासे के दिन में चन्द्र को शुभग्रह देखें या शुक्र ९, ५, ७ राशि में आवे तो उस दिन वर्षा होगी।

शनिचारवश फल - इस वर्ष शनि वर्षारम्भ से ०४ जून २०१८ तक मूल नक्षत्र में संचरण करेगा। तथा २७ नवम्बर २०१८ से वर्षान्त तक पूर्वाषाढा नक्षत्र में रहेगा। ज्येष्ठा,मूल और पूर्वाषाढा में संचरण होने से शासकवर्ग, पुरोहित व शिक्षक वर्ग, उत्तरपूर्वी भारत के लोगों एवं सैनिकों को कष्ट तथा फल औषधि इत्यादि की हानि होती है। अङ्ग, वङ्ग, कौसल,गिरिव्रज, मगध, पौण्ड्र, मिथिला के लोगों को कष्ट होता है। अपि च- ज्येष्ठासु नृपपुरोहितनृपसत्कृतशूरगणकुलश्रेण्यः। मूले तु काशिकोसलपाञ्चालफलौषधीयोधाः।। अपि च - मन्दे स्थिते धन्विति वृष्टिहानिः स्याद्भूपतीनां कलहो न चार्धः। पाञ्चालकाशीकुरुकोसलाश्च नष्टाश्च काश्मीरकलिङ्गवङ्गाः।। अपि च - मूले तु काशिकोसलपाञ्चालफलौषधीयोधाः। आप्येऽङ्गवङ्गाकोसलगिरिव्रजामगधपौण्ड्रमिथिलाश्च। उपतापं यान्ति जना वसन्ति ये ताम्रलिप्यां च।।

अथ वर्षधान्यप्रमाणानि - वर्षम् - ११, धान्यम् - ७, शीतम् -१३, तृणम् - ११, उष्णम् - १७, मारुतः - १३, प्रजावृद्धि - १५, प्रजाक्षय - १५, राजविडवरम् - ५, उग्रम् - ५, पुण्यम् - ५, पापम् - ५। **व्याधयः - ११,** उपवशमनम् - ११, आचारः - १७, अनाचारः - १७, मरणानि - १५, जन्मानि - १५, देशोपप्लवः - ३, देशस्वास्थ्यम् - १५, चोरभयम् - ९, चोरनाशनम् - १५, अग्निभयम् - ३, नाशः - ९, मृगोपद्रवः - १९, मृगक्षयः - १५, कीटभयम् - ३, कीटनाशनम् - १३, मूषकवृद्धिः - १५, नाशः - ९, सर्पवृद्धिः - १३, नाशः - ११, कामः - ३, लोभः - ७, मोहः - ७ मदः - ३, मत्सरः - १३, सुखम् - ३, दुःखम् - ७, भोगः - ९, विडम्भः - ९, मनोव्यथा - ७, द्वेषः - ३, प्रतिष्ठा - १५, अप्रतिष्ठा - ९, द्यूतम् - १९, प्रमादः - ११, नरोत्पत्तिः - १९, स्त्र्युत्पत्तिः - ९, धातुवादः - १५, भयम् - ३, शौर्यम् - ७, दुष्टनिग्रहः - ११, शिष्टप्रतिपालनम् - १५, सत्यम् - १९, असत्यम् - ५, विश्वासः - ७, अविश्वासः - ९, दया - ११, निर्दया - १३, न्यायः - १५, अन्यायः - १७। **गोमायुवृद्धिः - १,** नाशः - ५, सस्यकीटवृद्धिः ९, क्षयः -९, शलभोद्भवः - १, नाशः - १, मशकवृद्धिः - १, मशकनाशः - ५, मत्कुणवृद्धिः - ३, नाशः - ५, वृश्चिकवृद्धिः - ७, नाशः - ७, व्याघ्रवृद्धिः - १३, नाशः - ७। **सस्यवृद्धिः - ४,** नाशः - ६, शुकवृद्धिः - ४, नाशः - ७, पिकवृद्धिः - ७, नाशः - ७, कुक्कुटवृद्धिः - ८, नाशः - ८। **खगवृद्धिः - २,** नाशः - १, धेनुवृद्धिः - ५, नाशः - १, महिषवृद्धिः - ५, नाशः - ६, मृगवृद्धिः - १, नाशः - ४, छागवृद्धिः - ४, नाशः - १, अश्ववृद्धिः - ३, नाशः - ३, गजवृद्धिः - १, नाशः - १, अष्टवृद्धिः २, नाशः - २, विप्रवृद्धिः -३, नाशः - २, क्षत्रियवृद्धिः - ५, नाशः - ६, वैश्यवृद्धिः - ४, नाशः - १, शूद्रवृद्धिः -५, क्षयः - ३, म्लेच्छवृद्धिः - २, नाशः - ४, संकरवृद्धिः -३, नाशः - १, वज्रवृद्धिः - ३, वैदूर्यवृद्धिः - ५, गोमेधवृद्धिः - २, पुष्पवृद्धिः ३, मरकतवृद्धिः - ४, माणिक्यवृद्धिः -५, नीलवृद्धिः - १, प्रवालवृद्धिः - १, मौक्तिकवृद्धिः - १। **सुवर्णवृद्धिः - ६,** रजतवृद्धिः - २, ताम्रवृद्धिः - ८, कांस्यवृद्धिः - २, लोहवृद्धिः - १२, अयोवृद्धिः - ८, त्रपुवृद्धिः - १०, सीसावृद्धिः -१०, रसवृद्धिः - ६। **विद्युत् - ४,** शिलापातः - ३, मर्जितम् - ०। **ज्ञानम् - ५,** अज्ञानम् - ५, कापट्यम् - ३, निष्कापट्यम् - १३, धार्मिकत्वम् - ७, अधार्मिकत्वम् -१३। **स्वप्नम् - ६,** सुषुप्तिः - २, जाग्रत् - ८, पिशुनः - २, क्रोधः - १२, संगमः - ८, ज्ञानम् - १०, अज्ञानम् - १०, भुक्तिः - ६, धान्यम् - ०। **अण्डजवृद्धिः - ११,** स्वेदजवृद्धिः - ७, उद्भिजवृद्धिः - १३, जरायुजवृद्धिः - ७, स्थावरवृद्धिः - १७, जङ्गमवृद्धिः - १३। **व्रीहिवृद्धिः - ८,** शालिकः - ८, कुलुत्थः - ८, तिलः - १२, माषः १०, मुद्गरः - ६, सर्षपः - २, चणकः - १४, आढकम् - १४, गोधूमः - १२, कोद्रवः, ४, प्रियंगुः - १०, यावानलः - १२, श्यामाकः - ६, राजमाषः - १४, नीवारः - १६, शिम्बीधान्यम् - १२। **कांस्यवृद्धिः -** ११, लोहः - १७, अयः - ११, त्रपुः - १५, सीसः - ५, रसः - १७, गोमायुः - ११, इद्रचापः - ५, प्रतिभानुः - ३, उल्कापातः - ९, परिवेशः - ११, दिग्दाहः ११, भूकम्पः - ११, निर्घातः - १३, गन्धर्वनगरम् - ०३, देवतोत्पातः - १३, जन्तूत्पातः - ५, सन्ध्या - ९, ग्रहकूटम् - ११, ग्रहयुद्धः - ७, सूर्यचन्द्रोपरागः - १३, गृहारिष्टम् - १५, मधोर्जन्मः - १३, वल्मिकोत्पत्तिः - ७, जन्मभूमौशिथली - १३, जलोद्भवः - १७, देहव्रणः - ३, स्पन्दनम् - १७, सुस्वप्नम् - १५, दुःस्वप्नम् - ११, रोगजातः - ५, औषधोत्पत्तिः - १३, प्रजारोग्यम् - ५, भूमिवर्षा - ११। **क्षुधा -** ९, तृष्णा - ३, निद्रा - ११, आलस्यम् - ५, उद्योगः ११, शान्तः - १३, क्रोधः - ११, दम्भः - ३, मित्रभेदः - १, मैत्री - १३, रसनिष्पत्तिः - ७, फलनिष्पत्तिः - ११, उत्साहः - ९, प्राणिसौख्यम् - ०।

सौरार्घविचारः - सूर्यसङ्क्रान्तिवारर्क्षतिथियोगो नवैर्हृतः। एकादिशेषे त्वत्यर्घसमशून्यार्घकाः क्रमात्।। इत्यनुसारं मेषार्कमासे (सौर वैशाखे) अत्यर्घः, वृषार्कमासे (सौरज्येष्ठमासे) अत्यर्घः, मिथुनार्कमासे (सौराषाढमासे) शून्यार्घः, कर्कार्कमासे (सौरश्रावणमासे) शून्यार्घः, सिंहार्कमासे (सौरभाद्रपदमासे) अत्यर्घः, कन्यार्कमासे (सौर-आश्विनमासे) समर्घः, तुलार्कमासे (सौरकार्त्तिके) अत्यर्घः, वृश्चिकार्कमासे (सौरमार्गशीर्षमासे) शून्यर्घः, धन्वर्कमासे (सौरपौषमासे) शून्यार्घः, मकरार्कमासे (सौरमाघमासे) समर्घः, कुम्भार्कमासे (सौरफाल्गुनीमासे) शून्यार्घः, मीनार्कमासे (सौरचैत्रमासे) समर्घः इति विजानीयात्।

मकरसङ्क्रान्तिविचारः

मकरसङ्क्रान्तिमाहात्म्यम् - मकरस्थे तीक्ष्णभानौ धान्यदानं करोति यः। तेजस्वी रूपवान् मर्त्यस्सार्वभौमः प्रजायते। सङ्क्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि भारत। तानि दत्तं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि।। सङ्क्रान्ति पुरुषोत्पत्तिकाले दानं स्वशक्तितः। फलं कांस्यादि धान्यादि दीयते दुष्टनाशभाक्। तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशकाः।। फलानि मूलान्यजिनं सुवर्णं ग्रामांशुकाज्यं सतिलेक्षुगावः। धान्यं खराशौ मकरप्रवेश एतानि दानानि विशेषकानि।।

मकरसङ्क्रान्तिकालविवरणम् - विक्रम संवत २०७५ शाके १९४० दक्षिणायने हेमन्तर्तौ पौषशुक्लपक्षे अष्टमीतिथौ अश्विनीनक्षत्रे सिद्धयोगे कौलवकरणे सोमवासरे श्रीमार्तण्डमण्डलोदयादिष्टकालः ३१/४७ कर्क लग्नोदये निरयणमकरादौ भारतीयमानकसमयानुसारं सूर्यस्य प्रवेशः। ख्रीष्टदिनाङ्कानुसारम् १४-०१-२०१९ सायं १९-५१ वादने मकरसङ्क्रमणकालः। सङ्क्रान्तिपुण्यकालः————————

शुक्लपक्षे मकरसङ्क्रान्तिफलम् - शुक्लपक्षे यदा पौषे मकरस्थो दिवाकरः। प्रजानां व्याधिपीडा च नृपाणां समरं भवेत्। अष्टम्यां धराभिवृद्धिः। सोमवासरे सुभिक्षम्। मतान्तरेण - **मृग्विन्दुगुरुसौम्येषु यदा संक्रमते रविः। सुवृष्टिः क्षेममारोग्यं बभूवुः सस्यसम्पदः।। सन्ध्यायां -** गोवृषध्वंसी। **सङ्क्रान्तिनाम -** ध्वांक्षी। **स्नानम् -** चन्दनेन आरोग्यम्। **वस्त्रम् -** श्वेतवस्त्रम्। **गन्धः -** अगरुगन्धेन आरोग्यम्। **पुष्पम् -** मल्लिकापुष्पेण यशोवृद्धिः। **छत्रम् -** पीतवस्तुनाशः। **आभरणम् -** रजताभरणम् - रजतस्य नाशनम्। **आहारः -** भक्ष्याहारः - विस्फोटकभयम्। **फलभक्षणम् -** आम्रफलभक्षणेन सुखम्। **वाहनम् -** उत्तरवाहनम् उदीच्यां गमनं यत्र सर्वं सस्यं समर्घता। **आयुधफलम् -** तोमरे सङ्ग्रामः। **यानफलम् -** वणिजे स्यान्नभस्वति, फलम् - आकाशे विनाशनम्।

वर्षलग्नकुण्डली

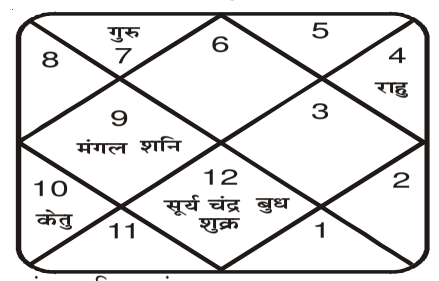

विरोधकृत नामक संवत्सर विक्रम संवत् २०७५ शक १९४० का प्रवेश चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में सायं १८ घ. ४२ मि. उ.भा. नक्षत्र शुक्लयोग में द्विस्वभाव कन्या लग्न में हुआ है। लग्नेश बुध सप्तमभाव में सूर्य, चन्द्र एवं शुक्र ग्रहों के साथ स्थित है। इसलिए संचारसाधनों में वृद्धि के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रभावित करेगा। पञ्चमभाव में केतु के होने से कम्प्यूटर क्षेत्र में रुचि वाले लोगों को तथा प्रबन्धन क्षेत्र में लाभ होगा। चतुर्थभाव में मंगल और शनि की युति होने से सीमा पर विवाद की स्थिति बनेगी। भारत देश अपनी सीमा सुरक्षित करने में सफल होगा। सप्तमभाव में शुक्र के उच्चस्थ होने से तथा चन्द्र-सूर्य-बुध का योग होने से महिला शक्ति (नारी शक्ति)के लिए वर्ष लाभप्रद रहेगा। महिलाओं का सम्मान बढेगा। एकादश भाव में राहु का कर्कराशि में होने से देश के लिए विशेष लाभ होगा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ आयेगी। बीच-बीच में राजा सूर्य और मन्त्री शनि होने से प्रजा तथा शासक में वैचारिक मतभेद रहेगा एवं विश्व में आतंकवादी अप्रिय घटनाओं के द्वारा तनावपूर्ण स्थिति तथा युद्धजन्य घटनाएँ सम्भावित हैं।

जगल्लग्नकुण्डली(दि.१३/१४-४-२०१७ स.२६.०४)

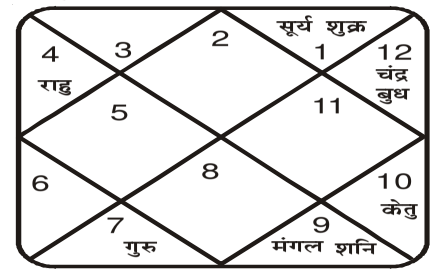

जगल्लग्नकुण्डली के अनुसार लग्न में वृष राशि स्थिरराशि है। लग्नेश शुक्र के द्वादशभाव में सूर्य के साथ होने से तथा गुरु की दृष्टि शुक्र पर होने से कुशल प्रशासकों का देश पर नियन्त्रण रहेगा तथा असामाजिक तत्त्वों पर नियन्त्रण रहेगा। तृतीयस्थ राहु होने से वैदेशिक सम्बन्धों में तटस्थता होगी। आतंकवाद पर नियन्त्रण रहेगा। गुरु के **षष्ठभाव** में होने से शत्रु (आतंकवादी/नक्सलवादी) पराजित होंगे। बुद्धिमान् लोगों का सम्मान बढ़ेगा। बुद्धिजीवी लोग देश व विदेश नीति में समरूपता के साथ क्रियान्वयन करेंगे। मंगल और शनि की युति अष्टमभाव में होने से अग्निसम्बन्धी घटनाएँ, समाज के वर्ग में असंतुलन (हड़ताल) मृत्युसम्बन्धी अप्रिय घटनाएँ भी सम्भावित हैं। केतु के नवमभाव में होने से देश में विज्ञान के क्षेत्र में कम्प्यूटर-प्रबन्धनादि क्षेत्र में विशेष उन्नति होगी। प्रशासक नीति व नियम से कार्य करेंगे। प्रजा व शासक में यदा कदा मतभेद भी सम्भावित है। किन्तु बुद्धीजीवी लोग सही दिशा निर्देशन करेंगे व विश्व में जटिल समस्याओं का निराकरण होगा तथा देशों में वैमनस्यता की भावना में वृद्धि होगी। विश्वशान्ति के लिए साधु-सन्तों का विशेष योगदान रहेगा। तथा धार्मिक कार्यों में लोगों की रुचि बढ़ेगी।

कूर्मचक्रविचार -

सौरि: स्वदेशगो यत्र तत्र यत्नेन रक्षयेत्। परदेशस्थिते कुर्याद्विग्रहं पृथिवीपति:।।
यत्रस्थ: पीडयेत्तत्र वेधस्थाने तथैव च । देशनामर्क्षग: सौरिर्भगदाता न संशय:।।(नरपतिजयचर्या)

वर्षारम्भ से शनि ५ जून २०१८ तक ज्येष्ठा नक्षत्र में रहेगा तथा ६ जून २०१८ से २७ नवम्बर २०१८ से वर्षान्त तक पूर्वाषाढा नक्षत्र में रहेगा। कूर्मचक्रानुसार पश्चिम दिशा में मणिवान् पर्वत, मेघवान्, वनौघ, क्षुरार्पण, अस्तगिरि, अपरान्तक, शान्तिक, हैहय, प्रशस्ताद्रि, वोक्कण, पञ्चनद, रमठ, पारत, तारक्षिति, जुङ्ग, वैश्य, कनक, शक आदि देशों में प्राकृतिक प्रकोप सूखा युद्धादि की सम्भावना रहती है। यथा - **अपरस्यां मणिवान् मेघवान् वनौघ: क्षुरार्पणोऽस्तगिरि:। अपरान्तकशान्तिक-हैह्यप्रशस्ताद्रिवोक्काणा:।। पञ्चनदरमठपारततारक्षितिजुङ्गवैश्यकनकशका:। निर्मर्यादा म्लेच्छा ये पश्चिम दिक् स्थितास्ते च।**(बृ.सं.नक्षत्रकूर्म.अ.श्लो. २०, २१)

जन्मराशि के आधार पर विभिन्न फल विचार - इस वर्ष में विभिन्न राशियों के लिए आय एवं व्यय का मान यहाँ प्रस्तुत है - **आय और व्यय चक्र**

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	०२	११	१४	०८	११	१४	११	०२	०५	०८	०८	०५
व्यय	१४	०५	०२	०२	११	०२	०५	१४	०५	१४	१४	०५

आयैक्यम् - ९९ व्ययैक्यम् - ९३

आयव्ययाभ्यां शुभाशुभफलज्ञानस्य विधि: - आयं व्ययं समीकृत्य एक ह्रीनं तु कारयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषाङ्के फलमादिशेत्।। लाभ:सौख्यं तथा क्लेशो रोगो लोकापवादनम्। सम्मानं विजयो हानि: कथितं पूर्वसूरिभि:।। अर्थात् अपनी राशि के अनुसार आय एवं व्यय अङ्को को जोड़कर १ घटा दें। शेष को ८ से भाग दें, यदि शेष १, २, ६, ७ रहे तो वर्ष में अच्छा लाभ है। ३, ४, ५ या ८ शेष रहे तो लाभ से अधिक व्यय होने से परेशानियाँ बढेंगी अर्थात् शेष १ रहे तो लाभ, २ में सौख्य, ३ में क्लेश, ४ में रोग, ५ में मिथ्या अपवाद, ६ में सम्मान, ७ में विजय, ८ में अथवा ० में हानि समझनी चाहिए।

राजपूज्य एवं अवमान -

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
राजपू.	०५	०१	०४	००	०३	०६	०२	०५	०१	०४	००	०३
अवमा	००	०३	०३	०६	०६	०६	०२	०२	०५	०५	०१	०१

यथा - सिंहस्य मेषादिराशिसंख्या ५ राज्ञ:, भौमस्य ध्रुव: ०८ तयोर्योग: १३ त्रिगुण: ३९ पञ्चयुत: ४४ मुनिभिर्भक्तो लब्धं ०६ शेषं ०२ इदमेव राजपूज्यम्। लब्धं ०६ त्रिगुणं १८ शरयुतं २३ सप्तभिर्भक्तशेषं ०२ इदमवमानम्।

शनि का साढेसाती इत्यादि का फल - शनि अपने प्रवेश राशि एवं आगे व पीछे रहने वाली दोनों राशियों को अपने शुभाशुभप्रभाव से विशेषरूप से प्रभावित करता है। कहा जा सकता है कि जन्म राशि से शनि बारहवें और दूसरे स्थान पर रहेगा तो साढेसाती होती है। जो दु:ख कारक है। शनि एक राशि में प्राय: (२.५) ढाई वर्ष रहता है। इस प्रकार एक राशि पर शनि का कुलप्रभाव (७.५) साढे सातवर्ष तक रहता है इसे ही शनि की साढे साती कहते हैं। शनि जिस राशि में स्थित है उस राशि से छठवीं एवं दशवीं राशि को भी प्रभावित करता है। अत: इन राशियों पर शनि का प्रभाव (२.५) वर्ष तक रहता है। इसे ही ढैया या अढैया के नाम से जाना जाता है। **पादविचार -जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दै: रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लौहपादम्।।** अर्थात्-यदि जन्मराशि से गोचरीय शनि के राशिपरिवर्तन के दिन की चन्द्रराशि पहले, छठे और ग्यारहवें में हो तो सुवर्ण पाद। दूसरे, पाँचवें और नवें में हो तो रजतपाद। तीसरे, सातवें और दशवें में हो तो ताम्रपाद। चौथे, आठवें और बारहवें में हो तो लौहपाद होता है। **शनि पादफल -लौहे वित्तविनाश: स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जप: कार्य:, लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभि: पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य:।।** यदि जन्मराशि से सूर्य, राहु, शनि और मंगल ये ग्रह दूसरे, पहले, पाँचवें, सातवें, चौथे, आठवें, नवें और बारहवें स्थान में हो तो धन धान्य हिरण्य का नाश करने वाले होते हैं। **शनिचारवश फल -** शनि वर्षारम्भ से १९ जून २०१७ तक, २६ अक्टूबर २०१७ से वर्षान्त तक धनु राशि में संचरण करेगा। जिसका राश्यादिफल निम्न प्रकार से जानना चाहिए -

क्र.	राशि	साढ़ेसाती/ढैया	चरण	पाया	फल
१.	वृश्चिक	साढ़ेसाती	पैर	रजत	सुख और सौभाग्य
२.	धनु	साढ़ेसाती	हृदय	सुवर्ण	सर्वसुख
३.	मकर	साढ़ेसाती	शिर	लौह	धननाश
१.	कन्या	ढैया		लौह	धननाश
२.	वृष	ढैया		लौह	धननाश

अन्य राशियों के लिए शनि का पाया, मेष -रजत, मिथुन -ताँबा, कर्क -सुवर्ण, सिंह -रजत, तुला - ताँबा, कुम्भ - सुवर्ण पर शनि के पाया का गोचर होगा। शनि २० जून२०१७ से २५ अक्टूबर २०१७ तक वृश्चिक में संचरण करेगा जिसका राशिफल निम्न है।

क्र.	राशि	साढेसाती/ढैया	चरण	पाया	फल
१.	तुला	साढेसाती	पैर	रजत	सुख और सौभाग्य
२.	वृश्चिक	साढेसाती	हृदय	लौह	धननाश
३.	धनु	साढेसाती	शिर	तांबा	सामान्य
१.	मेष	ढैया		सुवर्ण	सर्वसुख
२.	सिंह	ढैया		ताँबा	सामान्य

विशेष - जन्मकुण्डली में शनि की शुभस्थिति इत्यादि के अनुसार शनि की ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम हो जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि मेषराशि वाले जातकों के लिए साढेसाती के मध्य के ढ़ाई वर्ष, मिथुन राशि वाले जातकों के लिए अन्तिम ढ़ाई, कर्क राशि वालों को प्रथम मध्य के ढ़ाई वर्ष, सिंह राशि वालों के प्रथम ५ वर्ष (उसमें भी मध्य के ढ़ाई वर्ष के विशेष रूप से), तुला राशि वालों को अन्तिम ढ़ाई वर्ष, वृश्चिक राशि वाले जातकों को अन्तिम ५ वर्ष (उनसे भी मध्य के ढ़ाई वर्ष विशेष रूप से), कुम्भ राशि वाले जातकों को आर्द्रा एवं अन्त कुल मिलाकर ५ वर्ष (उसमें भी अन्त के ढ़ाई वर्ष विशेष रूप से) तथा मीन राशि वाले जातकों को पूरे साढेसात वर्ष (उसमें भी अन्त के ढ़ाई विशेष रूप से) अशुभफल देने वाले होते हैं।

शनिशान्ति उपाय- शनि मन्त्रजाप, शनि स्त्रोत्रपाठ, पीपलवृक्ष में तिल एवं उडद मिश्रित जलदान एवं सायंकाल वृक्ष के नीचे तिलतेल का दीप जलाना, महामृत्युञ्जय का जाप, शिवपूजा, हुमानजी की उपासना, सुन्दरकाण्ड, रामायण इत्यादि का पाठ, पक्षियों को अनाज डालना, लौह पात्र में सदक्षिणा तेल रखकर उसमें अपनी मुखच्छाया देखकर दान करना, दरिद्र नारायण कोढियों को गुड चना देना, काली वस्तुओं का दान एवं तुलादान, वृद्धजनों की सेवा करना श्रेयस्कर रहेगा। भौतिक उपचारों में शनि या अमावस्या के दिन लोहे की अंगूठी पूजादि करके पहनना शुभ रहेगा।

प्रश्नविचार

च्युतिविचार: - प्रश्नकुण्डली के लग्न स्थान से च्युति का विचार करें। च्युति शब्द का अर्थ स्थान परिवर्त्तन, स्थान से हटना, चल पडना, यात्रा प्रारम्भ कर देना, गमन करना, भूल-चूक, रिसाव, पतन अवनति, विनाश, लोप, अदृश्य होना आदि होता है। जेल आदि से छूटने का अर्थ भी च्युति है। इसका विचार लग्न से करना चाहिए।

यदि प्रश्न लग्न में चर राशि (मेष, कर्क, तुला तथा मकर) की लग्न है तब च्युति(स्थान परिवर्त्तन) होगी। यदि प्रश्नलग्न में स्थिरराशि (वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ) की लग्न है तब च्युति नहीं होगी अर्थात् यदि तबादले, स्थान परिवर्त्तन आदि का प्रश्न हो तो तब तबादले, स्थान परिवर्त्तन आदि नहीं होगा ऐसा समझना चाहिए। द्विस्वभावराशि (मिथुन, कन्या, धनु और मीन) की लग्न होने पर च्युति में विलम्ब नहीं होता अर्थात् सुनिश्चितता की स्थिति न होकर असमंजस की स्थिति होती है।

वृद्धिविचार: - प्रश्नकुण्डली के चतुर्थभाव से वृद्धि का विचार करें। वृद्धि का अर्थ सफलता, बढती, उन्नति, प्रमति, मित्रता नौकरी में स्थान वृद्धि आदि से होता है। इसका विचार चतुर्थ से होता है।

निवृत्तिविचार: - प्रश्नकुण्डली के सप्तमभाव से कार्य निवृत्ति का विचार किया जाता है। निवृत्ति से तात्पर्य शत्रु से निपटना, यात्रा से निपटना, रोगमुक्त हो जाना, कार्य के पूर्ण होना तथा नष्ट वस्तु का प्राप्त हो जाना आदि विचार सप्तमभाव से किया जाता है।

प्रवासविचार: - खमध्यलग्न अर्थात् दशमभाव से यात्रा प्रवास का विचार किया जाता है। प्रवास का अर्थ किसी कार्य के लिए परदेश में निवास करना, यात्रा में थोडे दिनों के लिए दूसरे स्थानों पर रहना आदि विचार दशमभाव से किया जाता है। यथा षट्पञ्चाशिका ग्रन्थ में कहा गया है की -

च्युतिर्विलग्नाद्धिबुकाच्च वृद्धिर्मध्यात् प्रवासोऽस्तमयान्निवृत्ति:।
वाच्यं ग्रहै: प्रश्नविलग्नकालाद् गृहं प्रविष्टो हिबुके प्रवासी ।।
(षट्पञ्चाशिका, प्र.अ.श्लो. २)

च्युति आदि विचारों का फलकथन के लिए प्रश्नकुण्डली को देखना चाहिए। प्रश्नकुण्डली में जो जो भाव अपने स्वामी से दृष्ट या युत हो या सौम्यग्रहों (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) से दृष्ट या युत होता उस भाव की वृद्धि अर्थात् शुभफल होगा । परन्तु इसके विपरीत यदि वह भाव पापग्रहों से दृष्ट होगा अथवा उसमें पापग्रहों (शनि, मंगल, सूर्य, क्षीणचन्द्र) की स्थिति हो तो उस भाव की हानि कहनी चाहिए। मान लीजिए लग्नेश लग्न में बैठा है अथवा उसकी लग्न पर दृष्टि है या फिर लग्न में शुभ ग्रह बैठा हों अथवा उसे देखते हों तो लग्न से विचारणीय विषयों की वृद्धि होगी यदि लग्न पर उसके स्वामी की दृष्टि या युति हो तथा उसे शुभ ग्रह भी देखते हों या लग्न में बैठे हों तो और भी अच्छा फल प्राप्त होगा ।

वर्तमान वर्ष धान्यादि का अर्धविचार

राशिप्रवेश (सूर्यसंक्रान्ति) के अनुसार	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
एरंडैलाकुङ्कुमकस्तूरीहिङ्ग्वादीनां	समर्घ	समर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ
गोधूमादीनाम्	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ
लवङ्गपुष्पसीसानां धान्यानाञ्च	समर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ
आज्यस्य	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ
चणकस्य	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ
लवणादीनाम्	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ
वस्त्रकर्पूरताम्रकादीनाम्	अत्यर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ
कुलुत्थादीनाम्	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	सम र्घ
स्वर्णजीरकजाजिपिप्पलिपट्टाविकायसादीनाम्	अत्यर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ
रजतादीनाम्	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ
कार्पासादीनाम्	अत्यर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	शून्यार्घ	समर्घ
माषमुद्गयोश्च	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	समर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ
तिलादीनाम्	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	अत्यर्घ
नागलतामारीच्यादीनाम्	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	समर्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ
श्रीगन्धक्रमुकशर्करादीनाम्	अत्यर्घ	अत्यर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	अत्यर्घ	समर्घ	समर्घ	समर्घ	शून्यार्घ	शून्यार्घ

द्वादश राशियों का घातचक्र

राशय:	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
घाततिथि	१,६,११	५,१०,१५	२,७,१२	२,७,१२	३,८,१३	५,१०,१५	४,९,१४	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	३,८,१३	५,१०,१५
घातवार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घातप्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु.घा.चं.	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री.घा.चं.	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष
सूर्य घात	कर्क	वृश्चिक	मीन	तुला	धनु	मेष	कन्या	मकर	तुला	कुम्भ	वृष	मिथुन
शनि घात	मिथुन	तुला	कुम्भ	कर्क	वृश्चिक	मीन	सिंह	धनु	कन्या	मकर	मेष	वृष
राहु घात	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मकर	मीन	मेष	वृष	धनु	कुम्भ	मिथुन

वार्षिकराशिफल
संवत् 2075 शक 1940 सन् 2018-19

डॉ. श्यामदेव मिश्र

मेष राशि- (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,अ)

यह बारह राशियों में प्रथम राशि है। चूँकि इसका स्वामी मंगल है। अत: इस राशि के लोग स्वभाव से ही पराक्रमी, साहसी, स्वाभिमानी, हठधर्मी और परोपकारी होते हैं। इस राशि वालों के लिए वर्ष भर मंगलवार, गुरुवार तथा शनिवार प्राय: कार्यों के लिए अनुकूल रहेंगे। मेष राशि वाले जातकों के अष्टम भाव में गुरु का संचरण वृश्चिक राशि में होगा। यद्यपि यह मित्र राशि है तथापि अष्टम भाव में गुरु की स्थिति रहेगी। अत: जीवन के कुछ पक्षों में अच्छे और कुछ में खराब फल मिलेंगे। लोहा, पीतल, स्टील आदि धातुओं के व्यापार से या इनके शेयर से या इनसे सम्बन्धित संस्थाओं में उद्योग से आकस्मात लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किन्तु इसके साथ ही यात्रा से कष्ट की सम्भावना बढ़गी। मान-सम्मान हेतु अधिक परिश्रम और धनव्यय होने के संभावना भी रहेगी। शारीरिक कष्ट बढ़ने के साथ-साथ दाम्पत्य सुख भी कम रहेगा। गुरु के अशुभ फल के निवारणार्थ गुरु मन्त्र का जप गुरु सम्बन्धित वस्तुओं का दान और अपने गुरु की आराधना करनी चाहिए। धनु राशि में शनि की स्थिति भी मिश्रित फल देने वाली रहेगी। चूँकि मेष राशि वालों के लिए शनि दशम और एकादश भाव का स्वामी होकर मित्र गुरु की राशि में भ्रमण कर रहा है। अत: कार्यक्षेत्र में बिलम्ब से किन्तु निश्चित सफलता मिलेगी। भाग्यस्थ शनि कार्य हेतु यात्राएँ अधिक कराएगा। इन यात्राओं से कार्य सिद्ध होंगे। किन्तु शनि के कारण अनावश्यक विवाद से बचना होगा। शनि शुभता की वृद्धि के लिए शनि मन्त्र का जप, शनि की वस्तुओं का दान, नीलम धारण, हनुमान जी की आराधना विशेष लाभदायी रहेगी। मार्च-अप्रैल में अपव्यय, माता-पिता को शारीरिक कष्ट की संभावना है। मई महीने में शारीरिक कष्ट, कानूनी मामले की सफलता, यात्रा सम्भावित हैं। जून और जुलाई में कार्यक्षेत्र में सफलता के योग बनेगें, एवं कार्य निमित्त यात्राएँ सफल रहेगीं। अगस्त में शारीरिक में कमी रहेगी। तथा सितम्बर में संतान को कष्ट मिलने की संभावना है। अक्टूबर महीने में पुण्यप्रद कार्य होने की संभावना है। नवम्बर माह में पारीवारिक और आर्थिक सुख मिलने की संभावना है। दिसम्बर महीने में यद्यपि आर्थिक सम्पन्नता बढ़ेगी किन्तु स्वयं को और पिता को कष्ट मिलने की संभावना है। जनवरी में माङ्गलिक कार्य की संभावना है। इसके साथ ही धनागम और सम्मान मिलेगा। फरवरी में अति परिश्रम से कार्य में सफलता मिलेगी किन्तु स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मार्च अनुकूल रहेगा, मान सम्मान मिलेगा, और मङ्गलकार्य होने की प्रबल संभावना रहेगी।

वृष राशि - (ई,उ,ए,ओ,बा,बी,बू,वे वो)

इस राशि का स्वामी शुक्र है। वृष राशि के जातकों के लिए वर्ष भर बुधवार, शुक्रवार और शनिवार प्राय: कार्यों में सफलता के लिए अनुकूल रहेंगे। वर्ष भर लक्ष्मी या दुर्गा जी की आराधना प्रतिकूल प्रभावों को कम करने में सहायक होगी। शनि का अष्टम भाव में होना कार्य और भाग्य के लिए बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। कार्यों में अनावश्यक विलम्ब रहेगा। और बाधाएँ आएगीं। वाद-विवाद से बचना चाहिए। इस वर्ष की वृष राशि मनुष्य स्वयं की वाणी से स्वयं को ही कष्ट में डाल सकता है। मान-अपमान की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। अष्टमस्थ शनि की शान्ति अति आवश्यक है। इसके लिए शनिवार को तेल का दीपक जलाना, तेल, तिल, उड़द आदि का दान, नीलम धारण से अच्छे परिणाम मिलने की संभावना है। हनुमत् आराधना, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण का पाठ, सुन्दरकाण्ड का पाठ विशेष लाभदायक रहेगा। वर्ष के आरम्भ में तथा अक्टूबर मास से वर्ष के अन्त तक गुरु वृश्चिक राशि में रहकर दाम्पत्य सुख में एक ठहराव या उदासीनता तथा वर्ष के मध्य में षष्ठ भाव में जाकर शत्रु हीनता देगा। कर्क राशि में स्थित राहु यद्यपि अनावश्यक का भय एवं व्याकुलता बढ़ाएगा किन्तु पराक्रम में भी वृद्धि करेगा। केतु की नवम भाव में स्थिति धार्मिक कार्यों से मन को विरत करेगा। इस वर्ष मार्च और अप्रैल महीने में समृद्धि और सम्पन्नता बढ़ने की संभावना है। मांगलिक कार्यों की संभावना है किन्तु शारीरिक कष्ट बढ़ने की भी संभावना है। मई महीने में सुख और शान्ति रहेगी। जून महीने में त्वचा संबंधी विकार होने की संभावना है किन्तु आर्थिक सम्पन्नता बढ़ेगी। जुलाई महीने में उदर विकार अन्य शारीरिक कष्ट की संभावना है। इसके साथ ही जुलाई और अगस्त में यात्रा के योग हैं पराक्रम और सुख-शान्ति में वृद्धि होगी। सितम्बर और अक्तूबर मास में स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा, किन्तु शत्रुओं पर विजय मिलने की संभावना बढ़ेगी। नवम्बर में यद्यपि मनोविकार उत्पन्न होंगे किन्तु स्वास्थ्य की अनुकूलता भी बढ़ेगी। दिसम्बर मास में मांगलिक कार्य, विवाहितों को दाम्पत्य सुख, यश की प्राप्ति होगी। जनवरी मास में नेत्र-विकार की संभावना है किन्तु धनागम के भी योग बनेंगे। फरवरी में सन्तान-सम्बन्धी-सुखद वार्ता मिलने की संभावना है किन्तु स्वास्थ्य की प्रतिकूलता हो सकती है। मार्च महीना अनुकूल रहेगा। इस महीने में पराक्रम, सुख और सम्पन्नता में बढ़ोत्तरी रहेगी।

मिथुन राशि - (का,की,कु,घ,ङ,छ,के,को,हा)

मिथुन राशि वालों के लिए यह वर्ष अधिकांशतया अशुभ फल देने वाला होगा। इस राशि वालों के सप्तम भाव में शनि, द्वितीय भाव में राहू तथा केतु की स्थिति मन में व्यग्रता, पारिवारिक प्रतिकूलता तथा अनावश्यक कष्ट को जन्म देंगे। इसके साथ ही राहु-केतु की

स्थिति मानसिक विकार और धर्म-विरुद्ध आचरण को उत्पन्न करेगी। वर्ष के आरम्भ और अंत में गुरु की वृश्चिक राशि में छठे भाव में स्थिति कमर में दर्द और रक्तविकार को उत्पन्न कर सकते हैं। किन्तु वर्ष के मध्य में पंचम भाव में तुला राशि में स्थित होकर गुरु कष्ट को कम करेगा। मार्च और अप्रैल महीने में शत्रुओं के पराजय से सुख-शान्ति बढ़ेगी और धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति अधिक होगी। इसके साथ ही दाम्पत्य जीवन भी सुखमय रहेगा। मई मास भी अनुकूल रहेगा। कुछ शारीरिक कष्ट जिसमें व्रण, घाव आदि को छोड़कर प्राय: सुख की सम्भावना अधिक रहेगी। जून में अवश्य स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने की संभावना है किन्तु अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में प्रगति होगी। पारिवारिक सुख के साथ-साथ धनागम के भी योग बन सकते हैं। जुलाई महीने में शारीरिक कष्ट और मानसिक विकार बढ़ेगा किन्तु धन की प्राप्ति की पूरी संभावना भी है। अगस्त महीने में रक्त-दोष के कारण शारीरिक व्याधि की संभावना है किंतु शत्रु पक्ष कमजोर होगा। सितम्बर में सुख की वृद्धि होगी, धन-पुत्र-श्रीवृद्धि के भी योग है। अक्तूबर महीने में शारीरिक कष्ट बढ़ेगा, मन अशांत रहेगा किन्तु धीरे-धीरे शत्रु परास्त होंगे। नवम्बर में यद्यपि शारीरिक और पारिवारिक सुख रहेगा किन्तु इसके साथ ही स्वाभाव में उग्रता कार्य-क्षेत्र में विघ्न उत्पादित कर सकती है। दिसम्बर में सर्व-विध अनुकूलता बनी रहेगी। जनवरी में कुछ शारीरिक कष्ट रहेगा लेकिन शत्र पराजित होंगे। फरवरी महीने में चोट लगने की संभावना है इसके साथ ही रक्त-विकार से उत्पन्न होने वाले रोग हो सकते हैं। मार्च महीने में सन्तान को सुख, मांगलिककार्य, दाम्पत्य सुख मिलने के साथ ही धनागम के भी योग बनेंगे। शनि की शान्ति के लिए हनुमत् आराधना, हनुमान-चालीसा, बजरंग बाण का पाठ, सुन्दरकाण्ड का पाठ विशेष लाभदायक रहेगा। संतति सुखपूर्ण रहेगी किन्तु माता-पिता को कष्ट मिलने की संभावना है। राहु और केतु की शान्ति के लिए काले कौए या काले कुत्ते को भोजन कराना उत्तम रहेगा। गुरु की प्रसन्नता के लिए गुरुवार को जल में हल्दी और चावल डालकर केले के पौधे में डालना और केले के पौधे की पूजा करना अति लाभदायक रहेगा।

कर्क राशि - (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)

चूँकि गोचर में राहु कर्क और केतु मकर राशि में हैं अत: कर्क राशि वालों के लिए यह वर्ष तनावपूर्ण और विवादग्रस्त रहने की संभावना है। कर्क राशि में उत्पन्न जातकों के लिए सोमवार, मंगलवार और गुरुवार अत्यंतफल देने वाले हैं। माता को शारीरिक कष्ट रहने की संभावना है। मित्रों और पड़ोसियों से अनावश्यक का विवाद होने की संभावना है। शारीरिक कष्ट के साथ-साथ कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक का तनाव बना हेगा। चूँकि शनि छठे घर में रहेगा अत: विवाद से शत्रु उत्पन्न होंगे तथापि उन पर विजय् प्राप्त होगी। पंचम भाव में स्थित गुरु बुद्धि और मन्त्र शक्ति या कौशल को बढ़ायेंगे। इसके साथ ही सन्तति- श्री की भी वृद्धि होगी मार्च - अप्रैल में प्राय: अनुकूल रहेगा। किन्तु कुछ शारीरिक कष्ट रहेगा। मई महीने में शारीरिक कष्ट रहेगा, धनागम के योग भी बन सकते हैं। यद्यपि जून में भी धनागम की संभावना रहेगी तथापि मानसिक विकारों के कारण व्यय की भी संभावना रहेगा। जुलाई में धनागमस और सुख साधनों में वृद्धि की संभावना रहेगी। किन्तु शत्रुओं से विवाद की भी संभावना है। इसके साथ ही शारीरिक कष्ट और पारिवारिक कलह के भी बढ़ने की संभावना है। अगस्त में भी शारीरिक कष्ट बना रह सकता है। यात्राफदायिनी रहेगी और सुख के साधनों की वृद्धि होगी। सितम्बर में धनागम और अन्य अनुकूलता बनी रहेगी किन्तु स्वास्थ्य की प्रतिकूलता भी बनी रहेगी। अक्तूबर में स्त्री और संतति का सुख प्राप्त होने की संभावना है। नवम्बर में शारीरिक कष्ट के साथ-साथ मानसिक विकार के कारण मन अशांत रह सकता है। संतति और पति या पत्नी को कष्ट संभावित है। दिसम्बर महीने में प्रतिष्ठा बढ़ेगी और शत्रु परास्त होंगे। जनवरी में विद्यार्थियों के लिए अनुकूलता तथा धनागम बढ़ेगा किन्तु संतान को कष्ट और शारीरिक कष्ट की भी संभावना है। फरवरी महीने में भी शारीरिक कष्ट बने रहने की संभावना है, पत्नी/पति को भी कष्ट हो सकता है। मार्च में भी न केवल स्वयं को बल्कि पति/पत्नी को भी शारीरिक कष्ट बना रह सकता है किन्तु साथ में धन और ऐश्वर्य की भी वृद्धि की संभावना है।

सिंह राशि - (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)

सिंह राशि वाले जातकों के लिए यह वर्ष सामान्य फल देने वाला होगा। एक तरफ परिश्रम और उद्यम से फल की प्राप्ति होगी तो दूसरी तरफ पारिवारिक सामंजस्य बिगड़ने की भी संभावना है। एतदर्थ इस राशि वाले जातक कार्य की सफलता हेतु रविवार, मंगलवार और गुरुवार को कार्य का प्रारम्भ करें। परिवार में मांगलिक कार्य होने की संभावना भी है। किन्तु स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। चूँकि संपूर्ण वर्ष राहू का छठे घर में तथा केतु का बारहवें घर में संचरण होगा इसलिये धनागम के स्रोत खुलेंगे किन्तु साथ ही साथ अपव्यय की भी स्थिति बनेगी। प्रतिकूल स्वास्थ्य के कारण भी धन का व्यय संभावित है। वर्ष के आरम्भ में गुरु का संचरण वृश्चिक अर्थात् चौथे घर में किन्तु अप्रैल से सितम्बर तक तीसरे घर में तुला में पुन: अक्तूबर से फरवरी तक चौथे घर में एवं वर्ष के अन्त में धनु राशि में यानि पाँचवे घर में स्थिति होने से शत्रु-विजय, वाहन का सुख तथा संतान विशेषकर पुत्र की प्राप्ति के योग बन रहे हैं। चूँकि शनि वर्ष पर्यन्त धनु राशि में पंचम भाव में भ्रमण करेंगे इसलिए संतान को कष्ट मिलने की संभावना बनेगी। मार्च और अप्रैल महीने में धन-प्राप्ति के साथ-साथ शारीरिक और पारिवारिक सुख में कमी के आसार हैं। मई में संतान को कष्ट मिलने की संभावना है किन्तु धन की प्राप्ति और शत्रु के पराभव के भी योग बन रहे हैं। जून-जुलाई स्वास्थ्य और लाभ की दृष्टि में साधारण सुख के साथ-साथ वाहन-धन-यश की प्राप्ति के भी योग हैं शत्रु परास्त होंगे लेकिन संतति को कष्ट भी मिलने की संभावना है।

कन्या राशि - (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)

कन्या राशि वालों के लिए गुरु इस वर्ष सामान्य फल देने वाला रहेगा। इस राशि वाले जातकों के लिए बुधवार, शुक्रवार और शनिवार कार्यों की सफलता हेतु अनुकूल रहेंगे। क्योंकि इस वर्ष के आरम्भ और समाप्ति में गुरु वृश्चिक राशि में अर्थात् तीसरे घर में तथा आरम्भ और मध्य में दूसरे घर में तुला राशि में रहेगा। इस कारण कुटुम्ब और सहोदरों की स्थिति सुदृढ होगी किन्तु उनके प्रति जातक का सम्बन्ध उदासीन रहेगा। जातक सुखी, कीर्तिवान्, धन से युक्त और शत्रुओं पर उसे विजय प्राप्त होगी। शनि शारीरिक कष्ट को बढ़ा सकता है अत: शनि की शान्ति हेतु उपाय करने होंगे। एतदर्थ हनुमान जी की पूजा, आराधना, शनिवार को तिल आदि का दान, तेल का दीपदान, तिल के लड्डुओं का भोग चढ़ाना अति लाभदायक रहेगा। केतु के पाँचवें घर में संचरण करने के कारण कमर के हिस्से में दर्द और अन्य उदर संबंधी विकार होने की संभावना है इसके साथ ही विचारों के विकृत होने का भी खतरा केतु उत्पन्न करता है। इसके साथ ही राहु का ग्यारहवें घर में स्थिति धनागम और संतान सुख बढ़ाता है। मार्च और अप्रैल के महीने में धनागम की संभावना के साथ-साथ रोग की भी संभावना है। मई-जून में यश की बढ़ोत्तरी के साथ ही धन का लाभ भी हो सकता है। शत्रु का पराभव होने के साथ ही मांगलिक कार्य होने की पूरी संभावना है। जुलाई और अगस्त महीने में भी यश की प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इसके साथ ही धनागम और पुण्य-प्राप्ति की स्थिति बनेगी। इसके साथ ही संतति से संबंधित शुभ समाचार मिल सकता है। सितम्बर और अक्टूबर महीने में शारीरिक कष्ट, भय, विषाद व चिंता बनी रहने की संभावना है। नवम्बर से जनवरी तक के मध्य शासन के सहयोग मिलने के साथ ही सम्मान की प्राप्ति होगी, पराक्रम से कार्य तो सिद्ध होंगे ही इसके साथ ही धनागम भी होने की प्रबल संभावना है। किन्तु शोक-संबंधी समाचार भी मिल सकता है। मार्च में शारीरिक और अन्य कष्ट कम होंगे किन्तु वाहन प्राप्ति के योग के साथ अन्य सुख-सुविधा के साधन भी मिलने की संभावना है।

तुला राशि - (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)

तुला राशि वाले जातकों के लिए यह वर्ष उपलब्धियों से भरा रहने की संभावना है। इस राशि के जातकों के लिए बुधवार, शुक्रवार और शनिवार का दिन कार्य की सफलता हेतु शुभ है। राहु की दसवें घर में तथा केतु की चौथे घर में संचरण शारीरिक कष्ट, वाहन आदि से दुर्घटना की स्थिति को जन्म दे सकता है। राहु-केतु की शान्ति हेतु इनका मन्त्रों का जप करना चाहिए। काले कुत्ते या काले कौए को भोजन कराना चाहिए। हनुमान जी की भी उपासना या भैरव की उपासना करना भी कल्याणकारी होगा। चूँकि वर्ष में कुछ समय तक गुरु इस राशि में तथा और कुछ समय तक दूसरे घर में संचरण करेगा अत: यह शारीरिक सुख के साथ-साथ धन, शान्ति और कीर्ति की वृद्धि करेगा। शनि भी धनागम और प्रतिष्ठा दिला सकता है। मार्च और अप्रैल महीने में कीर्ति व धनादि में वृद्धि होगी, कुछ पारिवारिक विवाद के साथ शारीरिक कष्ट संभव है। मई-जून में दुर्घटना के साथ कुछ शोक समाचार मिलने की संभावना है। मांगलिक कार्य होने की संभावना के साथ धन और यश की प्राप्ति की भी संभावना बनेगी। जुलाई और अगस्त में धनागम होने की संभावना है। शारीरिक कष्ट, राज्य से भ्य व अन्य शोक के समाचार प्राप्त हो सकते हैं। सितम्बर से दिसम्बर तक मान-सम्मान का लाभ होने की संभावना है। इसके साथ ही शत्रुओं पर विजय की संभावना है। इस अवधि में शारीरिक कष्ट, शासकीय भय और मानसिक व्यग्रता बढ़ेगी। जनवरी से मार्च तक मान-सम्मान में वृद्धि, धन-लाभ, शत्रुओं पर विजय, शारीरिक पीड़ा शासन से भय पुत्र-प्राप्ति के योग और पति/पत्नी को कष्ट की संभावना है।

वृश्चिक राशि - (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)

इस राशि वालों के लिए सोमवार, मंगलवार और शनिवार का दिन सफलता-प्राप्ति हेतु शुभ है। शनि की साढ़े साती का प्रभाव वर्ष भर रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे और शारीरिक कष्ट भी बढ़ेगा। मन में व्याकुलता और भय बना रहेगा और आलस्य की अधिकता रहेगी। शारीरिक कष्ट और विवाद में धन का अपव्यय होगा। शनि की शान्ति के लिए हनुमत् आराधना, हनुमान-चालीसा, बजरंगबाण का पाठ, सुन्दरकाण्ड का पाठ विशेष -लाभदायक रहेगा। गुरु के द्वादश भाव में रहने के कारण परिवार और संतान सुख में कमी आने के साथ कौशल की कमी भी रहेगी। धार्मिक कार्यों में सद्व्य होने के साथ-साथ कष्ट के निवारण हेतु भी अपव्यय होने की सम्भावना है। राहु और केतु के क्रमश: तीसरे और नवें घर में रहने के कारण धन और धर्म में वृद्धि और शारीरिक कष्ट में कमी आ सकती है। मार्च और अप्रैल में शारीरिक कष्ट की संभावना के साथ ही धन के व्यय होने और मित्रों या पड़ोसियों से विवाद की स्थिति बनेने की संभावना भी है। मई और जून महीने में पति/पत्नी को कष्ट तथा स्वयं को भी ज्वर आदि की संभावना है। जुलाई और अगस्त महीने में शारीरिक कष्ट में कमी की सम्भावना के साथ धन और प्रतिष्ठा में बढोत्तरी की भी संभावना है। सितम्बर और अक्टूबर में पराक्रम के द्वारा धनागम, सम्मान-प्राप्ति, स्वास्थ्य और धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति के योग बन रहे हैं। नवम्बर और दिसम्बर के महीने में यद्यपि आरम्भ में भय व व्याकुलता रहेगी जिससे स्वास्थ्य प्रतिकूल रह सकता है किन्तु अन्त में सम्मान और धन की प्राप्ति भी होगी। जनवरी से लेकर मार्च तक का समय प्राय: अनुकूल रहेगा। इसमें शारीरिक सुख के साथ ही मानसिक और आर्थिक सुक की भी प्रबल संभावना है। धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति सामान को बढाएगी और शत्रु पराजति होंगे।

धनु राशि - (ये,यो,भा,भी,भू,ध,फ,ढ़,भे)

धनुराशि वालों के लिए भी शनि की साढे साती वर्ष भर चलेगी। इस कारण शनि संबंधी वात रोग से इस राशि के जातक पीड़ित होंगे। विशेषकर उदर-संबंधी कष्ट होने की संभावना अधिक है। शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए हनुमान जी की पूजा-अर्चना, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानस्तवन या सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। घोड़े की नाल अथवा नाव की कील की अंगूठी धारण करना चाहिए। शनिवार को तिल-मिश्रित जल पीपल पर चढ़ाने और शनि मंदिर में तेल का दीपक जलाने से भी शनि जनित कष्ट में राहत मिलती है। इस राशि वालों के लिए रविवार, मंगलवार और गुरुवार का दिन अनुकूल रहता है। गुरु के भी वर्ष के आरम्भ और प्राय: अंत में बारहवें भाव में और शेष समय में ग्यारहवें भाव में होने से क्रमश: रोग, कष्ट की स्थिति और शान्ति, समृद्धि की भी स्थिति बनाने की संभावना है। मार्च-अप्रैल महीने में शारीरिक कष्ट और पारिवारिक शोक की संभावना के साथ ही कुछ धनागम के भी योग बनते हैं। मई-जून में भी शारीरिक कष्ट के साथ ही शत्रुओं से भी कष्ट की स्थिति बनेगी किन्तु कालान्तर में शत्रुओं का पराभव होने की संभावना बन सकती है। सितम्बर और अक्टूबर महीने में नेत्र-विकार, धनक्षय, शत्रुभय, वात-पीड़ा, उदररोग, शासन-सत्ता का सहयोग पुत्र-प्राप्ति के योग बन सकते हैं। जनवरी और फरवरी में मान-सम्मान में वृद्धि, धनलाभ, पुत्र-कष्ट शारीरिक कष्ट और अपव्यय की संभावना बन सकती है। मार्च का महीना भी पूर्वोक्त कष्टों को देने वाला रहेगा किन्तु इसके साथ ही परिश्रम से धन-मान-सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना है।

मकर राशि - (भो,जा,जी,खी,खू,खे,खो,गा,गी)

पूर्वोक्त वृश्चिक और धनु राशियों के समान ही मकर राशि भी शनि की साढ़े साती से वर्ष भर प्रभावित रहेगी। किन्तु इसका फल इन दो राशियों से भिन्न रहेगा। चूँकि न सिर्फ मकर शनि की अपनी राशि है अपितु वह अपनी राशि से ग्यारहवें गर में बैठा है जो की लाभ का भाव होने के साथ ही उपचय भावों में अन्यतम है। अत: मकर राशि वालों के लिए शनि का अनुकूल प्रभाव विशेषकर लाभ के क्षेत्र में मिलाने की संभावना है किन्तु इसके साथ ही यह शारीरिक रोग भी दे सकता है। अत: शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए हनुमान जी की पूजा-अर्चना, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण , हनुमानस्तवन या सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। घोड़े की नाल अथवा नाव की कील की अंगूठी धारण करना चाहिए। शनिवार को तिल-मिश्रित जल पीपल पर चढ़ाने और शनि मंदिर में तेल का दीपन जलाने से भी शनिजनित कष्ट में राहत मिलती है। इस राशि वालों के लिए शुक्रवार और शनिवार का दिन अनुकूल रहता है। गोचर में गुरु दसवें या ग्यारहवें भाव में जब होगा तब अर्थागम होने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी काल की अनुकूलता बनी रहेगी किन्तु जब गोचर में गुरु बारहवें घर में आयेगा तो मानसिक और शारीरिक कष्ट दे सकता है। मार्च और अप्रैल में शारीरिक कष्ट बढ़ने के साथ ही मानसिक कष्ट में भी वृद्धि की संभावना है। मई से लेकर अगस्त तक के महीनों में दुर्घटना, घाव, पुत्र कष्ट, घर में या पड़ोसियों से विवाद की स्थिति बन सकती है। धन हानि और स्त्री कष्ट की भी संभावना है। सितम्बर और अक्टूबर महीने में स्थिति अनुकूल रहेगी। वाद-विवाद में जीत के साथ मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। धनागम के साथ ही अन्य कार्य भी अनुकूलता के साथ सम्पन्न होगे। नवम्बर और दिसम्बर में नेत्र-विकार, शारीरिक कष्ट से धनक्षय, पुत्र से सम्बन्धित शुभ समाचार की प्राप्ति हो सकती है। जनवरी और फरवरी के महीने में शारीरिक कष्ट और अर्थागम की संभावना है। मार्च के महीने में मान-सम्मान मिलेगा किन्तु शारीरिक और मानसिक विकार भी बने रहेंगे। राहु और केतु की शान्ति भी इस राशि के जातक के लिए परमावश्यक है। इस राशि वालों के लिए काले, हरे और नीले रंग का प्रयोग अत्यंत शुभदायक है।

कुम्भ राशि - (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,दा)

कुम्भ राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्यतया सुख और समृद्धि को देने वाला रहेगा। इस वर्ष मान-सम्मान और पद में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन भी सुखमय होने की संभावना है। परिवार में शुभकार्य होने की भी संभावना है। शनि की गोचर में एकादश भाव में स्थिति लाभ और उन्नित की संभावना को बढ़ायेगा। जबकि कर्क राशि में छठे घर में स्थित राहु शत्रु को पराभूत करने में जातक की मदद करेंगे। हालांकि केतु मानसिक कष्ट को बढा सकता है। केतु की शान्ति के लिए काले कुत्ते को भोजन कराना, लहसुनिया धारण करना तथा शिव की पूजा करना चाहिए। गुरु गोचर में इस राशि वाले जातकों के लिए आरम्भ में नवें घर में मध्य में दसवें तथा अंत में ग्यारहवें भाव में होने के कारण वर्ष भर भाग्य, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा। नए गृह आदि के निर्माण की संभावनाएँ बन सकती हैं। मार्च और अप्रैल में द्रव्य की प्राप्ति के साथ भाग्य और पराक्रम में वृद्धि होगी। इसके साथ ही शत्रुओं का पराभव होने की संभावना है। मई और जून की महीने में पुत्र के साथ-साथ धन की प्राप्ति की संभावना है। दाम्पत्य सुख तो बढेगा किन्तु संतान और स्वयं को शारीरिक कष्ट भी बढ़ सकता है। शासन का सहयोग प्राप्त हो सकता है और वाहन व धन की प्राप्ति का भी योग बन सकता है। इस अवधि में मांगलिक कार्य की भी संभावना है। जुलाई और अगस्त महीने में स्वास्थ्य में सुधार आएगा और शत्रु पराजित होंगे। पति/पत्नी को कष्ट की संभावना रहेगी किन्तु भाग्योदय भी इस अवधि में होना संभावित है। सितम्बर से अक्टूबर महीने में पद -प्रतिष्ठा बढ़ेगी, शत्रुओं की पराजय की भी संभावना है किन्तु कान में कष्ट भी संभावित है। नवम्बर और दिसंबर माह में भी शारीरिक कष्ट की संभावना है किन्तु धन, मान-सम्मान पद-प्रतिष्ठा, धन और संतति का लाभ संभव है। इस राशि के जातकों के लिए बुधवार, शुक्रवार और शनिवार का दिन अभीष्ट की सिद्धि के लिए शुभ है।

मीन राशि -(दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो चा,ची)

मीन राशि वाले जातकों के लिए यह वर्ष मिश्रित फल देने वाला रहेगा। इस राशि के जातकों के लिए सोमवार, मंगलवार और गुरुवार का दिन सर्वाधिक लाभप्रद है। इस राशि वालों के लिए भगवान शिव और हनुमान जी की उपासना अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकती है। इसमें पूवार्ध अधिक अनुकूल तथा उत्तरार्ध कुछ प्रतिकूल भी रहेगा यदि सब मिलाकर विचार करें तो मीन राशि वालों के लिए यह वर्ष अच्छा ही माना जायेगा। चूँकि शनि इस वर्ष गोचर में धनु राशि में है अत: इस राशि के लिए दसवें घर में रहेगा। यह पद-प्रतिष्ठा को बढाएगा। किन्तु मन में विकार के कारण पापकर्म में रत रहता है। राहू चूँकि पंचम भाव में भ्रमण करता है। अत: संतान को कष्ट मिल सकता है। या सन्तान प्राप्ति में बाधा हो सकती है। केतु के एकादश भाव में होने के कारण धन और कीर्ति की वृद्धि की संभावना है। गुरु की नवम भाव में स्थिति धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त करेगा। परिवार की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। अत: शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए हनुमान जी की पूजा-अर्चना, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमत-स्तवन या सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। घोड़े की नाल अथवा नाव की कील की अंगूठी धारण करना चाहिए। शनिवार को तिल-मिश्रित जल पीपल पर चढ़ाने और शनि मंदिर में तेल का दीपक जलाने से भी शनि जनित कष्ट में राहत मिलती है। मार्च और अप्रैल महीने में ज्वारादि पीड़ा, स्थानान्तरण की संभावना के साथ धन का आगम भी होगा। मांगलिक कार्य भी होने की संभावना है। मई-जून मास में पराक्रम से धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ति संभव है। किन्तु इसके साथ धन का व्यय और शोकप्रद समाचार मिलने की संभावना होगी। जुलाई और अगस्त में मन व्याकुल हो सकता है। इसके साथ ही संतति को कष्ट और मानसिक विकार की संभावना है। सितम्बर और अक्टूबर महीने में धार्मिक कृत्य करने की संभावना है। पत्नी को कष्ट, यात्रा के योग, गुणों में वृद्धि, ज्वरादि से कष्ट, अकस्मात धन-लाभ और प्रतिष्ठा का लाभ संभावित है। नवम्बर और दिसम्बर महीने में दाम्पत्य सुख और समृद्धि की संभावना है। धार्मिक कार्यों के साथ-साथ भाग्य में भी वृद्धि की प्रबल संभावना है। जनवरी और फरवरी महीने में वात संबंधी रोग, दुर्घटना, कर्ण-शूल आदि की संभावना है। इसके साथ ही पड़ोसियों और मित्रों से विवाद की संभावना बन सकती है। धन का अपव्यय भी संभावित है। किन्तु इसके साथ ही संतति प्राप्ति का भी सुख मिल सकता है। मांगलिक कार्यों के साथ ही पद प्रतिष्ठा में वृद्धि, धनागम, वंश-वृद्धि की भी संभावना है।

ग्रहों का गोचरीय वेधविचार

सूर्य छठे-बारहवें, दशवें-चौथे, तीसरे-नवें, ग्यारहवें-पाँचवें स्थान में क्रम से शुभ और बिद्ध होता है, अर्थात् मनुष्य की जन्मराशि से छठवीं राशि में सूर्य हो तो शुभफल देनेवाला होता है। यदि १२वीं राशि में शनि को छडकर कोई अन्यग्रह स्थित हो तो सूर्य विद्ध हो जाता है, अर्थात् छठवें स्थान का सूर्य उस मनुष्य को शुभफल न देकर अशुभ फल देने वाला हो जाता है। ऐसे ही १०वीं राशि पर सूर्य शुभ, यदि चौथी राशि पर शनि के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो विद्ध हो जाता है । एवं तीसरे शुभ-नवमस्थ ग्रह से विद्ध, ११वें शुभ-पंचमस्थ ग्रह से विद्ध हो जाता है। मंगल, शनि और राहु ये ३ ग्रह छठी राशि पर शुभ होते हैं, यदि नवीं राशि पर कोई ग्रह हो तो विद्ध हो जाते हैं। यहाँ शनि-सूर्य का वेध नहीं होता है। एवं ११वें शुभपंचमस्थ ग्रह से विद्ध, तीसरे शुभ बारहवीं राशि पर स्थित ग्रह से विद्ध हो जाते हैं ।

चन्द्रमा जन्मराशि से १०वें शुभ-चतुर्थस्थ ग्रह से विद्ध, तीसरे शुभ नवमस्थ ग्रह से विद्ध, ११वें शुभ आठवें स्थित ग्रह से विद्ध, जन्मराशि का शुभ पाँचवे स्थित से विद्ध, ६वें शुभ द्वादशस्थ ग्रह से विद्ध, ७वें शुभ द्वितीयस्थ ग्रह से विद्ध हो जाता है (याहाँ चन्द्र-बुध का वेध नहीं होता है)। बुध दूसरे शुभ ५वें से विद्ध, चौथे शुभ ३ रे से विद्ध, ६ ठे शुभ ९मस्थग्रह से विद्ध, ८ वें शुभ जन्मराशि पर कोई ग्रह हो तो विद्ध, १० वें शुभ आठवें से विद्ध, ११ वें शुभ बारहवें स्थित ग्रह से विद्ध हो जाता है । बृहस्पति ५-४, २-१२, ९-१०, ५-३, ११-३ स्थानों में क्रमश: शुभ और विद्ध होता है। शुक्र १-८, २-७, ३-१, ४-१०, ५-९, ८-५, ९-११, १२-६, ११-३ स्थानों में क्रम से शुभ और विद्ध होता है । यथा ग्रहों का वेधसारणी -

सूर्य					चन्द्र						शुक्ले विशेष:		
शुभ	६	१०	३	११	१०	३	११	१	६	७	२	९	५
वेध	१२	४	९	५	४	९	८	५	१२	२	६	८	४

बुध					गुरु						भौ.शा.रा.के.		
शुभ	२	४	६	८	१०	११	५	२	९	२	११	६	११	३
वेध	५	३	९	१	८	१२	४	१२	१०	३	३	९	५	१२

शुक्र					चन्द्र					
वेध	८	७	१	१०	९	५	११	६	३	
शुभ	१	२	३	४	५	८	९	१२	११	

ग्रहण विवरण (2018-19)

इस वर्ष समस्त भूमण्डल पर तीन सूर्यग्रहण एवं दो चन्द्रग्रहण दिखाई देंगे इनमें से एक चन्द्रग्रहण ही भारत में दृश्य होगा। इनका विवरण निम्न प्रकार से है -

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त परिचय

१) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** - यह ग्रहण १३ जुलाई २०१८ को भा.स्टै.टा. के अनुसार ७घ.१९मि. से ९घ.४४मि. तक आस्ट्रेलिया के दक्षिणी भाग में ही खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। भारत में अदृश्य है।

२) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** - यह ग्रहण ११ अगस्त २०१८ को भा.स्टै.टा.के अनुसार १३घ.३२मि. से १७घ.०१मि. तक चाइना, मंगोलिया, कजाकिस्तान, रशिया एवं उत्तरी ध्रुव के आसपास दिखाई देगा। भारत में अदृश्य है।

३) **खण्डग्रास सूर्यग्रहण -** यह ग्रहण ५/६ जनवरी २०१९ को भा.स्टै.टा के अनुसार २९घ.०४मि. से ९घ.१९मि. तक मध्यपूर्वी चीन, जापान, उत्तरी तथा दक्षिणी कोरिया, उत्तरपूर्वी रूस, मध्यपूर्वी मंगोलिया, प्रशान्त महासागर, अलास्का के पश्चिमी तटों में ही दिखाई देगा। भारत में अदृश्य है।

४) **खग्रास चन्द्रग्रहण -** यह ग्रहण २१ जनवरी २०१९ को भा.स्टै.टा. के अनुसार प्रात: ९घ.४मि.से १२घ.२१मि. तक यूरोप के देशों, मध्यएशिया, सम्पूर्ण अफ्रीका, दक्षिणी तथा उत्तरी अमरीका, हिन्दमहासागर में ही दिखाई देगा। भारत में अदृश्य है।

भारत में दृश्य चन्द्र ग्रहण विवरण

यह खग्रास चन्द्रग्रहण २७/२८ जुलाई २०१८ ई. शुक्रवार को सम्पूर्ण भारत में दृश्य होगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का विवरण निम्न प्रकार से है -

ग्रहण प्रारम्भ (स्पर्श काल)-		२३.५४।
सम्मीलनकाल	-	२५.००।
ग्रहण मध्यकाल	-	२५.५२।
उन्मीलनकाल	-	२६.४४।
ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल)-		२७.४९।

इस ग्रहण का सम्पूर्ण स्थितिकाल ३ घण्टे ५५ मिनट तथा विमर्दकाल १ घण्टा ४४ मिनट है। इस ग्रहण का सूतक भोपाल में चन्द्रोदय के पश्चात् यह ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण दृश्य होगा इस ग्रहण का सूतक २७ जुलाई २०१८ को मध्याह्न १४.५४ से प्रारम्भ हो जायेगा।

ग्रहण सूतक के समय बच्चों, गर्भवती स्त्रियों, वृद्धों एवं अशक्त जनों को छोड़कर अन्य लोगों को भोजनादि ग्रहण नहीं करना चाहिए। ग्रहण समय में स्नान, जप, दान इत्यादि का अत्यधिक महत्त्व शास्त्रों में बताया गया है, जैसे कि भास्कराचार्य जी कहते हैं -

बहुफलं जपदानहुतादिके, स्मृतिपुराणविद: प्रवदन्तिहि। सदुपयोगि जने सचमत्कृति, ग्रहणमिन्द्रिनयो: कथयाम्यत:।। (सि.शि.चन्द्र.श्लो.१)

ग्रहण का राशिफल - इस ग्रहण का स्पर्श से मोक्ष तक का स्थितिकाल मकर राशिगत उ.षा. नक्षत्र को स्पर्श करके श्रवण नक्षत्र में मोक्ष को प्राप्त होता है। अत: इस नक्षत्र एवं राशि वाले जातकों के लिए यह ग्रहण विशेष रूप से कष्टदायी रहेगा। मेषादि द्वादश राशियों में उत्पन्न जातकों के लिए ग्रहण फल निम्न प्रकार से रहेगा। मेष - शारीरिक एवं पारिवारिक सुखलाभ। वृष - रोग अपमान एवं खर्च की अधिकता। मिथुन - चिन्ता एवं कष्ट। कर्क - स्त्री/पतिकष्ट एवं अपमान। सिंह - कार्यसिद्धि एवं सुख। कन्या - सन्तान कष्ट, चिन्ता, अपव्यय एवं भय। तुला - कष्ट एवं अपमान। वृश्चिक - कार्यसिद्धि एवं धनवृद्धि। धनु - धनहानि एवं पारिवारिक कलह। मकर -चोटभय एवं कष्ट। कुम्भ - धन का अपव्यय एवं वाणिज्य हानि। मीन -धनलाभ एवं कार्यसिद्धि।

बृहत्संहिता के अनुसार ग्रहण का फल इस प्रकारसे है -हन्यान्मृगे तु झषमन्त्रिकुलानि नीचान्। मन्त्रौषधीषु कुशलान् स्थविरायुधीयान्।। (बृ.सं.रा.चार.श्लो.४१)

अर्थात् मकरराशिगत सूर्य या चन्द्र ग्रहण होने पर मत्स्य, मन्त्रियों के कुल के लोगो, नीचकर्म करने वालों, मन्त्र व औषधि का ज्ञान रखने वालों, वृद्धों एवं शस्त्र धारण करने वालों के लिए कष्टकारक होता है।

मुहूर्त्तविचार

पञ्चाङ्ग में यथासम्भव अधिकाधिक विशुद्ध मुहूर्त्तों को देने का प्रयास किया गया है। तथापि विद्वज्जनों के सुविधा हेतु कुछ मुख्य मुहूर्तों के लिये अपेक्षित काल शुद्धि का विवरण बिन्दुवार प्रस्तुत किया जा रहा है जिसकी सहायता से वे स्वयं भी मुहूर्त्त निर्णय कर सकते हैं।

गर्भाधान मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रित: १२ रात्रिं यावत्। ◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ । क्षीणचन्द्र वर्जित। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र । ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, मृगशि, उत्तराषाढ़ा,उत्तराफाल्गुनी,उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी। ◆ **लग्नशुद्धि** - शुभै: केन्द्रत्रिकोणगै:, पापैस्त्र्यायारिगै:, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

सीमन्तपुंसवन मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** पुंसवन गर्भ से तृतीय मास में करना चाहिए। सीमन्तोन्नयन षष्ठ वा अष्टम मास में मासाधिपति बलयुक्त होने पर करना चाहिए।◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्लपक्ष में। कृष्णपक्ष में पञ्चमी तक। ◆ **वार -** सोम, मङ्गल, गुरु वार में शुभ। मतान्तर से शुक्र, सोम वार को पूर्वाह्न में। ◆ **नक्षत्र -** मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, उत्तरा ३ (जन्मनक्षत्र त्याज्य है)। ◆ **लग्नशुद्धि** - १,४,५,७,९,१० भावों में शुभग्रह, २, ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र तथा ४, ८, १० में पापग्रह वर्जित।

जातकर्म मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** जातक का ग्रहदोष निवारण के लिए तथा आयु: श्रीवृद्धि हेतु जन्मकाल में वा एकादश या द्वादश दिन में पिता को जातकर्म करना चाहिए। ◆ **नक्षत्र -** चित्रा, अनुराधा, रेवती, उत्तरा ३, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्रों में,तिथि पूर्णिमा छोड़कर अन्य शुभ तिथियों में। ◆ **लग्नशुद्धि** - शुभ लग्नों में शुद्धि।

नामकरण मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** ब्राह्मणों का ११, १२ दिन में। क्षत्रियों का१३ दिन में। वैश्यों का १६ दिन में। शूद्रों ३१ दिन में नामकरण शुभ है। ◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र वार में शुभ। पूर्वाह्ण में शुभ। मध्याह्न में मध्यम। ◆ **नक्षत्र -** स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्, उत्तरा ३, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा। ◆ **लग्नशुद्धि** - १,४,५,७,९,१० भावों में शुभग्रह, २, ३, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र, ३, ६, ११स्थानों में पापग्रह तथा, १० में पापग्रह वर्जित, शुभग्रह दृष्ट लग्न में, शुभ नवांश में उत्तरायण में शुद्धसमय में नामकरण करना चाहिए।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, १०, १३ एवं पूर्णिमा। क्षीणचन्द्र वर्जित। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र । ◆ **नक्षत्र -** जन्म नक्षत्र एवं अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा. एवं रेवती।◆ **लग्नशुद्धि -** जन्मलग्न व जन्म राशि से अष्टमलग्न व नवांश वर्जित। मेष, वृश्चिक व मीन राशि के लग्न छोडकर अन्य शुभ लग्न। दशम भाव में चन्द्र के अतिरिक्त अन्य ग्रह वर्जित। प्रथम, षष्ठ व अष्टमभाव में चन्द्रवर्जित है।◆ **विशेष -** गुरु शुक्रास्तादिदोष विचारणीय नहीं। बालकों का अन्नप्राशन - ६, ८, १०, १२ मासों में। बालिकाओं का अन्नप्राशन - ५, ७, ९, ११ मासों में।भद्रारहित पूर्वाह्ण काल शुभ।

कर्णवेध मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** १२, ६ मास में व विषमवर्ष में, रिक्ता एवं समवर्ष त्याज्य है।

◆ **कालशुद्धि -** सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। गुरु-शुक्रास्तादि विचार आवश्यक। भद्रारहित पूर्वाह्ण एवं मध्याह्न में ही कर्णवेध उत्तम रहता है। ◆ **तिथि -** सामान्यत: रिक्ता व अमावस्या तिथि वर्जित। शेष तिथियां शुभ। ◆ **वार -** चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु व मीन लग्न प्रशस्त। लग्न से अष्टम भाव शुद्धि।

चूडाकरण मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** चैत्र रहित उत्तरायण। गुरुशुक्रास्तादि शुद्धि आवश्यक। भद्रा रहित पूर्वाह्ण व मध्याह्न शुभ। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, १०, ११ एवं १३। ◆ **वार -** बुध, चन्द्र, शुक्र, गुरु। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, एवं रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, तुला, मिथुन, कन्या, कर्क, धनु व मीन लग्न एवं इनके नवांश प्रशस्त। जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टम लग्न वर्जित । अष्टम स्थान शुद्ध। केन्द्र (१, ४, ७, १०) में क्षीणचन्द्र, मंगल, शनि व सूर्य अशुभ।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण, गुरु व शुक्र के अस्तादि शुद्धि का विचार करना चाहिए। भद्रा एवं अशुभयोगवर्जित।◆ **तिथि -** २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ ।◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु,

शुक्र। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, आर्द्रा, पुन, पुष्य, हस्त, चि., स्वा., अनु., श्र. व रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, मिथुन, कन्या, धनु, व मीन लग्न शुभ। सिंह, वृश्चिक, व कुम्भ मध्यम।

उपनयन मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ व आषाढ मास ग्राह्य। देवशयन, गुरु-शुक्र अस्तादि वर्जित। भद्रारहित पूर्वाह्न व मध्याह्न तक ही उपनयन शुभ। अपराह्न निषिद्ध। ◆ **तिथि -** शुक्लपक्ष में २,३, ५, १०, ११, १२ । कृष्णपक्ष में २, ३, ५ शुभ। ◆ **वार -** सूर्य, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार शुभ। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, पू.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु, मूल, पू.षा., श्रवण, धनि., शत., पू.भा., तीनों उत्तरा एवं रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** षष्ठ व अष्टम भाव में शुक्र, गुरु, चन्द्र व लग्नेश वर्जित । द्वादश भाव में चन्द्र व शुक्र वर्जित। लग्न पञ्चम व अष्टम में पापग्रह वर्जित । वृष व कर्क राशि का चन्द्र लग्न में शुभ, अन्यथा नहीं। ◆ **विशेष -** गोचर में जन्मराशि से २, ५, ७, ९, ११ वां गुरु श्रेष्ठ।१, ३, ६, १० वां गुरु मध्यम। ४, ८, १२वां गुरु निन्दित होता है। **विशेष -** निन्दित गुरु भी कर्क, मेष व वृश्चिक राशियों में हो अथवा जिस किसी भी राशि में होकर धनु व मीन के नवांशों में, वर्गोत्तम नवांश या कर्क, मेष व वृश्चिक के नवांश में भी हो तो शुभ होता है। इसी प्रकार गुरु मकर, मिथुन, कन्या, तुला व वृष राशियों का हो तो गोचर में शुभ हो तो हुए भी अशुभफलप्रद है। (मु.चि. ५/४७) ◆ **त्याज्य -** आषाढ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, मघा शुक्ल द्वादशी तथा संक्रान्ति दिन।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि विचारणीय। भद्रा व अशुभयोग वर्जित। ◆ **तिथि -**२, ३, ५, ६, १०, ११ व १२।◆ **वार -** सूर्य, बुध, गुरु वा शुक्रवार ।◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, पू.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, पू.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, एवं पू.भा.।

◆ मतान्तर से रोहिणी, उ.फा., अनुराधा, उ.षा., उ.भा., व रेवती भी ग्राह्य हैं। (मु.चि.पी.टीका) ◆ **लग्न -** स्थिर व द्विस्वभाव लग्न।

विवाह मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि, देवशयनादि विचार आवश्यक। भद्रादिदोष वर्जित।◆ **मास -** मीन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला व धनु के सूर्य में वर्जित। सौरमासों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन ग्राह्य। ◆ **दोनों पक्षों की तिथि -** २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ व शुक्लपक्ष की १५।◆ **वार -**सोम, बुध, गुरु, शुक्र श्रेष्ठ। रवि, शनि - मध्यम। मङ्गल - त्याज्य (मु.चि. ६/५५ पी.घा. टीका)।

◆ **नक्षत्र -** रो., मृग., तीनों उत्तरा. हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। कात्यायन मतानुसार - अश्विनी, चित्रा, श्रवण, व धनिष्ठा भी ग्राह्य है। ◆ **लग्नशुद्धि -** लग्न में चन्द्र व पापग्रह, तृतीय शुक्र, छठवां चन्द्र, शुक्र व लग्नेश, सप्तम में सभी ग्रह, अष्टम में चन्द्र, लग्नेश, मंगल व शुभग्रह, दशम मंगल व द्वादश शनि वर्जित

◆ **विशेष -** **चारानुसार रवि चन्द्र गुरु शुद्धि**

वरस्य रविबलं, कन्यायाः गुरुबलं तथोभयोश्च चन्द्रबलं विचार्यते -

बलम्	**सूर्य**	**चन्द्र**	**गुरु**
श्रेष्ठ	३,६,१०,११	३,६,७१०,११	२,५,७,९,११
मध्यम	१, २, ५, ७, ९	१, २, ५, ९	१,३,६,१०
निन्द्य	४, ८, १२	४, ८, १२	४, ८, १२

ताराचक्र

तारा	**जन्म**	**सम्पत्**	**विपत्**	**क्षेम**	**प्रत्यरि**	**साधक**	**वध**	**मित्र**	**अतिमित्र**
नक्षत्र	1/10/19	2/11/20	3/12/21	4/13/22	5/14/23	6/15/24	7/16/25	8/17/26	9/18/27
फल	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
दान	शाक	X	गुड	X	लवण	X	तिल	X	X

वधूप्रवेश मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** शेष विवाह मुहूर्त के समान और वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त:-इस उक्ति के अनुसार वधू का प्रवेश रात्रि में ही शुभ होता है। ◆ **तिथि -** रिक्ता व अमा.छोडकर अन्य तिथियाँ। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रो., मृग., पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु. तीनों उत्तरा, मूल, श्रवण, धनि., व रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि के लग्न शुभ। चतुर्थाष्टम शुद्धि चाहिए। ◆ **त्याज्य -** भद्रा, व्यति., क्षयतिथि, रिक्ता, अमा., ग्रहण, वैधृति व संक्रान्ति दिन।

द्विरागमन मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** कुम्भ, वृश्चिक व मेष राशि में सूर्य के रहने पर ही द्विरागमन विहित है। वर की राशि से रवि और गुरु की शुद्धि आवश्यक है।◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार।

◆ **तिथि -** रिक्ता व अमावस्या छोडकर शेष शुभ। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु. मूल, श्रवण, धनि. शत. व रेवती।

गृहारम्भ मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** गुरु-शुक्र अस्तादि विचार आवश्यक है। देवशयन विचार नहीं।

◆ **मासशुद्धि -** निम्न मास ही शास्त्रानुसार ग्राह्य हैं -

सौरमास (सूर्यराशिप्रवेश)	**चान्द्रमास**
कुम्भ	माघ, फाल्गुन
कर्क व सिंह	आषाढ, श्रावण, भाद्रपद
मकर	पौष, माघ
मेष व वृष	चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ
तुला व वृश्चिक	आश्विन, मार्गशीर्ष, कार्तिक

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार । ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा., व रेवती (मु.चि.१२/१५) ◆ **पराशरमतानुसार -** अश्विनी, पुनर्वसु, मूल व श्रवण भी ग्राह्य (वृ.वा.मा.पृ.७३, श्लोक ७१-७३)। वास्तु राजवल्लभ के अनुसार ज्येष्ठा भी ग्राह्य। ◆ **योग व करण -** वैधृति, शूल, गण्ड, परिघ, व्याघात, वज्र, विष्कुम्भ एवं व्यतीपात योग तथा भद्रा वर्जित (वृ.वा.मा.गृहारम्भ. ७५-७६ श्लोक)

◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ, मीन, सिंह व वृश्चिक लग्न प्रशस्त। अष्टम व द्वादश शुद्धि। ◆ **विशेष -** वृषवास्तु चक्र शुद्धि।

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ में वृषवास्तुचक्र

नक्षत्र	1-3	4-7	8-11	12-14	15-18	19-22	23-25	26-28
स्थान	शिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिणकुक्षि	वामकुक्षि	पुच्छ	मुख
फल	अग्निदाह	चिन्ता	स्थिरता	धनागम	लाभ	दरिद्रता	स्वामीनाश	पीडा

नवीन (अपूर्व) गृहप्रवेश मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण विशेष शुभ। गुरु-शुक्र अस्तादिविचार आवश्यक। भद्रादोष वर्ज्य। दिन व रात दोनों ही में प्रवेश शुभ। ◆ **मासशुद्धि -** माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ - श्रेष्ठ। मार्गशीर्ष, कार्तिक - मध्यम। ◆ **तिथि -** दोनों पक्षों की तिथि-१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १० एवं शु.प. ११, १२, १३, १५ ◆ **वार -** चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, मृगशिरा, उ.फा., चित्रा, अनुराधा, उ.षा., धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा. व रेवती। मतान्तर से अश्विनी, पुष्य, स्वाती, मूल व श्रवण भी ग्राह्य। ◆ **योगशुद्धि -** वैधृति, शूल, गण्ड, अतिगण्ड, विष्कुम्भ, व्यतीपात, वज्र, परिघ व व्याघात योग वर्जनीय। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, सिंह, वृश्चिक, मिथुन, कन्या, धनु, मीन। मतान्तर से कुम्भ भी ग्राह्य। लग्न से चतुर्थाष्टम शुद्धि आवश्यक।

सूर्यनक्षत्र से (गृहप्रवेश में विचारणीय) कुम्भचक्र

नक्षत्र	1	2-5	6-9	10-13	14-17	18-21	22-24	25-27
स्थान	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदा	कण्ठ
फल	अग्निदाह	चिन्ता	धनलाभ	धनप्राप्ति	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरता
नक्षत्रफल	५अशुभ		८ शुभ		८ अशुभ		६ शुभ	

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त

मुहूर्त शोधन नवीन (अपूर्व) गृह प्रवेश मुहूर्त के समान। ◆ **विशेष -** १. श्रावण, मार्गशीर्ष एवं कार्तिक मास भी ग्राह्य। २. नवीन (अपूर्व) गृह प्रवेश मुहूर्त में भी प्रवेश। ३. गुरु शुक्र अस्तादि विचार की आवश्यकता नहीं।

वापी कूप तडागादि खनन मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** चैत्रमास में उत्तरायण, शुक्लपक्ष के शुभतिथियों में, शुद्धसमय में। पृथ्वी शयन नक्षत्रों को छोडकर शुभ नक्षत्रों में।सूर्य के नक्षत्र से ५,७, ९, १२, १९ एवं २६ वें चन्द्रनक्षत्रों में पृथ्वी शयन करती है। मतान्तर से सूर्यक्रान्ति से ५, ७, ९, ११, १५, २०, २२, २३ एवं २४ वें दिन भूमि शयन करती है। ◆ **लग्न -** ४, १०, ११, १२ राशिके लग्न, शुक्र दशमभाव में, गुरु बुध अन्यतरस्थ लग्ने, पापग्रह बलहीन, शुभग्रह बलयुक्त शुद्ध। ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, उ.षा., उ.फा., उ.भा., मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, पू.षा., धनिष्ठा, रेवती, शतभिषा।

देवता जलाशय वाटिकादि प्रतिष्ठा मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** चैत्रमास में उत्तरायण, शुभतिथियों में, शुद्धसमय में। ◆ **वार -** सू., सो, बु., गु., शु.। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ शु.प.। ◆ **नक्षत्र -** मृग., रेवती, चित्रा, अनु., ह, अश्वि, तीनों उत्तरा, पुष्य, स्वा., पुन., श्र., धन., शत., रो.।

देवालय-गृहारम्भ-जलाशय-आरम्भ में खात दिग्ज्ञान

खातदिक्	**नैऋत्यां**	**आग्नेयां**	**ऐशान्यां**	**वायव्यां**
देवालय	धनु,मकर,कुम्भ	मीन,मेष,वृष	मिथुन,कर्क,सिंह	कन्या,तुला,वृश्चिक
जलाशय	तुला,वृश्चिक,धनु	मकर,कुम्भ,मीन	मेष,वृष,मिथुन	कर्क,सिंह,कन्या
गृहारम्भ	वृष,मिथुन,कर्क	सिंह,कन्या,तुला	वृश्चिक,धनु,मकर	कुम्भ,मीन,मेष

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार आवश्यक। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष एवं मिथुन में सूर्य के रहने पर। नारदानुसार चैत्रमास रहित मीन राशि का सूर्य प्रशस्त है।

पी.धा.टी. मु.चि. २/६१-६२) ◆ **तिथि -** शु.प. - २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ व १५।◆ **वार -** सू., सो., बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि.।◆ **नक्षत्र -** मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., रो., तीनों उत्तरा।◆ **लग्नशुद्धि -** सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्या:, चरलग्ने च योगिन्य: स्थापनीया:। देवा:स्थिरलग्नेषु स्थाप्या:। ग्रहान् पुष्ये, बुद्धं श्रवणे, गणेशादीन् रेवत्यां स्थापयेत्। भगवत: विष्णो: देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्याम्, देव्या: नवरात्रौ दीपमालिकायां, शङ्करस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां) वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।अर्थात् चन्द्र व पापग्रह - ३, ६, ११ स्थानों में शुभ। शुभ ग्रह ८ व १२ स्थानों को छोडकर अन्यत्र शुभ। प्रतिष्ठा पूर्वाह्न में श्रेष्ठ।

◆ **देवविशेष हेतु लग्न -**

देव	सूर्य	ब्रह्मा	विष्णु	शिव	देवी	क्षुद्रदेवी
लग्न	सिंह	कुम्भ	कन्या	मिथुन	द्विस्वभाव	चरराशि

अन्य देवताओं प्रतिष्ठा नक्षत्र- नवग्रहों का पुष्य में, गणेश यक्ष सर्प भूतादि का रेवती में, जैन देवताओं का श्रवण में प्रतिष्ठा करने का शास्त्रादेश प्राप्त होता है।

यात्रा मुहूर्त्त

◆ **यात्राकाल -** विशेष यात्रा के लिए - मेष, सिंह व धनु में सूर्य के रहने पर - प्रशस्त वृष, मिथुन, तुला, मकर, कुम्भ व मीन - मध्यम, कर्क, वृश्चिक व मीन - अधम

◆ **तिथि -** शुक्लपक्ष - २, ३, ५, ७, १०, ११ व १३, कृष्णपक्ष - १, २, ३, ५, ७, १०, ११ व १३, ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा व रेवती। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु व शुक्र - श्रेष्ठ, रवि, मङ्गल, व शनि - मध्यम। **वार व नक्षत्र शूल (दिशाशूल) -**

दिशा	नक्षत्र	वार
पूर्व	ज्येष्ठा	शनि, सोम
दक्षिण	पूर्वाभाद्रपद	गुरु
पश्चिम	रोहिणी	शुक्र, रवि
उत्तर	उत्तराफाल्गुनी	मङ्गल, बुध

दिक्शूलपरिहार - न वारदोषा: प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोष: ।। सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वरि गच्छञ्छूले न दोषभाक् ।।२।। अर्थात् सूर्य, गुरु व शुक्रवार को रात्रि में यात्रा करने पर वारदोष नहीं होता है। इसी प्रकार चन्द्र, शनि व मङ्गलवार को दिन में यात्रा करने पर वारदोष नहीं होता है। केवल बुधवार को दिन या रात दोनों ही समय यात्रा करने पर वारदोष होता है। अत्यावश्यक यात्रा होने पर दिक् शूल परिहार हेतु यात्रा पूर्व रविवार को घी, सोमवार को दूध, मंगलवार को गुड, बुधवार को तिल, गुरुवार को दही, शुक्रवार को जौ तथा शनिवार को उडद का सेवन करना चाहिए।

योगिनीवास चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
तिथि	१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०

समयशूल - उषाकाल में पूर्व को गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गमत से ५ या ४ घडी रात रहे तो गमन,बृहस्पतिमत से शुभ शकुन पर यात्रा करें। अङ्गिरा मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। अन्यमत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है।

चन्द्रवास -पूर्व मेष, सिंह, धनु। **दक्षिण** वृष, कन्या, मकर। **पश्चिम** मिथुन, तुल, कुम्भ। **उत्तर** कर्क, वृश्चिक, मीन।यात्रा में चन्द्रमा दक्षिण व सम्मुख शुभ होता है।

यात्रा में लग्न विशेष - लग्न व राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हों और ३।६।१०।११ वें स्थानों में पापग्रह हों, १।६।८।१२ वें स्थानों में चन्द्र न हो, १० वें शनि न हो, ६ वें शुक्र न हो, १२।६।८ वें स्थानों में लग्नेश नहीं होना चाहिए। अन्यच्च - **यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ।।** जन्मलग्नेश, दशमेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु शुक्र अस्त में वर्जित है।

द्विर्द्वार लग्न

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभ -	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२
मध्यम -	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९
भय -	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११
महद्भय -	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०

सिद्धादियोग चक्र
(दिवस तिथि नक्षत्रादि से)

योगनामानि -	सिद्धियोग	अमृतयोग	मृत्युयोग	सर्वार्थसिद्धियोग
रविवार	३-८-१३	५-१०-१५	१-६-११	अश्वि, हस्त, पुष्य, मूल उत्त.३
चन्द्रवार	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	रोहि, मृग, पुष्य, अनु, श्रवण
मङ्गलवार	३-८-१३	२-७-१२	१-६-११	अश्विनी, कृत्तिका,आश्ले.उ.भा.
बुधवार	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	कृत्ति.रोहि, मृग, हस्त, अनु.
गुरुवार	५-१०-१५	३-८-१३	४-९-१४	अश्वि, पुन, अनु, पुष्य, रेवती
शुक्रवार	१-६-११	४-९-१४	२-७-१२	अश्वि, पुन, अनु, श्रवण, रेवती
शनिवार	४-९-१४	१-६-११	५-१०-१५	रोहिणी, स्वाती, श्रवण

रामदैवज्ञ मत में यात्रामुहूर्त्त

पौष	माघ	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आष.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्त.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारि.	दारि.	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया - त्रयोदशी, चतुर्थी - चतुर्दशी, पञ्चमी - पूर्णमा का फल समान जानना चाहिए। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

सर्वदिग्गमननक्षत्राणि - अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

विदिक्शूलविचार:

शनौ पूर्वे, चन्द्रे अग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मङ्गले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

लग्नचन्द्रयोर्वास:

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वास:। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयो: यात्रा शुभा। पार्श्व सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

चन्द्रविचार:

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम्। तत्र १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११ संख्याकश्चन्द्र: शुभप्रद:। ८ चन्द्र: मृत्युप्रद:। ४ कलहद:। १२ हानिकारक:। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुलशंखदधिश्वेतवस्त्रादिदानं कार्यम्।

द्वादशचन्द्रस्य विशेष:

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ:। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ:।

जन्मराशि-नामराशिवशेन विचारणीयविषया:

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्त्येत्। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशे: प्रधानता।।

जन्मनक्षत्रे त्याज्या: - जन्मनक्षत्रगश्चन्द्र: प्रशस्त: सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

जन्ममासे त्याज्या: - क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

पञ्चक विचार

धनिष्ठा-शतभिषा-पूर्वभाद्र-उत्तरभाद्र-रेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमन-गृहच्छादन-प्रेतदाह-तृणकाष्ठादिसंग्रहशय्यावितानिर्माणादिकं च त्येजत्। तत्रापवाद: - वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथिमासान्तादिविचार:

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथि:, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसज्ञकम्) यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम्।

मन्त्रग्रहण मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** सौरक्रम से बैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष माघ, फाल्गुन मासों में। संक्रान्तौ, पूर्णिमायां, नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे, मन्वादियुगादिषु च मुहूर्त्त विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।◆ **वार -** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। शुद्धसमय प्रातः वा मध्याह्न में ।

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। कृष्ण पञ्चमी तक।

◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।◆ **लग्नशुद्धि -** २, ३, ५, ७, ९, १२ लग्नों मे, शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में, पापग्रह ३, ६, ११ में, शुभ है।

राहु (काल) वासः

सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम्। फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठाषाढश्रावणेषुपश्चिमायाम्। भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासः।

पुराणादि श्रवण मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण में श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष मासों में शुभ। तीर्थक्षेत्र में देवालय में सिद्धिक्षेत्र मे पर्वविशेष नवरात्रादि में मुहूर्त्त के विना भी शुभ होता है। ◆ **वार -** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। कृष्ण पञ्चमी तक। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण,। ◆ **लग्नशुद्धि -** लग्नों मे शुभग्रह दृष्ट या युत हो, शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में, पापग्रह ३, ६, ११ में शुभ है।

इन्धन स्थापन मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** सूर्यसंक्रान्ति के नक्षत्रों से ६ नक्षत्रों में शुभ होता है। तदन्तर ६ नक्षत्रों में अशुभ, उसके ४ नक्षत्रों में शुभ, अग्रिम ८ नक्षत्रों में अशुभ, तत्पश्चात् ४ नक्षत्रों में शुभ होता है।

नवान्न भक्षण मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** नवान्न भक्षण में जन्मतारा, विशाखानक्षत्र में सूर्य, कृष्णपक्ष का अष्टम चन्द्र, सौरक्रम में कार्तिक, पौष, चैत्र, हरिशयन निषिद्ध होता है। ◆ **वार -** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु।

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १५शुक्लपक्ष। अभाव से कृष्ण पञ्चमी तक।

◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती शुभ। मूल नक्षत्र में मध्यम। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृश्चिक में ३ अंश २०कला के बाद १३ अंश तक। आवश्यक होने पर २३ अंश तक भी। मकर के ७ अंश के बाद तथा कुम्भ में सूर्य हो तो। २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में शुभग्रह दृष्ट युत वा स्वस्वामी युत हो तो शुभ।

बीज बोने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ८, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** २, ३, ५, ७, ९, १२ लग्नों मे, शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में, पापग्रह ३, ६, ११ में, शुभ है। लग्नों में शुभग्रह दृष्ट युत वा स्वस्वामी युत हो तो शुभ।

राहुनक्षत्र से बीज बोने में फणिचक्र

नक्षत्र	1-8	9-11	12	13-15	16	17-19	20	21-23	24-27
स्थान	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हल चलाने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ८, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। कृष्णपक्ष पञ्चमी तक। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभलग्न में, पापग्रह निर्बल होने पर, शुभग्रह बलयुक्त होने पर, चन्द्र जलचर राशि के नवांश में स्थित होने पर, गुरु शुक्र बुध के लग्न में होने पर शुभ होता है।

सूर्य भुक्त नक्षत्र से हलचक्र

नक्षत्र	1-3	4-11	12-20	21-28
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

धान रोपने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, उ.फा., विशाखा, मूल, शतभिषा, पू.भा. में शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभ तिथि एवं शुभलग्न में शुभ होता है।

ऋण देने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि। ◆ **नक्षत्र -** स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** १, ४, ७, १० लग्न में, शुभतिथि में होने पर शुभ होता है।**ऋणादान में निषिद्ध समय -** बुधवार, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वा ३, चित्रा, ज्येष्ठा नक्षत्रों में, भद्रा एवं पात योगों में निषिद्ध होता है। **ऋणग्रहण में निषिद्ध समय -** रवि मङ्गल वार में, संक्रान्ति में, वृद्धि योग एवं हस्त नक्षत्र में, इन कालों में ऋणग्रहण नहीं करना चाहिये।

दुकान खोलने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ◆ **तिथि -** कृष्णपक्ष की दशमी तक। अष्टमी को छोडकर शुक्लपक्ष की सभी तिथियों में।◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रेवती, पुष्य, हस्त, उत्तरा, अनुराधा, अभिजित् शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** कुम्भ लग्न को छोडकर सभी लग्न में, चन्द्र शुक्र लग्न में। ८, २ पापग्रह रहित, २, १०, ११ शुभग्रह।

मिल/कारखाना प्रारम्भ करने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५शुक्लपक्ष। ◆ **नक्षत्र -** भरणी, कृतिका, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वा ३ शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** कुम्भ के विना लग्नों मे शुभग्रह दृष्ट या युत हो, शुभग्रह १, २, ४, ५, ७, १० भावों में रहने पर, पापग्रह ३, ६, ११ में, शुभ है।

वस्तु खरीदने का मुहूर्त

◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शतभिषा, रेवती में शुभ।बुध एवं रविवार श्रेष्ठ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभतिथि, शुभलग्न, शुभदिनों में वस्तु खरीदना शुभ होता है।

वस्तु बेचने का मुहूर्त

◆ **नक्षत्र -** पू.फा.,पू.षा.,विशाखा,कृत्तिका, आश्लेषा एवं भरणी नक्षत्र।◆ **वार -** गुरुवार व सोमवार श्रेष्ठ।

औषधि खाने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** ३, ६, ९, १२ लग्नों में, शुभग्रह ३, ६, ९, १२ राशिमें स्थित हो, तथा लग्न से ७, ८, १२ स्थान ग्रहरहित हों तो औषधि खाना शुभ होता है।

आपरेशन का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, मङ्गल, गुरु। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा में शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभतिथि शुभलग्नों में शुभ होता है।

चिकित्सा का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र।◆ **नक्षत्र -** अश्वि, रो., मृग., पुष्य, ह., चित्रा, स्वाती, अनु, ज्ये. अभि., श्रवण, शत. में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** शुभतिथि एवं लग्नों में शुभ होता है।

उग्रकर्म/अभिचार करने का मुहूर्त

◆ **वार -** मङ्गल, शनि।◆ **नक्षत्र -** पूर्वा ३, भरणी, मघा, मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा में शुभ।◆ **तिथि -** १, ३, ४, ५, ९, १०, ११, १४ तिथियों में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** १, ८, १०, ११ लग्नों में शुभ होता है।

वाहनादि चलाने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि।◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती में शुभ।◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** चतुर्थेश बलयुक्त होकर १, ४, ५, ७, ९, १० में स्थित होने पर, लग्नेश दशमेश नवमेश भी १, ४, ५, ७, ९, १० में बली हों, पापग्रह ३, ६, ११ में स्थित हों यानादि चलाना शुभ होता है।

गृहारम्भ के ध्यातव्य विषय

वास्तुशास्त्र में गृहनिर्माण सम्बन्धी विधियों व नियमों का निर्देश किया गया है। गृहारम्भ के लिए बृहद्वास्तुमाला में भी कहा गया है - **द्वारशुद्धि निरीक्ष्यादौ भशुद्धि वृषचक्रतः। निषञ्जके स्थिरे लग्ने द्व्यङ्गे वालय मारभेत्।। त्यक्त्वा कुजार्कयोश्चांश पृष्ठे चाग्रे स्थितं विधुम्। बुधेज्य राशिगं चार्कं कुर्याद् गेहं शुभाप्तये।।**

सर्वप्रथम द्वारशुद्धि का विचार कर वृषचक्र के अनुसार नक्षत्र देखें, पञ्चक नक्षत्रों (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती) को छोड़कर स्थिर अथवा द्विस्वभाव लग्न में गृहारम्भ करें, मंगल और सूर्य का अंश, आगे व पीछे (राशि) का चन्द्रमा, एवं मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशि के सूर्य को छोड़कर गृहारम्भ करना चाहिए।

गृहारम्भ में ग्रह स्थिति - गृहारम्भ के समय गृहस्वामी की जन्मराशि से गोचरोक्त (तात्कालिकग्रह स्थिति) विचार से - १. यदि सूर्य निर्बल हो (शत्रुराशि का हो या ४-८-१२ में हो) एवं नीचराशि (तुला) का हो तो ऐसी स्थिति में गृहारम्भ करने से गृहस्वामी का नाश होता है। २. चन्द्रमा निर्बल, अस्त, नीचराशि (वृश्चिक) का हो तो मालिक की पत्नी का नाश होता है। (अनुराधा नक्षत्र में चन्द्रमा नीच दोष से मुक्त माना जाता है)। ३. बृहस्पति निर्बल, अस्त, अपनी नीचराशि (मकर) का हो तो मालिक के पुत्र का नाश करता है। ४. शुक्र निर्बल, अस्त, नीचराशि (कन्या) का हो तो धन का नाश होता है।

गृहारम्भ में राहु मुख विचार - गृहनिर्माण के समय राहुमुख विचार विशेषतया किया जाता है। कौन-कौन से समय में राहुमुख किस दिशा में हो यह ज्ञात करना अत्यावश्यक होता है। गृहनिर्माण के समय सूर्य यदि सिंह, कन्या व तुला इन तीन राशियों में हो तो राहुमुख ईशानकोण में स्थापित करना चाहिए। वृश्चिक-धनु व मकर में सूर्य हो तो राहुमुख वायव्यकोण में, कुम्भ-मीन-मेष राशि में सूर्य हो तो राहुमुख नैऋत्यकोण में, वृष-मिथुन-कर्क राशि में हो तो राहुमुख अग्निकोण में होता है। **अन्य ध्यातव्य नियम -** १. उत्तर-पूर्व में ऊँचे भवन, पहाडियाँ, टीले व ऊँचे वृक्ष आदि वर्जित हैं। उत्तर-पूर्व में सड़क होना, भूमिगत जलस्रोत- कुआं, तालाब एवं बावड़ी, जलाशय होना, मैदान, उपवन आदि नदी, नहर या नाला होना जिसका प्रवाह दक्षिण से उत्तर या पश्चिम से पूर्व हो तो शुभ होता है।

२. भू-खण्ड के आसपास विद्यालय, धर्मशाला, सिनेमा हाल, माल, बड़ा मन्दिर जो भूखण्ड पर धूप एवं हवा के आवागमन में अवरोधक हो तो अशुभ होता है।

३.भूखण्ड भीड़-भाड़ वाले स्थान, चौराहे, मार्केट में, चहल-पहल वाले सड़क या मुख्य मार्ग पर हो तो अशुभ होता है।

ग्रहों का उदयास्त, राशिप्रवेश, वक्रत्व, मार्गत्व

बुध ग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
अस्त पश्चिम	26/03/2018	28:46	उदय पूर्व	09/04/2018	24:18
अस्त पूर्व	24/05/2018	18:13	उदय पश्चिम	14/06/2018	23:33
अस्त पश्चिम	29/07/2018	05:46	उदय पूर्व	15/08/2018	23:01
अस्त पूर्व	10/09/2018	08:30	उदय पश्चिम	12/10/2018	14:24
अस्त पश्चिम	21/10/2018	18:51	उदय पूर्व	01/12/2018	23:52
अस्त पूर्व	10/01/2019	11:27	उदय पश्चिम	12/02/2019	12:36
अस्त पश्चिम	09/03/2019	16:54	उदय पूर्व	21/03/2019	18:25

गुरु ग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
अस्त पश्चिम	13/11/2018	15:53	उदय पूर्व	07/12/2018	10:05

शुक्र ग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
अस्त पश्चिम	16/10/2018	16:44	उदय पूर्व	30/10/2018	18:43

शनि ग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	दिशा	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
अस्त पश्चिम	19/12/2018	09:43	उदय पूर्व	17/01/2019	17:01

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	नक्षत्र	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
अश्वनी	14/04/2018	08:13	भरणी	27/04/2018	24:00
कृतिका	11/05/2018	18:13	रोहिणी	25/05/2018	14:21
मृगशिरा	08/06/2018	12:17	आर्द्रा	22/06/2018	11:11
पुनर्वसु	06/07/2018	10:51	पुष्य	20/07/2018	10:17
आश्लेषा	03/08/2018	09:15	मघा	17/08/2018	06:50
पू.फा.	30/08/2018	26:53	उ.फा.	13/09/2018	20:41
हस्त	27/09/2018	12:14	चित्रा	10/10/2018	25:13
स्वाती	24/10/2017	11:44	विशाखा	06/11/2018	19:53
अनुराधा	19/11/2018	25:53	ज्येष्ठा	02/12/2018	30:14
मूल	16/12/2018	09:10	पूर्वाषाढा	29/12/2018	11:27
उत्तराषाढा	11/01/2019	13:21	श्रवण	24/01/2019	15:42
धनिष्ठा	06/02/2019	18:47	शतभिषा	19/02/2019	23:18
पू.भा.	04/03/2019	29:37	उ.भा.	18/03/2019	14:00
रेवती	31/03/2019	24:54	अश्विनी	14/04/2019	14:09

निरयण सूर्य राशि प्रवेश

राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
मेष	14/04/2018	08:13	वृष	14/05/2018	29:03
मिथुन	15/06/2018	11:37	कर्क	16/07/2018	22:27
सिंह	17/08/2018	06:50	कन्या	17/09/2018	06:47
तुला	17/10/2018	18:44	वृश्चिक	16/11/2018	18:32
धनु	16/12/2018	09:10	मकर	14/01/2019	19:51
कुम्भ	13/02/2019	08:49	मीन	14/03/2019	29:40
मेष	14/04/2019	14:09			

मङ्गल राशि प्रवेश

राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
मकर	02/05/2018	16:15	कुम्भ	06/11/2018	08:22
मीन	23/12/2018	12:57	मेष	05/02/2019	23:48
वृष	22/03/2019	15:05			

बुध राशि प्रवेश

राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
मेष	09/05/2018	17:31	वृष	27/05/2018	08:24
मिथुन	10/06/2018	07:32	कर्क	25/06/2018	18:04
सिंह	02/09/2018	21:06	कन्या	18/09/2018	28:15
तुला	06/10/2018	12:42	वृश्चिक	26/10/2018	20:43
धनु	01/01/2019	09:50	मकर	20/01/2019	21:07
कुम्भ	07/02/2019	10:10	मीन	25/02/2019	08:53
कुम्भ (व.)	16/03/2019	09:00	मीन	11/04/2019	28:24

गुरु राशि प्रवेश

राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
वृश्चिक	11/10/2018	19:20	धनु	29/03/2019	20:05

शुक्र राशि प्रवेश

राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	राशि	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
मेष	26/03/2018	15:47	वृष	19/04/2018	26:08
मिथुन	14/05/2018	20:46	कर्क	08/06/2018	26:41
सिंह	04/07/2018	26:25	कन्या	01/08/2018	12:27
तुला	01/09/2018	23:27	वृश्चिक	01/01/2019	20:43
धनु	29/01/2019	23:29	मकर	24/02/2019	22:45
कुम्भ	21/03/2019	27:45	मीन	15/04/2019	25:04

शनि राशि प्रवेश

शनि सम्पूर्ण वर्ष धनुराशि में रहेगा।

मंगल ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
वक्री	26/06/2018	26:33	मार्गी	27/08/2018	19:35

बुध ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
वक्री	22/03/2018	29:56	मार्गी	15/04/2018	14:53
वक्री	26/07/2018	10:29	मार्गी	19/08/2018	09:48
वक्री	17/11/2018	06:46	मार्गी	06/12/2018	27:08
वक्री	05/03/2019	23:53	मार्गी	28/03/2019	19:33

शुक्र ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
वक्री	05/10/2018	24:31	मार्गी	16/11/2018	16:22

गुरु ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
मार्गी	10/07/2018	22:33	वक्री	10/04/2019	22:31

शनि ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स	गति	दिनाङ्क	भा.स्टा.स
वक्री	18/04/2018	07:17	मार्गी	06/09/2018	16:38

वर्षा ज्ञान के लिए सप्तनाडी चक्र

स्वामी	शनि	रवि	भौम	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
संज्ञा	चंडा	वात	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृत
नक्षत्र	कृ.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्लेषा
नक्षत्र	विशा.	स्वाती	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	मघा
नक्षत्र	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.
नक्षत्र	भर.	अश्वि	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	धनि.

आर्द्रा आदि नक्षत्रों में वर्षा प्रमाण

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा
३	२	२	२	२
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१।।	१।।	१	१।।	१

आषाढ ३, श्रावण ४, भाद्रपद ४, आश्विन१, कार्तिक में १, मार्गशीर्ष एवं पौष में भी साधारण।

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल द्वारा वृष्टि विचार

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों यदि सूर्य के नक्षत्र में हो तो वायुचलन, चन्द्रनक्षत्र में होतो अनावृष्टि एवं एक सूर्य तथा दूसरा चन्द्र के नक्षत्र में स्थित हो तो सुवृष्टि होती है। **अन्यप्रकार** - जिस समय बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु एक नाडी के नक्षत्रों में स्थित होते हैं, उस समय अवश्य ही वृष्टि होती है।

उत्पात फल ज्ञान के लिए चतुर्विध मण्डल

अग्निमण्डल	कृत्ति.	भरणी	पुष्य	मघा	पू.भा.	विशाखा	पू.फा.	**अशुभ**
वरुणमण्डल	मूल	अश्ले.	शत.	आर्द्रा	रेवती	उ.भा.	पू.षा.	**शुभ**
वायुमण्डल	पुन.	उ.फा.	अश्वि.	हस्त	चित्रा	स्वाती	मृग.	**अशुभ**
चन्द्रमण्डल	अभि.	उ.षा.	अनु.	श्रव.	धनि.	ज्येष्ठा	रोहिणी	**शुभ**

उपरोक्त जिस मण्डल के नक्षत्रों में भूकम्प, उत्पात आदि होते हैं, उस मण्डल जनित प्रभावों के द्वारा द्रव्य, जन्तु एवं देशों को पीड़ा देते हैं। इसमें भी वायु एवं अग्निमण्डल विशेष अनिष्टकारक होते हैं।

गण्डान्त जनन दोष

गण्डान्त जनन दोष तीन प्रकार का होता है - तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त और लग्नगण्डान्त। इनका विचार जन्म, यात्रा और विवाहादि कार्यों में करना चाहिए जैसा कि बृहत्पाराशर होराशास्त्र में प्राप्त होता है - **तिथिनक्षत्र लग्नानां गण्डान्तं त्रिविधं स्मृतम्। जन्म यात्रा विवाहादौ भवेत्तन्निधनप्रदम्।।**

तिथिगण्डान्त - पूर्णा तिथि की अन्तिम २ घटी तथा नन्दा तिथि की आरम्भिक २ घटी मिलाकर ४ घटी का तिथिगण्डान्त होता है। अर्थात् पूर्णिमा की अन्तिम २ घटी और प्रतिपदा की आरम्भिक २ घटी, पञ्चमी की अन्तिम २ घटी तथा षष्ठी की आरम्भिक २ घटी एवं दशमी की अन्तिम २ घटी तथा एकादशी की प्रारम्भिक २ घटी में तिथिगण्डान्त होता है। जैसा कि पराशर ने कहा है - **पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथयो: सन्धौ नाडीचतुष्टयम्। अध ऊर्ध्वं च मैत्रेय तिथिगण्डान्तमुच्यते।।**

नक्षत्र गण्डान्त - रेवत्यन्त अश्विनी का आदि, श्लेषान्त मघा का आदि और ज्येष्ठान्त मूलादि की २-२ घटी अर्थात् ४ घटी नक्षत्र गण्डान्त होता है। **लग्न गण्डान्त -** मीन-मेष की, कर्क-सिंह की, वृश्चिक-धनु लग्न की सीमा में आधी घटी मिलाकर कुल १ घटी लग्नगण्डान्त कहा जाता है। **अभुक्तमूल जनन दोष -** पूर्वोक्त गण्डान्तों में ज्येष्ठा के अन्त की ५ घटी एवं मूल के आरम्भ की ८ घटी अभुक्त मूल कहा गया है। यह विघ्नकारक एवं अशुभफलदायक माना जाता है।

अभीष्ट स्थान के सूर्योदय साधन की विधि

उदाहरण - ०४ अप्रैल २०११ को भोपाल का सूर्योदय का साधन करना है। भोपाल अक्षांश है २३°।१६'उ। उस दिन उत्तरा क्रान्ति ०५°।२८'। २३ अक्षांश की पंक्ति में ०५ अंश की क्रान्ति का चर मिनट ०८ मि ३२ सेकण्ड है तथा ०६ अंश क्रान्ति का १० मि १४ सेकंड है। इन दोनों का अन्तर ०१।४२ आया अनुपात से २८ कला का मान ०।४७।३६ प्राप्त हुआ। इसे ०५ अंश के चर मिनट में जोडने पर ०९।२० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार २४ अंश के अक्षांश पर ०५ अंश क्रान्ति का चर मिनट ०९।४६ मिला। इन दोनों के अनुपात से २३।१६ का चर मिनट ०९।२६ का चर मिनट ०९।२६ मिला। यही अभीष्ट स्थान का अभीष्ट दिन का चरमिनट हुआ।

अभीष्ट स्थान के स्पष्ट सूर्योदय साधन के लिये कोष्ठक			
उत्तरा क्रान्ति		**दक्षिणा क्रान्ति**	
उत्तर अक्षांश उदय के लिये	दक्षिण अक्षांश उदय के लिये	उत्तर अक्षांश उदय के लिये	दक्षिण अक्षांश उदय के लिये
चर.मि.-ऋण अस्त के लिये चर.मि.+धन	चर.मि. + धन अस्त के लिये चर.मि. -ऋण	चर.मि.+धन अस्त के लिये चर.मि.-ऋण	चर.मि. - ऋण अस्त के लिये चर.मि. + धन

६ घंटे में उपरोक्त चर संस्कार करके बेलान्तर संस्कार धन या ऋण हो तो उसमे धन या ऋण करने से स्थानिक स्पष्ट सूर्योदयास्त होगा। उपर्युक्त उदाहरण में भोपाल का चर मिनट ०९ मि २६ सेकण्ड प्राप्त हुये। उस दिन की क्रान्ति उत्तर थी और भोपाल का उत्तरी अक्षांश है। अत: सारिणी के अनुसार चर मिनट ऋण होंगे। इन्हे ६।०० में से घटाने पर ०५।५१ प्राप्त हुआ।

वेलान्तर - वेलान्तर सारिणी द्वारा मध्यम सूर्योदय से स्पष्ट सूर्योदय बनाया जाता है। इष्ट दिन के दिनाङ्क तथा मास के सम्मुख कोष्ठक द्वारा इष्टदिन का वेलान्तर सिद्ध होगा। ०४ अप्रैल का वेलान्तर सारिणी में + ०३।२१ दिया गया है। इसे पूर्वोक्त उदाहरण के ०५।५१ मान में जोडने पर ०५।५४ मिला।

देशान्तर - उसमे रेखान्तर मिनिट धन हो तो ऋण और ऋण हो तो धन करने से स्पष्ट सूर्योदयास्त का मानक समय (स्टा.टाईम) होगा। भोपाल का भारतीय मानक रेखांश के आधार पर देशान्तर - १९मि.३६से. है। इन्हे उपर्युक्त नियम के अनुसार उदाहरण में प्राप्त मान में जोडने पर ०६ मि.१३ से. ३६प्र.से. मिला जिसे हम लगभग ०६।१४ ले सकते है। इसी तरह दूसरे स्थानों का भी सूर्योदय साधन करके तिथ्यादि का व्यवहार कर सकते हैं।

अक्षांश से सारिणी द्वारा पलभाज्ञान की विधि -

पलांशतश्चेदधिकं कलाद्यं व्यतीतभोग्याक्षप्रमान्तरघ्नम्।
षष्ठ्या हृतं तत्फलयुग्गता याऽक्षभा भवेत्साऽभिमता सुखार्थम्।।

(जन्मपत्रदीपक, श्लो - ११)

गत अंश और ऐष्य अंश सम्बन्धि पलभाओं के अन्तर को शेष कला से गुणा कर के ६० का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसको गत अक्षांश सम्बन्धी पलभा में यथास्थान जोड देने से अभीष्ट पलभा हो जाती है।।

भोपाल के अक्षांश $23^0/16$ पर से पलभाज्ञान करना है तो आगे दी हुई पलभा सारिणी में 23 अक्षांश का फल 5/5/38 एवं 24 अक्षांश सम्बन्धी फल 5/20/31 इन दोनों फलों के अन्तर 5/20/31 - 5/5/38 = 0/14/53 को 16 से गुणा करके गुणनफल को ६० का भाग दिया तो लब्धि।

$$\frac{16 \times 0:14:53}{60} = 0:3:58$$

इस 0/3/58 को गतांश सम्बन्धी पलभा 5/5/38 + 12/24 = 6/3/31 में जोड दिया। तो स्वल्पान्तर से 5/9/36 भोपाल की अङ्गुलात्मिका पलभा हुई। इसी को अक्षभा या विषुवती भी कहते हैं।

पलभासारिणी

अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा
1	0/12/34	15	3/12/54	29	6/39/04	43	11/11/24
2	0/25/09	16	3/26/24	30	6/55/41	44	11/35/24
3	0/37/44	17	3/40/05	31	7/12/36	45	12/00/00
4	0/50/21	18	3/53/06	32	7/29/53	46	12/25/37
5	1/03/00	19	4/07/55	33	7/47/31	47	12/52/04
6	1/15/14	20	4/22/01	34	8/05/38	48	13/19/34
7	1/28/23	21	4/36/22	35	8/24/07	49	13/48/18
8	1/41/10	22	4/50/53	36	8/43/05	50	14/18/03
9	1/54/00	23	5/05/38	37	9/02/25	51	14/18/03
10	2/06/54	24	5/20/31	38	9/22/30	52	15/21/32
11	2/19/55	25	5/32/42	39	9/43/01	53	15/55/30
12	2/33/00	26	5/51/07	40	10/3/36	54	16/31/01
13	2/46/41	27	6/06/50	41	10/28/48	55	17/08/34
14	2/59/28	28	6/22/48	42	10/48/18		

(सारिणी के ऊपर की प्रथम पंक्ति में क्रान्त्यंश है तथा सारणी के वामपार्श्व में प्रथम पंक्ति में अक्षांश है।)

।। चरसारिणी ।।

क्रान्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
11	00 47	01 34	02 20	03 07	03 53	04 40	05 28	06 16	07 03	07 51	08 40	09 29	10 17	11 07	11 56	12 47	13 38	14 29	15 21	16 14	17 07	18 01	18 56	19 52
12	00 51	01 42	02 33	03 24	04 16	05 09	05 59	06 50	07 43	08 36	09 28	10 21	11 15	12 09	13 03	13 59	14 54	15 50	16 47	17 45	18 43	19 42	20 42	21 43
13	00 55	01 51	02 46	03 42	04 38	05 34	06 30	07 26	08 23	09 20	10 17	11 15	12 13	13 12	14 11	15 11	16 11	17 12	18 16	19 17	20 20	21 25	22 30	23 36
14	01 00	02 00	03 00	04 00	05 00	06 00	07 01	08 02	09 03	10 05	11 07	12 09	13 12	14 15	15 19	16 24	17 29	18 35	19 47	20 50	21 58	23 08	24 19	25 30
15	01 04	02 09	03 13	04 18	05 21	06 27	07 31	08 38	09 44	10 50	11 57	13 04	14 10	15 29	16 27	17 38	18 48	19 59	21 10	22 23	23 35	24 52	26 07	27 24
16	01 09	02 18	03 27	04 36	05 44	06 54	08 04	09 14	10 25	11 36	12 47	13 59	15 10	16 24	17 36	18 52	20 07	21 23	22 40	23 57	25 17	26 37	27 58	29 20
17	01 13	02 27	03 40	04 54	06 08	07 22	08 36	09 51	11 06	12 22	13 38	14 54	16 11	17 29	18 48	20 07	21 27	22 48	24 10	25 33	26 58	28 23	29 50	31 18
18	01 18	02 36	03 53	05 12	06 31	07 50	09 09	10 28	11 48	13 08	14 29	15 50	17 12	18 34	19 59	21 23	22 48	24 14	25 43	27 10	28 40	30 10	31 43	33 16
19	01 23	02 45	04 08	05 31	06 54	08 18	09 42	11 06	12 30	13 55	15 21	16 47	18 14	19 42	21 11	22 40	24 10	25 42	27 14	28 48	30 23	31 59	33 37	35 16
20	01 27	02 55	04 22	05 50	07 16	08 46	10 15	11 44	13 13	14 43	16 14	17 45	19 17	20 50	22 23	23 57	25 33	27 10	28 47	30 27	32 08	33 49	35 33	37 18
21	01 32	03 04	04 36	06 09	07 42	09 15	10 48	12 22	13 57	15 31	17 07	18 43	20 20	21 58	23 37	25 17	26 58	28 40	30 23	32 08	33 54	35 41	37 31	39 22
22	01 37	03 14	04 51	06 29	08 06	09 44	11 22	13 01	14 40	16 20	18 01	19 42	21 25	23 08	24 52	26 37	28 23	30 11	31 59	33 49	35 42	37 35	39 30	41 27
23	01 42	03 24	05 06	06 48	08 32	10 14	11 57	13 41	15 25	17 10	18 56	20 42	22 30	24 18	26 06	27 56	29 50	31 43	33 37	35 33	37 31	39 30	41 32	43 34
24	01 47	03 34	05 21	07 08	08 56	10 44	12 32	14 21	16 11	18 01	19 52	21 43	23 36	25 30	27 24	29 20	31 18	33 16	35 16	37 18	39 22	41 27	43 34	45 44
25	01 52	03 44	05 36	07 28	09 21	11 14	13 08	15 02	16 57	18 52	20 48	22 45	24 43	26 42	28 43	30 44	32 47	34 52	36 57	39 05	41 15	43 26	45 40	47 56
26	01 57	03 54	05 52	07 49	09 47	11 45	13 44	15 43	17 42	19 44	21 46	23 48	25 52	27 56	30 02	32 09	34 18	36 28	38 40	40 54	43 13	45 28	47 48	50 10
27	02 02	04 05	06 07	08 10	10 13	12 17	14 21	16 26	18 31	20 37	22 44	24 52	27 02	29 12	31 23	33 36	35 51	38 06	40 25	42 45	45 07	47 32	49 58	52 27
28	02 08	04 15	06 23	08 31	10 40	12 49	14 58	17 08	19 19	21 31	23 44	25 57	28 12	30 28	32 46	35 05	37 25	39 48	42 12	44 38	47 06	49 38	52 11	54 47
29	02 13	04 26	06 40	08 53	11 07	13 22	15 37	17 52	20 09	22 26	24 44	27 04	29 25	31 48	34 10	36 35	39 02	41 30	44 01	46 33	49 08	51 46	54 27	57 09

क्रान्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
30	02 19	04 37	06 56	09 15	11 35	13 55	16 16	18 37	21 00	23 22	25 46	28 12	30 39	33 06	35 36	38 07	40 40	43 15	45 52	48 31	51 13	53 57	56 45	59 35
31	02 24	04 49	07 13	09 37	12 02	14 29	16 55	29 23	21 50	24 21	26 50	29 21	31 54	34 28	37 04	39 41	42 21	45 02	47 46	50 32	53 20	56 12	59 06	62 04
32	02 30	05 00	07 30	10 01	12 32	15 04	17 36	20 09	22 43	25 18	27 54	30 32	33 11	35 52	38 33	41 16	44 03	46 52	49 42	52 35	55 31	58 30	61 33	64 37
33	02 36	05 12	07 48	10 25	13 02	15 39	18 16	20 57	23 37	26 18	28 59	31 44	34 29	37 16	44 05	42 56	45 48	48 44	51 40	54 41	57 44	60 51	63 54	67 03
34	02 42	05 24	08 05	10 49	13 32	16 12	19 01	21 45	24 32	27 19	30 08	32 58	35 49	38 44	41 39	44 36	47 36	50 38	53 44	56 51	60 01	63 15	66 33	69 54
35	02 48	05 36	08 25	11 14	14 03	16 53	19 44	22 37	25 24	28 22	31 17	34 14	37 13	40 13	43 15	46 19	49 27	52 36	55 44	59 04	62 22	65 44	69 10	72 40
36	02 54	05 49	08 44	11 39	14 35	17 31	20 28	23 27	26 26	29 27	32 29	35 32	38 37	41 45	44 54	48 06	51 20	54 37	57 57	61 20	64 47	68 17	71 51	75 30
37	03 01	06 02	09 03	12 05	15 06	18 10	21 14	24 19	27 25	30 33	33 46	36 52	40 05	43 19	46 36	49 55	53 17	56 41	60 07	63 40	67 15	70 54	74 38	78 25
38	03 08	06 15	09 23	12 32	15 41	18 50	22 01	25 13	28 26	31 41	34 56	38 14	41 34	44 54	48 20	51 47	55 17	58 49	62 25	66 05	69 48	73 36	77 28	81 25
39	03 14	06 29	09 44	13 00	16 15	19 32	22 50	26 08	29 29	32 50	36 14	39 39	42 05	46 36	50 08	53 42	57 20	60 58	64 46	68 34	72 36	76 23	80 25	84 32
40	03 21	06 43	10 05	13 27	16 47	20 14	23 38	27 05	30 33	34 02	37 33	41 06	44 48	48 18	51 58	55 41	59 28	63 17	67 10	71 08	75 00	79 16	83 21	87 45
41	03 29	06 59	10 25	13 56	17 27	20 56	24 30	28 04	31 39	35 16	38 55	42 35	46 19	49 58	53 53	57 44	61 39	65 38	69 40	73 47	77 78	82 15	86 37	91 05
42	03 36	07 12	10 49	14 26	18 00	21 43	25 23	29 05	32 48	36 31	40 19	44 06	47 59	51 54	55 51	59 51	63 55	68 04	72 15	76 31	80 53	85 20	89 53	94 32
43	03 44	07 28	11 12	14 57	18 43	22 27	26 18	30 07	33 58	37 51	41 56	45 44	49 44	53 47	57 53	62 02	66 16	70 33	74 55	79 22	83 54	88 32	93 16	98 07
44	03 52	07 44	11 34	15 29	19 23	23 18	27 14	31 10	35 12	39 10	43 17	47 23	51 32	55 40	59 57	64 18	68 41	73 09	77 41	82 19	87 02	91 52	96 48	101 51
45	04 00	08 00	12 01	16 02	20 05	24 04	28 10	32 19	36 27	40 37	44 47	49 05	53 24	57 45	62 10	66 40	71 13	75 51	80 34	85 23	90 18	95 19	100 28	105 44
46	04 09	08 17	12 27	16 37	20 48	25 00	29 13	33 28	37 46	42 05	46 27	50 52	55 21	59 50	64 26	69 06	73 50	79 39	83 33	88 34	93 41	98 56	104 18	09 49
47	04 18	08 35	12 53	17 12	21 32	25 51	30 16	34 40	39 07	43 36	48 08	52 42	57 17	62 02	66 48	71 38	76 33	81 34	86 41	91 50	97 14	102 42	108 19	114 04
48	04 27	08 54	13 21	17 49	22 18	26 39	31 21	35 55	40 30	45 10	49 52	54 37	59 26	64 18	69 15	74 17	79 24	84 36	89 56	95 22	100 56	106 43	112 30	118 32

चरमिनट-चरसारिणी से चरमिनट का साधन करके उसमे निम्नोक्त कोष्ठक के अनुसार संस्कार करने पर सूर्योदय वा सूर्यास्त समय प्राप्त होंगे। उसमे कालान्तर एवं देशान्तर संस्कार करने पर स्वदेश (अपने स्थान) का मानक सूर्योदय होगा। **चरमिनट साधन** -चरसारिणी में क्रान्त्यंश और अक्षांश के आधार पर चर मिनट दिया गया है। उनके आधार पर अपने स्थान के अक्षांश का उस दिन की क्रान्ति से अनुपात से चरमिनट का साधन करना है।

।। क्रान्तिसारिणी ।।

दिनांक	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1	-23°04'	-17°20'	-7°49'	+4°18'	+14°54'	+21°58'	+23°09'	+18°10'	+8°30'	-2°57'	-14°14'	-21°43'
2	-22°59'	-17°03'	-7°26'	+4°42'	+15°12'	+22°06'	+23°05'	+17°55'	+8°09'	-3°20'	-14°34'	-21°52'
3	-22°54'	-16°46'	-7°03'	+5°05'	+15°30'	+22°14'	+23°01'	+17°40'	+7°47'	-3°44'	-14°53'	-22°01'
4	-22°48'	-16°28'	-6°40'	+5°28'	+15°47'	+22°22'	+22°56'	+17°24'	+7°25'	-4°07'	-15°11'	-22°10'
5	-22°42'	-16°10'	-6°17'	+5°51'	+16°05'	+22°29'	+22°51'	+17°08'	+7°03'	-4°30'	-15°30'	-22°18'
6	-22°36'	-15°52'	-5°54'	+6°13'	+16°22'	+22°35'	+22°45'	+16°52'	+6°40'	-4°53'	-15°48'	-22°25'
7	-22°28'	-15°34'	-5°30'	+6°36'	+16°39'	+22°42'	+22°39'	+16°36'	+6°18'	-5°16'	-16°06'	-22°32'
8	-22°21'	-15°15'	-5°07'	+6°59'	+16°55'	+22°47'	+22°33'	+16°19'	+5°56'	-5°39'	-16°24'	-22°39'
9	-22°13'	-14°56'	-4°44'	+7°21'	+17°12'	+22°53'	+22°26'	+16°02'	+5°33'	-6°02'	-16°41'	-22°46'
10	-22°05'	-14°37'	-4°20'	+7°43'	+17°27'	+22°58'	+22°19'	+15°45'	+5°10'	-6°25'	-16°58'	-22°52'
11	-21°56'	-14°18'	-3°57'	+8°07'	+17°43'	+23°02'	+22°11'	+15°27'	+4°48'	-6°48'	-17°15'	-22°57'
12	-21°47'	-13°58'	-3°33'	+8°28'	+17°59'	+23°07'	+22°04'	+15°10'	+4°25'	-7°10'	-17°32'	-23°02'
13	-21°37'	-13°38'	-3°10'	+8°50'	+18°14'	+23°11'	+21°55'	+14°52'	+4°02'	-7°32'	-17°48'	-23°07'
14	-21°27'	-13°18'	-2°46'	+9°11'	+18°29'	+23°14'	+21°46'	+14°33'	+3°39'	-7°55'	-18°04'	-23°11'
15	-21°16'	-12°58'	-2°22'	+9°33'	+18°43'	+23°17'	+21°37'	+14°15'	+3°16'	-8°18'	-18°20'	-23°14'
16	-21°06'	-12°37'	-1°59'	+9°54'	+18°58'	+23°20'	+21°28'	+13°56'	+2°53'	-8°40'	-18°35'	-23°17'
17	-20°54'	-12°16'	-1°35'	+10°16'	+19°11'	+23°22'	+21°18'	+13°37'	+2°30'	-9°02'	-18°50'	-23°20'
18	-20°42'	-11°55'	-1°11'	+10°37'	+19°25'	+23°24'	+21°08'	+13°18'	+2°06'	-9°24'	-19°05'	-23°22'
19	-20°30'	-11°34'	-0°48'	+10°58'	+19°38'	+23°25'	+20°58'	+12°59'	+1°43'	-9°45'	-19°19'	-23°24'
20	-20°18'	-11°13'	-0°24'	+11°19'	+19°51'	**+23°26'**	+20°47'	+12°39'	+1°20'	-10°07'	-19°33'	-23°25'
21	-20°05'	-10°52'	**0°00'**	+11°39'	+20°04'	**+23°26'**	+20°36'	+12°19'	+0°57'	-10°29'	-19°47'	**-23°26'**
22	-19°52'	-10°30'	+0°24'	+12°00'	+20°16'	**+23°26'**	+20°24'	+11°59'	+0°33'	-10°50'	-20°00'	**-23°26'**
23	-19°38'	-10°08'	+0°47'	+12°20'	+20°28'	**+23°26'**	+20°12'	+11°39'	**+0°10'**	-11°12'	-20°13'	**-23°26'**
24	-19°24'	-9°46'	+1°11'	+12°40'	+20°39'	+23°25'	+20°00'	+11°19'	-0°14'	-11°33'	-20°26'	**-23°26'**
25	-19°10'	-9°24'	+1°35'	+13°00'	+20°50'	+23°24'	+19°47'	+10°58'	-0°37'	-11°54'	-20°38'	-23°25'
26	-18°55'	-9°02'	+1°58'	+13°19'	+21°01'	+23°23'	+19°34'	+10°38'	-1°00'	-12°14'	-20°50'	-23°23'
27	-18°40'	-8°39'	+2°22'	+13°38'	+21°12'	+23°21'	+19°21'	+10°17'	-1°24'	-12°35'	-21°01'	-23°21'
28	-18°25'	-8°17'	+2°45'	+13°58'	+21°22'	+23°19'	+19°08'	+9°56'	-1°47'	-12°55'	-21°12'	-23°19'
29	-18°09'	-8°03'	+3°09'	+14°16'	+21°31'	+23°16'	+18°54'	+9°35'	-2°10'	-13°15'	-21°23'	-23°16'
30	-17°53'		+3°32'	+14°35'	+21°41'	+23°13'	+18°40'	+9°13'	-2°34'	-13°35'	-21°33'	-23°12'
31	-17°37'		+3°55'		+21°50'		+18°25'	+8°52'		-13°55'		-23°08'

२१ मार्च से २३ सितम्बर को विषुवत्दिन होता है, अतः तब तक उत्तरा क्रान्ति और २३ सितम्बर से २० मार्च तक दक्षिणा क्रान्ति रहेगी। यह सायन संक्रान्ति का दिन है । सायनसंक्रान्ति का उपयोग सर्वत्र नहीं होता है यथा - नन्वेवमयनसंक्रमस्य मुख्यत्वे तेन मानेन पञ्चाङ्गगणना स्यात्। चन्द्रादीनामप्ययनचलनदर्शनात्। न च सायनांशाभ्यां निरयणांशाभ्यां वा सूर्यचन्द्राभ्यां तिथेस्तुल्यत्वादस्तु पञ्चाङ्गगणनेति वाच्यम्। अश्विन्यादिभानां विष्कम्भादियोगानां च विसंवादात्। किञ्च सायनसंक्रमरहितस्य चान्द्रमासस्याधिमासत्वव्यवहारप्रसङ्गः। तथा तादृक्संक्रान्तिद्वययुतस्य क्षयमासत्वव्यवहारप्रसङ्गः, विवाहादौ च सौरमासगणनाप्यनेनापि मानेन स्यात्। पञ्चाङ्गगणना न्यूनाधिमाससौरमासादिकमप्यनेन मानेन भवति । अयनसंक्रान्ति में भी दान देना, जपकरना, हवन करना, श्राद्ध करना आदि सत्कर्म बहुत पुण्यदायक होते हैं।

।। वेलान्तर सारिणी ।।

दिनाँक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
जनवरी	+03 07	03 35	04 04	04 33	04 59	05 25	05 53	06 19	06 45	07 11	07 35	07 59	08 23	08 45	09 07	09 20	09 50	10 11	10 29	10 48	11 06	11 36	11 49	11 55	12 11	12 24	12 37	12 48	13 01	13 12	+13 22
फरवरी	+ 13 31	13 41	13 47	13 53	14 00	14 06	14 10	14 13	14 17	14 18	14 21	14 20	14 19	14 19	14 17	14 13	14` 11	14 08	14 02	13 56	13 51	13 43	13 37	13 29	13 20	13 10	13 00	+12 49	12 41		
मार्च	+12 38	12 27	12 14	12 03	11 51	11 37	11 23	11 09	10 55	10 40	10 24	10 07	09 52	09 37	09 20	09 05	08 49	08 27	08 11	07 53	07 35	07 17	06 58	06 41	06 24	06 04	05 45	05 28	05 08	04 52	+04 33
अप्रैल	+04 15	03 57	03 38	03 21	03 04	02 44	02 21	02 12	01 55	01 40	01 22	01 08	00 51	00 33	00 22	+0 05	-0 10	00 24	00 37	00 51	01 04	01 18	01 21	01 41	01 50	02 04	02 14	02 23	02 32	-2 41	
मई	- 02 49	02 56	03 09	03 10	03 17	03 21	03 24	03 31	03 34	03 38	03 40	03 42	03 43	03 45	03 44	03 45	03 44	03 42	03 40	03 38	03 34	03 33	03 28	03 23	03 18	03 12	03 05	03 01	02 53	02 45	-02 37
जून	+02 29	02 20	02 12	02 01	01 52	01 40	01 29	01 17	01 08	00 55	00 43	00 31	00 20	-0 07	+0 06	00 18	00 30	00 45	00 57	01 10	01 22	01 37	01 50	02 01	02 13	02 27	02 40	02 51	03 06	+3 17	
जुलाई	+03 29	03 41	03 52	04 05	04 15	04 26	04 36	04 46	04 55	05 03	05 13	05 22	05 39	05 37	05 43	05 50	05 56	06 02	06 06	06 09	06 14	06 17	06 19	06 20	06 23	06 24	06 25	06 24	06 23	06 22	+06 20
अगस्त	+06 18	06 14	06 11	06 05	06 09	05 56	05 50	05 42	05 35	05 28	05 18	05 09	04 59	04 49	04 37	04 26	04 15	04 02	04 49	03 35	03 20	03 06	02 51	02 36	02 21	02 03	01 48	01 31	01 12	00 56	+0 37
सितम्बर	+0 09	+0 00	-0 19	00 38	00 56	01 17	01 38	01 58	02 18	02 39	03 01	03 21	03 41	04 03	04 24	04 44	05 07	05 28	05 51	06 11	06 30	06 54	07 16	07 36	07 56	08 17	08 38	08 58	09 18	-9 38	
अक्टूबर	-09 58	10 17	10 36	10 54	11 13	11 32	11 49	12 06	12 22	12 40	12 56	13 13	13 27	13 43	13 56	14 10	14 22	14 35	14 47	14 59	15 08	15 19	15 28	15 38	15 45	15 52	15 59	16 05	16 08	16 14	-16 17
नवम्बर	-16 20	16 22	16 23	16 23	16 22	16 22	16 19	16 15	16 13	16 08	16 02	15 56	15 49	15 42	15 32	15 33	15 13	15 01	14 58	14 36	14 22	14 07	13 52	13 35	13 17	13 01	12 42	12 22	12 02	-11 41	
दिसम्बर	-11 19	10 57	10 33	10 12	09 47	09 22	08 56	08 33	08 06	07 49	07 12	06 45	06 17	05 49	05 20	04 52	04 22	03 54	03 24	02 55	02 24	01 55	01 25	00 35	-0 25	+0 05	00 35	01 05	01 34	02 04	+2 33

जैसे क्रान्तिसारणी से स्थान विशेष का सूर्योदय दिनमानादि ज्ञान के लिए चरान्तर का ज्ञान होता है, वैसे भी वेलान्तर संस्कार से सूर्योदय द्वारा स्टेण्डर्ड स्पष्टसूर्योदय का ज्ञान होता है । इस सारणी में दिनाङ्क मास के द्वारा वेलान्तर का ज्ञान होता है।

भोपाल लग्नसारिणी (अक्षांश 23°16 पलभा 5/9/35, स्वोदयपल 227,258, 306, 339, 340, 331)

इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतं च। यद्राशिभागस्थ तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं हि कलानुपातात्।।

बाये से दायें क्रम में अंश तथा ऊपर से नीचे क्रम में राशियाँ प्रदत्त है। राशि एवं अंश के सम्मुख जो अंक (घटी,पल,विपल) हो उसमें इष्टकाल जोड़ने पर जो फल (घटी,पल,विपल) प्राप्त हो वह अंक जिस राशि एवं अंश के सामने विद्यमान हो वही राशि एवं अंश लग्न की राशि एवं अंश होते है। कला एवं विकला का ज्ञान अनुपात से किया जा सकता है।

राशि अंश	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
मेष	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6	6	7
०	1	9	16	24	31	39	47	55	4	12	21	30	38	47	55	4	13	21	30	38	47	56	4	13	21	30	39	47	56	4
	36	10	44	18	52	26	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48
वृष	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11	11	11	11	11
१	13	22	30	39	47	56	5	15	25	35	45	55	6	16	26	36	46	56	7	17	27	37	47	57	8	18	28	38	48	58
	24	0	36	12	48	24	0	10	20	30	40	50	0	0	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50
मिथुन	12	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	17	17	17
२	9	19	29	39	49	59	10	21	32	43	55	6	17	29	40	51	3	14	25	36	48	59	10	22	33	44	56	7	18	29
	0	10	20	30	40	50	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54
कर्क	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22	22	23
३	41	52	3	15	26	37	49	0	11	23	34	45	57	8	19	31	42	53	5	16	27	39	50	1	13	24	35	47	58	9
	12	30	48	6	24	42	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40
सिंह	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	27	28	28	28	28
४	21	32	43	55	6	17	29	40	51	2	13	24	35	46	57	8	19	30	41	52	3	14	25	36	47	58	9	20	31	42
	0	20	40	0	20	40	0	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	38	40	42	44	46
कन्या	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34
५	53	4	15	26	37	48	0	11	22	33	44	55	6	17	28	39	50	1	12	23	34	45	56	7	18	29	40	51	2	13
	48	50	52	54	56	58	0	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	38	40	42	44	46
तुला	34	34	34	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39
६	24	35	46	57	8	19	31	42	53	5	16	27	39	50	1	13	24	35	47	58	9	21	32	43	55	6	17	29	40	51
	48	50	52	54	56	58	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40
वृश्चिक	40	40	40	40	40	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	44	45	45	45
७	3	14	25	37	48	59	11	22	33	44	56	7	18	30	41	52	4	15	26	37	49	0	11	23	34	45	57	8	19	30
	0	20	40	0	20	40	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54
धनु	45	45	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50
८	42	53	4	16	27	38	50	0	10	20	30	40	51	1	11	21	31	41	52	2	12	22	32	42	53	3	13	23	33	43
	12	30	48	6	24	42	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50
मकर	50	51	51	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55
९	54	4	14	24	34	44	55	3	12	20	29	38	46	55	3	12	21	29	38	46	55	4	12	21	29	38	47	55	4	12
	0	10	20	30	40	50	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48
कुम्भ	55	55	55	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	59
१०	21	30	38	47	55	4	13	20	28	35	43	50	58	5	13	21	28	36	43	51	58	6	14	21	29	36	44	51	59	7
	24	0	36	12	48	24	0	34	8	42	16	50	24	58	32	6	40	14	48	22	56	30	4	38	12	46	20	54	28	2
मीन	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	2
११	14	22	29	37	44	52	0	7	15	22	30	37	45	52	0	8	15	23	30	38	45	53	1	8	16	23	31	38	46	54
	36	10	44	18	52	26	0	34	8	42	16	50	24	58	32	6	40	14	48	22	56	30	4	34	12	46	20	54	28	2

मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों का अक्षांश, पलभा, रेखांश, देशान्तर मिनट और मेषादि लग्न प्रमाण

स्थान	अक्षांश	पलभा	रेखांश	देशान्तर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
भोपाल	23 उ 16	05/09	77 पू 36	-19/36	227	258	305	339	340	331	331	340	339	305	258	227
इन्दौर	22 उ 44	05/02	75 पू 50	-26/40	228	257	305	340	339	328	328	339	340	305	257	228
धार	22 उ 35	04/59	75 पू 20	-28/40	228	260	307	337	338	328	328	338	337	307	260	228
रतलाम	23 उ 31	05/13	75 पू 07	-29/32	226	257	306	340	341	330	330	341	340	306	257	226
दतिया	25 उ 39	05/46	78 पू 27	-16/12	220	253	304	342	345	336	336	345	342	304	253	220
भिन्ड	26 उ 36	06/01	78 पू 46	-14/56	218	251	303	343	347	338	338	347	343	303	251	218
ग्वालियर	26 उ 15	05/55	78 पू 10	-17/20	219	252	303	343	346	337	337	346	343	303	252	219
ललितपुर	24 उ 22	05/26	78 पू 28	-16/08	224	256	305	341	342	332	332	342	341	305	356	224
बैतूल	21 उ 51	04/49	77 पू 58	-18/08	230	261	307	337	337	274	274	337	337	307	261	230
छिन्दवाडा	22 उ 03	04/52	78 पू 59	-14/04	229	260	307	339	338	327	327	338	339	307	260	229
बिलासपुर	22 उ 05	05/53	82 पू 13	-01/08	229	260	307	339	338	327	327	338	339	307	260	299
अम्बिकापुर	23 उ 10	05/08	83 पू 15	+03/00	226	258	306	340	340	327	327	340	340	306	258	227
रायपुर	21 उ 15	04/39	81 पू 41	-03/16	231	262	307	337	336	325	325	336	337	307	262	231
दुर्ग	21 उ 12	04/39	81 पू 18	-04/48	231	262	307	337	336	325	325	336	337	307	262	231
रायसेन	23 उ 15	05/09	77 पू 50	-18/40	226	258	306	340	340	330	330	340	340	306	258	226
नरसिंहपुर	22 उ 56	06/05	79 पू 12	-13/12	217	250	303	343	348	339	339	348	343	303	250	217
विदिशा	23 उ 32	05/13	77 पू 51	-18/36	226	257	306	340	341	330	330	341	340	306	257	226
पन्ना	24 उ 49	05/32	80 पू 14	-09/04	223	255	305	341	343	333	333	343	341	305	255	223
रीवा	24 उ 31	05/28	81 पू 19	-04/44	223	255	305	341	343	333	333	343	341	305	255	223
उज्जैन	23 उ 09	05/08	75 पू 43	-27/08	227	258	306	340	340	329	329	340	340	306	258	227
इटारसी	22 उ 30	05/02	77 पू 55	-18/20	228	259	307	339	339	328	328	339	339	307	259	228
कटनी	23 उ 48	05/17	80 पू 12	-09/12	225	257	306	340	341	331	331	341	340	306	257	225
सागर	23 उ 50	05/18	78 पू 50	-14/40	225	257	306	340	341	331	331	341	340	306	257	225
होशंगाबाद	22 उ 46	05/02	77 पू 45	-19/00	228	259	307	339	339	328	328	339	339	307	259	228
जबलपुर	23 उ 10	05/18	79 पू 59	-10-04	225	257	306	340	341	331	331	341	340	306	257	225
राजगढ़	24 उ 00	05/20	76 पू 45	-23/00	225	256	306	340	342	331	331	342	340	306	256	225
पचमढ़ी	22 उ 29	04/58	78 पू 22	-16/32	228	259	307	339	339	328	328	339	339	307	259	228
नीमच	24 उ 27	05/26	74 पू 52	-30/32	224	256	305	341	342	332	332	342	341	305	256	224
सिहोर	23 उ 13	05/09	77 पू 00	-22/00	227	258	306	340	340	329	329	340	340	306	258	227

चैत्र शुक्लपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

														सू.उ.	सू.अ.	दि.मा.	च.रा.प्र.	
तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.	दिनांक
01	रवि	30/05	18:32	उ.भा.	34/07	20:09	शुक्ल	32/02	19:19	किंस्तुघ्न	06:36	बव बालव	18:32 30:12	06:30	18:27	29/52		18
02	सोम	28/30	17:53	रेवती	34/07	20:08	ब्रह्म	27/55	17:39	कौलव	17:53	तैतिल	29:22	06:29	18:27	29/55	मेष 20:08	19
03	मंगल	25/58	16:51	अश्विनी	33/10	19:44	ऐन्द्र	23/00	15:40	गर	16:51	वणिज	28:09	06:28	18:28	30/00		20
04	बुध	22/30	15:27	भरणी	31/25	19:01	वैधृति	17/30	13:27	विष्टि	15:27	बव	26:39	06:27	18:28	30/02	वृष 24:48	21
05	गुरु	18/35	13:52	कृतिका	29/07	18:05	विष्कु	11/27	11:01	बालव	13:52	कौलव	24:57	06:26	18:28	30/05		22
06	शुक्र	14/05	12:03	रोहिणी	26/20	16:57	प्रीति आयु	05/00 58/13	08:25 29:42	तैतिल	12:03	गर	23:04	06:25	18:29	30/10	मिथुन 28:20	23
07	शनि	09/15	10:06	मृगशिरा	23/15	15:42	सौभा	51/15	26:54	वणिज	10:06	विष्टि	21:04	06:24	18:29	30/13		24
08 09	रवि	04/10 58/47	08:03 29:54	आर्द्रा	19/52	14:20	शोभ	44/08	24:02	बव	08:03	बालव कौलव	18:58 29:54	06:23	18:29	30/15		25
10	सोम	53/23	27:43	पुनर्वसु	16/23	12:55	अति	36/53	21:07	तैतिल	16:48	गर	27:43	06:22	18:30	30/20	कर्क 07:17	26
11	मङ्गल	47/58	25:32	पुष्य	12/48	11:28	सुक	29/35	18:11	वणिज	14:37	विष्टि	25:32	06:21	18:30	30/22		27
12	बुध	42/40	23:24	आश्ले.	09/12	10:01	धृति	22/23	15:17	बव	12:28	बालव	23:24	06:20	18:30	30/25	सिंह 10:01	28
13	गुरु	37/40	21:23	मघा	05/50	08:39	शूल	15/22	12:28	कौलव	10:32	तैतिल	21:23	06:19	18:31	30/30		29
14	शुक्र	33/10	19:35	पू.फा.	02/50	07:27	गण्ड	08/40	09:47	गर	08:29	वणिज	19:35	06:19	18:31	30/30	कन्या 13:11	30
15	शनि	29/32	18:07	उ.फा. हस्त	00/30 59/08	06:30 29:56	वृद्धि ध्रुव	02/35 57/12	07:20 29:11	विष्टि	06:51	बव बालव	18:07 29:36	06:18	18:32	30/35		31

उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्तऋतु (18 मार्च से 31 मार्च 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
18	नववर्षारम्भ, वि.सं.2075, विरोधीकृत् संवत्सरारम्भ, कल्पादि, स्वायम्भुवमन्वादि, गुडी पडवा, वर्षफलश्रवण-ध्वजारोहण निम्बपत्रप्राशन, वसन्तनवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दुर्गापाठारम्भ, नर्वाणमंत्र जप व शैलपुत्री पूजन, उ.भा. में सूर्ययुति मुहूर्ताभाव, सर्वार्थसिद्धि 20:09 तक, मृत्यु 18:32 तक।।
19	चन्द्रदर्शन, आज ब्रह्मचारिणी देवी पूजन व दर्शन, शिवपूजनादि शुभ, पंचक समाप्ति 20:08 पर। रेवती में सूर्यभोग्य मुहूर्ताभाव, मूलदोष व मूलशान्ति, अश्विनी में नववस्त्राभूषण धारण, व्यापारारम्भ, होटलादि कार्यारम्भ, वाहनादि संचालन/व्यापार, चल-कार्यो का मुहूर्त है। मृत्यु 17:53 तक।।
20	भद्रा आरम्भ 28:09 से, गौरी/गणगौर तृतीया, गौरी/शिवदोलोत्सव, मत्स्यजयन्ती, सौभाग्यगौरीव्रत, मन्वादि 3, सायन सूर्य मेष में २१.४६, अश्विनी में 15:40 के पूर्व सूतिकास्नान, रोगमुक्तस्नान मुहूर्त है, १९:४४ तक मूलदो.रवियोग १९:४५ से, सिद्धि 16:51 तक, सर्वार्थसिद्धि 19:44 तक।
21	भद्रासमाप्ति 15:27 तक, दमनक/विनायकचतुर्थी, दमनोत्सव, भरणी में वैधृतिदोष तदुपरान्त- अग्निहोत्र, नृत्यारम्भ, शिल्पारम्भ, गीतशिक्षण, धान्यादि का संग्रह, संधिकार्य, रत्नाभूषणादिकार्य, वस्त्रक्रयविक्रयादिकर्म रोगमुक्तस्नान का मुहूर्त है। कृत्तिका में केतुवेध, सर्वार्थसिद्धि 19:01 से, ।।
22	श्री/नाग/कल्पादिपंचमी, श्वेतवाराहकल्पादि, रामराज्य-महोत्सव, **मीनावतार**, कृत्तिका में केतुवेध, रोहिणी में गर्भाधान, चिकित्साकर्म, रत्नाभूषणादिकार्य, वस्त्रक्रयविक्रयादिकर्म, शिक्षणप्रशिक्षणादिकर्म, वाटिकाकर्म, कृषिकार्य, शान्तिकार्य का मुहूर्त है, रवियोग १८:०६ से,सिद्धि 13:52 तक ।।
23	स्कन्दषष्ठी, सूर्यषष्ठीव्रत (बिहार), स्कन्ददमनकोत्सव। रोहिणी में गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीनवस्त्राभूषणधारणनिर्माण, कृषिकर्म, ब्यूटीपार्लर, फर्नीचर, नृत्यकलादि, मृगशिरा में वस्तुवाहनभूमिभवनादिक्रयविक्रय, व्यापारारम्भ, सिद्धि 12:03 तक उपरान्त मृत्युयोग,।।
24	भद्रा आरम्भ 10:06 से 21:04 तक, अन्नपूर्णापरिक्रमा प्रारम्भ, महानिशापूजा, बलिदान। मृगशिरा में भद्रादोष (स्वर्ग में भद्रावास) विशेष मुहूर्त्ताभाव, द्विपुष्कर ६:२४ से१०:०६ तक, विशेष- सप्तमी शनि के योग में रात्रिकालीन कालरात्रि देवी की साधना शुभफलदायी होती है।
25	दुर्गाष्टमी, भवानीयात्रा, अन्नपूर्णापूजा, अशोकाष्टमी, भवानी उत्पत्ति (नवमीयुता ग्राह्या), रामनवमी, नवमी हवनारम्भ, स्वामीनारायण/ऋषभनाथ जय. (जैन) अन्नपूर्णापरिक्रमा समा.। आर्द्रा में ऑप्रेशन, उग्र/शस्त्रकर्म, धान्यच्छेदन, पुनर्वसु में शनिवेध, रवियोग १४:२१ से, सिद्धि 08:03 तक।।
26	नवरात्र पारणा, धर्मराजदशमी, देवीविसर्जन। पुनर्वसु में शनिवेध मुहूर्ताभाव, पुष्य में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, चिकित्सा, व्यापारारम्भ, औषधिकर्म, अमृत 27:43 तक, सर्वार्थसिद्धि 12:55 से ।।
27	भद्रा आरम्भ 14:37 से 25:32 तक, कामदा एकादशी सर्वेषां, विष्णुदोलोत्सव, सायं लक्ष्मी पूजा। पुष्य में भद्रा पूर्व पुंसवन, कृषिकर्म, पशु-पक्षीपालन, वस्त्राभूषण धारण, रत्नकर्म, उग्र/शस्त्रकार्यादि शुभ। मृत्यु 25:32 तक।
28	वामनद्वादशी, विष्णुदमनोत्सव, मदन द्वादशी, अश्लेषा में राहुयति दोष, मघा में उग्रकर्म, धान्यच्छेदन, शस्त्रनिर्माण, नृत्यारम्भ, शिल्पारम्भ, गीतशिक्षण, धान्यादि का संग्रह, संधिकार्यादि शुभ हैं, मूलदोष, सिद्धि 23:24 तक।।
29	अनङ्गत्रयोदशी, प्रदोषव्रत अनन्तपूजा, श्रीमहावीरजयन्ती (जैन)। मघा में ,नृत्य/शिल्पारम्भ, गीतशिक्षण, धान्यादिसंग्रह, पू.फा. में रोगमुक्तस्नान, मूलदोष,रवियोग ८:३९ से अमृत 21:23 तक उपरान्त मृत्युयोग।।
30	भद्रा आरम्भ 19:35 से, शैवचतुर्दशी, शिवपूजन, नृसिंहदोलोत्सव, हाटकेश्वर चतुर्दशी। चन्द्रोदय 17:35, पू.फा. /उ.फा. में रिक्ता व भ्रदादोष मुहूर्ताभाव है सामान्य में रोगमुक्तस्नान, अमृत 19:35 तक।।
31	भद्रा समाप्त 06:51 पर, पूर्णिमाव्रत, सत्यनारायणव्रत, स्नानदानादि पूर्णिमा, हनुमान जयन्ती (दक्षिण भारत), वैशाख स्नान आरम्भ। चन्द्रोदय 18:33, हस्त में सूर्यवेध मुहूर्ताभाव, मृत्यु 18:07 तक उपरान्त अमृतयोग।।

पञ्चक में विशेष - वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम्। प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहणम् शय्यकाविरचनं च वर्जयेत्। अर्थात् धनिष्ठा के उत्तरार्द्ध यानि अंतिम दो चरण से लेकर अगले पाँच नक्षत्रों को पञ्चक कहते हैं। **पञ्चक में त्याज्य -** दक्षिण दिशा की यात्रा, गृहच्छादन (छत इत्यादि डालना या छाया करना) प्रेत (मृतक व्यक्ति) का दाह, घास अथवा लकड़ी-कंडा का संग्रह और चारपाई बुनना वर्जित है। अत: अन्य कार्यों में पञ्चक का विचार न करें।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
18	11	3	13	42	11	8	37	35	8	06	04	00	11	21	06	23	6	28	59	34	11	19	34	06	8	14	15	22	3	18	45	45
19	11	4	13	24	11	21	49	13	8	06	38	21	11	21	42	54	6	28	57	49	11	20	48	28	8	14	18	18	3	18	42	24
20	11	5	13	4	0	5	15	16	8	07	12	36	11	22	11	23	6	28	55	52	11	22	02	49	8	14	21	09	3	18	39	23
21	11	6	12	43	0	18	53	38	8	07	46	46	11	22	31	43	6	28	53	45	11	23	17	08	8	14	23	54	3	18	36	12
22	11	7	12	19	1	2	41	58	8	8	20	50	11	22	43	54	6	28	51	26	11	24	31	24	8	14	26	34	3	18	33	02
23	11	8	11	52	1	16	3	85	8	8	54	48	11	22	47	60	6	28	48	57	11	25	45	39	8	14	29	8	3	18	29	51
24	11	9	11	24	2	0	40	6	8	9	28	41	11	22	44	11	6	28	46	17	11	26	59	52	8	14	31	36	3	18	26	40
25	11	10	10	53	2	14	46	35	8	10	2	28	11	22	32	46	6	28	43	27	11	28	14	3	8	14	33	59	3	18	23	29
26	11	11	10	20	2	28	56	16	8	10	36	9	11	22	14	7	6	28	40	25	11	29	28	11	8	14	36	17	3	18	20	18
27	11	12	9	44	3	13	7	47	8	11	9	45	11	21	48	46	6	28	37	13	0	0	42	18	8	14	38	29	3	18	17	08
28	11	13	9	6	3	27	19	19	8	11	43	14	11	21	17	20	6	28	33	51	0	1	56	22	8	14	40	35	3	18	13	57
29	11	14	8	26	4	11	28	18	8	12	16	37	11	20	40	33	6	28	30	19	0	3	10	24	8	14	42	35	3	18	10	46
30	11	15	7	43	4	25	31	23	8	12	49	54	11	19	59	16	6	28	26	36	0	4	24	24	8	14	44	30	3	18	07	35
31	11	16	6	59	5	9	24	44	8	13	23	5	11	19	14	24	6	28	22	44	0	5	38	22	8	14	46	19	3	18	4	24

रामनवमी में पूजन -अशोककुसुमैर्युक्तमर्घ्यं दद्याद्विचक्षण:। दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च।। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। परित्राणाय साधूनां जातो राम: स्वयं हरि:।। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभि: सहितोनघ।। मध्याह्न काल में भगवान का जन्मोत्सव मनाते हुए रामचरित मानस, रामरक्षा स्तोत्रादि का भक्तिपूर्वक पाठ करना चाहिए, **दमनोत्सव में विशेष** - (दमन को लेकर पंचगव्य से सीचें, जल से धोकर अशोकवृक्ष की जड़ में रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर पूजन करना चाहिए) -अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्रीशोकनाशन। शोकार्तो हर मे नित्यमानन्दं जनयस्व मे।।त्रुट्यादिकालपर्यन्त: काल रूपो महाबल। कलते चैव य: सर्वं तस्मै कालात्मने नम:।।

चैत्रनवरात्रारम्भनिर्णय: - अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।। (दुर्गापूजाविधिस्तु शारदीयनवरात्रवत् कर्तव्य:) **अष्टमीकर्तव्यम् -** चैत्रे मासे सिताष्टम्यां यो नरो नियतेन्द्रिय:। स्नायाल्लौहित्यतोयेषु स याति ब्रह्मण: पदम्।। (संकल्पं कृत्वा स्नानेन महत्पुण्यं प्राप्यते।)

कल्पाादि निणर्य- ब्रह्मणो या दिनस्यादि: कल्पादि: सा प्रकीर्तिता। वैशाखस्य तृतीया या कृष्णा या फाल्गुनस्य च। पंचमी चैत्रमासस्य तथैवान्त्या तथा परा। शुक्ला त्रयोदशी माघे कार्तिकस्य तु सप्तमी। नवमी मार्गशीर्षस्य सप्तैता: संस्मराम्यहम्।।

25 मार्च 2018 प्रात: 05:29
चैत्र शुक्ल 8 रविवार
पंक्तीष्टम् 57/45/00

31 मार्च 2018 प्रात: 05:29
चैत्र शुक्ल 15 शनिवार
पंक्तीष्टम् 57/57/30

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
18	07:50:58	09:28:39	11:29:36	13:41:19	16:01:18	18:13:53	20:22:47	22:38:20	00:56:48	03:00:36	04:49:51	06:20:30
19	07:47:01	09:24:42	11:25:39	13:37:22	15:57:21	18:09:56	20:18:50	22:34:23	00:52:51	02:56:39	04:45:54	06:16:33
20	07:43:04	09:20:45	11:21:42	13:33:25	15:53:24	18:05:59	20:14:53	22:30:26	00:48:54	02:52:42	04:41:57	06:12:36
21	07:39:07	09:16:48	11:17:45	13:29:28	15:49:27	18:02:02	20:10:56	22:26:29	00:44:57	02:48:45	04:38:00	06:08:39
22	07:35:10	09:12:51	11:13:48	13:25:31	15:45:30	17:58:05	20:06:59	22:22:32	00:41:00	02:44:48	04:34:03	06:04:42
23	07:31:13	09:08:54	11:09:51	13:21:34	15:41:33	17:54:08	20:03:02	22:18:35	00:37:03	02:40:51	04:30:06	06:00:45
24	07:27:16	09:04:57	11:05:54	13:17:37	15:37:36	17:50:11	19:59:05	22:14:38	00:33:06	02:36:54	04:26:09	05:56:48
25	07:23:19	09:01:00	11:01:57	13:13:40	15:33:39	17:46:14	19:55:08	22:10:41	00:29:09	02:32:57	04:22:12	05:52:51
26	07:19:22	08:57:03	10:58:00	13:09:43	15:29:42	17:42:17	19:51:11	22:06:44	00:25:12	02:29:00	04:18:15	05:48:54
27	07:15:25	08:53:06	10:54:03	13:05:46	15:25:45	17:38:20	19:47:14	22:02:47	00:21:15	02:25:03	04:14:18	05:44:57
28	07:11:28	08:49:09	10:50:06	13:01:49	15:21:48	17:34:23	19:43:17	21:58:50	00:17:18	02:21:06	04:10:21	05:41:00
29	07:07:31	08:45:12	10:46:09	12:57:52	15:17:51	17:30:26	19:39:20	21:54:53	00:13:21	02:17:09	04:06:24	05:37:03
30	07:03:34	08:41:15	10:42:12	12:53:55	15:13:54	17:26:29	19:35:23	21:50:56	00:09:24	02:13:12	04:02:27	05:33:06
31	06:59:37	08:37:18	10:38:15	12:49:58	15:09:57	17:22:32	19:31:26	21:46:59	00:05:27	02:09:15	03:58:30	05:29:09

आपत्ति- निवारक श्री राम मन्त्र- ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्। मन्त्र का प्रतिदिन ११०० बार तुलसीमाला से जप करने से मनुष्य की सभी आपत्ति का निवारण होता है। नवरात्रि में इस मन्त्र का जप करने से वर्ष पर्य्यन्त लाभ होता है।। रामरक्षा का पाठ करना भी आपत्ति में रक्षाप्रद होता है।

वैशाख कृष्णपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.
01	रवि	27/00	17:05	चित्रा	58/58	29:52	व्याघा.	52/52	27:26	कौलव	17:05	तैतिल	17:50	06:17	18:32	30/37	तुला 17:50
02	सोम	25/47	16:35	स्वाती	00	00	हर्ष.	49/42	26:09	गर	16:35	वणिज	28:39	06:16	18:32	30/40	
03	मङ्गल	26/13	16:44	स्वाती	00/17	06:22	वज्र	47/48	25:22	विष्टि	16:44	बव	29:08	06:15	18:33	30/45	वृश्चि. 25:10
04	बुध	28/18	17:33	विशाखा	03/10	07:30	सिद्धि	47/13	25:07	बालव	17:33	--	--	06:14	18:33	30/48	
05	गुरु	32/00	19:01	अनुराधा	07/45	09:19	व्यति.	47/53	25:22	कौलव	06:17	तैतिल	19:01	06:13	18:33	30/50	
06	शुक्र	37/10	21:04	ज्येष्ठा	13/45	11:42	वरी.	49/33	26:01	गर	08:02	वणिज	21:04	06:12	18:34	30/55	धनु 11:42
07	शनि	43/17	23:30	मूल	20/52	14:32	परिघ	51/50	26:55	विष्टि	10:17	बव	23:30	06:11	18:34	30/58	
08	रवि	49/48	26:05	पू.षा.	28/35	17:36	शिव	54/25	27:56	बालव	12:47	कौलव	26:05	06:10	18:34	31/00	मकर 24:23
09	सोम	56/02	28:34	उ.षा.	36/15	20:39	सिद्ध	56/45	28:51	तैतिल	15:19	गर	28:34	06:09	18:35	31/05	
10	मङ्गल	00	00	श्रवण	43/10	23:24	साध्य	58/23	29:29	वणिज	17:37	--	--	06:08	18:35	31/07	
10	बुध	01/25	06:41	धनिष्ठा	48/53	25:40	शुभ	58/55	29:41	विष्टि	06:41	बव	19:27	06:07	18:36	31/13	कुम्भ 12:37
11	गुरु	05/18	08:13	शत.	53/00	27:18	शुक्ल	58/13	29:23	बालव	08:13	कौलव	20:38	06:06	18:36	31/15	
12	शुक्र	07/28	09:04	पू.भा.	55/20	28:13	ब्रह्म	56/02	28:30	तैतिल	09:04	गर	21:08	06:05	18:36	31/18	मीन 22:03
13	शनि	07/50	09:12	उ.भा.	56/00	28:28	ऐन्द्र	52/33	27:05	वणिज	09:12	विष्टि	20:55	06:04	18:37	31/22	
14	रवि	06/27	08:38	रेवती	55/05	28:05	वैधृति	47/45	25:09	शकुनि	08:38	चतु.	20:02	06:03	18:37	31/25	मेष 28:05
30 01	सोम	03/30 59/23	07:27 29:47	अश्विनी	52/52	27:12	विष्कु	41/52	22:48	नाग	07:27	किंस्तु. बव	18:37 29:47	06:03	18:37	31/25	

उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्तऋतु (01 अप्रैल से 16 अप्रैल 2018 ई.तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	प्रपा (पौसर) कार्य, घटदान, पीपल में जलदान, कच्छपावतार, तुलसी से विष्णु पूजा। चित्रा में वास्तुकृषिकर्म, औषधिसेवन, चिकित्साकार्य, व्यापारारम्भ, धान्यच्छेदन मुहूर्त, मृत्युयोग 17:05 तक तदुपरान्त द्विपुष्करयोग 17:04 से ।।
02	भद्रा आरम्भ 28:39 से, आर्यभट्ट जयन्ती, स्वाती में गर्भाधान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन,कृषिकार्य, वस्तुवाहनादिक्रय, चिकित्साकार्य, व्यापारारम्भ, वाटिकादिरोपण का मुहूर्त है, यायीजययोग 16:35 से, मृत्युयोग 16:35 तक ।।
03	भद्रा समाप्ति 16:44 पर, अङ्गारकसंकटचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21:20, स्वाती /विशाखा में उग्रकार्य, ऑप्रेशन, रोगमुक्तस्नान, शस्त्रनिर्माण, अग्निकार्य का मुहूर्त है, सिद्धियोग 16:44 तक तदुपरान्त स्थायीजययोग ।।
04	अनुसूया जयन्ती। चन्द्रोदय 22:14, अनुराधा में रिक्तोपरान्त गर्भाधान, जातकर्म, व्यापारारम्भ, पशु-वाहन-वस्तु क्रय-विक्रय, मत्स्य-पशु-पक्षीपालन, रेडीमेड उद्योग, फर्नीचरादि कार्य प्रशिक्षणकार्य मुहूर्त है, सर्वार्थसिद्धियोग 07:30 से ।।
05	अनुराधा एवं ज्येष्ठा में व्यतिपात दोष मुहूर्ताभाव है। ज्येष्ठा में कृषिकार्य, शस्त्रनिर्माण व उग्रकार्य का मुहूर्त है। आज ९:१९ से सम्पूर्ण दिन मूलदोष व मूलशान्ति, यायीयोग - सर्वार्थसिद्धियोग 09:19 तक, सिद्धियोग 19:01 तक ।।
06	भद्रा आरम्भ 21:04 से। ज्येष्ठा में पशुसेवा, क्रयविक्रयादिकार्य, पक्षीपालन, ब्यूटीपार्लर, कलात्मककार्य, शस्त्रनिर्माण मुहूर्त है, मूल दोष सम्पूर्णदिन व मूल में शनियुतिदोष, रवियोग 11:42 से, सिद्धियोग 21:04 तक तदुपरान्त मृत्युयोग ।।
07	भद्रा समाप्ति 10:17 पर, गुरु अर्जुन देव जयन्ती, शनिपूजन जप होम दानादि कर्मशुभ हैं। मूल में शनियुति मूहूर्ताभाव है, मूलदोष 14:32 तक, पू.षा. में भौमयुतिदोष के कारण मुहूर्ताभाव है । रवियोग 14:32 तक ।।
08	शीतलाष्टमी (आज बासी भोजन प्रशस्त), पू.षा. में भौमयुतिदोष व उ.षा. में नवान्नभक्षण, कृषिकार्य, व्यापारारम्भ, औषधिसेवन चिकित्साकार्य, पशु-मत्स्य-पक्षीपालन मुहूर्त है, सिद्धियोग 26:05 तक, सर्वार्थसिद्धियोग 17:36 से ।।
09	उ.षा. में रिक्तादोष, रोगविमुक्तस्नान मुहूर्त है, यायीजययोग 20:39 तक, अमृतयोग 28:34 से ।।
10	भद्रा आरम्भ 17:37 से, पंचक प्रारम्भ 23:24 से, श्रवण में केतुयुतिदोष मुहूर्ताभाव है ।।
11	भद्रा समाप्ति 06:41 पर, धनिष्ठा में जातकर्म, नामकरण, नूतनवस्त्रधारण, आभूषणनिर्माण व धारण, पशु/वस्तुक्रयविक्रयादि, शिल्पकार्य, औषधिनिर्माणसेवन, कृषिकर्म, शिल्पारम्भ, शिक्षणप्रशिक्षणकर्म का मुहूर्त है, अमृतयोग 06:41 से ।।
12	वरुथिनी एकादशी व्रत (सर्वेषाम्), वल्लभाचार्य जयन्ती, शतभिषा में पक्षीपालन, पशुवाहनादि क्रय विक्रय, हलचलाना, चलचित्रनिर्माण, बाटिकालगाना, औषधसेवन, कृषिकर्मादि, वस्त्राभूषणरत्नादिकर्म का मुहूर्त है।।
13	प्रदोषव्रत, पू.भा. में कृषिकर्म, धान्यच्छेदन, जलीयकार्य, पशुपक्षीमत्स्यपालन, ब्यूटीपार्लर, संधिकार्य, संग्रहकार्य, नृत्यारम्भ, कलात्मककार्य, रेडीमेड कार्य, फर्नीचर कार्य का मुहूर्त है, मृत्युयोग-स्थायीजययोग 09:04 तक।।
14	भद्रा आरम्भ 09:12 से 20:55 तक, मासशिवरात्रि, ☼**अश्वि. एवं मेष में सूर्य प्रवेश ०८.१३ से पुण्यकाल १४:१२ तक,** उ.भा. में उग्र कर्मादिकार्य शुभ मासान्तदोष मुहूर्ताभाव, यायीजययोग 09:12 तक तदुपरान्त सिद्धियोग, मूल दोषारम्भ 28:28 से ।।
15	पञ्चक समाप्ति 28:05, श्राद्ध अमावस्या, अमृतयोग 08:38 से, मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव है। मूलदोष व शान्ति।।
16	सोमवती अमावस्या स्नानादि,तीर्थ स्नान विशेष फल, सिद्धियोग 08:38 से 29:47 तक, मासान्तदोष मुहूर्ताभाव, मूल समाप्ति 27:12 पर, मूलशान्ति ।।

शुक्र का विशेष विचार - अस्तंगते भृगोः पुत्रे तथा सम्मुखमागते। नष्टे जीवे निरंशे वा नैव संचालयेद्वधूम्।। गर्भिण्या बालकेनापि नववध्वा द्विरागमे। पदमेकं न गन्तव्य शुक्रे सम्मुखदक्षिणे।। अर्थात् शुक्र के अस्त अथवा सम्मुख या दक्षिण रहने पर द्विरागमन या गर्भिणी की यात्रा वर्जित है। परिहार - काश्यपेषु वशिष्ठेषु चात्रिभृग्वाङ्गिरस्सु च। भारद्वाजेषु वात्सेषु प्रतिशुक्रो न दुष्यति।। दोहा - भृगु कश्यप अरु अंगिरा अत्रि वशिष्ठ सुजान, वत्स भरद्वाजहिं पुनः शुक्र दोष न मान। शुक्रान्ध विचार - रेवत्यादि मृगान्तञ्च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा, तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः।। अर्थात् रेवती से मृगशिरा तक चन्द्रमा के रहने पर शुक्र अन्धा रहता है उस समय शुक्र का सम्मुख दक्षिण दोष नहीं रहता है।

एकादशी व्रत अधिकारी - अष्टवर्षाधिको मर्त्यो ह्यशीतिन्यूनवत्सरः। एकादश्यामुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि।। ब्रह्मचारी च नारी च शुक्लामेव सदा गृही।। स्त्रियों के लिए पति की आज्ञा के बिना व्रत निषिद्ध कहा गया है इस सन्दर्भ में वचन है कि - पत्यौ जीवति या नारी उपोष्य व्रतमाचरेत्। आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छति।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
01	11	17	6	12	5	23	4	30	8	13	56	9	11	18	26	54	6	28	18	41	0	6	52	18	8	14	48	3	3	18	01	14
02	11	18	5	24	6	6	27	26	8	14	29	6	11	17	37	47	6	28	14	29	0	8	6	11	8	14	49	40	3	17	58	03
03	11	19	4	33	6	19	31	29	8	15	1	57	11	16	48	4	6	28	10	7	0	9	20	2	8	14	51	12	3	17	54	52
04	11	20	3	41	7	2	16	5	8	15	34	41	11	15	58	45	6	28	5	36	0	10	33	52	8	14	52	38	3	17	51	41
05	11	21	2	46	7	14	42	17	8	16	7	18	11	15	10	44	6	28	0	55	0	11	47	39	8	14	53	59	3	17	48	30
06	11	22	1	50	7	26	52	40	8	16	39	47	11	14	24	53	6	27	56	5	0	13	1	24	8	14	55	13	3	17	45	20
07	11	23	0	52	8	8	51	0	8	17	12	8	11	13	41	58	6	27	51	6	0	14	15	7	8	14	56	22	3	17	42	09
08	11	23	59	53	8	20	41	57	8	17	44	22	11	13	2	39	6	27	45	58	0	15	28	48	8	14	57	24	3	17	38	58
09	11	24	58	51	9	2	30	43	8	18	16	27	11	12	27	28	6	27	40	41	0	16	42	27	8	14	58	21	3	17	35	47
10	11	25	57	48	9	14	22	46	8	18	48	24	11	11	56	52	6	27	35	16	0	17	56	4	8	14	59	12	3	17	32	36
11	11	26	56	43	9	26	23	24	8	19	20	13	11	11	31	9	6	27	29	43	0	19	9	39	8	14	59	57	3	17	29	26
12	11	27	55	37	10	8	37	31	8	19	51	52	11	11	10	33	6	27	24	1	0	20	23	11	8	15	0	36	3	17	26	15
13	11	28	54	28	10	21	9	6	8	20	23	23	11	10	55	14	6	27	18	12	0	21	36	42	8	15	1	9	3	17	23	04
14	11	29	53	18	11	4	0	57	8	20	54	43	11	10	45	13	6	27	12	14	0	22	50	10	8	15	1	36	3	17	19	53
15	0	0	52	6	11	17	14	11	8	21	25	55	11	10	40	32	6	27	6	10	0	24	3	36	8	15	1	57	3	17	16	42
16	0	1	50	52	0	0	48	0	8	21	56	56	11	10	41	6	6	26	59	58	0	25	16	60	8	15	2	13	3	17	13	32

मेषसंक्रान्ति में दान - ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **वैशाख में जलदान -** वसन्तग्रीष्मयोर्मध्ये यः पानीयम् प्रयच्छति पले पले सुवर्णस्य फलमाप्नोति मानवः। वैशाखे यो घटं पूर्णं संभोज्य वै द्विजन्मने ददाति सुरराजेन्द्र स याति परमाङ्गतिम्। **वैशाख में त्याज्य -** वैशाख के व्रत में दूसरे का अन्न, मांस, मसूर, चना, शाक, शहद आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

08 अप्रैल 2018 प्रातः 05:29
वैशाख कृष्ण 8 रविवार
पंक्तीष्टम् 58/17/30

16 अप्रैल 2018 प्रातः 05:29
वैशाख कृष्ण 30 सोमवार
पंक्तीष्टम् 58/35/00

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

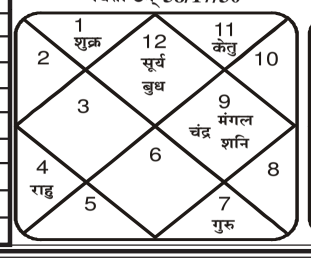

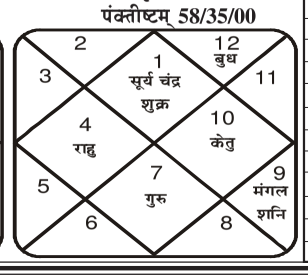

दि.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
01	06:55:40	08:33:21	10:34:18	12:46:01	15:06:00	17:18:35	19:27:29	21:43:02	00:01:30	02:05:18	03:54:33	05:25:12
02	06:51:43	08:29:24	10:30:21	12:42:04	15:02:03	17:14:38	19:23:32	21:39:05	23:57:33	02:01:21	03:50:36	05:21:15
03	06:47:46	08:25:27	10:26:24	12:38:07	14:58:06	17:10:41	19:19:35	21:35:08	23:53:36	01:57:24	03:46:39	05:17:18
04	06:43:49	08:21:30	10:22:27	12:34:10	14:54:09	17:06:44	19:15:38	21:31:11	23:49:39	01:53:27	03:42:42	05:13:21
05	06:39:52	08:17:33	10:18:30	12:30:13	14:50:12	17:02:47	19:11:41	21:27:14	23:45:42	01:49:30	03:38:45	05:09:24
06	06:35:55	08:13:36	10:14:33	12:26:16	14:46:15	16:58:50	19:07:44	21:23:17	23:41:45	01:45:33	03:34:48	05:05:27
07	06:31:58	08:09:39	10:10:36	12:22:19	14:42:18	16:54:53	19:03:47	21:19:20	23:37:48	01:41:36	03:30:51	05:01:30
08	06:28:01	08:05:42	10:06:39	12:18:22	14:38:21	16:50:56	18:59:50	21:15:23	23:33:51	01:37:39	03:26:54	04:57:33
09	06:24:04	08:01:45	10:02:42	12:14:25	14:34:24	16:46:59	18:55:53	21:11:26	23:29:54	01:33:42	03:22:57	04:53:36
10	06:20:07	07:57:48	09:58:45	12:10:28	14:30:27	16:43:02	18:51:56	21:07:29	23:25:57	01:29:45	03:19:00	04:49:39
11	06:16:10	07:53:51	09:54:48	12:06:31	14:26:30	16:39:05	18:47:59	21:03:32	23:22:00	01:25:48	03:15:03	04:45:42
12	06:12:13	07:49:54	09:50:51	12:02:34	14:22:33	16:35:08	18:44:02	20:59:35	23:18:03	01:21:51	03:11:06	04:41:45
13	06:08:16	07:45:57	09:46:54	11:58:37	14:18:36	16:31:11	18:40:05	20:55:38	23:14:06	01:17:54	03:07:09	04:37:48
14	06:04:19	07:42:00	09:42:57	11:54:40	14:14:39	16:27:14	18:36:08	20:51:41	23:10:09	01:13:57	03:03:12	04:33:51
	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
15	07:38:03	09:39:00	11:50:43	14:10:42	16:23:17	18:32:11	20:47:44	23:06:12	01:10:00	02:59:15	04:29:54	06:00:22
16	07:34:06	09:35:03	11:46:46	14:06:45	16:19:20	18:28:14	20:43:47	23:02:15	01:06:03	02:55:18	04:25:57	05:56:25

वैशाख में कर्त्तव्य विचार -तीर्थे चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम्। दानं धर्मं घटादीनां मधुसूदनपूजनम्।। माधवे मासि कुर्वीतमधु-सूदन-तुष्टिदम्। महानद्यां नदीतीर्थे नदे सरसि निर्झरे। यदा न ज्ञायते नाम तस्य तीर्थस्य भो द्विज। तत्रेत्युच्चारणं कार्यं विष्णुतीर्थमिदं त्विति। तीर्थस्य देवता विष्णुः सर्वत्रापि न संशयः।।

वैशाख शुक्लपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940 — सू.उ. — सू.अ. — दि.मा. — च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
02	मङ्गल	54/18	27:45	भरणी	49/48	25:57	प्रीति	35/15	20:08	बालव	16:46	कौलव	27:45	06:02	18:38	31/30	
03	बुध	48/43	25:30	कृतिका	46/05	24:27	आयु	29/20	17:45	तैतिल	14:37	गर	25:30	06:01	18:38	31/33	वृष 07:35
04	गुरु	42/50	23:08	रोहिणी	42/07	22:51	सौभा	20/35	14:14	वणिज	12:19	विष्टि	23:08	06:00	18:39	31/37	
05	शुक्र	36/57	20:46	मृगशिरा	38/10	21:15	शोभ	13/00	11:11	बव	09:57	बालव	20:46	05:59	18:39	31/40	मिथुन 10:03
06	शनि	31/15	18:28	आर्द्रा	34/20	19:42	अति सुक	05/30 58/07	08:10 29:13	कौलव	07:37	तैतिल गर	18:28 29:22	05:58	18:40	31/45	
07	रवि	25/48	16:17	पुनर्वसु	30/50	18:18	धृति	51/08	26:25	वणिज	16:17	विष्टि	27:16	05:58	18:40	31/45	कर्क 12:38
08	सोम	20/48	14:16	पुष्य	27/45	17:03	शूल	44/30	23:45	बव	14:16	बालव	25:21	05:57	18:40	31/48	
09	मङ्गल	16/15	12:26	आश्ले.	25/07	15:59	गण्ड	38/13	21:13	कौलव	12:26	तैतिल	23:36	05:56	18:41	31/52	सिंह 15:59
10	बुध	12/10	10:47	मघा	22/57	15:06	वृद्धि	32/20	18:51	गर	10:47	वणिज	22:03	05:55	18:41	31/55	
11	गुरु	08/35	09:20	पू.फा.	21/20	14:26	ध्रुव	26/55	16:40	विष्टि	09:20	बव	20:44	05:54	18:42	32/00	कन्या 20:18
12	शुक्र	05/35	08:08	उ.फा.	20/15	14:00	व्याघा.	21/57	14:41	बालव	08:08	कौलव	19:40	05:54	18:42	32/00	
13	शनि	03/18	07:12	हस्त	20/00	13:53	हर्ष.	17/37	12:56	तैतिल	07:12	गर	18:55	05:53	18:43	32/05	तुला 25:57
14	रवि	01/55	06:38	चित्रा	20/37	14:07	वज्र	14/02	11:29	वणिज	06:38	विष्टि	18:33	05:52	18:43	32/07	
15	सोम	01/30	06:28	स्वाती	22/17	14:47	सिद्धि	11/15	10:22	बव	06:28	बालव	18:18	05:52	18:43	32/07	

दिनांक — उत्तरायण, उत्तरगोल,वसन्तऋतु (17 अप्रैल से 30 अप्रैल 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) — दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

17	चन्द्रदर्शन, धर्मघटादिदान, शिवाजी जयन्ती, भरणी में उग्रकर्मादि, अग्निकार्य, भट्टा लगाना, रत्नशोधन, शस्त्रनिर्माण, ईंटबनाने आदि का मुहूर्त है। अमृतयोग 27:45 तक तदुपरान्त सिद्धियोग, सर्वार्थसिद्धियोग 25:57 से ।।
18	अक्षयतृतीया (पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्या), गौरीलक्ष्मीनारायणपूजा, कल्पादि ३, परशुरामजयन्ती, बलरामजयन्ती, समुद्रस्नान, सत्तूभोजन, श्रीबद्रीकेदार यात्रा त्रेतायुगादि, काशी त्रिलोचन यात्रा। कृत्तिका में केतु वेध मुहूर्ताभाव। त्रिपुष्कर १:५६से ३:४५, मृत्युयोग 25:30 तक, सर्वार्थसिद्धि सम्पूर्ण, रवियोग 24:27 से।।
19	भद्रा 12:19 से 23:08 तक, नाग चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, गणपति पूजनार्चन प्रयोगादि शुभ, चन्द्रोदय 08:33, रोहिणी में रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान मुहूर्त है, रवियोग 22:51 तक, मृत्युयोग 23:08 तक तदुपरान्त सिद्धियोग।।
20	आद्यगुरुशङ्कराचार्य जयन्ती (१२३०), सूरदास जयन्ती, सायनसूर्य वृष प्रवेश ०८.४२, मृगशिरा में गर्भाधान, पुसंवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, न्यारम्भ, गीतारम्भ, कलात्मककार्य, फर्नीचरकार्य, ब्यूटीपार्लर, वस्त्राभूषणादि/क्रीडाकार्यादि शुभ हैं, सिद्धियोग 20:46 से, रवियोग 21:15 से।।
21	चन्दनषष्ठी, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती(उ.भा.), आर्द्रा में मंगल वेध दोष मुहूर्ताभाव, शस्त्रकर्म, त्रिपुष्कर १९:४२ से , अमृतयोग 18:28 तक।।
22	भद्रा 16:17 से 27:16 तक, श्रीगंगा जयन्ती, गङ्गोत्पत्ति, भानुसप्तमी। पुनर्वसु में शनिवेध है, त्रिपुष्कर १६:१७ तक , सिद्धियोग 16:17 से, सर्वार्थसिद्धि/रविपुष्य 18:18 से।।
23	अपराजिता देवी पूजा, दुर्गाष्टमी, श्रीबगलामुखी जयन्ती, मूलदोष प्रारम्भ 17:03 से , पुष्य में राहुभोग्य, आवश्यक में पुष्य में सामान्य शुभकार्यार्थ मुहूर्त है, सर्वार्थसिद्धि 17:03 तक।।
24	जानकी नवमी, आश्लेषा में राहुयुति, अभिचारादिकार्य, मूलदोष व शान्ति, सर्वार्थसिद्धि 15:59 तक।।
25	भद्रा आरम्भ 22:03 से, मूलसमाप्ति 15:06, मघा में हलचलाना, वाहनादिकार्य, शस्त्रनिर्माण, उग्रकर्म, ऑप्रेशन, कारखाना चालू करना, मूलदोष व शान्ति, अमृतयोग 10:47 से।।
26	भद्रा समाप्ति 09:20 पर, पर, मोहिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, पू.फा. में सूर्यवेध।। सर्वतोभद्रचक्र में विष्णुप्रतिमा की स्थापना कर पूजनार्चन व द्वादशाक्षर मंत्र शुभ हैं।
27	परशुरामद्वादशी, मधुसूदन पूजा, प्रदोष व्रत, ☼**भरणी में सूर्य २४.००से**, उ.फा.में अन्नप्राशन, जातकर्म, नामकरण, वाटिका लगाना, कृषिकर्म, हलचलाना, पशुवाहनादिक्रयविक्रयादि कर्म, हस्त में कर्णवेध, मृत्युयोग 08:08 तक ।।
28	श्रीनृसिंहजयन्ती, सायं नरसिंहावतार (मध्याह्न प्रदोष-उभयव्यापिनी), सायं काल नृसिंह मंदिर में दीपदान, नृसिंह प्रतिमा का अभिषेक, पूजन, जप होमादि कार्य विशेष फलदायी होता है। हस्त में रोगमुक्तस्नान, शान्तिकार्यादि का मुहूर्त है, सिद्धियोग 07:12 से।।
29	भद्रा 06:038 से 18:33 तक, कूर्मजयन्ती (कूर्मावतार सायं), छिन्नमस्ता जयन्ती, ओंकारेश्वर यात्रा (मध्याह्न), व्रतपूर्णिमा, श्रीसत्यनारायणव्रत, चन्द्रोदय 18:14, चित्रा में रोगमुक्तस्नान,स्वाती में औषधि सेवन, आभूषण धारण, ऑप्रेशन कर्म, व्यापारारम्भ, वाहनादिकार्यशुभ, अमृतयोग 06:38 से।।
30	वैशाखपूर्णिमा, श्रीबुद्धजयन्ती (1962), पुष्करादेवी जन्म, कूर्मजयन्ती, बुद्धपूर्णिमा, छिन्नमस्ता जयन्ती सम्पद्गौरीव्रत, चन्द्रोदय 19:09,स्वाती में वस्तुभूमिभवनवाहनादिक्रयविक्रय, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, कृषिकर्म, विशाखा में उग्रकर्म, शस्त्रकार्यादि का मुहूर्त है, अमृतयोग 06:28 तक तदुपरान्त सिद्धियोग।।

श्री बगलाजयन्ती विशेष- कलियुग में मनुष्य की सभी आपत्तियों को दूर करने वाली माता बगलामुखी की साधना सभी के हित के लिए होती है। यह साधना केवल अपने विकार रूपी शत्रुओं को दूर करने के लिए करनी चाहिए। इससे हमारे अंदर के सभी काम,क्रोधादि दोष दूर हो जाते हैं। मुकदमें आदि में विजयार्थ भी माता की साधन सिद्धिप्रद है। इनकी साधना बिना दीक्षा के करना हानिप्रद होती है। अत: गुरु की आज्ञा व निर्देश में इनकी साधना सम्पन्न करें। **त्र्यक्षरी मंत्र-** ॐ आं ह्रीं क्रों ।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
17	0	2	49	36	0	14	39	45	8	22	27	47	11	10	46	50	6	26	53	39	0	26	30	21	8	15	2	22	3	17	10	21
18	0	3	48	18	0	28	45	12	8	22	58	27	11	10	57	35	6	26	47	14	0	27	43	40	8	15	2	25	3	17	7	10
19	0	4	46	58	1	12	59	18	8	23	28	57	11	11	13	13	6	26	40	42	0	28	56	57	8	15	2	22	3	17	3	59
20	0	5	45	35	1	27	16	56	8	23	59	16	11	11	33	33	6	26	34	4	1	0	10	11	8	15	2	14	3	17	0	48
21	0	6	44	11	2	11	33	48	8	24	29	24	11	11	58	24	6	26	27	20	1	1	23	23	8	15	1	59	3	16	57	38
22	0	7	42	44	2	25	46	46	8	24	59	20	11	12	27	36	6	26	20	31	1	2	36	32	8	15	1	39	3	16	54	27
23	0	8	41	16	3	9	53	59	8	25	29	5	11	13	0	58	6	26	13	36	1	3	49	38	8	15	1	13	3	16	51	16
24	0	9	39	45	3	23	54	33	8	25	58	39	11	13	38	19	6	26	6	36	1	5	2	42	8	15	0	41	3	16	48	05
25	0	10	38	11	4	7	48	4	8	26	28	0	11	14	19	28	6	25	59	32	1	6	15	43	8	15	0	3	3	16	44	54
26	0	11	36	36	4	21	18	44	8	26	57	10	11	15	4	15	6	25	52	23	1	7	28	41	8	14	59	19	3	16	41	44
27	0	12	34	59	5	4	56	24	8	27	26	7	11	15	52	32	6	25	45	11	1	8	41	36	8	14	58	30	3	16	38	33
28	0	13	33	19	5	18	24	26	8	27	54	51	11	16	44	8	6	25	37	54	1	9	54	28	8	14	57	35	3	16	35	22
29	0	14	31	38	6	1	41	11	8	28	23	22	11	17	38	57	6	25	30	34	1	11	7	18	8	14	56	34	3	16	32	11
30	0	15	29	55	6	14	44	52	8	28	51	40	11	18	36	48	6	25	23	10	1	12	20	5	8	14	55	28	3	16	29	00

गङ्गोत्पत्ति - वैशाखे शुक्ल सप्तम्यां जह्नुना जाह्नवी पुरा। क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्ता कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणात्। तां तत्र पूजयेद्देवीं गङ्गां गगनमेखलाम्। नृसिंह जयन्ती - वैशाखस्य चतुर्दश्यां सोमवारेऽनिलर्क्षके, अवतारो नृसिंहस्य प्रदोषस्य समये द्विजा:।। स्वातीनक्षत्रयोगे च शनिवारे तु मद्व्रतम्। सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा। पुंसां सौभाग्ययोगेन लभ्यते देवयोगत:। सर्वैरतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटिविनाशनम्।। **वैशाख पूर्णिमा में दान विशेष का माहात्म्य -** शृतान्नमुदकुम्भं च वैशाख्यां च विशेषत:। निर्दिश्य धर्मराजाय गोदानफलमाप्नुयात्।। सुवर्णतिलयुक्तैस्तु ब्राह्मणान् सप्त पञ्च च।। तर्पयेदुदपात्रैस्तु ब्रह्महत्यां व्यपोहति।।

23 अप्रैल 2018 प्रात: 05:29
वैशाख शुक्ल 8 सोमवार
पंक्तीष्टम् 58/50/00

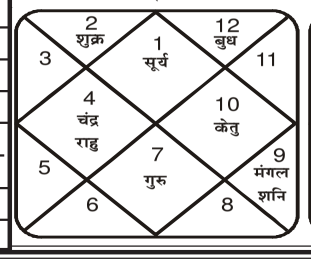

30 अप्रैल 2018 प्रात: 05:29
वैशाख शुक्ल 15 सोमवार
पंक्तीष्टम् 59/02/30

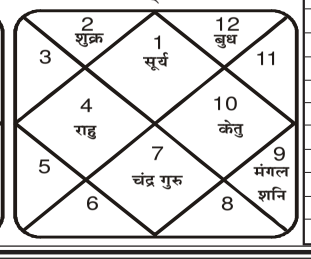

रोगविचार में अनिष्ट काल - आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, मघा, पू.फा., पू.षा, पू.भा., विशाखा, धनिष्ठा, कृतिका इन नक्षत्रों में, सूर्य, मंगल, शनि वारों में ४-९-१२-६-१४ आदि तिथियों में रोग होने पर मृत्यु होने की पूर्ण सम्भावना होती है। विषैले जानवरों (सर्पादि) का दंशफल - मघा, विशा., कृत्ति. शिव अहि भरणी मूल। श्वान सर्प जम्बुक डसे जिमि यम हन्यो त्रिशूल।। दीर्घकालीन रोग विचार- षष्ठान्त्याष्टमदांबुलग्नमापत्स्थेषु ये दुर्बला:। पापा: षष्ठमृतिव्ययेष्वपि शुभा दुस्था भवन्ति ग्रहा:। लग्नेशाध्यरयोतिरोगमृतिदा दुस्थेषु सुस्थाश्च ते-नुक्तस्थानगता: शशांकसहिता: स्वं फलं कुर्वते।। १,४,५,६,७, ८,९१२ भावों दुर्बल पापग्रह तथा ६,८,१२ में शुभ ग्रह दुस्थ संज्ञा वाले होते हैं। लग्नेश के अधिशत्रु और दुस्थ ग्रह दीर्घकालीन रोगकारक होते हैं।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
17	07:30:09	09:31:06	11:42:49	14:02:48	16:15:23	18:24:17	20:39:50	22:58:18	01:02:06	02:51:21	04:22:00	05:52:28
18	07:26:12	09:27:09	11:38:52	13:58:51	16:11:26	18:20:20	20:35:53	22:54:21	00:58:09	02:47:24	04:18:03	05:48:31
19	07:22:15	09:23:12	11:34:55	13:54:54	16:07:29	18:16:23	20:31:56	22:50:24	00:54:12	02:43:27	04:14:06	05:44:34
20	07:18:18	09:19:15	11:30:58	13:50:57	16:03:32	18:12:26	20:27:59	22:46:27	00:50:15	02:39:30	04:10:09	05:40:37
21	07:14:21	09:15:18	11:27:01	13:47:00	15:59:35	18:08:29	20:24:02	22:42:30	00:46:18	02:35:33	04:06:12	05:36:40
22	07:10:24	09:11:21	11:23:04	13:43:03	15:55:38	18:04:32	20:20:05	22:38:33	00:42:21	02:31:36	04:02:15	05:32:43
23	07:06:27	09:07:24	11:19:07	13:39:06	15:51:41	18:00:35	20:16:08	22:34:36	00:38:24	02:27:39	03:58:18	05:28:46
24	07:02:30	09:03:27	11:15:10	13:35:09	15:47:44	17:56:38	20:12:11	22:30:39	00:34:27	02:23:42	03:54:21	05:24:49
25	06:58:33	08:59:30	11:11:13	13:31:12	15:43:47	17:52:41	20:08:14	22:26:42	00:30:30	02:19:45	03:50:24	05:20:52
26	06:54:36	08:55:33	11:07:16	13:27:15	15:39:50	17:48:44	20:04:17	22:22:45	00:26:33	02:15:48	03:46:27	05:16:55
27	06:50:39	08:51:36	11:03:19	13:23:18	15:35:53	17:44:47	20:00:20	22:18:48	00:22:36	02:11:51	03:42:30	05:12:58
28	06:46:42	08:47:39	10:59:22	13:19:21	15:31:56	17:40:50	19:56:23	22:14:51	00:18:39	02:07:54	03:38:33	05:09:01
29	06:42:45	08:43:42	10:55:25	13:15:24	15:27:59	17:36:53	19:52:26	22:10:54	00:14:42	02:03:57	03:34:36	05:05:04
30	06:38:48	08:39:45	10:51:28	13:11:27	15:24:02	17:32:56	19:48:29	22:06:57	00:10:45	02:00:00	03:30:39	05:01:07

रोगारम्भकाल- लग्नोदितोडुतश्चन्द्रो यावत्युडुनि संस्थित:। तस्मात्तावति नक्षत्रे रोगारम्भमुदीरयेत्। यद्वा मान्दिनवांशस्थ द्वादशांशर्क्षगे विधौ। मान्दीन्दुयोगभे वैधु ग्राह्यं प्रष्टुरनिष्टभम्। षष्ठेशाश्रितराशिस्थे चन्द्रे वा रोगसम्भव:। शमनं व रुजां वाच्यं सुखेशाश्रितराशिगे।।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (शुद्ध) | **विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940** | सू.उ. | सू.अ. | दि.मा. | च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	मङ्गल	02/23	06:48	विशाखा	25/12	15:56	व्यति.	09/30	09:39	कौलव	06:48	तैतिल	19:14	05:51	18:44	32/13	वृद्धि 09:36
02	बुध	04/35	07:40	अनुराधा	29/30	17:38	वरी.	08/50	09:22	गर	07:40	वणिज	20:22	05:50	18:44	32/15	
03	गुरु	08/08	09:05	ज्येष्ठा	35/05	19:52	परिघ	09/10	09:30	विष्टि	09:05	बव	22:03	05:50	18:45	32/18	ध्रु 19:52
04	शुक्र	13/02	11:02	मूल	41/50	22:33	शिव	10/32	10:02	बालव	11:02	कौलव	24:12	05:49	18:45	32/20	
05	शनि	18/55	13:22	पू.षा.	49/23	25:33	सिद्ध	12/40	10:52	तैतिल	13:22	गर	26:39	05:48	18:46	32/25	
06	रवि	25/20	15:56	उ.षा.	57/07	28:39	साध्व	15/15	11:54	वणिज	15:56	विष्टि	29:12	05:48	18:46	32/25	मकर 08:19
07	सोम	31/42	18:28	श्रवण	00	00	शुभ	17/52	12:56	बव	18:28	--	--	05:47	18:47	32/30	
08	मङ्गल	37/20	20:43	श्रवण	04/37	07:38	शुक्ल	20/05	13:49	बालव	07:35	कौलव	20:43	05:47	18:47	32/30	कुम्भ 20:59
09	बुध	41/43	22:27	धनिष्ठा	11/07	10:13	ब्रह्म	21/22	14:19	तैतिल	09:35	गर	22:27	05:46	18:48	32/35	
10	गुरु	44/17	23:28	शत.	16/05	12:11	ऐन्द्र	21/27	14:20	वणिज	10:57	विष्टि	23:28	05:45	18:48	32/38	
11	शुक्र	44/52	23:42	पू.भा.	19/10	13:25	वैधृति	20/00	13:45	बव	11:35	बालव	23:42	05:45	18:49	32/40	मीन 07:11
12	शनि	43/25	23:06	उ.भा.	20/17	13:51	विष्कु	17/00	12:32	कौलव	11:24	तैतिल	23:06	05:44	18:49	32/43	
13	रवि	40/05	21:46	रेवती	19/28	13:31	प्रीति	12/20	10:40	गर	10:26	वणिज	21:46	05:44	18:49	32/43	मेष 13:31
14	सोम	35/10	19:47	अश्विनी	16/58	12:30	आयु सौभा	06/20 59/05	08:15 29:21	विष्टि	08:46	शकुनि	19:47	05:43	18:50	32/47	
30	मङ्गल	28/58	17:18	भरणी	13/03	10:56	शोभ	50/58	26:06	चतुष्प.	06:32	नाग किंस्तु.	17:18 27:53	05:43	18:50	32/47	वृष 16:29

दिनांक | **उत्तरायण, उत्तरगोल,वसन्तऋतु (01 मई से 15 मई 2018 ई. तक)** | **गुरु एवं शुक्र पश्चिम**

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) | **दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)**

01	श्रमदिवस। विशाखा में व्यतीपात उपरान्त शस्त्रनिर्माण, अग्निकार्य, भट्टा लगाना, अनु. में रोगमुक्तस्नान, रत्नाभूषणशोधन, क्रीडारम्भादि कार्य शुभ है।त्रिपुष्कर ६:४८से १६:१७
02	भद्रा आरम्भ 20:22 से। नारद जयन्ती। अनुराधा में पशुपक्षी मत्स्य पालन, प्रतियोगिता कार्य, रसोत्पादन, फर्नीचरकर्म, ब्यूटीपार्लर, वाहनादिक्रयविक्रय, नृत्यारम्भ, गीतारम्भ✉
03	भद्रा समाप्ति 09:05 पर, संकटचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21:49 माँ आनन्दमयी जयन्ती, **ज्येष्ठा** में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव, मूल में शनियुति मूलदांष व मूलशान्ति का मुहूर्त है।
04	चन्द्रोदय 22:30,मूल में शनियुति मुहूर्ताभाव है, मूलदांष वा मूल शान्ति, पू.षा. में भौमभुक्तदोष मूहूर्ताभाव है।)(रेवती में मूल दोष/शान्ति, मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव है।
05	पू.षा. में भौमभुक्तदोष मुहूर्ताभाव है। ✉ शिक्षणप्रशिक्षणकार्य, वस्त्राभूषणालंकारादिकार्य, पूजानुष्ठानादि कार्य, संधिकर्म का मुहूर्त है ज्येठा में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है।
06	भद्रा 15:56 से 29:12 तक, पञ्चक प्रारम्भ 22:12 से, भानु सप्तमी, चण्डिकादेवीपूजा, उत्कल प्रदेश में भौरी। उ.षा. में भौमयुति, रवियोग, यायिजय योग, त्रिपुष्करयोग१५:५५ से
07	श्रवण में केतुयुति मुहूर्ताभाव है। त्रिपुष्कर ०४:३९ तक।📖 तिलादि /चर्मादि कर्म, पशुपक्षीमत्स्यादि पालन, कृषिकार्य का मुहूर्त है। १३:५१ से मूलदोषारम्भ व मूलशान्ति।
08	पञ्चक आरम्भ 07:38 से, शीतलाष्टमीव्रत, त्रिलोचनाष्टमी (बंगाल), सूर्य सायन मिथुन प्रवेश 26:01 । श्रवण में केतुयुति, धनिष्ठा में उग्रकर्म, शस्त्रनिर्माण, ऑपरेशन का मुहूर्त है।
09	धनिष्ठा में रिक्तादोष रोगमुक्तस्नान ।। ✍आभूषणादिकर्म, शिल्पकार्य, पशुपक्षीमत्स्यवाहनादिक्रयविक्रयादि, नृत्यगीतारम्भ, कलात्मकादि कार्य का मुहूर्त है।
10	भद्रा 10:57 से 23:28 तक । शतभिषा में गर्भाधान, जातकर्म, अन्नप्राशन, चूडाकरण, विद्यारम्भ, पशुपक्षीवाहनादिक्रय मुहूर्त, औषधि सेवन, ऑपरेशन, मत्स्यव्यापार का मुहूर्त है।
11	अपरा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, भद्रकाली एकादशी, ✪**कृत्तिका में सूर्य १८.१३से**, पू.भा. में वैधृति दोष, उ.भा. में गर्भाधन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन ✍
12	उ.भा. में कृषिकर्म, स्थिरकार्य, रेवती में व्यापारारम्भ, शिल्पकर्म, वाहनादिनिर्माण, कारखाना निर्माण, मशीनलगाना, गृहसम्बन्धीकार्य, स्थिरकार्य, लकडीव्यवसाय, 📖
13	भद्रा आरम्भ 21:46 से, पञ्चक समाप्ति 13:31पर, मासशिवरात्रि, शिवपूजनजपहोमादि कार्य शुभ, प्रदोषव्रत, वटसावित्रीव्रत आरम्भ-व्रत द्वितीय दिन (अमावस्या पक्ष)।)(
14	भद्रा समाप्ति 08:46 पर, शिवपूजन, सावित्री चतुर्दशी✪**सूर्य वृष में २९:०३,पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,** अश्विनी में मूलदोष व मूल शान्ति, मासान्तदोष है।
15	भावुका/वटसावित्री/भौमी अमावस्या स्नानदानादि, **शनैश्चर जयन्ती**, भरणी मे मूल दोष व मूल शान्ति, मासान्तदोष, कृत्तिका में सूर्य युति है। शनि जयन्ती के कारण शनि का सायं कालीन दर्शन, जप, छाया दान, निर्धनों को अन्नदान, पशुदान व संरक्षण विशेष शुभ है।

प्रश्न से विवाहयोग - गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगः शशी लग्नात्। भवति च विवाहकर्ता त्रिकोणकेन्द्रेषु वा सौम्याः।। विवाह प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न से चन्द्रमा ३, ५, ६, ७ तथा ११ भावों में से किसी में बैठा हो तथा बुध, गुरु, सूर्य से दृष्ट हो तब वह विवाह कराने वाला होता है। अथवा यदि विवाह प्रश्न कुण्डली में शुभ ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण में स्थित हों (इन स्थानों में कोई पापग्रह न हों) तब भी विवाह होगा ऐसा कहना चाहिए। शुक्राच्चन्द्रात्सप्तमे यद्गृहं तत्संख्यातुल्ये वत्सरेऽर्केयुतेवा।। स्यादुद्वाहोवत्सरे तादृशान्ते वंशोरूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम्। अपि च - केन्द्रोपगैर्नवमगैः सुतगैश्च सौम्यैः, लग्नाच्छशित्रिसुतमार्ग रसायगो वा। उष्णांशुजीवबुधदृष्टयुतो विवाहकर्ता वरस्तु लभते प्रमदां मनोज्ञाम्। **वर लाभ योग-** विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः। रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ।। प्रश्नकाल में विषम राशि व नवांश में बलवान् चंद्र, शुक्र हों और लग्न को देखते हों तो वर लाभ शीघ्र होता है, यदि सम राशि नवांश में हों तो कन्या लाभ होता है। **कन्या विवाह मन्त्र -** ऊँ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी, नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरुते नमः।। अथवा- हे गौरि शङ्करार्धाङ्गि यथा त्वं शङ्करप्रिया, तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्।। अथवा- ऊँ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी, विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे।। इन मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र का योग्य आचार्य से शुद्ध वाचन करवाकर देवी के सम्मुख जप करना चाहिए। पत्नी लाभ मन्त्र- पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् अथवा- सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो मन्त्र का सम्पुटित पाठ या जप भी विवाह के लिए उत्तम होता है। पाठ के समय स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
01	0	16	28	10	6	27	34	7	8	29	19	45	11	19	37	37	6	25	15	44	1	13	32	49	8	14	54	16	3	16	25	50
02	0	17	26	23	7	10	8	18	8	29	47	35	11	20	41	15	6	25	8	15	1	14	45	30	8	14	52	58	3	16	22	39
03	0	18	24	35	7	22	27	52	9	0	15	11	11	21	47	36	6	25	0	44	1	15	58	8	8	14	51	35	3	16	19	28
04	0	19	22	45	8	4	34	27	9	0	42	32	11	22	56	36	6	24	53	10	1	17	10	44	8	14	50	7	3	16	16	17
05	0	20	20	53	8	16	30	49	9	1	9	38	11	24	8	9	6	24	45	35	1	18	23	17	8	14	48	33	3	16	13	06
06	0	21	19	0	8	28	20	49	9	1	36	28	11	25	22	10	6	24	37	59	1	19	35	47	8	14	46	53	3	16	9	56
07	0	22	17	6	9	10	9	5	9	2	3	2	11	26	38	36	6	24	30	21	1	20	48	14	8	14	45	8	3	16	6	45
08	0	23	15	10	9	22	0	47	9	2	29	19	11	27	57	24	6	24	22	42	1	22	0	38	8	14	43	18	3	16	3	34
09	0	24	13	13	10	4	1	25	9	2	55	19	11	29	18	29	6	24	15	3	1	23	12	60	8	14	41	22	3	16	0	23
10	0	25	11	15	10	16	16	23	9	3	21	2	0	0	41	49	6	24	7	24	1	24	25	19	8	14	39	21	3	15	57	12
11	0	26	9	15	10	28	50	35	9	3	46	26	0	2	7	22	6	23	59	45	1	25	37	35	8	14	37	15	3	15	54	02
12	0	27	7	13	11	11	47	53	9	4	11	31	0	3	35	7	6	23	52	6	1	26	49	48	8	14	35	3	3	15	50	51
13	0	28	5	11	11	25	10	29	9	4	36	17	0	5	5	2	6	23	44	29	1	28	1	58	8	14	32	47	3	15	47	40
14	0	29	3	7	0	8	58	23	9	5	0	44	0	6	37	5	6	23	36	52	1	29	14	5	8	14	30	26	3	15	44	29
15	1	0	1	2	0	23	9	3	9	5	24	50	0	8	11	16	6	23	29	17	2	0	26	10	8	14	27	59	3	15	41	18

अमायां वटसावित्रीव्रतम् -अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती, त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्। **भद्रकाली प्रार्थना-**जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी, दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।। **जन्ममास में विचारणीय** -यो जन्मासे क्षुरकर्म यात्रां कर्णस्य वेधं कुरुते हि मोहात्। मूढः स रोगी धनपुत्रनाशं प्राप्नोति गूढं निधनं तदाशु।।

मूढः स रोगी धनपुत्रनाशं प्राप्नोति गूढं निधनं तदाशु।।

08 मई 2018 प्रातः 05:29
ज्येष्ठ कृष्ण 8 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 59/15/00

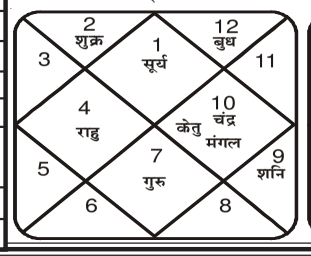

15 मई 2018 प्रातः 05:29
ज्येष्ठ कृष्ण 30 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 59/25/00

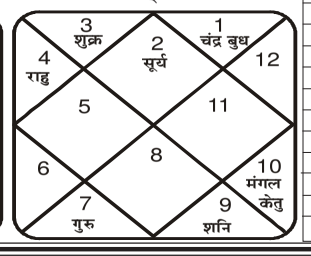

प्रश्नकाल से कार्यसिद्धि योग-आद्यो लग्नपतिःकार्ये लग्ने कार्याधिपौ यदि। द्वितीयो लग्नपो लग्ने कार्ये कार्याधिपो यदि। लग्नपः कार्यपश्चापि लग्ने यदि तृतीयकः। चतुर्थः कार्यगौ स्यातां यदि लग्नपकार्यपौ।। चतुर्षु तुभयत्रापि चन्द्रदृग्दर्शनं मिथः। कार्यसिद्धिस्तदा ज्ञेया मित्रे चेदधिकं शुभम्।। राजयोग अमाख्याताः चत्वारोऽपि महाबलाः। अत्रैव दृष्टियोगेन सामान्येन फलं स्मृतम्।।

भावार्थ- ये चार योग कार्यसिद्धि एवं राजयोग कारक कहे गए हैं।
१- लग्नेश कार्यभाव में और कार्येश लग्न में हो।
२- लग्नेश लग्न में और कार्येश कार्य में हो।
३-लग्नेश और कार्येश दोनो लग्न में हों और चंद्रमा से दृष्ट हों।
४- लग्नेश और कार्येश दोनो कार्य में हों और चंद्र से दृष्ट हों।। विशेष- इन योगों में शुभ ग्रहों का जितना अधिक प्रभाव होगा उतना ही शीघ्रता से कार्य सिद्ध होगा। बलवान चंद्रमा, शुभ दृष्ट चंद्रमा कार्य साधक होता है।।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
01	06:34:51	08:35:48	10:47:31	13:07:30	15:20:05	17:28:59	19:44:32	22:03:00	00:06:48	01:56:03	03:26:42	04:57:10
02	06:30:54	08:31:51	10:43:34	13:03:33	15:16:08	17:25:02	19:40:35	21:59:03	00:02:51	01:52:06	03:22:45	04:53:13
03	06:26:57	08:27:54	10:39:37	12:59:36	15:12:11	17:21:05	19:36:38	21:55:06	23:58:54	01:48:09	03:18:48	04:49:16
04	06:23:00	08:23:57	10:35:40	12:55:39	15:08:14	17:17:08	19:32:41	21:51:09	23:54:57	01:44:12	03:14:51	04:45:19
05	06:19:03	08:20:00	10:31:43	12:51:42	15:04:17	17:13:11	19:28:44	21:47:12	23:51:00	01:40:15	03:10:54	04:41:22
06	06:15:06	08:16:03	10:27:46	12:47:45	15:00:20	17:09:14	19:24:47	21:43:15	23:47:03	01:36:18	03:06:57	04:37:25
07	06:11:09	08:12:06	10:23:49	12:43:48	14:56:23	17:05:17	19:20:50	21:39:18	23:43:06	01:32:21	03:03:00	04:33:28
08	06:07:12	08:08:09	10:19:52	12:39:51	14:52:26	17:01:20	19:16:53	21:35:21	23:39:09	01:28:24	02:59:03	04:29:31
09	06:03:15	08:04:12	10:15:55	12:35:54	14:48:29	16:57:23	19:12:56	21:31:24	23:35:12	01:24:27	02:55:06	04:25:34
10	05:59:18	08:00:15	10:11:58	12:31:57	14:44:32	16:53:26	19:08:59	21:27:27	23:31:15	01:20:30	02:51:09	04:21:37
11	05:55:21	07:56:18	10:08:01	12:28:00	14:40:35	16:49:29	19:05:02	21:23:30	23:27:18	01:16:33	02:47:12	04:17:40
12	05:51:24	07:52:21	10:04:04	12:24:03	14:36:38	16:45:32	19:01:05	21:19:33	23:23:21	01:12:36	02:43:15	04:13:43
13	05:47:27	07:48:24	10:00:07	12:20:06	14:32:41	16:41:35	18:57:08	21:15:36	23:19:24	01:08:39	02:39:18	04:09:46
14	05:43:30	07:44:27	09:56:10	12:16:09	14:28:44	16:37:38	18:53:11	21:11:39	23:15:27	01:04:42	02:35:21	04:05:49
	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
15	07:40:30	09:52:13	12:12:12	14:24:47	16:33:41	18:49:14	21:07:42	23:11:30	01:00:45	02:31:24	04:01:52	05:39:33

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (अधिक) विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940 | उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (16 मई से 29 मई 2018 ई. तक) | गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01	बुध	21/52	14:28	कृतिका	08/10	08:59	अति	42/17	22:38	बव	14:28	बालव	24:57	05:43	18:51	32/50		16
02	गुरु	14/22	11:27	रोहिणी मृगशिरा	02/45 57/08	06:48 28:33	सुक	33/22	19:03	कौलव	11:27	तैतिल	21:56	05:42	18:51	32/53	मिथुन 17:41	17
03 04	शुक्र	06/47 59/28	08:25 29:28	आर्द्रा	51/43	26:23	धृति	24/27	15:29	गर	08:25	वणिज विष्टि	18:56 29:28	05:42	18:52	32/55		18
05	शनि	51/23	26:14	पुनर्वसु	46/50	24:25	शूल	15/55	12:03	बव	15:51	बालव	26:14	05:41	18:52	32/57	कर्क 18:53	19
06	रवि	46/33	24:18	पुष्य	42/37	22:44	गण्ड	07/48	08:48	कौलव	13:26	तैतिल	24:18	05:41	18:53	33/00		20
07	सोम	41/22	22:13	आश्ले.	39/22	21:25	वृद्धि ध्रुव	00/22 53/40	05:49 27:08	गर	11:15	वणिज	22:13	05:40	18:53	33/02	सिंह 21:25	21
08	मङ्गल	37/07	20:31	मघा	37/00	20:28	व्याघा.	47/45	24:46	विष्टि	09:22	बव	20:31	05:40	18:54	33/05		22
09	बुध	33/52	19:13	पू.फा.	35/37	19:55	हर्ष.	42/40	22:44	बालव	07:52	कौलव	19:13	05:40	18:54	33/05	कन्या 25:50	23
10	गुरु	31/35	18:18	उ.फा.	35/12	19:45	वज्र	38/20	21:00	तैतिल	06:45	गर	18:18	05:40	18:55	33/08		24
11	शुक्र	30/20	17:48	हस्त	35/47	19:59	सिद्धि	34/50	19:36	वणिज	06:03	विष्टि	17:48	05:40	18:55	33/08		25
12	शनि	30/05	17:41	चित्रा	37/23	20:36	व्यति.	32/07	18:30	बव	05:44	बालव	17:41	05:39	18:56	33/12	तुला 08:15	26
13	रवि	30/47	17:58	स्वाती	39/55	21:37	वरी.	30/13	17:44	कौलव	05:49	तैतिल	17:58	05:39	18:56	33/12		27
14	सोम	32/35	18:41	विशाखा	43/30	23:03	परिघ	29/07	17:18	गर	06:19	वणिज	18:41	05:39	18:57	33/15	वृश्चि16:40	28
15	मङ्गल	35/27	19:50	अनुराधा	48/10	24:55	शिव	28/53	17:12	विष्टि	07:15	बव	19:50	05:39	18:57	33/15		29

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)

दिनांक	व्रतपर्व विवरण
16	कृत्तिका में सूर्य युति मुहूर्ताभाव, रोहिणी में गर्भाधान, पुसंवन, सीमन्त, जातकर्म.व्यापारारम्भ, ब्यूटीपार्लर,फर्नीचर, रेडीमेड उद्योग, वाटिका मुहूर्त है।
17	रोहिणी में व्यापारारम्भ, वाहनक्रयविक्रय, पशुपक्षीमत्स्यादि पालन, वस्त्राभूषणाद्युपभोग,शैक्षणिक कार्यादि, मृगशिरा में भौमवेध मुहूर्ताभाव है।
18	भद्रा 18:56 से 29:28 तक, गणेशचतुर्थी, आर्द्रा में उग्रकर्म, शस्त्रादिनिर्माण, रोगमुक्तस्नान, ऑप्रेशन, अग्निकार्य, ईंट बनाने आदि का मुहूर्त है
19	पुनर्वसु में शनि वेध मुहूर्ताभाव है। ✉ राजकीय सम्पर्क, स्थिरकर्म, वाटिकारोपण, शान्तिकर्म, अनुष्ठानारम्भ, रविजपादि का मुहूर्त है।
20	पुष्य में राहुयुति मुहूर्ताभाव, रविपुष्ययोग के कारण सामान्य कार्य किए जा सकते है। इस योग में सूर्य जप, होमादि साधना विशेष फलदायी होती है।
21	भद्रा आरम्भ 22:13 से, सायन सूर्य मिथुन प्रवेश ०७.४५, आश्लेषा में मूलदोष व मूलशान्ति, कृषिकर्म, कटाई, उग्रकर्म, शस्त्रनिर्माणादि कर्म।।
22	भद्रा समाप्ति 09:22 पर, मघा में मूलदोष व मूलशान्ति, उग्रकर्म, कटाई, शस्त्रनिर्माण, भट्टी लगाना, अग्निकार्य, क्रीडाप्रतियोगिता का मुहूर्त है।
23	पू.फा. में रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नानादि कर्म, ✍ व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यपालनादिक्रय, ब्यूटीपार्लर फर्नीचर, शिल्पविद्या, कृषिकर्म, रेडीमेड उद्योग, वाटिका लगाना, दुकान खोलना, नृत्यारम्भ, गीतारम्भ,कलात्मककार्य, दुग्धादिव्यवसाय, शान्तिकर्म, अनुष्ठानारम्भ आदि का मुहूर्त है।।
24	श्रीगङ्गादशहरा, सेतुबन्धरामेश्वरप्रतिष्ठा, काशी में दशाश्वमेघ स्नान, उ.फा. में गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणादिकर्म, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यपालनादिक्रयविक्रयादि, ब्यूटीपार्लर फर्नीचरकार्य, शिल्पविद्या, धार्मिककार्य शिक्षणप्रशिक्षणादिकार्य का मुहूर्त है।।
25	भद्रा 06:03 से 17:48 तक, पुरुषोत्तम एकादशी,✿**रोहिणी में सूर्य १४.२१से**, हस्त में गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणादिकर्म ✍
26	शनिप्रदोष, चित्रा में व्यतीपात दोष, द्विपुष्कर ०५:३९ से १७:४० तक।।
27	स्वाती में जातकर्म, वस्त्राभूषणादिकर्म, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यपालनक्रयविक्रयादि, ब्यूटीपार्लर, फर्नीचरकार्य, शिल्पविद्या, रेडीमेड उद्योग, धान्यव्यापार✉
28	भद्रा आरम्भ 18:41 से, चन्द्रोदय 17:56, व्रतपूर्णिमा, विशाखा में रिक्तादोषोपरान्त रोगमुक्तस्नान, उग्रकर्म, शस्त्रादिकर्म, अग्निकार्य, भट्टी लगाने का मुहूर्त है।।
29	भद्रा समाप्ति 07:15 पर, स्नानदानादि पूर्णिमा, चन्द्रोदय 18:49, अनुराधा में वस्त्राभूषणादिकर्म, शिल्पविद्या शस्त्रादिकर्म, अग्निकार्य, भट्टी लगाने का का मुहूर्त है।।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

विवाह में मर्मादिवेध - विवाहपटले- मर्मकण्टकवेधं च शल्यं छिद्रं यो न जानाति। नार्हति विवाहदीक्षालग्नं दातुं स दैवज्ञः।। क्रूरैस्तनुगैर्मर्म पञ्चनवमैश्च कण्टको भवति। दशमचतुर्थे शल्यं यामित्रे भवति ते छिद्रम्।। लग्न में पापग्रह मर्मसंज्ञक, ५,९में कण्टक, ४, १० में शल्य और ७ में छिद्र नामक वेध होता है। फल - मर्मणि वेधे मरणं कण्टकवेधे कुलक्षयं भवति, शल्यं नृपतेः शत्रु यामित्रं पुत्रं नाशयति।। (बृ.दै.र.) **पुंसवन विचार** - उत्पत्स्यमानस्य बैजिकगार्भिक-दोषपरिहारपुरुषताज्ञानोदयप्रतिरोधिपरिहारं पुंसवनम्। अर्थात् जन्म लेने वाले का बीजगत गर्भगत व मनोगत दोषों को दूर करते हुए, ज्ञान व उत्तम संस्कार हेतु पुंसवन संस्कार किया जाता है। **विशेष** - स्त्रीणां सर्वक्रियारम्भे भर्तुर्गोचरतः फलम्। यात्रापुंसवनोद्वाहे विशुद्धिर्योषितः सदा।। (बृ.दै.र.५०-०२) **यात्रा में त्र्यंक मुहूर्त्त** - पहला मुहूर्त्त-तिथि में २ गुणा करके ७ का भाग दें, शेष शून्य हो तो पीडा। दूसरा मुहूर्त्त - वार में ३ का गुणा कर ८ का भाग दें, शेष शून्य हो तो भय, तीसरा मुहूर्त्त - नक्षत्र संख्या में ४ का गुणा कर ६ का भाग दें, शेष शून्य हो तो मृत्यु। फल - तीनों जगह अंक शेष रहने पर ही शुभ होता है। त्र्यंके च विजयी भवेत्।(बृ.दै.र.)

गुरु बल - दिश्चिक्यजन्मांबरशत्रुसंस्थः पूजामभीष्ट्यत्यमरेशपूज्यः। पातालरंध्रव्ययराशिसंस्थः शुभप्रदः स्यात्र स पूजितोपि।। अर्थात् स्वराशि से ३, १, १०, ६ राशि का गुरु पूज्य और ४, ८, १२ का पूजा करने पर भी शुभप्रद नहीं होता। ग्रन्थान्तर से -बंधौ तृतीये रिपुसंस्थिते च इच्छन्ति पूजां दशमे गुरौ च न पूज्यमिच्छन्ति चतुर्थगे च न द्वादशे चाष्टमगे च जीवे।। (बृ.दै.र.) जन्मनक्षत्र में त्याज्य कार्य - ग्रहाणां जन्मऋक्षेषु विवाहं नैव कारयेत्। विवाहेषु च वैधव्यं प्रस्थाने मरणं ध्रुवम्। विद्यारम्भे च मूर्खत्वं कृषिवाणिज्य निष्फलम्। अर्थात् जन्मनक्षत्र में विवाह वैधव्यकारक, यात्रा मृत्युकारक, विद्यारम्भ मूर्खत्वकारक, व्यापार हानिकारक होता है। (बृ.दै.र.)

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
16	1	0	58	55	1	7	37	24	9	5	48	35	0	9	47	34	6	23	21	43	2	1	38	11	8	14	25	28	3	15	38	08
17	1	1	56	47	1	22	16	37	9	6	11	59	0	11	25	58	6	23	14	12	2	2	50	9	8	14	22	52	3	15	34	57
18	1	2	54	37	2	6	59	7	9	6	35	1	0	13	6	30	6	23	6	43	2	4	2	4	8	14	20	11	3	15	31	46
19	1	3	52	25	2	21	37	52	9	6	57	41	0	14	49	7	6	22	59	17	2	5	13	55	8	14	17	25	3	15	28	34
20	1	4	50	12	3	6	7	23	9	7	19	58	0	16	33	51	6	22	51	55	2	6	25	44	8	14	14	35	3	15	25	24
21	1	5	47	58	3	20	24	7	9	7	41	53	0	18	20	42	6	22	44	35	2	7	37	28	8	14	11	41	3	15	22	14
22	1	6	45	41	4	4	26	24	9	8	3	23	0	20	9	38	6	22	37	19	2	8	49	9	8	14	8	42	3	15	19	03
23	1	7	43	23	4	18	13	58	9	8	24	30	0	22	0	40	6	22	30	8	2	10	0	46	8	14	5	39	3	15	15	52
24	1	8	41	3	5	1	47	21	9	8	45	12	0	23	53	48	6	22	23	0	2	11	12	20	8	14	2	31	3	15	12	41
25	1	9	38	42	5	15	7	22	9	9	5	29	0	25	48	59	6	22	15	58	2	12	23	50	8	13	59	20	3	15	9	30
26	1	10	36	20	5	28	14	44	9	9	25	21	0	27	46	12	6	22	8	60	2	13	35	15	8	13	56	4	3	15	6	20
27	1	11	33	56	6	11	9	54	9	9	44	47	0	29	45	24	6	22	2	7	2	14	46	37	8	13	52	45	3	15	3	09
28	1	12	31	30	6	23	53	4	9	10	3	45	1	1	46	32	6	21	55	19	2	15	57	55	8	13	49	22	3	14	59	58
29	1	13	29	4	7	6	24	24	9	10	22	17	1	3	49	31	6	21	48	38	2	17	9	9	8	13	45	55	3	14	56	47

प्रश्नकाल से रोगबाधा ज्ञान - तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न और प्रहर इन सब को जोड़कर ८ का भाग दें। ३,७ शेष रहने पर देवबाधा के कारण रोग है। २,८ शेष पर पितृबाधा, ६,४ शेष पर भूतबाधा, १,५ शेष पर ग्रहबाधा रोग का कारण होती है। प्रकारान्तर - तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, प्रहर को जोड़कर १२ का भाग दें। ३,५, ६, ८, ९,११ शेष बचे तो रोग से निवृत्ति हो जायेगी। १, २, ४, ७, १०, १२ शेष होने पर रोग मृत्यु का कारण बनेगा। अथवा वार, नक्षत्र, तिथि और दिशा आदि की संख्यायोग में ८ का भाग दें। २ और ८ के शेष में पितृबाधा, ३ और ७ से देवबाधा, ४ और ६ से प्रेतबाधा, १ और ५ से ग्रहबाधाजन्य रोग होता है।

22 मई 2018 प्रात: 05:29
ज्येष्ठ शुक्ल 8 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 59/32/30

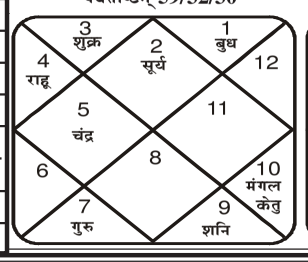

29 मई 2018 प्रात: 05:29
ज्येष्ठ शुक्ल 15 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 59/35/00

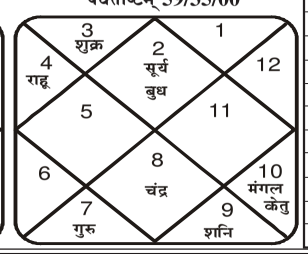

गङ्गादशहरा -ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता।। **निर्जलाएकादशी में जलकुम्भदान** - ज्येष्ठे मासि नृपश्रेष्ठ या शुक्लैकादशी शुभा। निर्जलं समुपोष्यात्र जलकुम्भान् सशर्करान्। प्रदाय विप्र मुख्येभ्यो मोदके विष्णु सन्निधौ।। **वटसावित्री पूर्णिमापक्ष** - ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे द्वादश्यां रजनी मुखे। व्रतं त्रिरात्रिमुद्दिश्य दिवारात्रिं स्थिरा भवेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णी वापि मृन्मयीम्। सार्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः।। **ज्येष्ठ में दान**- ज्येष्ठे मासि तिलान् दद्यात् पौर्णमास्यां विशेषतः। अश्वमेधस्य यत् पुण्यं तत् प्राप्नोति न संशयः।। इति विष्णु।।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
16	07:36:33	09:48:16	12:08:15	14:20:50	16:29:44	18:45:17	21:03:45	23:07:33	00:56:48	02:27:27	03:57:55	05:35:36
17	07:32:36	09:44:19	12:04:18	14:16:53	16:25:47	18:41:20	20:59:48	23:03:36	00:52:51	02:23:30	03:53:58	05:31:39
18	07:28:39	09:40:22	12:00:21	14:12:56	16:21:50	18:37:23	20:55:51	22:59:39	00:48:54	02:19:33	03:50:01	05:27:42
19	07:24:42	09:36:25	11:56:24	14:08:59	16:17:53	18:33:26	20:51:54	22:55:42	00:44:57	02:15:36	03:46:04	05:23:45
20	07:20:45	09:32:28	11:52:27	14:05:02	16:13:56	18:29:29	20:47:57	22:51:45	00:41:00	02:11:39	03:42:07	05:19:48
21	07:16:48	09:28:31	11:48:30	14:01:05	16:09:59	18:25:32	20:44:00	22:47:48	00:37:03	02:07:42	03:38:10	05:15:51
22	07:12:51	09:24:34	11:44:33	13:57:08	16:06:02	18:21:35	20:40:03	22:43:51	00:33:06	02:03:45	03:34:13	05:11:54
23	07:08:54	09:20:37	11:40:36	13:53:11	16:02:05	18:17:38	20:36:06	22:39:54	00:29:09	01:59:48	03:30:16	05:07:57
24	07:04:57	09:16:40	11:36:39	13:49:14	15:58:08	18:13:41	20:32:09	22:35:57	00:25:12	01:55:51	03:26:19	05:04:00
25	07:01:00	09:12:43	11:32:42	13:45:17	15:54:11	18:09:44	20:28:12	22:32:00	00:21:15	01:51:54	03:22:22	05:00:03
26	06:57:03	09:08:46	11:28:45	13:41:20	15:50:14	18:05:47	20:24:15	22:28:03	00:17:18	01:47:57	03:18:25	04:56:06
27	06:53:06	09:04:49	11:24:48	13:37:23	15:46:17	18:01:50	20:20:18	22:24:06	00:13:21	01:44:00	03:14:28	04:52:09
28	06:49:09	09:00:52	11:20:51	13:33:26	15:42:20	17:57:53	20:16:21	22:20:09	00:09:24	01:40:03	03:10:31	04:48:12
29	06:45:12	08:56:55	11:16:54	13:29:29	15:38:23	17:53:56	20:12:24	22:16:12	00:05:27	01:36:06	03:06:34	04:44:15

प्रश्नकाल से रोगबाधा ज्ञान - तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न और प्रहर इन सब को जोड़कर ८ का भाग दें। ३,७ शेष रहने पर देवबाधा के कारण रोग है। २,८ शेष पर पितृबाधा, ६,४ शेष पर भूतबाधा, १,५ शेष पर ग्रहबाधा रोग का कारण होती है।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (अधिक) विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.
01	बुध	39/28	21:25	ज्येष्ठा	53/55	27:12	सिद्ध	29/32	17:27	बालव	08:37	कौलव	21:25	05:38	18:57	33/17	धनु 27:12
02	गुरु	44/27	23:25	मूल	00	00	साध्य	30/57	18:01	तैतिल	10:25	गर	23:25	05:38	18:58	33/20	
03	शुक्र	50/18	25:45	मूल	00/35	05:52	शुभ	33/05	18:52	वणिज	12:35	विष्टि	25:45	05:38	18:58	33/20	
04	शनि	56/40	28:18	पू.षा.	08/02	08:51	शुक्ल	35/40	19:54	बव	15:01	बालव	28:18	05:38	18:59	33/22	मकर 15:37
05	रवि	00	00	उ.षा.	15/53	11:59	ब्रह्म	38/27	21:01	कौलव	17:35	–	–	05:38	18:59	33/22	
05	सोम	03/07	06:53	श्रवण	23/25	15:00	ऐन्द्र	41/02	22:03	तैतिल	06:53	गर	20:04	05:38	19:00	33/25	कुंभ 28:34
06	मङ्गल	09/05	09:16	धनिष्ठा	30/47	17:57	वैधृति	43/00	22:50	वणिज	09:16	विष्टि	22:15	05:38	19:00	33/25	
07	बुध	14/03	11:15	शत.	36/45	20:20	विष्कु	44/00	23:14	बव	11:15	बालव	23:56	05:38	19:00	33/25	
08	गुरु	17/28	12:37	पू.भा.	41/07	22:05	प्रीति	43/37	23:05	कौलव	12:37	तैतिल	24:55	05:38	19:01	33/27	मीन 15:43
09	शुक्र	18/58	13:13	उ.भा.	43/30	23:02	आयु	41/40	22:18	गर	13:13	वणिज	25:06	05:38	19:01	33/27	
10	शनि	18/22	12:59	रेवती	43/50	23:10	सौभा	38/03	20:51	विष्टि	12:59	बव	21:26	05:38	19:02	33/30	मेष 23:10
11	रवि	15/40	11:54	अश्विनी	42/07	22:29	शोभ	32/45	18:44	बालव	11:54	कौलव	22:59	05:38	19:02	33/30	
12	सोम	11/05	10:04	भरणी	38/37	21:05	अति	26/00	16:02	तैतिल	10:04	गर	20:49	05:38	19:02	33/30	वृष 26:39
13 14	मङ्गल	04/50 57/20	07:34 28:34	कृतिका	33/43	19:07	सुक	17/57	12:49	वणिज	07:34	विष्टि शकुनि	18:04 28:34	05:38	19:03	33/33	
30	बुध	48/57	25:13	रोहिणी	27/42	16:43	धृति शूल	08/55 59/18	09:12 29:21	चतुष्प.	14:53	नाग	25:13	05:38	19:03	33/33	मिथु. 27:25

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (30 मई से 13 जून 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
30	ज्येष्ठा में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, मूलदोष सम्पूर्ण दिन वा मूलशान्ति कार्य।। 📖 प्रतियोगिताकार्य, वस्त्राभूषणव्यवसाय, नृत्यगीतशिल्पशिक्षणप्रशिक्षणकार्य का शुभ मुहूर्त है।।
31	मूल में मूलदोष व मूलशान्ति, शनियुति मुहूर्ताभाव है।। ✉ सुधारकार्य, कृषिकर्म, ऋणदान, कारखाना आरम्भ करना, संधि,विग्रहकर्म, रत्नादिपरीक्षणकार्य, प्रतियोगितासम्बन्धी कार्य करना शुभ है।।
01	भद्रा 12:35 से 25:45 तक, चन्द्रोदय 21:22,मूल में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है, ५:५२ तक मूलदोष व मूलशान्ति कार्य, पू.षा. में रोगमुक्तस्नान, रसायनिक/वैज्ञानिककार्य, घातकर्म ✉
02	श्रीगणेशचतुर्थी, चन्द्रोदय 22:08,पू.षा. व उ.षा. में रिक्तादोष, उग्रकर्म, शस्त्रादिनिर्माणकार्य ही शुभ है।। ✍प्रतियोगिताकार्य, वस्त्राभूषणव्यवसाय, नृत्यगीतशिल्पशिक्षणप्रशिक्षणकार्य के शुभ मुहूर्त हैं ।।
03	उ.षा. में भौमभुक्त, श्रवण में देवपूजनादि कार्य, औषधिकर्म, ऑप्रेशन, कृषिकर्म, शस्त्रादिनिर्माण कार्य , होटलव्यवसाय, रसायनिककार्य, भट्टालगाना, चरकार्य, वाहनादिशोधन, रत्नशोधनादि शुभ हैं।।
04	पञ्चक 15:00 से, श्रवण में ऑप्रेशन, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्य पालन, ब्यूटीपार्लर, फनीर्चर/प्रिंटिंगकार्य, प्रशिक्षणकार्य, शिल्पारम्भ, वस्त्राभूषणकार्य, वाहनादिक्रयविकयादि मुहूर्त है। रवियोग १५:०६ से
05	भद्रा 09:16 से 22:15 तक, धनिष्ठा में वैधृति दोष, उग्रकर्मादि शुभ है। द्विपुष्कर ०९:१६ से १७:५६ तक।।
06	शतभिषा में, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, भूमिभवनवाहनादिक्रयविक्रय, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनक्रयादि कर्म, शिल्पविद्या, हलचलाना, प्रिंटिंग लेखनकार्य, व्यापारारम्भ, कारखाना प्रारम्भ करना 📖
07	शीतलाष्टमी, पू.भा. में कृषिकर्म, व्यापारारम्भ धान्यच्छेदन, देवालय/जलाशयादि का शोधन, गुप्तकार्य, पशुपक्षीव्यवसाय, अश्वचालन, औषधिनिर्माणादि का कार्य करना शुभ है।
08	भद्रा आरम्भ 25:06 से, ✿मृग. में सूर्य १२.१७ से, उ.भा. में रिक्तोपरान्त भद्रापूर्व , गर्भाधानपुंसवनजातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणादिकार्य, वाहनादिक्रयविक्रय, भूमिभवनादिकार्य ✍
09	भद्रा समाप्ति 12:59 पर, पञ्चक 23:10 तक, रेवती में, व्यापारारम्भ, मशीनकार्य, स्थिरकार्य, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनादि कार्य, वाटिकावृक्षादिरोपणकार्य करना शुभ है।।
10	पुरुषोत्तम एकादशी, अश्विनी में वस्त्राभूषणादिकार्य, पशुपक्षीमत्स्यादिवाहनादिक्रयविक्रयादि कार्य, शिल्पविद्या, व्यापारारम्भ, शस्त्रादिकार्य, देवपूजनादि कार्य, वाटिकावृक्षादिरोपण, जलान्नदानादि शुभ हैं।
11	सोमप्रदोष, भरणी में शिवपूजन, शस्त्रादिकार्य,रोगमुक्तस्नानादि कार्य, अग्निकार्य शुभ हैं।।
12	भद्रा 07:34 से 18:04 तक, मासशिवरात्रि, चन्द्रोदय 18:28, मासान्तदोष मुहूर्ताभाव है।।
13	स्नानदानादि अमावस्या, चन्द्रोदय 19:18, मासान्तदोष ुहूर्ताभाव है।।

यात्रा में अशुभ शकुन - बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

यात्रा व युद्ध में विशेष- तिथि वारञ्च नक्षत्रमेकीकृत्य त्रिधा पुनः द्वित्रिचतुर्भिगुणितं रससप्ताष्टभाजितम्। आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये दरिद्रता। अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वांकी विजयी भवेत्।। अर्थात्- शुक्लप्रतिपदा से तिथि, रवि से दिन, अश्विनी से नक्षत्र, लेकर इन सबका योग करके ३ जगह उसे रखें। उसे क्रमशः २,३,४ से गुणा करके ६,७,८ से भाग दें। प्रथम संख्या में शून्य हो तो हानि, मध्य में शून्य हो तो दरिद्रता, अन्त्य में शून्य हो तो मृत्यु होती है। यदि तीनों जगहों पर अंक बचे तो विजयी होता है। कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः। तत्र प्रयातुनृपतेरर्थनाशः पदे पदे।। कुम्भ लग्न और कुम्भ नवांश को अवश्य यात्रा में त्याग देना चाहिए। त्र्यहं क्षीरं त्याज्यौ पञ्चाहं क्षौरं सप्तदिनं रतम्। वर्ज्यं यात्रादिनात्पूर्वमशक्तस्तद्दिनेऽपि च।। सम्मुखे दक्षिणे शुक्रः युद्धयात्रां विवर्जयेत्।। **सिद्ध मुहूर्त -** इषमाससिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता। श्रवणर्क्षयुताः सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसिद्धिकरी।। मु.चि. में कहा गया है कि आश्विन शुक्ल दशमी विजयदशमी होती है। यह तिथि सभी कार्यों में सिद्धिप्रद होती है। यदि इस दिन श्रवण नक्षत्र हो तो सभी इच्छा को पूर्ण करती है। विशेषतः राजाओं के लिए यह विजयकारक अथवा संधिकारक होती है। विजययोग - केन्द्रत्रिकोणगाः सौम्यास्तृतीयायारिगाः परे। यदि यातुः शुभा यात्रा द्रव्यदा विजयावहा। (बृ.दै.र.)

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
30	1	14	26	36	7	18	44	11	9	10	40	20	1	5	54	15	6	21	42	1	2	18	20	19	8	13	42	24	3	14	53	36
31	1	15	24	7	8	0	53	12	9	10	57	54	1	8	0	36	6	21	35	32	2	19	31	25	8	13	38	50	3	14	50	26
01	1	16	21	37	8	12	52	49	9	11	14	59	1	10	8	25	6	21	29	8	2	20	42	27	8	13	35	13	3	14	47	15
02	1	17	19	6	8	24	45	10	9	11	31	34	1	12	17	32	6	21	22	51	2	21	53	25	8	13	31	32	3	14	44	04
03	1	18	16	34	9	6	33	14	9	11	47	37	1	14	27	44	6	21	16	40	2	23	4	19	8	13	27	48	3	14	40	53
04	1	19	14	2	9	18	20	45	9	12	3	9	1	16	38	48	6	21	10	37	2	24	15	8	8	13	24	0	3	14	37	42
05	1	20	11	28	10	0	12	7	9	12	18	8	1	18	50	29	6	21	4	41	2	25	25	53	8	13	20	10	3	14	34	32
06	1	21	8	54	10	12	12	16	9	12	32	33	1	21	2	32	6	20	58	52	2	26	36	34	8	13	16	17	3	14	31	31
07	1	22	6	20	10	24	26	21	9	12	46	25	1	23	14	40	6	20	53	11	2	27	47	11	8	13	12	21	3	14	28	10
08	1	23	3	44	11	6	59	25	9	12	59	41	1	25	26	36	6	20	47	38	2	28	57	44	8	13	8	22	3	14	24	59
09	1	24	1	9	11	19	55	54	9	13	12	21	1	27	38	5	6	20	42	13	3	0	8	12	8	13	4	21	3	14	21	48
10	1	24	58	32	0	3	19	2	9	13	24	25	1	29	48	50	6	20	36	57	3	1	18	36	8	13	0	17	3	14	18	38
11	1	25	55	55	0	17	10	2	9	13	35	51	2	1	58	37	6	20	31	48	3	2	28	55	8	12	56	11	3	14	15	27
12	1	26	53	18	1	1	27	34	9	13	46	39	2	4	7	12	6	20	26	49	3	3	39	10	8	12	52	3	3	14	12	16
13	1	27	50	40	1	16	7	24	9	13	56	49	2	6	14	23	6	20	21	58	3	4	49	20	8	12	47	53	3	14	9	5

गर्भास्त्रावादि अशौच निर्णय - चार मास तक गर्भ पतन को गर्भस्त्राव, पाँचवे व छठे मास में गर्भपतन, इसके बाद अन्य मासों में पतन को प्रसव की संज्ञा दी गयी है। यदि तीन माह के अन्दर गर्भपतन होता है तो गर्भिणी को तीन दिन का, चौथे मास के पतन पर चार दिन का अशौच मान्य होता है। पिता को तीन दिन का अशौच और परिवार के लोग केवल स्नान करके ही अशौच निवृत्त हो जाते है।

07 जून 2018 प्रातः 05:29
ज्येष्ठ कृष्ण 8 गुरुवार
पंक्तीष्टम् 59/37/30

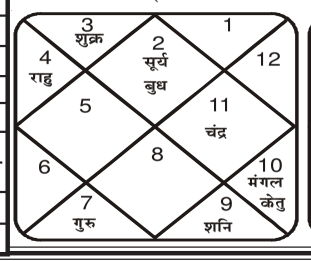

13 जून 2018 प्रातः 05:29
ज्येष्ठ कृष्ण 30 बुधवार
पंक्तीष्टम् 59/37/30

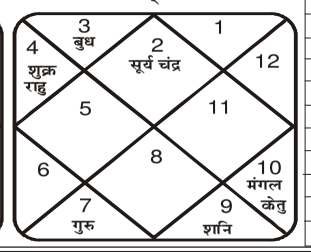

सर्वाङ्क सिद्धियोग - यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोडकर तीन जगह रखें । क्रमशः ७।८।३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाऐं, हानि होती है।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
30	06:41:15	08:52:58	11:12:57	13:25:32	15:34:26	17:49:59	20:08:27	22:12:15	00:01:30	01:32:09	03:02:37	04:40:18
31	06:37:18	08:49:01	11:09:00	13:21:35	15:30:29	17:46:02	20:04:30	22:08:18	23:57:33	01:28:12	02:58:40	04:36:21
01	06:33:21	08:45:04	11:05:03	13:17:38	15:26:32	17:42:05	20:00:33	22:04:21	23:53:36	01:24:15	02:54:43	04:32:24
02	06:29:24	08:41:07	11:01:06	13:13:41	15:22:35	17:38:08	19:56:36	22:00:24	23:49:39	01:20:18	02:50:46	04:28:27
03	06:25:27	08:37:10	10:57:09	13:09:44	15:18:38	17:34:11	19:52:39	21:56:27	23:45:42	01:16:21	02:46:49	04:24:30
04	06:21:30	08:33:13	10:53:12	13:05:47	15:14:41	17:30:14	19:48:42	21:52:30	23:41:45	01:12:24	02:42:52	04:20:33
05	06:17:33	08:29:16	10:49:15	13:01:50	15:10:44	17:26:17	19:44:45	21:48:33	23:37:48	01:08:27	02:38:55	04:16:36
06	06:13:36	08:25:19	10:45:18	12:57:53	15:06:47	17:22:20	19:40:48	21:44:36	23:33:51	01:04:30	02:34:58	04:12:39
07	06:09:39	08:21:22	10:41:21	12:53:56	15:02:50	17:18:23	19:36:51	21:40:39	23:29:54	01:00:33	02:31:01	04:08:42
08	06:05:42	08:17:25	10:37:24	12:49:59	14:58:53	17:14:26	19:32:54	21:36:42	23:25:57	00:56:36	02:27:04	04:04:45
09	06:01:45	08:13:28	10:33:27	12:46:02	14:54:56	17:10:29	19:28:57	21:32:45	23:22:00	00:52:39	02:23:07	04:00:48
10	05:57:48	08:09:31	10:29:30	12:42:05	14:50:59	17:06:32	19:25:00	21:28:48	23:18:03	00:48:42	02:19:10	03:56:51
11	05:53:51	08:05:34	10:25:33	12:38:08	14:47:02	17:02:35	19:21:03	21:24:51	23:14:06	00:44:45	02:15:13	03:52:54
12	05:49:54	08:01:37	10:21:36	12:34:11	14:43:05	16:58:38	19:17:06	21:20:54	23:10:09	00:40:48	02:11:16	03:48:57
13	05:45:57	07:57:40	10:17:39	12:30:14	14:39:08	16:54:41	19:13:09	21:16:57	23:06:12	00:36:51	02:07:19	03:45:00

यात्रा में शुभशकुन - विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत-स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (शुद्ध)				विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940									सू.उ.	सू.अ.	दि.मा.	च.रा.प.	दिनांक	उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (14 जून से 28 जून 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम
तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.		व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	गुरु	40/10	21:42	मृगशिरा	21/05	14:04	गण्ड	49/20	25:22	किंस्तु.	11:27	बव	21:42	05:38	19:03	33/33		14	काशी में दशाश्वमेघ स्नान प्रारम्भ, करवीरव्रत। मृगशिरा में सूर्ययुति के कारण मुहूर्ताभाव है। ✉ २६:४६ तक मूल दोष, मूलशान्ति, रवियोग ४:२० से प्रारम्भ है।।
02	शुक्र	31/20	18:10	आर्द्रा	14/17	11:21	वृद्धि	39/22	21:23	बालव	07:56	कौलव तैतिल	18:10 28:28	05:38	19:03	33/33	कर्क 27:22	15	चन्द्रदर्शन। ✿ **सूर्य मिथुन प्रवेश ११:३६ से पुण्यकाल १७:३६ तक**,आर्द्रा में शस्त्रादिकार्य, धान्यच्छेदन, रोगमुक्तस्नानादि कार्य, पुनर्वसु में शनिवेध के कारण मुहूर्ताभाव है।।
03	शनि	22/50	14:46	पुनर्वसु	07/43	08:43	ध्रुव	29/50	17:34	गर	14:46	वणिज	25:12	05:38	19:04	33/35		16	भद्रा आरम्भ 25:12 से, रम्भातृतीयाव्रत, देवी पूजनार्चन, श्रीमहाराणाप्रतापजयन्ती (राजस्थान), चन्द्रोदय 21:32, पुनर्वसु में शनिवेध के कारण मुहूर्त नहीं है। रवियोग ०८:४४ से प्रारम्भ।
04	रवि	15/03	11:39	पुष्य आश्ले.	01/45 56/43	06:20 28:19	व्याघा.	20/52	13:59	विष्टि	11:39	बव	22:17	05:38	19:04	33/35	सिंह 28:19	17	भद्रा समाप्ति11:39 पर, विनायकचतुर्थीव्रत, उमाचतुर्थीव्रत, गणपति-अनुष्ठानादि, गुरु अर्जुनदेवशहीददिवस। चन्द्रोदय 22:11, पुष्य में राहु युति, श्लेषा में रिक्ता/मूलदोष व मूलशान्ति है।
05	सोम	08/13	08:55	मघा	52/50	26:46	हर्ष.	12/45	10:44	बालव	08:55	कौलव	19:48	05:38	19:04	33/35		18	श्रीस्कन्ध/अरण्य/शीतलाषष्ठी,आरण्यकगौरीव्रत, महादेवविवाह (उडीसा), जामातृ षष्ठी (बंगाल) मघा में शस्त्रकार्य, उग्रकर्म, धान्यच्छेदन, कटाई, रोगमुक्तस्नानादि, अग्निकार्य ✉
06 07	मङ्गल	02/35 58/20	06:41 28:59	पू.फा.	50/15	25:45	वज्र सिद्धि	05/35 59/35	07:53 29:29	तैतिल	06:41	गर वणिज	17:50 28:59	05:39	19:05	33/35		19	भद्रा आरम्भ 28:59 से, विन्ध्यवासिनी देवी का पूजनार्चन, दुर्गापाठादिकर्म। पू.फा. में व्यतीपात दोष के कारण मुहूर्ताभाव है। 📖 संगीतशिक्षणादिकर्म, कलात्मककार्य शुभ हैं।।
08	बुध	55/30	27:51	उ.फा.	49/10	25:19	व्यति.	54/47	27:34	विष्टि	16:25	बव	27:51	05:39	19:05	33/35	कन्या 07:36	20	भद्रा समाप्ति16:25 पर, शुक्लादेवीपूजा ब्रह्माणीदेवीपूजा, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीरभवानी (कश्मीर)। उ.फा. में रिक्तादोष रोगमुक्तस्नानमुहूर्त, त्रिपुष्कर १:४५से ४:५९तक है।
09	गुरु	54/10	27:19	हस्त	49/30	25:27	वरी.	51/07	26:06	बालव	15:35	कौलव	27:19	05:39	19:05	33/35		21	महेश नवमी, सायन सूर्य कर्क प्रवेश १५.३७, हस्त में पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नामकरण, नववस्त्राभूषणादि धारण, कृषिकार्य, व्यापारारम्भ, ब्यूटीपार्लर, स्थिर कार्य, शिक्षणसंस्थानादि कार्य, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, लेखनपब्लिकेशन का मुहूर्त है। रवियोग ०१:२० से,
10	शुक्र	54/13	27:20	चित्रा	51/13	26:08	परिघ	48/38	25:06	तैतिल	15:19	गर	27:20	05:39	19:05	33/35	तुला13:43	22	नवमी का उपवास कर शुक्लादेवी पूजन, **✿आर्द्रा में सूर्य ११.११से**, चित्रा में स्थिरकार्य, मशीनलगाना, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीपालनकर्म, धान्यच्छेदन, कृषिकार्य, वस्त्रभूषणादिकर्म 📖
11	शनि	55/35	27:53	स्वाती	54/13	27:20	शिव	47/07	24:30	वणिज	15:36	विष्टि	27:53	05:39	19:05	33/35		23	भद्रा 15:36 से 27:53 तक, निर्जला एकादशी व्रत(सर्वेषाम्), भीमसैनी एकादशी, भद्रा पूर्व स्वाती में स्थिरकार्य, मशीनव्यापार, पशु-पक्षी-मत्स्यादिकार्य, कारखाना लगाना शुभ है।।
12	रवि	58/05	28:54	विशाखा	58/23	29:01	सिद्ध	46/35	24:18	बव	16:28	बालव	28:54	05:40	19:06	33/35	वृश्चि 22:33	24	त्रिविक्रम द्वादशी, प्रदोष, चम्पकद्वादशी, विशाखा में पशुपक्षीवाहनादि क्रयविक्रय, शान्तिकर्म, रोगोपशमन, संधिविग्रहकार्य, रसायनिककार्य का शुभ मुहूर्त है। त्रिपुष्कर योग ०३:५२ से।।
13	सोम	00	00	अनुराधा	00	00	साध्य	46/58	24:27	कौलव	17:38	--	--	05:40	19:06	33/35		25	दक्षिणवटसावित्रीव्रत आ.।अनुराधा में व्यापारारम्भ, गर्भाधान, जातकर्म, नामकरण, पुराणादिश्रवण, कृषिकर्म, शिल्पविद्या, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, शल्यक्रिया, त्रिपुष्कर ४:५४ तक,
13	मङ्गल	01/45	06:22	अनुराधा	03/37	07:07	शुभ	48/03	24:53	तैतिल	06:22	गर	19:17	05:40	19:06	33/35		26	दक्षिण वटसावित्रीव्रत द्वितीय दिन। अनुराधा में उग्रकर्म, ऑप्रेशन मुहूर्त, रोगमुक्तस्नान, ज्येष्ठा में ७:७ से मूलदोष व मूलशान्ति रोगमुक्तस्नान, रिक्तादोष, राहुवेध है। रवियोग ०७:०८ से।
14	बुध	05/58	08:13	ज्येष्ठा	09/23	09:35	शुक्ल	49/25	25:36	वणिज	08:13	विष्टि	21:18	05:50	19:06	33/10	धनु 09:35	27	भद्रा 08:13 से 21:18 तक, चम्पकचतुर्दशी, पूर्णिमाव्रत, वटसावित्रीव्रत (पूर्णिमापक्ष) सम्पूर्ण दिन मूलदोष, चन्द्रोदय 18:28, व मूलशान्ति, उग्रकार्य, शनियुति के कारण मूहूर्ताभाव है।
15	गुरु	11/45	10:23	मूल	16/40	12:21	ब्रह्म	52/05	26:31	बव	10:23	बालव	23:35	05:41	19:06	33/33		28	सत्यनारायणव्रत,वैव.मन्वादि, स्ना.दा. पूर्णि., ज्येष्ठी पूर्णि., कबीरदासजय., मन्वादि १५। चन्द्रोदय 19:18, मूल में शनियुति दोष, पू.षा. में सूर्यवेध मुहूर्ताभाव है।१२:२१ तक मूलदोष है।

श्रीहनुमन्मन्त्रप्रयोगः - "ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।।"इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः। अस्य मन्त्रस्य ईश्वरऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, हनुमान् देवता, हूँ बीजं स्वाहा शक्तिः, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि।। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।। ॐ हनुमद्देवतायै नमः हृदये।। ॐ हूँ बीजाय नमः गुह्ये।। ॐ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः।। ॐ आंजनेयाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ रुद्रमूर्त्तये तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। हनुमान जी का ध्यान करके सभी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रतिदिन सहस्त्र जप करें। दस सहस्त्र जप उसका दशांश हवनादि कर्म और जप के समय ब्रह्मचर्य बिना नमक का भोजन करके प्रयोग पूर्ण करें । ध्यान - दहनतप्तसुवर्णसमप्रभं भयहरं हृदये विहिताञ्जलिम्। श्रवणकुण्डलशोभिमुखाम्बुजं नमत वानरराजमिहाद्भुतम्।

वर्षा ज्ञानाय पुंस्त्रीनपुंसकनक्षत्राणि - आर्द्रादि दशकं स्त्रीणां विशाखादित्रिनपुंसकम्। मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद् बुधैः।। वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम्। स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम्।। अश्विनीमृगपुष्येषु पूषाविष्णुमघासु च स्वात्यां प्रविशते भानुः वर्षते नात्र संशयः।। सूर्य एवं चन्द्र नक्षत्र - अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पञ्चकं तथा। पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम्।। उक्तानि शशिभान्यन्यत् प्रोच्यते सूर्यभान्तथा। रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिकाद्वयम्।। नक्षत्राणि करात् सप्त वारुणाद्वितये तथा। सूर्ये सूर्ये भवेद्वायु चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति।। चान्द्रार्कयोर्भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट्।। इनके अनुसार दैवज्ञ को वर्षानुकूल समय जानकर वर्षा का विचार करना चाहिए।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
14	1	28	48	1	2	1	2	36	9	14	6	18	2	8	19	58	6	20	17	16	3	5	59	25	8	12	43	40	3	14	5	54
15	1	29	45	21	2	16	4	32	9	14	15	8	2	10	23	49	6	20	12	43	3	7	9	25	8	12	39	26	3	14	2	44
16	2	0	42	41	3	1	4	10	9	14	23	17	2	12	25	47	6	20	8	20	3	8	19	21	8	12	35	11	3	13	59	33
17	2	1	40	0	3	15	53	32	9	14	30	45	2	14	25	47	6	20	4	6	3	9	29	11	8	12	30	53	3	13	56	22
18	2	2	37	18	4	0	26	43	9	14	37	32	2	16	23	42	6	20	0	2	3	10	38	56	8	12	26	35	3	13	53	11
19	2	3	34	36	4	14	40	10	9	14	43	36	2	18	19	30	6	19	56	8	3	11	48	35	8	12	22	15	3	13	50	00
20	2	4	31	52	4	28	32	32	9	14	48	59	2	20	13	6	6	19	52	24	3	12	58	8	8	12	17	54	3	13	46	50
21	2	5	29	8	5	12	4	13	9	14	53	39	2	22	4	29	6	19	48	49	3	14	7	36	8	12	13	32	3	13	43	49
22	2	6	26	23	5	25	16	39	9	14	57	36	2	23	53	36	6	19	45	25	3	15	16	58	8	12	9	9	3	13	40	28
23	2	7	23	37	6	8	11	49	9	15	0	49	2	25	40	27	6	19	42	11	3	16	26	13	8	12	4	45	3	13	37	17
24	2	8	20	51	6	20	51	53	9	15	3	19	2	27	25	1	6	19	39	7	3	17	35	23	8	12	0	21	3	13	34	46
25	2	9	18	4	7	3	18	53	9	15	5	5	2	29	7	16	6	19	36	13	3	18	44	25	8	11	55	56	3	13	30	56
26	2	10	15	17	7	15	34	43	9	15	6	6	3	0	47	13	6	19	33	30	3	19	53	22	8	11	51	32	3	13	27	45
27	2	11	12	29	7	27	41	6	9	15	6	23	3	2	24	51	6	19	30	57	3	21	2	12	8	11	47	6	3	13	24	34
28	2	12	9	41	8	9	39	46	9	15	5	55	3	4	0	9	6	19	28	35	3	22	10	55	8	11	42	41	3	13	21	23

नष्टवस्तु विचार - जोड़ प्रहर तिथि वार को देय नक्षत्र मिलाय, संख्या दिक् से गुणित कर सात का भाग लगाय। एक बचे से भूमि में, दो बर्तन के माहि, तीन बचे जल मध्य में, चौथ गगन में जाहि। पांच बचे भूसी गिनो षड् गोमय के बीच, सप्त भस्म के मध्य में प्रश्न ऊँच या नीच।। तिथि प्रहर, वार और नक्षत्र को जोड़कर १० का गुणा करके ७ का भाग दे। फल पद्यानुसार समझे।

20 जून 2018 प्रात: 05:29
ज्येष्ठ शुक्ल 8 बुधवार
पंक्तीष्टम् 59/35/00

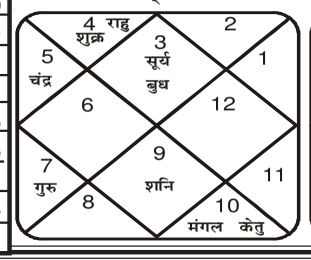

28 जून 2018 प्रात: 05:29
ज्येष्ठ शुक्ल 15 गुरुवार
पंक्तीष्टम् 59/30/00

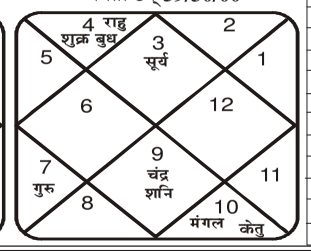

यात्रा में प्रस्थान - अपेक्ष्यकार्यं स्वयमप्रमाणे महीभ्रताम निर्गममाहुरार्याः। छत्रायुधाद्यं मनसस्त्वभीष्टंल प्रचालयेद्वै नृपतिर्जयार्थी।। **प्रस्थान में दिन विचार -** सप्ताहानेव पूर्वस्यां प्रस्थानं पंच दक्षिणे। पश्चिमे त्रीणि शस्तानि सौम्यायां तु दिनद्वयम्।। प्रस्थान की दूरी- गेहाद्गेहान्तरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्गः। सीम्नः सीमान्तरमपि भृगुर्वाणविक्षेपमात्रम्। प्रस्थानं स्यादिति कथयतेथो भरद्वाज एवं यात्रा कार्या बहिरिह पुरात्स्याद्वसिष्ठो ब्रवीति।। (बृ.दै.र.)

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
14	05:42:00	07:53:43	10:13:42	12:26:17	14:35:11	16:50:44	19:09:12	21:13:00	23:02:15	00:32:54	02:03:22	03:41:03
15	05:38:03	07:49:46	10:09:45	12:22:20	14:31:14	16:46:47	19:05:15	21:09:03	22:58:18	00:28:57	01:59:25	03:37:06
	मिथुन	**कर्क**	**सिंह**	**कन्या**	**तुला**	**वृश्चिक**	**धनु**	**मकर**	**कुम्भ**	**मीन**	**मेष**	**वृष**
16	07:45:49	10:05:48	12:18:23	14:27:17	16:42:50	19:01:18	21:05:06	22:54:21	00:25:00	01:55:28	03:33:09	05:34:06
17	07:41:52	10:01:51	12:14:26	14:23:20	16:38:53	18:57:21	21:01:09	22:50:24	00:21:03	01:51:31	03:29:12	05:30:09
18	07:37:55	09:57:54	12:10:29	14:19:23	16:34:56	18:53:24	20:57:12	22:46:27	00:17:06	01:47:34	03:25:15	05:26:12
19	07:33:58	09:53:57	12:06:32	14:15:26	16:30:59	18:49:27	20:53:15	22:42:30	00:13:09	01:43:37	03:21:18	05:22:15
20	07:30:01	09:50:00	12:02:35	14:11:29	16:27:02	18:45:30	20:49:18	22:38:33	00:09:12	01:39:40	03:17:21	05:18:18
21	07:26:04	09:46:03	11:58:38	14:07:32	16:23:05	18:41:33	20:45:21	22:34:36	00:05:15	01:35:43	03:13:24	05:14:21
22	07:22:07	09:42:06	11:54:41	14:03:35	16:19:08	18:37:36	20:41:24	22:30:39	00:01:18	01:31:46	03:09:27	05:10:24
23	07:18:10	09:38:09	11:50:44	13:59:38	16:15:11	18:33:39	20:37:27	22:26:42	23:57:21	01:27:49	03:05:30	05:06:27
24	07:14:13	09:34:12	11:46:47	13:55:41	16:11:14	18:29:42	20:33:30	22:22:45	23:53:24	01:23:52	03:01:33	05:02:30
25	07:10:16	09:30:15	11:42:50	13:51:44	16:07:17	18:25:45	20:29:33	22:18:48	23:49:27	01:19:55	02:57:36	04:58:33
26	07:06:19	09:26:18	11:38:53	13:47:47	16:03:20	18:21:48	20:25:36	22:14:51	23:45:30	01:15:58	02:53:39	04:54:36
27	07:02:22	09:22:21	11:34:56	13:43:50	15:59:23	18:17:51	20:21:39	22:10:54	23:41:33	01:12:01	02:49:42	04:50:39
28	06:58:25	09:18:24	11:30:59	13:39:53	15:55:26	18:13:54	20:17:42	22:06:57	23:37:36	01:08:04	02:45:45	04:46:42

आषाढ कृष्णपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (29 जून से 13 जुलाई 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01	शुक्र	17/45	12:47	पू.षा.	24/10	15:21	ऐन्द्र	54/43	27:34	कौलव	12:47	तैतिल	26:04	05:41	19:06	33/33	मकर 22:08	29
02	शनि	24/10	15:21	उ.षा.	32/00	18:29	वैधृति	57/30	28:41	गर	15:21	वणिज	28:38	05:41	19:06	33/33		30
03	रवि	30/32	17:55	श्रवण	39/47	21:37	विष्कु	00	00	विष्टि	17:55	--	--	05:42	19:06	33/30		01
04	सोम	36/38	20:21	धनिष्ठा	47/13	24:35	विष्कु	00/08	05:45	बव	07:08	बालव	20:21	05:42	19:06	33/30	कुम्भ 11:08	02
05	मङ्गल	41/55	22:28	शत.	53/50	27:14	प्रीति	02/25	06:40	कौलव	09:24	तैतिल	22:28	05:42	19:06	33/30		03
06	बुध	46/00	24:07	पू.भा	00	00	आयु	03/55	07:17	गर	11:17	वणिज	24:07	05:43	19:06	33/28	मीन 22:54	04
07	गुरु	48/30	25:07	पू.भा.	59/10	05:23	सौभा	04/25	07:29	विष्टि	12:37	बव	25:07	05:43	19:06	33/28		05
08	शुक्र	49/10	25:23	उ.भा.	02/58	06:54	शोभ	03/38	07:10	बालव	13:15	कौलव	25:23	05:43	19:06	33/28		06
09	शनि	47/45	24:50	रेवती	04/50	07:40	अति सुक	01/18 57/23	06:15 28:41	तैतिल	13:06	गर	24:50	05:44	19:06	33/25	मेष 07:40	07
10	रवि	44/27	23:31	अश्विनी	04/45	07:38	धृति	51/55	26:30	वणिज	12:10	विष्टि	23:31	05:44	19:06	33/25		08
11	सोम	39/17	21:27	भरणी कृतिका	02/45 59/03	06:50 29:21	शूल	44/57	23:43	बव	10:29	बालव	21:27	05:44	19:06	33/25	वृष 12:32	09
12	मङ्गल	32/32	18:46	रोहिणी	53/45	27:15	गण्ड	36/40	20:25	कौलव	08:06	तैतिल गर	18:46 29:10	05:45	19:06	33/22		10
13	बुध	24/32	15:34	मृगशिरा	47/25	24:43	वृद्धि	27/25	16:43	वणिज	15:34	विष्टि	25:48	05:45	19:06	33/22	मिथु 14:02	11
14	गुरु	15/40	12:02	आर्द्रा	40/20	21:54	ध्रुव	17/22	12:43	शकुनि	12:02	चतुष्प.	22:10	05:46	19:06	33/20		12
30 01	शुक्र	06/20 56/55	08:18 28:32	पुनर्वसु	33/02	18:59	व्याघा. हर्ष.	07/00 56/35	08:34 28:24	नाग	08:18	किंस्तु. बव	18:25 28:32	05:46	19:06	33/20	कर्क 13:42	13

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
29	गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती, पू.षा. में सूर्यवेध दोष, उ.षा. में स्थिरकार्य, यन्त्रकार्य, तैल-ईन्धनव्यवसाय, नृत्यगीतशिक्षणादिकर्म, प्रशिक्षणकार्य शुभ हैं।सिद्धियोग 12:47 तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक है।।
30	भद्रा आरम्भ 28:38 से, ऋषभनाथ जयन्ती (जै.)। उ.षा. में स्थिरकार्य, यन्त्रकार्य, तैल-ईन्धनव्यवसाय, श्रवण में भौमयुतिदोष मुहूर्ताभाव, सामान्य मुहूर्त, त्रिपुष्कर ५:४१से १५:२०, सर्वार्थसिद्धि 18:29 प्रारम्भ
01	भद्रा 17:55 से सम्पूर्ण, पञ्चक 21:37 से, संकटचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21:32, श्रवण में भौमयुतिदोष के कारण मुहूर्ताभाव है, सामान्य मुहूर्त, सिद्धियोग 17:55 तक है।।
02	चन्द्रोदय 22:04, अंगारक चतुर्थी, गणपति अथर्वशीर्षादि का पाठ शुभ। चन्द्रोदय 22:11, धनिष्ठा में रिक्ता दोष, अमृतयोग 20:21 से सूर्योदय तक है।।
03	शतभिषा में यन्त्रादिकार्य, उग्रकर्म, ऑप्रेशन कार्य, पशुव्यापार कार्य, रक्तदानादि कार्य, मृत्युयोग 22:28 से है।। ✉ अमृतयोग 24:07 तक तदुपरान्त सिद्धियोग सूर्योदय तक है।।
04	भद्रा आरम्भ 24:07 से, मिथुन संक्रान्ति 29:33, पुण्यकाल 11:58 तक। पू.भा. में कृषिकार्य, पशुपक्षीवस्त्रादिक्रयविक्रय, प्रिंटिंगप्रेसकार्य, धान्यच्छेदन, नृत्यगीतशिल्पशिक्षणप्रशिक्षणादि कार्य शुभ हैं ✉
05	भद्रा समाप्ति 12:37 पर, उ.भा. में पुसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणादि धारण, शिप्लविद्या, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, कृषिकार्य, वास्तुकार्य, धान्यच्छेदन, अमृतयोग 25:07 तक
06	कालाष्टमी, शीतलाष्टमीव्रत, त्रिलोचन पूजन, ✿**पुन. में सूर्य १०.५१ से**, रेवती में वस्त्राभूषणादिधारणादि कार्य, वृक्षादिरोपण, पशुपक्षीवस्तुवाहनभवनादि क्रय, व्यापारारम्भ, जलव्यापारारम्भ, कृषिकर्म, धान्यच्छेदन,नृत्यगीतशिक्षण कर्म शुभ हैं, अमृतयोग 25:23 से सर्वार्थसिद्धियोग 06:54 से
07	पञ्चक समाप्त 07:40, रेवती में स्थिरकार्य, अश्विनी में रोगमुक्तस्नान, उग्र कार्य, ऋणमुक्ति शुभ है, रिक्तादोष के कारण विशेष मूहर्ताभाव है, सिद्धियोग 24:50 तक तदुपरान्त मृत्युयोग आरम्भ है।।
08	भद्रा 12:10 से 23:31 तक, योगिनी एकादशीव्रत (सर्वेषाम्)। अश्विनी में भद्रापूर्व जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, धान्यारोपण, व्यापारम्भ, कारखाना आदि कार्यारम्भ, पशुभूमिभवनवाहनादि क्रय, औषधिभक्षण, ऑपरेशन, वाटिका/वृक्षरोपण,शान्तिकर्म शुभ हैं। अमृत 23:31 तक सर्वार्थ 03:38 तक ।
09	कूर्म जयन्ती, सायन सूर्य कर्क में प्रवेश 9:54। कृत्तिका में केतु वेध, सामान्यकार्य, सिद्धियोग 21:27 तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धियोग 29:22 तक
10	भौमप्रदोषव्रत, रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, कृषिकर्म, ऑप्रेशन, मशीनादिकार्य, रक्तदान, भौमपूजनजप, उग्रकर्म, अमृतयोग 18:46 तक तदुपरान्त सिद्धियोग सूर्योदय तक
11	भद्रा 15:38 से 25:44 तक, मासशिवरात्रिव्रत,शिवपूजनजपादिकर्म। भद्रा एवं मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्युयोग 15:34 तक, सर्वार्थसिद्धियोग 24:43 तक है।
12	श्राद्ध की अमावस्या, शब्बे कद्र (मुस्लिम) , मृत्यु 12:02 तक तदुप. सिद्धि सूर्योदय तक, सर्वार्थ 21:54 तक मासान्तदोष मुहूर्ताभाव है।।
13	स्नान-दान अमावस्या, गुप्तनवरात्रारम्भ, प्रतिपदा में ०८:१८ के बाद घटस्थापन,मासान्तदोष मुहूर्ताभाव है।। सिद्धि 08:18 से 28:32 तक तदुप. मृत्यु सूर्योदय तक है।।

कुम्भविवाह - बालवैधव्ययोगे तु कुम्भेषु प्रतिमादिभिः। कृत्वा लग्नं ततः पश्चात् कन्योद्वाहेति चापरे।। कन्या की कुण्डली में विधवा योग हो तो घट या प्रतिमा के साथ विवाह निश्चित हो जाने पर करना चाहिए। प्रतिमा या कुम्भ विवाह करने पर पुनर्भूदोष नहीं होता। कहा गया है - स्वर्णाम्बुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी। तया सह विवाहे तु पुनर्भूत्वं न जायते। विधि - विवाहत्पूर्वकाले च चन्द्रताराबलान्विते। विवाहोक्तेन मन्थन्या कुम्भेन सह चोद्वहेत्।। सूत्रेण वेष्टयेत्पश्चाद्दशतन्तुविधानतः। कुंकुमालंकृतं देहं तयोरेकान्तमन्दिरे।। ततः कुम्भं च निःसार्य प्रभज्य सलिलाशये। ततोभिषेचनं कुर्यात्पञ्चपल्लववारिभिः।।(बृ.दै.र.)

द्वादशस्थ चन्द्रमा - आदाने सम्प्रदाने विवादे राजविग्रहे पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः, अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु यात्रायुद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा मित्रवर्गे मित्रदृष्टः स ग्रहः सबलः स्मृतः। **विजययोग** - गुरु चन्द्र लग्न में, मगंल व शनि छठे स्थान में हो तो जययोग होता है। वैसे ही ग्यारहवें बुध, शुक्र व गुरु, दसवें सूर्य सभी कार्यों में सफलता देता है। **कुम्भ प्रार्थना-** वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय। पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु।। देहि विष्णो परं देव कन्यां पालय दुःखतः। ततोलंकारवस्त्रादि वराय प्रतिपादयेत्।। मूर्तिदानमन्त्र- ब्राह्मणं साधुमामंत्र्य सम्पूज्य विविधार्हणैः। तस्मै दद्याविधानेन विष्णोमूर्तिं चतुर्भुजाम्।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
29	2	13	6	52	8	21	32	28	9	15	4	42	3	5	33	7	6	19	26	23	3	23	19	31	8	11	38	16	3	13	18	12
30	2	14	4	4	9	3	21	15	9	15	2	43	3	7	3	44	6	19	24	21	3	24	28	0	8	11	33	51	3	13	15	02
01	2	15	1	15	9	15	8	32	9	14	59	59	3	8	31	59	6	19	22	31	3	25	36	23	8	11	29	26	3	13	11	51
02	2	15	58	26	9	26	57	11	9	14	56	30	3	9	57	50	6	19	20	51	3	26	44	38	8	11	25	2	3	13	8	40
03	2	16	55	38	10	8	50	37	9	14	52	16	3	11	21	15	6	19	19	22	3	27	52	46	8	11	20	38	3	13	5	29
04	2	17	52	49	10	20	52	41	9	14	47	17	3	12	42	14	6	19	18	3	3	29	0	46	8	11	16	15	3	13	2	18
05	2	18	50	1	11	3	7	36	9	14	41	33	3	14	0	43	6	19	16	55	4	0	8	40	8	11	11	53	3	12	59	8
06	2	19	47	13	11	15	39	45	9	14	35	4	3	15	16	39	6	19	15	58	4	1	16	25	8	11	7	32	3	12	55	57
07	2	20	44	25	11	28	33	19	9	14	27	52	3	16	29	60	6	19	15	12	4	2	24	3	8	11	3	12	3	12	52	46
08	2	21	41	38	0	11	51	46	9	14	19	57	3	17	40	41	6	19	14	37	4	3	31	33	8	10	58	53	3	12	49	35
09	2	22	38	51	0	25	37	16	9	14	11	19	3	18	48	39	6	19	14	13	4	4	38	55	8	10	54	35	3	12	46	24
10	2	23	36	4	1	9	49	56	9	14	1	59	3	19	53	49	6	19	13	59	4	5	46	8	8	10	50	19	3	12	43	14
11	2	24	33	18	1	24	27	18	9	13	51	59	3	20	56	6	6	19	13	57	4	6	53	14	8	10	46	5	3	12	40	03
12	2	25	30	32	2	9	24	6	9	13	41	21	3	21	55	24	6	19	14	5	4	8	0	11	8	10	41	52	3	12	36	52
13	2	26	27	47	2	24	32	33	9	13	30	4	3	22	51	37	6	19	14	24	4	9	6	59	8	10	37	41	3	12	33	41

विष्णुशयन - क्षीराब्दौ शेषपर्यङ्के आषाढ्यां संविशेद्धरिः। निद्रां त्यजति कार्त्तिक्यां तयोः सम्पूजयेत्सदा।। ब्रह्महत्यादिकं पापं क्षिप्रमेवं व्यपोहति। हिंसात्मकैस्तु किं तस्य यज्ञैः कार्यं महात्मनः।। प्रस्वापे च प्रबोधे च पूजितो येन केशवः।। **चातुर्मास्य-** आषाढे तु सिते पक्षे एकादश्यामुपोषितः। चातुर्मास्यव्रतं कुर्याद्यात्किंचिन्नियतो नरः।। **आषाढ पूर्णिमा को वायु परीक्षण** - इस दिन पूर्व पश्चिम वायव्य कोण उत्तर एवं ईशान कोण से वायु चले तो धान्य वृद्धि सुवृष्टि तथा प्रजा के लिए शुभकारक होता है।

06 जुलाई 2018 प्रात: 05:29
आषाढ कृष्ण 8 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 59/25/00

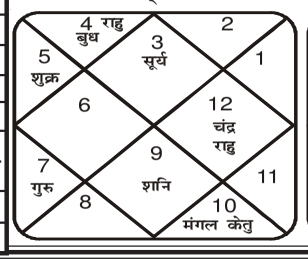

13 जुलाई 2018 प्रात: 05:29
आषाढ कृष्ण 30 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 59/17/30

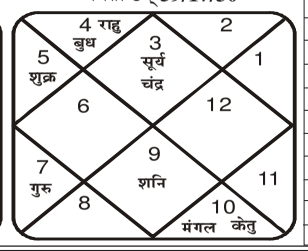

चन्द्रप्रशंसा - भगणदोषं वार-संक्रान्तिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।।(करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्तिदोष, तिथिदोष, कुलिकदोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु केतु के दोष को सम्मुख चन्द्र नष्ट करता है ।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
29	06:54:28	09:14:27	11:27:02	13:35:56	15:51:29	18:09:57	20:13:45	22:03:00	23:33:39	01:04:07	02:41:48	04:42:45
30	06:50:31	09:10:30	11:23:05	13:31:59	15:47:32	18:06:00	20:09:48	21:59:03	23:29:42	01:00:10	02:37:51	04:38:48
01	06:46:34	09:06:33	11:19:08	13:28:02	15:43:35	18:02:03	20:05:51	21:55:06	23:25:45	00:56:13	02:33:54	04:34:51
02	06:42:37	09:02:36	11:15:11	13:24:05	15:39:38	17:58:06	20:01:54	21:51:09	23:21:48	00:52:16	02:29:57	04:30:54
03	06:38:40	08:58:39	11:11:14	13:20:08	15:35:41	17:54:09	19:57:57	21:47:12	23:17:51	00:48:19	02:26:00	04:26:57
04	06:34:43	08:54:42	11:07:17	13:16:11	15:31:44	17:50:12	19:54:00	21:43:15	23:13:54	00:44:22	02:22:03	04:23:00
05	06:30:46	08:50:45	11:03:20	13:12:14	15:27:47	17:46:15	19:50:03	21:39:18	23:09:57	00:40:25	02:18:06	04:19:03
06	06:26:49	08:46:48	10:59:23	13:08:17	15:23:50	17:42:18	19:46:06	21:35:21	23:06:00	00:36:28	02:14:09	04:15:06
07	06:22:52	08:42:51	10:55:26	13:04:20	15:19:53	17:38:21	19:42:09	21:31:24	23:02:03	00:32:31	02:10:12	04:11:09
08	06:18:55	08:38:54	10:51:29	13:00:23	15:15:56	17:34:24	19:38:12	21:27:27	22:58:06	00:28:34	02:06:15	04:07:12
09	06:14:58	08:34:57	10:47:32	12:56:26	15:11:59	17:30:27	19:34:15	21:23:30	22:54:09	00:24:37	02:02:18	04:03:15
10	06:11:01	08:31:00	10:43:35	12:52:29	15:08:02	17:26:30	19:30:18	21:19:33	22:50:12	00:20:40	01:58:21	03:59:18
11	06:07:04	08:27:03	10:39:38	12:48:32	15:04:05	17:22:33	19:26:21	21:15:36	22:46:15	00:16:43	01:54:24	03:55:21
12	06:03:07	08:23:06	10:35:41	12:44:35	15:00:08	17:18:36	19:22:24	21:11:39	22:42:18	00:12:46	01:50:27	03:51:24
13	05:59:10	08:19:09	10:31:44	12:40:38	14:56:11	17:14:39	19:18:27	21:07:42	22:38:21	00:08:49	01:46:30	03:47:27

शीघ्र विवाह किंवा शीघ्र वरप्राप्ति के लिए मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं **क्लीं सर्वपूज्ये मंगलचण्डिके देवि क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।** इस मन्त्र की ३ माला प्रतिदिन करके पार्वतीमाताजी का पूजा करें जिस से शीघ्र विवाह होगा एवं शीघ्र दाम्पत्य सुख मिलेगा ।

आषाढ शुक्लपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940 — सू.उ. सू.अ दि.मा. च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
02	शनि	47/53	24:55	पुष्य	25/53	16:07	वज्र	46/28	24:21	बालव	14:43	कौलव	24:55	05:46	19:05	33/17	
03	रवि	39/30	21:35	आश्ले.	19/13	13:28	सिद्धि	36/53	20:32	तैतिल	11:15	गर	21:35	05:47	19:05	33/15	सिंह 13:28
04	सोम	32/15	18:41	मघा	13/32	11:12	व्यति.	28/12	17:04	वणिज	08:08	विष्टि बव	18:41 29:30	05:47	19:05	33/15	
05	मङ्गल	26/18	16:19	पू.फा.	09/07	09:27	वरी.	20/37	14:03	बालव	16:19	कौलव	27:28	05:48	19:05	33/12	कन्या 15:07
06	बुध	22/03	14:37	उ.फा.	06/20	08:20	परिघ	14/25	11:34	तैतिल	14:37	गर	26:06	05:48	19:04	33/10	
07	गुरु	19/27	13:36	हस्त	05/10	07:53	शिव	09/32	09:38	वणिज	13:36	विष्टि	25:27	05:49	19:04	33/07	तुला 19:56
08	शुक्र	18/45	13:19	चित्रा	05/50	08:09	सिद्ध	06/12	08:18	बव	13:19	बालव	25:31	05:49	19:04	33/07	
09	शनि	19/47	13:44	स्वाती	08/15	09:07	साध्य	04/15	07:31	कौलव	13:44	तैतिल	26:16	05:49	19:04	33/07	वृश्चि 28:16
10	रवि	22/25	14:48	विशाखा	12/15	10:44	शुभ	03/35	07:16	गर	14:48	वणिज	27:36	05:50	19:03	33/02	
11	सोम	26/25	16:24	अनुराधा	17/37	12:53	शुक्ल	04/03	07:27	विष्टि	16:24	बव	29:25	05:50	19:03	33/02	
12	मङ्गल	31/28	18:26	ज्येष्ठा	24/02	15:28	ब्रह्म	05/23	08:00	बालव	18:26	--	--	05:51	19:03	33/00	धनु 15:28
13	बुध	37/18	20:46	मूल	31/15	18:21	ऐन्द्र	07/25	08:49	कौलव	07:36	तैतिल	20:46	05:51	19:02	32/57	
14	गुरु	43/30	23:16	पू.षा.	38/52	21:25	वैधृति	09/52	09:49	गर	10:01	वणिज	23:16	05:52	19:02	32/55	मकर 28:12
15	शुक्र	49/55	25:50	उ.षा.	46/43	24:33	विष्कु	12/35	10:54	विष्टि	12:33	बव	25:50	05:52	19:01	32/52	

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (14 जुलाई से 27 जुलाई 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, वायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
14	रथयात्रा, श्रीरामबलराम रथोत्सव, रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी)। पुष्य में स्थिर कार्य, मशीनरी कार्य, फैक्ट्रीचलाना, श्लेषा में उग्रकार्य, संधिकार्य, विग्रहकर्म, रसायनिककर्म, कारखाना आरम्भकरना, ऑप्रेशनकार्य का मुहूर्त है ।।
15	श्लेषा में ऑप्रेशनकार्य, धान्यच्छेदन, शस्त्रादिकार्य का मुहूर्त है। **रवियोग १३:२९ से,** सिद्धियोग 21:35 तक।।
16	भद्रा 08:08 से 18:41 तक, विनायक चतुर्थी। **☼ सूर्य कर्क प्रवेश २२:२७, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,** मघा में रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान का मुहूर्त है अमृत 18:41 से।।
17	स्कन्दषष्ठी, कुमारषष्ठी, कर्दमषष्ठी (बंगाल)। पू.फा/उ.फा. में शस्त्रादिकर्म, उग्रकर्म, ऑप्रेशन कार्य का मुहूर्त है। **रवियोग ०९:२७ से,** मृत्युयोग 16:19 तक।।
18	विवस्वत सप्तमी, विवस्वत सूर्यपूजा, **☼पुष्य में सूर्य १०.१७से** । उ.फा./हस्त में जातकर्म, नामकरण, **वस्त्राभूषणकर्म,** वास्तु/कृषिकार्य, वस्तुभूमिभवनवाहनादिक्रयविक्रय, व्यापारारम्भ, प्रिण्टिंग, प्रेस आदि का मुहूर्त है। अमृत 14:37 तक तदुप. सिद्धि सूर्योदय तक, सर्वार्थ 08:20 से।।
19	भद्रा 13:36 से 25:27 तक, हस्त में भद्रापूर्व पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म,भूमिभवनवाहनक्रयविक्रय, वास्तुकार्य, व्यापारारम्भ मुहूर्त है, अमृत 13:36 से ।।
20	महिषासुरमर्दिनी देवीपूजा, ऐन्द्रीदेवीपूजा, खर्चीपूजा (त्रिपुरा), परशुरामाष्टमी (उड़ीसा), चित्रा में वृक्षारोपण, वास्त/कृषिकर्म, चिकित्साकार्य, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय, व्यापारारम्भ, धान्यच्छेदन मुहूर्त है, **रवियोग ०८:०९ से,** अमृत 13:19 से।।
21	गुप्तनवरात्रि समाप्त, मेला शरीक भगवती (कश्मीर। विशाखा में उग्रकर्म, ऑप्रेशनकार्य का मुहूर्त है । **रवियोग ०९:०८ से,** सिद्धि 13:44 तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक सर्वार्थ 08:20 से।।
22	भद्रा आरम्भ 27:36 से, हरिशयन एकादशी (सर्वेषाम्), गिरजा पूजा, रैवतमन्वादि, सायन सूर्य सिंह २६.३०, अनुराधा में वस्त्राभूषणधारणकर्म, वृक्षारोपण, वास्तु/कृषिकर्म, चिकित्साकर्म, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनादिकर्म, धान्यच्छेन का मुहूर्त है, अमृत 14:48 तक तदुप. मृत्यु सूर्योदय तक
23	भद्रा समाप्ति 16:24 पर, एकादशीव्रत पारणा, ज्येष्ठा में सूर्यवेधमुहूर्ताभाव है । मूलदोष सिद्धि 16:24 तक सर्वार्थ 12:53 तक।।
24	वासुदेवद्वादशी, श्रीवामनपूजा,चातुर्मासव्रतारम्भ। ज्येष्ठा में सूर्यवेध व मूल में शनियुति। मूलदोष, अमृत 18:26 तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
25	प्रदोषव्रत, मेला चक्रेश्वरी (जैन), चौमासी चौदस (जैन)। मूल में शनि युति मुहूर्ताभाव है । **रवियोग १८:२१ से,** मृत्यु 20:46 तक।।।
26	भद्रा आरम्भ 23:16 से, शिवशयनोत्सव, चन्द्रोदय 18:03, । पू.षा. में रिक्तादोष रोगमुक्तस्नान, उग्रकार्य का मुहूर्त है। मृत्यु 23:16 तक तदुपरान्त सिद्धियोग सूर्योदय तक,
27	भद्रा समाप्ति 12:33 पर, गुरु/आषाढी/व्रतपूर्णिमा व्यासपूजा, पूर्णिमा, चाक्षुषमन्वादि, पवित्रारोपण, कोकिलाव्रत, अन्नादिदान, सत्यनारायणव्रत, वायुपरीक्षण, चन्द्रोदय 18:48, उ.षा. में वस्त्राभूषणधारण, वृक्षारोपण, वास्तु/कृषिकार्य, चिकित्साकर्म का मुहूर्त है।सिद्धि 25:50 से सर्वार्थ 24:33 से

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
14	2	27	25	1	3	9	43	23	9	13	18	12	3	23	44	38	6	19	14	54	4	10	13	38	8	10	33	32	3	12	30	30
15	2	28	22	16	3	24	47	13	9	13	5	46	3	24	34	20	6	19	15	36	4	11	20	8	8	10	29	26	3	12	27	20
16	2	29	19	31	4	9	35	53	9	12	52	48	3	25	20	34	6	19	16	28	4	12	26	28	8	10	25	21	3	12	24	9
17	3	0	16	46	4	24	3	26	9	12	39	20	3	26	3	13	6	19	17	30	4	13	32	38	8	10	21	19	3	12	20	58
18	3	1	14	2	5	8	6	31	9	12	25	24	3	26	42	8	6	19	18	44	4	14	38	38	8	10	17	20	3	12	17	48
19	3	2	11	17	5	21	44	15	9	12	11	2	3	27	17	10	6	19	20	9	4	15	44	28	8	10	13	23	3	12	14	37
20	3	3	8	32	6	4	57	40	9	11	56	18	3	27	48	9	6	19	21	44	4	16	50	6	8	10	9	29	3	12	11	26
21	3	4	5	48	6	17	49	11	9	11	41	12	3	28	14	56	6	19	23	29	4	17	55	34	8	10	5	38	3	12	8	15
22	3	5	3	4	7	0	21	58	9	11	25	48	3	28	37	21	6	19	25	26	4	19	0	49	8	10	1	50	3	12	5	4
23	3	6	0	20	7	12	39	28	9	11	10	8	3	28	55	15	6	19	27	33	4	20	5	53	8	9	58	5	3	12	1	54
24	3	6	57	37	7	24	45	8	9	10	54	14	3	29	8	30	6	19	29	50	4	21	10	45	8	9	54	23	3	11	58	43
25	3	7	54	54	8	6	42	13	9	10	38	9	3	29	16	57	6	19	32	18	4	22	15	25	8	9	50	44	3	11	55	32
26	3	8	52	12	8	18	33	38	9	10	21	55	3	29	20	29	6	19	34	56	4	23	19	51	8	9	47	9	3	11	52	21
27	3	9	49	30	9	0	22	3	9	10	5	35	3	29	19	2	6	19	37	45	4	24	24	5	8	9	43	38	3	11	49	10

यात्रा में शुभशकुन - विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत-स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है। **यात्रा में अशुभ शकुन -** बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

20 जुलाई 2018 प्रातः 05:29
आषाढ शुक्ल 8 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 59/10/00

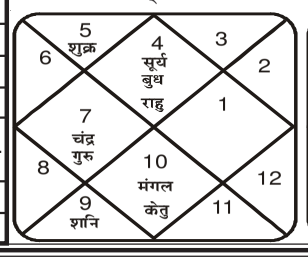

27 जुलाई 2018 प्रातः 05:29
आषाढ शुक्ल 15 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 59/02/30

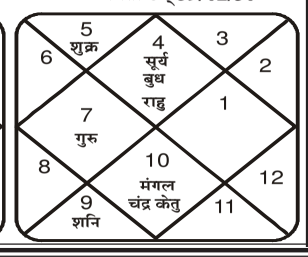

रथोत्सव - आषाढस्य सिते पक्षे द्वितीया पुष्यसंयुता। तस्यां रथे समारोप्य रामं वै भद्रया सह।। यात्रोत्सवं प्रवर्त्याथ प्रीणयेत द्विजान् बहून्।। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या यात्रासौ मम पुण्यदा।।**चातुर्मास्य में वर्ज्य** -वार्षिकांक्षतुरो मासान् प्रसुप्ते वै जनार्दने, मंचखट्वादिशयनं वर्जयेद्भक्तिमान्नरः। अनृतौ वर्जयेद् भार्यां मांसं मधुपरौदनम्, पटोलं मूलकं चैव वृंताकं च न भक्षयेत्।। अभक्ष्यं वर्जयद्धीमान् मसूर सितसर्षपम्, राजमाषान् कुलत्थांश्च आशुधान्यं च संत्यजेत्। आषाढादिचतुर्मासानभ्यङ्गं वर्जयेन्नरः। समाप्तौ च पुनर्दद्यात्तिलतैलयुतं घटम्।। **श्रावण में वर्ज्य -** श्रावणे वर्जयेच्छाकं दधिभाद्रपदे तथा। दुग्धमाश्वयुजे मासि कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत्।।

व्रत में अत्यावश्यक होने पर - अष्टौ तान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः। हविर्ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्। अनुकल्पो नृणां प्रोक्ता क्षीणानां चरवर्णिनि। मूलं फलं पयस्तोयमुपभोज्यं भवेच्छुभे।। न त्वेवं भोजनं वैकक्षिदेकादश्यां बुधैः स्मृतम्।। व्रतों में वृद्ध और अशक्त व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य अनुकूल आचरण कर्मादि का शास्त्र निर्देश देते हैं।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
14	05:55:13	08:15:12	10:27:47	12:36:41	14:52:14	17:10:42	19:14:30	21:03:45	22:34:24	00:04:52	01:42:33	03:43:30
15	05:51:16	08:11:15	10:23:50	12:32:44	14:48:17	17:06:45	19:10:33	20:59:48	22:30:27	00:00:55	01:38:36	03:39:33
16	05:47:19	08:07:18	10:19:53	12:28:47	14:44:20	17:02:48	19:06:36	20:55:51	22:26:30	23:56:58	01:34:39	03:35:36
	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
17	08:03:21	10:15:56	12:24:50	14:40:23	16:58:51	19:02:39	20:51:54	22:22:33	23:53:01	01:30:42	03:31:39	05:43:22
18	07:59:24	10:11:59	12:20:53	14:36:26	16:54:54	18:58:42	20:47:57	22:18:36	23:49:04	01:26:45	03:27:42	05:39:25
19	07:55:27	10:08:02	12:16:56	14:32:29	16:50:57	18:54:45	20:44:00	22:14:39	23:45:07	01:22:48	03:23:45	05:35:28
20	07:51:30	10:04:05	12:12:59	14:28:32	16:47:00	18:50:48	20:40:03	22:10:42	23:41:10	01:18:51	03:19:48	05:31:31
21	07:47:33	10:00:08	12:09:02	14:24:35	16:43:03	18:46:51	20:36:06	22:06:45	23:37:13	01:14:54	03:15:51	05:27:34
22	07:43:36	09:56:11	12:05:05	14:20:38	16:39:06	18:42:54	20:32:09	22:02:48	23:33:16	01:10:57	03:11:54	05:23:37
23	07:39:39	09:52:14	12:01:08	14:16:41	16:35:09	18:38:57	20:28:12	21:58:51	23:29:19	01:07:00	03:07:57	05:19:40
24	07:35:42	09:48:17	11:57:11	14:12:44	16:31:12	18:35:00	20:24:15	21:54:54	23:25:22	01:03:03	03:04:00	05:15:43
25	07:31:45	09:44:20	11:53:14	14:08:47	16:27:15	18:31:03	20:20:18	21:50:57	23:21:25	00:59:06	03:00:03	05:11:46
26	07:27:48	09:40:23	11:49:17	14:04:50	16:23:18	18:27:06	20:16:21	21:47:00	23:17:28	00:55:09	02:56:06	05:07:49
27	07:23:51	09:36:26	11:45:20	14:00:53	16:19:21	18:23:09	20:12:24	21:43:03	23:13:31	00:51:12	02:52:09	05:03:52

श्रावण कृष्णपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु (28 जुलाई से 11 अगस्त 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	शनि	56/10	28:21	श्रवण	54/20	27:37	प्रीति	15/15	11:59	बालव	15:05	कौलव	28:21	05:53	19:01	32/50		**28**	पञ्चक 27:37 से, मैथिलनववर्षारम्भ, प्रतिदिनशिवपूजन, पार्थिवपूजन, श्रावण में शाक वर्जित, **श्रवण में स्थिर कार्य, वास्तु/कृषिकार्य, मशीनरी कार्य, फैक्ट्री लगाने आदि का मुहूर्त है** , अमृत 28:21 तक, सर्वार्थसि.27:37 तक है।।
02	रवि	00	00	धनिष्ठा	00	00	आयु	17/48	13:00	तैतिल	17:30	--	–	05:53	19:00	32/47	कुंभ 17:06	**29**	अशून्यशयनव्रत,धनिष्ठा में वस्त्राभूषणादिधारण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन व क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, अस्पताल कार्य, वाहनव्यापार मुहूर्त है।। **सूर्य साधना दिवस, सूर्यजपहोमादिकार्य शुभ हैं। द्विपुष्कर ०४:२० से प्रारम्भ होगा।**
02	सोम	01/58	06:40	धनिष्ठा	01/37	06:32	सौभा	19/52	13:50	गर	06:40	वणिज	19:41	05:53	19:00	32/47		**30**	भद्रा आरम्भ 19:41 से, श्रावणसोमवारव्रत, पञ्चक आ.10:03 से, चन्द्रोदय, भद्रापूर्व वस्त्राभूषणादिधारण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन व क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, अस्पताल कार्य, व्यापारारम्भ, मृत्यु 06:40 तक, **द्विपुष्कर ०५:५४ तक,**
03	मङ्गल	07/02	08:43	शत.	08/10	09:10	शोभ	21/22	14:27	विष्टि	08:43	बव	21:33	05:54	18:59	32/43	मीन 28:54	**31**	भद्रा समाप्ति 08:43 पर, भौमव्रत, अङ्गारकी गणेशचतुर्थी, चन्द्रोदय 21:20, शतभिषा में रिक्तापूर्व रोगमुक्तस्नान, उग्रकर्म, अग्निकार्यादि, भट्टी लगाना, ईंटबनाना, रसायनिकार्यादि का शुभ मुहूर्त है। सिद्धियोग 08:43 तक है।।
04	बुध	11/12	10:23	पू.भा.	13/50	11:26	अति	22/05	14:44	बालव	10:23	कौलव	22:58	05:54	18:59	32/43		**01**	तिलक स्मृति,पू.भा. में रिक्तादोष, चन्द्रोदय 22:02, उ.भा. में वस्त्राभूषणादिधारण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन व क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, प्रिण्टिंग, प्रकाशनादिकार्य, नृत्यगीतशिल्पशिक्षणप्रशिक्षणादि मुहूर्त है।।
05	गुरु	14/05	11:33	उ.भा.	18/12	13:12	सुक	21/47	14:38	तैतिल	11:33	गर	23:50	05:55	18:58	32/37		**02**	मधुश्रावणी पूजारम्भ (मिथिला),रविव्रत, नागपञ्चमी (बंगाल), उ.भा. में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, सिद्धि 11:33 तक मुहूर्त है।।
06	शुक्र	15/32	12:08	रेवती	21/15	14:25	धृति	20/20	14:03	वणिज	12:08	विष्टि	24:06	05:55	18:58	32/37	मेष 14:25	**03**	भद्रा 12:08 से 24:06 तक, पञ्चक 14:25 तक, ✿**आश्ले. में सूर्य ०९.१५ से**, सिद्धि 12:08 तक, रेवती में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, वृक्षारो.,वस्त्राभूषणकार्य, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्मादि
07	शनि	15/23	12:05	अश्विनी	22/37	14:59	शूल	17/37	12:59	बव	12:05	बालव	23:43	05:56	18:57	32/32		**04**	शीतला सप्तमी, भानुसप्तमी, कालाष्टमी, केरपूजा (त्रिपुरा), इन्द्र सावर्णि मन्वादि, अश्विनी में व्यापारारम्भ, कारखानाखोलना, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, ऑप्रेशन का मुहूर्त है।। ब्यूटीपार्लरकार्य, रेडीमेड उद्योग, फर्नीचरकार्य, नृत्यगीतशिल्पादिकार्य का मुहूर्त है, सर्वार्थसिद्धि सम्पूर्ण दिन।।
08	रवि	13/32	11:21	भरणी	22/22	14:53	गण्ड	13/32	11:21	कौलव	11:21	तैतिल	22:38	05:56	18:57	32/32	वृष 20:46	**05**	मनसापूजा प्रारम्भ, सिद्धि 11:21 तक रिक्तापूर्व ऑप्रेशन, चिकित्साकार्य, व्यापारारम्भ, धान्यच्छेदन, रसायनिक कार्य, प्रयोगशाला कार्य, शान्तिकर्म, वाटिकादिकार्य, गृहशोधनकार्य, अग्निकार्य, ईंटबनाना, होटलव्यवसाय आदि का शुभ मूहूर्त है।।
09	सोम	10/00	09:56	कृतिका	20/27	14:07	वृद्धि	08/07	09:11	गर	09:56	वणिज	20:54	05:56	18:56	32/30		**06**	भद्रा आरम्भ 20:54 से, श्रावणसोमवार, रिक्ता दोष व भौमवेध, रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, अमृत 09:56 से सर्वार्थसिद्धि 14:07 से मुहूर्त है।।
10 **11**	मङ्गल	04/50 58/17	07:53 29:16	रोहिणी	16/57	12:44	ध्रुव व्याघा.	01/20 53/25	06:29 27:19	विष्टि	07:53	बव बालव	18:34 29:16	05:57	18:55	32/25	मिथु 23:49	**07**	भद्रा समाप्ति 07:53 पर, कामिका एकादशी (स्मार्त.), भौमव्रत, रोहिणी में जातकर्म, नामकरण, रोगमुक्तस्नान, उग्रकर्म, रसायनिककार्य, प्रयोगशालाकार्य, वैज्ञानिककार्य, अग्निकार्य आदि का मुहूर्त है। मृत्युयोग 07:53 से प्रारम्भ है।
12	बुध	50/35	26:11	मृगशिरा	12/05	10:47	हर्ष.	44/30	23:45	कौलव	15:43	तैतिल	26:11	05:57	18:55	32/25		**08**	सिद्धियोग 26:11 तक, कामिका एकादशी (वैष्णव), तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक, मृगशिरा में जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, सभी व्यापारारम्भ, शिक्षणप्रशिक्षणादि/फर्नीचरकार्य
13	गुरु	41/58	22:45	आर्द्रा पुनर्वसु	06/07 59/25	08:25 29:44	वज्र	34/48	19:53	गर	12:28	वणिज	22:45	05:58	18:54	32/20	कर्क 24:25	**09**	भद्रा आरम्भ 22:45 से, प्रदोषव्रत, मासशिवरात्रि व्रत, अमृत 22:45 तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि 08:25 से 29:44 तक है।।
14	शुक्र	32/55	19:08	पुष्य	52/20	26:54	सिद्धि	24/43	15:51	विष्टि	08:56	शकुनि चतुष्प.	19:08 29:18	05:58	18:53	32/17		**10**	भद्रा समाप्ति 08:56 पर, मासान्तदोष मुहूर्ताभाव, अमृत 19:08 तक मुहूर्त है।। वास्तु/कृषिकर्म, ब्यूटीपार्लरकार्य , स्कूल आदि खोलने का शुभ मुहूर्त है, सर्वार्थसिद्धि 10:47 तक है।।
30	शनि	23/42	15:28	आश्ले.	45/15	24:05	व्यति.	14/22	11:44	नाग	15:28	किंस्तु.	25:41	05:59	18:53	32/15	सिंह 24:05	**11**	हरियाली अमावस्या, देवसावर्णि मन्वादि, चिताऊ अमावस्या, शनि अमावस्या होने के कारण शनि की साधना, शनि की शान्ति, जप,शनि की छायादान कार्य, हवनादि कार्य शुभ होंगे। (उडीशा)मासान्तदोष मुहूर्ताभाव, मृत्युयोग 15:28 तक है।।

संकल्प करके शिवलिंग के पास रुद्राक्ष माला से महामृत्युंजय मन्त्र जप करना चाहिये - **ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ।।** जपसंख्या का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, दशांश मार्जन एवं दशांश ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। लघुमृत्युंजलमन्त्र - **ॐ हौं जूं सः/ॐ जूं सः**

श्रावण विशेष- श्रावण में शिव कृपा प्राप्ति के लिए शिव की साधना करना चाहिए। श्रावण में प्रतिदिन या सोमवार के दिन पार्थिवार्चन, ज्योतिर्लिंग दर्शन, शिव मंत्र आदि कार्य करना भी फलदायी होता है। विविध द्रव्यों से होने वाला रुद्राभिषेक सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। **रुद्र मन्त्र- ॐ नमो भगवते रुद्राय।।**

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
28	3	10	46	48	9	12	9	53	9	9	49	12	3	29	12	31	6	19	40	43	4	25	28	5	8	9	40	10	3	11	46	00
29	3	11	44	8	9	23	59	26	9	9	32	47	3	29	0	56	6	19	43	52	4	26	31	52	8	9	36	45	3	11	42	49
30	3	12	41	28	10	5	53	0	9	9	16	25	3	28	44	20	6	19	47	11	4	27	35	24	8	9	33	25	3	11	39	38
31	3	13	38	49	10	17	53	0	9	9	0	6	3	28	22	48	6	19	50	40	4	28	38	42	8	9	30	8	3	11	36	27
01	3	14	36	11	11	0	2	2	9	8	43	55	3	27	56	31	6	19	54	19	4	29	41	45	8	9	26	56	3	11	33	16
02	3	15	33	34	11	12	22	55	9	8	27	53	3	27	25	44	6	19	58	8	5	0	44	33	8	9	23	47	3	11	30	05
03	3	16	30	58	11	24	58	42	9	8	12	3	3	26	50	48	6	20	2	6	5	1	47	5	8	9	20	42	3	11	26	55
04	3	17	28	24	0	7	52	26	9	7	56	28	3	26	12	10	6	20	6	15	5	2	49	22	8	9	17	42	3	11	23	44
05	3	18	25	50	0	21	6	58	9	7	41	11	3	25	30	21	6	20	10	33	5	3	51	22	8	9	14	46	3	11	20	33
06	3	19	23	18	1	4	44	27	9	7	26	13	3	24	45	59	6	20	15	1	5	4	53	6	8	9	11	55	3	11	17	22
07	3	20	20	47	1	18	45	56	9	7	11	38	3	23	59	47	6	20	19	38	5	5	54	33	8	9	9	8	3	11	14	12
08	3	21	18	18	2	3	10	38	9	6	57	27	3	23	12	31	6	20	24	25	5	6	55	42	8	9	6	25	3	11	7	50
09	3	22	15	49	2	17	55	37	9	6	43	44	3	22	25	4	6	20	29	22	5	7	56	33	8	9	3	47	3	11	4	39
10	3	23	13	22	3	2	55	26	9	6	30	31	3	21	38	17	6	20	34	27	5	8	57	5	8	9	1	14	3	11	1	28
11	3	24	10	56	3	18	2	32	9	6	17	50	3	20	53	6	6	20	39	43	5	9	57	18	8	8	58	46	3	10	58	18

पञ्चक में विशेष - वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम्। प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहणम् शय्यकाविरचनं च वर्जयेत्। अर्थात् धनिष्ठा के उत्तरार्द्ध यानि अंतिम दो चरण से लेकर अगले पाँच नक्षत्रों को पञ्चक कहते हैं। **पञ्चक में त्याज्य -** दक्षिण दिशा की यात्रा, गृहच्छादन (छत इत्यादि डालना या छाया करना) प्रेत (मृतक व्यक्ति) का दाह, घास अथवा लकड़ी-कंडा का संग्रह और चारपाई बुनना वर्जित है। अत: अन्य कार्यों में पञ्चक का विचार न करें।

05 अगस्त 2018 प्रात: 05:29
श्रावण कृष्ण 8 रविवार
पंक्तीष्टम् 58/52/30

11 अगस्त 2018 प्रात: 05:29
श्रावण कृष्ण 30 शनिवार
पंक्तीष्टम् 58/45/00

श्रावण सोमवारव्रतं प्रदोषव्रतवदाचारणीयम् स्त्रीणां व्रते विशेषः- गन्धालंकारताम्बूल पुष्पमालानुपेलपनम्। उपवासे न दुष्यन्ति दन्तधावनमञ्जनम्।। सभर्तृकव्रतों में स्त्रियों को श्रृंगार आदि के करने में दोष नहीं होता है। व्रत कर्म- ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरिष्ठानीति निश्चयः।। उपवास की असमर्थता में - उपवासासमर्थश्चेत् एकं विप्रं तु भोजयेत्। तावद्धनादि व दद्यात् भुक्तश्चेतद्विगुणं तथा।असमर्थता में एक विप्र को भोजन करवाना चाहिए नहीं तो उसको दक्षिणा देनी चाहिए। यदि ब्राह्मण पहले ही भोजन कर लिया है तो दुगुना धन देना चाहिए। बिल्वपत्र से प्रतिदिन या केवल सोमवार को **ॐ नमः शिवाय**, शिव सहस्रनाम से , रुद्राष्टध्यायी के पंचम अध्याय से अर्चन करने का विशेष फल होता है। बिल्वपत्र के अभाव में पुष्प , दूर्वा, शमीपत्र, मंदारपुष्प, धतूरफल आदि द्रव्यों से भी शिवार्चन शुभ होता है।

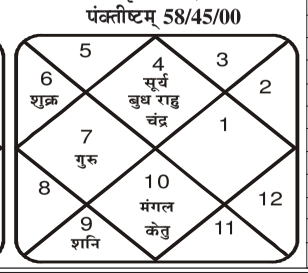

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
28	07:19:54	09:32:29	11:41:23	13:56:56	16:15:24	18:19:12	20:08:27	21:39:06	23:09:34	00:47:15	02:48:12	04:59:55
29	07:15:57	09:28:32	11:37:26	13:52:59	16:11:27	18:15:15	20:04:30	21:35:09	23:05:37	00:43:18	02:44:15	04:55:58
30	07:12:00	09:24:35	11:33:29	13:49:02	16:07:30	18:11:18	20:00:33	21:31:12	23:01:40	00:39:21	02:40:18	04:52:01
31	07:08:03	09:20:38	11:29:32	13:45:05	16:03:33	18:07:21	19:56:36	21:27:15	22:57:43	00:35:24	02:36:21	04:48:04
01	07:04:06	09:16:41	11:25:35	13:41:08	15:59:36	18:03:24	19:52:39	21:23:18	22:53:46	00:31:27	02:32:24	04:44:07
02	07:00:09	09:12:44	11:21:38	13:37:11	15:55:39	17:59:27	19:48:42	21:19:21	22:49:49	00:27:30	02:28:27	04:40:10
03	06:56:12	09:08:47	11:17:41	13:33:14	15:51:42	17:55:30	19:44:45	21:15:24	22:45:52	00:23:33	02:24:30	04:36:13
04	06:52:15	09:04:50	11:13:44	13:29:17	15:47:45	17:51:33	19:40:48	21:11:27	22:41:55	00:19:36	02:20:33	04:32:16
05	06:48:18	09:00:53	11:09:47	13:25:20	15:43:48	17:47:36	19:36:51	21:07:30	22:37:58	00:15:39	02:16:36	04:28:19
06	06:44:21	08:56:56	11:05:50	13:21:23	15:39:51	17:43:39	19:32:54	21:03:33	22:34:01	00:11:42	02:12:39	04:24:22
07	06:40:24	08:52:59	11:01:53	13:17:26	15:35:54	17:39:42	19:28:57	20:59:36	22:30:04	00:07:45	02:08:42	04:20:25
08	06:36:27	08:49:02	10:57:56	13:13:29	15:31:57	17:35:45	19:25:00	20:55:39	22:26:07	00:03:48	02:04:45	04:16:28
09	06:32:30	08:45:05	10:53:59	13:09:32	15:28:00	17:31:48	19:21:03	20:51:42	22:22:10	23:59:51	02:00:48	04:12:31
10	06:28:33	08:41:08	10:50:02	13:05:35	15:24:03	17:27:51	19:17:06	20:47:45	22:18:13	23:55:54	01:56:51	04:08:34
11	06:24:36	08:37:11	10:46:05	13:01:38	15:20:06	17:23:54	19:13:09	20:43:48	22:14:16	23:51:57	01:52:54	04:04:37

श्रावण शुक्लपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01	रवि	14/47	11:54	मघा	38/40	21:27	वरी. परिघ	04/17 54/40	07:42 27:51	बव	11:54	बालव	22:15	05:59	18:52	32/13		12
02 03	सोम	06/35 59/23	08:37 29:45	पू.फा.	32/55	19:09	शिव	45/53	24:20	कौलव	08:37	तैतिल गर	19:11 29:45	05:59	18:51	32/10	कन्या 24:39	13
04	मङ्गल	53/40	27:28	उ.फा.	28/25	17:22	सिद्ध	38/10	21:16	वणिज	16:36	विष्टि	27:25	06:00	18:51	32/07		14
05	बुध	49/40	25:52	हस्त	25/32	16:13	साध्य	31/50	18:44	बव	14:40	बालव	25:52	06:00	18:50	32/05	तुला 27:55	15
06	गुरु	47/33	25:02	चित्रा	24/28	15:48	शुभ	27/00	16:49	कौलव	13:22	तैतिल	25:02	06:01	18:49	32/00		16
07	शुक्र	47/30	25:01	स्वाती	25/25	16:11	शुक्ल	23/48	15:32	गर	13:01	वणिज	25:01	06:01	18:48	31/58		17
08	शनि	49/25	25:47	विशाखा	28/20	17:21	ब्रह्म	22/10	14:53	विष्टि	13:24	बव	25:47	06:01	18:48	31/58	वृश्चि 10:59	18
09	रवि	53/02	27:15	अनुराधा	32/57	19:13	ऐन्द्र	21/57	14:49	बालव	14:31	कौलव	27:15	06:02	18:47	31/53		19
10	सोम	58/07	29:17	ज्येष्ठा	39/07	21:41	वैधृति	23/02	15:15	तैतिल	16:16	गर	29:17	06:02	18:46	31/50	धनु 21:41	20
11	मङ्गल	00	00	मूल	46/18	24:33	विष्कु	24/57	16:01	वणिज	18:29	--	--	06:02	18:45	31/48		21
11	बुध	04/05	07:41	पू.षा.	54/00	27:39	प्रीति	27/27	17:02	विष्टि	07:41	बव	20:58	06:03	18:44	31/43		22
12	गुरु	10/33	10:16	उ.षा.	00	00	आयु	30/10	18:07	बालव	10:16	कौलव	23:33	06:03	18:43	31/40	मक 10:26	23
13	शुक्र	16/58	12:51	उ.षा.	01/50	06:48	सौभा	32/48	19:11	तैतिल	12:51	गर	26:03	06:04	18:43	31/37		24
14	शनि	23/00	15:16	श्रवण	09/22	09:49	शोभ	35/05	20:06	वणिज	15:16	विष्टि	28:21	06:04	18:42	31/35	कुंभ 23:14	25
15	रवि	28/25	17:26	धनिष्ठा	16/20	12:36	अति	36/48	20:47	बव	17:26	--	--	06:04	18:41	31/33		26

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा/शरदऋतु (12 अगस्त से 26 अगस्त 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
12	दोलोत्सवारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका(चिन्तपूर्णी), मघा में रोगमुक्तस्नान, उग्रकर्म, शस्त्र निर्माण, अग्निकार्य, सन्धिविग्रहादि कार्य शुभ हैं। मृत्युयोग 11:54 तक रहेगा।। सूर्य होमजपादिकार्य, आदित्यहृदयस्तोत्रदि का पाठ भी शुभफलदायी रहेगा।
13	मधुश्रुवा तृतीया (परयुता ग्राह्या इति ,मिथिला/गुजरात) दूर्वागणपतिव्रत, स्वर्णगौरीव्रत, स्वामीकरपात्री जयन्ती, मधुश्रावणी (मधुश्रवाव्रत), श्रावण सोमवार, पू.फा. में व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रय का मुहूर्त है। **रवियोग १९:१० से,** मृत्युयोग 08:37 तक।।
14	भद्रा 16:36 से 27:25 तक, अङ्गारक/विनायक चतुर्थी (शुक्लचतुर्थी पूर्वयुता ग्राह्या), भौमव्रत चन्द्रदर्शन, रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान, उग्रकार्य, शस्त्रकार्य अग्निकार्य, सन्धिविग्रहादि कार्य करना शुभ हैं।।
15	नागपञ्चमी, तक्षकपूजा, भित्तिनागपूजा, स्वतन्त्रता दिवस (७२ वाँ), हस्त में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय,वास्तु/कृषिकर्म शुभ है, **रवियोग १६:१३ से,** अमृत 26:52 से सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि 16:13 तक।।
16	कल्किजयन्ती, लुण्ठनषष्ठी (बंगाल), चित्रा एवं स्वाती में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, शिक्षणप्रशिक्षणादि कार्य शुभ हैं।।
17	भद्रा आरम्भ 25:01 से, श्रीतुलसीदास जयन्ती, शीतलासप्तमी(सिंध),भानुसप्तमी, **✿मघा व सिंह में सूर्य ०६.५०, पुण्यकाल १२:५० तक** स्वाती में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, संधिकार्य✉
18	कौमारीदेवीपूजा, श्रीदुर्गाष्टमी, चिन्तपूर्णी व नैनादेवी मेला (हिमाचल), विशाखा में उग्रकार्य, अग्निकार्य, पशुपक्षीमत्स्यादिकार्य, संधि,विग्रहादि कार्य करने का मुहूर्त है। सिद्धियोग 25:47 से सूर्योदय तक रहेगा।।
19	रिक्तादोष मुहूर्ताभाव, रोगमुक्तस्नान, **रवियोग १९:१३ से,** अमृत 27:15 सूर्योदय तक ।। ✉, वस्त्राभूषणकर्म, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय, नृत्यारम्भ, वास्तु/कृषि शुभ है, **रवियोग ०६:५० से,** मृत्युयोग 25:01 तक।
20	भद्रा 08:07 से 20:57 तक, श्रावणसोमवार व्रतार्चनादि कार्य, झूलनयात्रा आरम्भ, ज्येष्ठा में राहु वेध के कारण मुहूर्ताभाव है, अमृतयोग 29:17 तक तदुपरान्त सिद्धियोग सूर्योदय तक रहेगा।।
21	भद्रा आरम्भ 18:29 से, भौमव्रत, मूल में शनियुतिमूहर्ताभाव, मृत्युयोग सम्पूर्ण दिन।।✍ वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, धार्मिक कार्य का मुहूर्त है, अमृत १०:१६ से है।।
22	भद्रा समाप्ति 07:41 तक, पवित्रा एकादशी, पुत्रदा एकादशीव्रत (सर्वे.), लोकमान्यतिलकस्मृतिदिवस, पू.षा. में भद्रोपरान्त व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादि कार्य, अमृत ०७:४१ तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
23	प्रदोषव्रत, ,दामोदरद्वादशी, प्रदोषव्रत, बुद्धद्वादशी, दधिव्रतारम्भ, वेदव्रतारम्भ, श्रीविष्णुपवित्रारोपण, सायन सूर्य कन्या ०९.३९, उ.षा. में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, शिक्षणादिकार्य ✍
24	आखेटक त्रयोदशी (उड़ीसा), १२.५१ तक उ.षा. एवं श्रवण में वस्त्राभूषणादिधारण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन व क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, प्रिण्टिंग, प्रकाशनादिकार्य शुभ है, **रवियोग ०६:४७ से,**अमृत १२:५१ से ।।
25	भद्रा 15:16 से 28:21 तक, पञ्चक 09:49 से, व्रतपूर्णिमा, चन्द्रोदय 18:11, श्रवण में केतुयुति भद्रादोष के कारण मुहूर्ताभाव है , सिद्धि १५:१६ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि ०९:४९ तक।।
26	श्रावणीउपाकर्म, रक्षाबन्धन, श्रीसत्यनारायणव्रत, चन्द्रोदय 18:50, धनिष्ठा में व्यापार, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, वास्तुकृषिकार्य, वस्तुभूमिभवनवाहनादिक्रयादि शुभ है, अमृत १७:२६ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक ।।

भूमिशोधन विधि-खातं भूमिपरीक्षणे करमितं तत्पूरयेत्तन्मृदा।हीने हीनफलं समे समफलं लाभो रजो वर्द्धने।।अर्थात्- भूमि के शुभाशुभ का परीक्षण करना हो उसके स्वामी के हाथ के माप से एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौडा और एक हाथ गहरा गड्डा खोदकर निकली हुई मिट्टी को वापस उसी गड्ढे में भरे। गड्डा भरने के बाद भी मिट्टी बच जाए तो उत्तम, शेष न बचे परन्तु गड्डा भर जाए तो मध्यम, मिट्टी से गड्डा न भरे तो अधम भूमि होती है। तत्कृत्वा जलपूर्णमाणऽऽशतपदं गत्वा परीक्ष्यं पुनः। पादोनाऽर्धविहीनकेऽवनिभृते मध्याधमेष्टाम्बुभिः।।स्वामी के हाथ के परिमाप से एक हाथ लम्बाई-चौडाई एवं गहराई के गड्ढे की मिट्टी निकालकर उसमें जलभरकर सौ कदम दूर जाकर पुनः लौटकर गड्ढे के जल को देखे। यदि गड्डा यथावत् हो तो उत्तम। चतुर्थांश कम हो तो तो मध्यम और आधे से भी कम जल बचे तो अधम फल होता है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
12	3	25	8	32	4	3	8	1	9	6	5	44	3	20	10	22	6	20	45	7	5	10	57	11	8	8	56	23	3	10	51	56
13	3	26	6	8	4	18	2	54	9	5	54	14	3	19	30	60	6	20	50	40	5	11	56	43	8	8	54	4	3	10	48	45
14	3	27	3	45	5	2	39	25	9	5	43	23	3	18	55	46	6	20	56	23	5	12	55	54	8	8	51	51	3	10	45	34
15	3	28	1	24	5	16	52	2	9	5	33	11	3	18	25	26	6	21	2	15	5	13	54	43	8	8	49	43	3	10	42	24
16	3	28	59	3	6	0	37	54	9	5	23	42	3	18	0	41	6	21	8	15	5	14	53	9	8	8	47	40	3	10	39	13
17	3	29	56	44	6	13	56	45	9	5	14	56	3	17	42	4	6	21	14	24	5	15	51	11	8	8	45	42	3	10	36	02
18	4	0	54	25	6	26	50	26	9	5	6	54	3	17	30	5	6	21	20	42	5	16	48	49	8	8	43	49	3	10	32	51
19	4	1	52	8	7	9	22	17	9	4	59	37	3	17	25	6	6	21	27	8	5	17	46	0	8	8	42	2	3	10	29	40
20	4	2	49	51	7	21	36	29	9	4	53	7	3	17	27	27	6	21	33	43	5	18	42	45	8	8	40	20	3	10	26	30
21	4	3	47	36	8	3	37	35	9	4	47	23	3	17	37	18	6	21	40	27	5	19	39	3	8	8	38	44	3	10	23	19
22	4	4	45	22	8	15	30	4	9	4	42	28	3	17	54	47	6	21	47	18	5	20	34	52	8	8	37	13	3	10	20	8
23	4	5	43	9	8	27	18	9	9	4	38	20	3	18	19	57	6	21	54	18	5	21	30	12	8	8	35	47	3	10	16	57
24	4	6	40	57	9	9	5	35	9	4	35	0	3	18	52	46	6	22	1	25	5	22	25	1	8	8	34	27	3	10	13	46
25	4	7	38	47	9	20	55	34	9	4	32	29	3	19	33	9	6	22	8	41	5	23	19	18	8	8	33	13	3	10	10	36
26	4	8	36	38	10	2	50	48	9	4	30	47	3	20	20	56	6	22	16	5	5	24	13	3	8	8	32	4	3	10	7	25

नागपञ्चमी - श्रावणेमासि पञ्चम्यां शुक्लपक्षे नराधिप। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्बणाः।। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वाङ्कुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः।। ये तस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरः सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्।।

श्रावणी विशेष - संक्रान्तिर्ग्रहणं वापि यदि पर्वणि जायते, तन्मासे हस्तयुक्तायां पञ्चम्यां वा तदिष्यते।।अपि च -यदि स्यात् श्रावणं पर्व ग्रहसंक्रान्ति दूषितम्। स्यादुपाकरणं शुक्पल पञ्चम्यां श्रावणस्य तु। पूर्णिमा के दिन ग्रहण होने के कारण पंचमी को श्रावणी करनी चाहिए

18 अगस्त 2018 प्रात: 05:29
श्रावण शुक्ल 8 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 58/40/00

26 अगस्त 2018 प्रात: 05:29
श्रावण शुक्ल 15 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 58/32/30

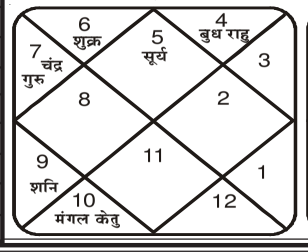

नदियों का रजोदोष- सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वलाः। तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाम्। विशेषः- याः शोषमुपगच्छन्ति ग्रीष्मे कुसरितो भुवि। तासु प्रावृषि न स्नायादपूर्णे दशवासरे। धनुः सहस्राण्यादौ तु गतिर्यासां न विद्यते। न ता नदीशब्दावहा गर्तास्ताः परिकीर्तिताः।। नि.सिं.

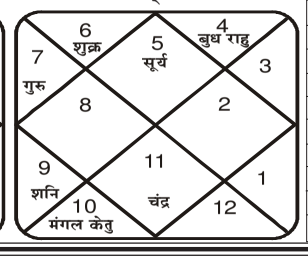

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
12	06:20:39	08:33:14	10:42:08	12:57:41	15:16:09	17:19:57	19:09:12	20:39:51	22:10:19	23:48:00	01:48:57	04:00:40
13	06:16:42	08:29:17	10:38:11	12:53:44	15:12:12	17:16:00	19:05:15	20:35:54	22:06:22	23:44:03	01:45:00	03:56:43
14	06:12:45	08:25:20	10:34:14	12:49:47	15:08:15	17:12:03	19:01:18	20:31:57	22:02:25	23:40:06	01:41:03	03:52:46
15	06:08:48	08:21:23	10:30:17	12:45:50	15:04:18	17:08:06	18:57:21	20:28:00	21:58:28	23:36:09	01:37:06	03:48:49
16	06:04:51	08:17:26	10:26:20	12:41:53	15:00:21	17:04:09	18:53:24	20:24:03	21:54:31	23:32:12	01:33:09	03:44:52
17	06:00:57	08:13:29	10:22:23	12:37:56	14:56:24	17:00:12	18:49:27	20:20:06	21:50:34	23:28:15	01:29:12	03:40:55
	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
18	08:09:32	10:18:26	12:33:59	14:52:27	16:56:15	18:45:30	20:16:09	21:46:37	23:24:18	01:25:15	03:36:58	06:57:00
19	08:05:35	10:14:29	12:30:02	14:48:30	16:52:18	18:41:33	20:12:12	21:42:40	23:20:21	01:21:18	03:33:01	06:53:03
20	08:01:38	10:10:32	12:26:05	14:44:33	16:48:21	18:37:36	20:08:15	21:38:43	23:16:24	01:17:21	03:29:04	06:49:06
21	07:57:41	10:06:35	12:22:08	14:40:36	16:44:24	18:33:39	20:04:18	21:34:46	23:12:27	01:13:24	03:25:07	06:45:09
22	07:53:44	10:02:38	12:18:11	14:36:39	16:40:27	18:29:42	20:00:21	21:30:49	23:08:30	01:09:27	03:21:10	06:41:12
23	07:49:47	09:58:41	12:14:14	14:32:42	16:36:30	18:25:45	19:56:24	21:26:52	23:04:33	01:05:30	03:17:13	06:37:15
24	07:45:50	09:54:44	12:10:17	14:28:45	16:32:33	18:21:48	19:52:27	21:22:55	23:00:36	01:01:33	03:13:16	06:33:18
25	07:41:53	09:50:47	12:06:20	14:24:48	16:28:36	18:17:51	19:48:30	21:18:58	22:56:39	00:57:36	03:09:19	06:29:21
26	07:37:56	09:46:50	12:02:23	14:20:51	16:24:39	18:13:54	19:44:33	21:15:01	22:52:42	00:53:39	03:05:22	06:25:24

द्वादश नाग प्रार्थना मन्त्र - अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मकम्बलमेव च तथा कर्कोटकं नागमश्वतरं तथा। धृतराष्ट्रं शंखपालं कालाख्यं तक्षकं तथा पिङ्गलं च महानागं प्रणमामि मुहुर्मुहुः।। ॐ कुं कुलाय हुँ फट् स्वाहा। इस मन्त्र का जप करने से वर्ष पर्यन्त सर्पभय नहीं रहता।

हयग्रीवोत्पत्ति - श्रावण्यां श्रवणे जातः पूर्वे हयशिरा हरिः। जगाद सामवेदं तु सर्वकल्मषनाशनम्।। स्नात्वा संपूजयेत्तं तु शंखचक्रगदाधरम्।।

भाद्रपद कृष्णपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940 | सू.उ. | सू.अ | दि.मा. | च.रा.प्र.

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु (27 अगस्त से 09 सितम्बर 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि	घ.प.	घ.मि.
01	सोम	32/55	19:15	शत.	22/28	15:04	सुक	37/50	21:13	बालव	06:20	कौलव	19:15	06:05	18:40	31/28	
02	मङ्गल	36/28	20:40	पू.भा.	27/38	17:08	धृति	38/05	21:19	तैतिल	07:57	गर	20:40	06:05	18:39	31/25	मीन 10:39
03	बुध	38/53	21:38	उ.भा.	31/48	18:48	शूल	37/30	21:05	वणिज	09:09	विष्टि	21:38	06:05	18:38	31/22	
04	गुरु	40/07	22:09	रेवती	34/47	20:01	गण्ड	36/00	20:30	बव	09:53	बालव	22:09	06:06	18:37	31/18	मेष 20:01
05	शुक्र	40/15	22:12	अश्विनी	36/40	20:46	वृद्धि	33/35	19:32	कौलव	10:10	तैतिल	22:12	06:06	18:36	31/15	
06	शनि	39/07	21:45	भरणी	37/20	21:02	ध्रुव	30/13	18:11	गर	09:58	वणिज	21:45	06:06	18:35	31/12	वृष 27:02
07	रवि	36/40	20:47	कृतिका	36/42	20:48	व्याघा.	25/45	16:25	विष्टि	09:16	बव	20:47	06:07	18:34	31/08	
08	सोम	33/02	19:20	रोहिणी	34/55	20:05	हर्ष.	20/23	14:16	बालव	08:03	कौलव	19:20	06:07	18:33	31/05	
09	मङ्गल	28/12	17:24	मृगशिरा	31/55	18:53	वज्र	13/57	11:42	तैतिल	06:22	गर वणिज	17:24 28:12	06:07	18:32	31/03	मिथु 07:32
10	बुध	22/15	15:01	आर्द्रा	27/48	17:14	सिद्धि व्यति	06/38 58/30	08:46 29:31	विष्टि	15:01	बव	25:38	06:07	18:31	31/00	
11	गुरु	15/17	12:15	पुनर्वसु	22/45	15:14	वरी.	49/38	25:59	बालव	12:15	कौलव	22:44	06:08	18:30	30/55	कर्क09:46
12 13	शुक्र	07/42 59/35	09:13 29:58	पुष्य	17/00	12:56	परिघ	40/20	22:16	तैतिल	09:13	गर वणिज	19:35 29:58	06:08	18:29	30/53	
14	शनि	51/25	26:42	आश्ले.	10/52	10:29	शिव	30/53	18:29	विष्टि	16:20	शकुनि	26:42	06:08	18:28	30/50	सिंह 10:29
30	रवि	43/25	23:31	मघा पू.फा.	04/40 58/50	08:01 29:41	सिद्ध	21/25	14:43	चतुष्पद	13:06	नाग	23:31	06:09	18:27	30/45	

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
27	अशून्यशयनव्रत, पलंग पर लक्ष्मी-विष्णु की स्थापना कर पूजन, शत. में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, व्यापारारम्भ, समस्तचर कार्य, जलदुग्धादि का व्यापार करने का शुभ मुहूर्त है। सिद्धियोग १९:१५ तक।।
28	विन्ध्याचली भीमचण्डी, देवी जयन्ती, कज्जली निमित्त रात्रिजागरण, पू. भा. में शस्त्रादिकार्य, रोगमुक्तस्नान, आग्नेशन, **अग्निकार्य, भट्ठा लगाने से सम्बन्धित कार्यों** का मुहूर्त है, **त्रिपुष्कर ०६:५ से १७:०८ तक**, अमृत २०:४० तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि १७:०८ से है।।
29	भद्रा 09:09 से 21:38 तक, विशालाक्षी यात्रा, कज्जली तृतीया, गोपूजा, चन्द्रोदय 20:40, उ.भा. में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, व्यापार, कृषिकर्म, सूचीकर्म, सिलाईकार्य, औषधनिर्माणादिकार्य 📖
30	पञ्चक 20:01 तक, श्रीगणेश(संकष्टहर)चतुर्थी, **✪पू.फा. में सूर्य २६.५३ से**, चन्द्रोदय 21:16, बहुलाचतुर्थी (म.प्र.),गणपति पूजन विशेष, गणपति दूर्वार्चनादिकर्म, रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान का मुहूर्त है। मृत्युयोग २२:०९ तक तदुपरान्त सिद्धियोग सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि सम्पूर्ण।।
31	रक्षापञ्चमी (उड़ीसा), श्रीचन्द्रषष्ठी, अश्विनी में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, व्यापार, कृषिकर्म, कलात्मककार्यों का शुभ मुहूर्त है। सिद्धि २२:१२ से सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि २०:४६ तक रहेगा।।
01	भद्रा आरम्भ 21:45 **से**, हलषष्ठी, ललहीछठ, लोक में ऋतुफलादि द्रव्यों से देवी का पूजन, संतानप्राप्ति व संतान के दीर्घायुष्य की कामना से व्रत किया जाता है। भरणी में उग्रकार्य,मशीनलगाना, फैक्ट्री का कार्य करना शुभ है, **त्रिपुष्कर २१:४४ से रवियोग २१:०२ से**, अमृत २१:४५ तक।।
02	भद्रा समाप्ति 09:16 पर, श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त), कृष्णावतार, रात्रिकाल में भगवान कृष्ण की पूजा-भोग आदि, द्वादशाक्षर मंत्र **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** जप। कृत्तिका में व्यापार, पशुपक्षीमत्स्यादि कर्म, धान्यच्छेदनादि कार्य शुभ हैं, **त्रिपुष्कर २०:४७ तक**, सिद्धि २०:४७ से सूर्योदय तक ।।
03	पञ्चक समाप्त 29:50 पर, श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव),गोकुलाष्टमी,दूर्वाष्टमी, कौमारीपूजा, संतज्ञानेश्वर जयन्ती, रोहिणी में रिक्तापूर्व पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, कृषिकर्म का मुहूर्त है।सिद्धि सर्वार्थसिद्धि सम्पूर्ण।।
04	भद्रा आरम्भ 28:12 से, हनुमत्पूजनार्चनादि कर्म, मृगशिरा में भौम व केतु वेध मुहूर्ताभाव है।। 📖 वास्तु प्रिंटिंग प्रकाशन, लेखन शिक्षणादि का मुहूर्त है, मृत्युयोग २१:३८ तक रहेगा।।
05	भद्रा समाप्ति 15:01 पर, शिक्षकदिवस, व्यतीपातदोष पूर्व उग्रकार्य, रासायनिककर्म, सन्धिविग्रहादि, शस्त्रनिर्माण, मशीनलगाना, धान्यच्छेदन, सूचीकर्म का मुहूर्त है, अमृत १५:०१ से।।
06	अजा/जया एकादशी (सर्वेषाम्) गुरुपुष्य योग १५:१४ से, पुनर्वसु में शनिवेध मुहूर्ताभाव है, विष्णुपूजन विशेष दानादिकार्य करना मोक्षदायक है, सर्वार्थसिद्धि सम्पूर्ण।।
07	भद्रा आरम्भ 29:58 से, प्रदोषव्रत, अघोरद्वादशी, शिवपूजनजपादि कार्य, पर्युषण पर्वारम्भ (जैन), पुष्य में राहुवेध मासान्तदोषादि के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्युयोग ०९:१३ तक रहेगा।।
08	भद्रा समाप्ति 16:20 पर, मासशिवरात्रि, अघोरचतुर्दशी, शिवपूजन विशेष, अघोरमन्त्र जपहोमादि शुभ,मासान्तदोष रोगमुक्तस्नान, **सिद्धि २६:४२** तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।
09	अमास्या, कुशोत्पाटनी, ॐ हुं फट् मन्त्र से कुश ग्रहण, अमृत २३:३१ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक, मासान्तदोष पू.फा. में सूर्य युति, सर्वार्थसिद्धि २९:४१ से सूर्योदय तक।।

संकल्प पूर्वक भगवान् कृष्ण का जन्मोत्सव व्रतादि कर्म करना चाहिए। यथा ममाखिलपापप्रशमनपूर्वकसर्वाभीष्टसिद्धये श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतमहं करिष्ये। **कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्** - ये न कुर्वन्ति जानन्तः कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्। ते भवन्ति नराः प्राज्ञ व्याला व्याघ्राश्च कानने।। कृष्ण मन्त्र जप- क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। यह मन्त्र सन्ततिप्रद, व्यापार में वृद्धि देने वाला है। द्वादशाक्षर मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।। अभीष्टसिद्धि- ॐ क्लीं हृषीकेशाय नमः। अथवा ॐ ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा। सन्तति प्रद गोपाल मन्त्र- ॐ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ ।। इनमें से किसी मन्त्र का तुलसी की माला से १२ लाख जप, त्रिमधु से होम करें।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
27	4	9	34	30	10	14	53	24	9	4	29	54	3	21	15	53	6	22	23	36	5	25	6	14	8	8	31	1	3	10	4	14
28	4	10	32	24	10	27	5	6	9	4	29	50	3	22	17	47	6	22	31	15	5	25	58	50	8	8	30	3	3	10	1	3
29	4	11	30	20	11	9	27	20	9	4	30	34	3	23	26	16	6	22	39	2	5	26	50	50	8	8	29	11	3	9	57	52
30	4	12	28	17	11	22	1	22	9	4	32	7	3	24	40	60	6	22	46	56	5	27	42	12	8	8	28	25	3	9	54	42
31	4	13	26	17	0	4	48	25	9	4	34	29	3	26	1	34	6	22	54	58	5	28	32	55	8	8	27	44	3	9	51	36
01	4	14	24	18	0	17	49	46	9	4	37	39	3	27	27	31	6	23	3	7	5	29	22	58	8	8	27	9	3	9	48	20
02	4	15	22	20	1	1	6	47	9	4	41	38	3	28	58	25	6	23	11	23	6	0	12	20	8	8	26	40	3	9	45	9
03	4	16	20	25	1	14	40	42	9	4	46	24	4	0	33	44	6	23	19	47	6	1	0	59	8	8	26	17	3	9	41	58
04	4	17	18	32	1	28	32	27	9	4	51	58	4	2	12	59	6	23	28	17	6	1	48	52	8	8	25	59	3	9	38	48
05	4	18	16	41	2	12	42	9	9	4	58	19	4	3	55	40	6	23	36	55	6	2	35	60	8	8	25	48	3	9	35	37
06	4	19	14	51	2	27	8	41	9	5	5	27	4	5	41	16	6	23	45	40	6	3	22	20	8	8	25	42	3	9	32	26
07	4	20	13	4	3	11	49	10	9	5	13	22	4	7	29	19	6	23	54	32	6	4	7	49	8	8	25	42	3	9	29	15
08	4	21	11	19	3	26	38	46	9	5	22	4	4	9	19	22	6	24	3	30	6	4	52	27	8	8	25	48	3	9	26	04
09	4	22	9	35	4	11	30	48	9	5	31	31	4	11	10	59	6	24	12	35	6	5	36	12	8	8	25	60	3	9	22	54

गोप्रसवशान्ति - भानौ सिंहगते चैव यस्य गौः सम्प्रसूयते। मरणं तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः। तत्र शांति प्रवक्ष्यामि येन संपद्यते शुभम्। प्रसूतां तत्क्षणादेव तां गां विप्राय दापयेत्।। ततो होमं प्रकुर्वीत घृताक्तै राजसर्षपैः। आहुतीनां घृताक्तानामयुतं जुहुयात्ततः।। व्याहृतिभिश्चायं होमः कुर्वीत शुभप्राप्तये। सोपवासः प्रयत्नेन दद्याद्विप्राय दक्षिणाम्।। **पवित्री धारण आवश्यक**- स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि। करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने।। यथावज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा विप्रपवित्रकम्।। कुशधारण महत्त्व- सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्।।

03 अप्रैल 2018 प्रातः 05:29
भाद्रपद कृष्ण 8 सोमवार
पंक्तीष्टम् 58/25/00

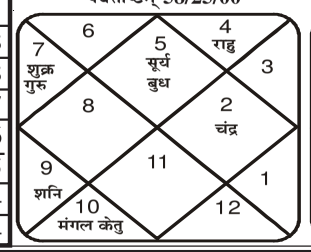

09 अप्रैल 2018 प्रातः 05:29
भाद्रपद कृष्ण 30 रविवार
पंक्तीष्टम् 58/20/00

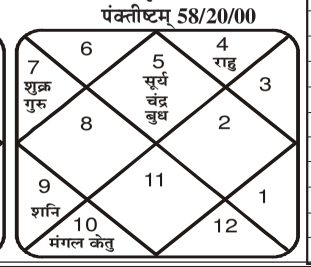

कुशोत्पाटन मन्त्र- कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वशेद् ब्रह्मा कुशान्ते देहि मेदिनी। कुशोऽसि कुशुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देव पितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।। इस मन्त्र से कुश का पूजन करके कुश को ग्रहण कर वर्ष पर्यन्त प्रयोग करे। दस प्रकार के कुश- कुशाः काशा यवा दूर्वा उशीराश्च सकुन्दकाः। गोधूमा ब्राह्मयो मौंजा दश दर्भाः सबल्वजाः।। कात्यायन के अनुसार- अनन्तगर्भितं साग्रं कौशं द्विदलमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।। कुशाः काशाः शरा दूर्वा यवगोधूमबल्वजाः। सुवर्णं राजतं ताम्रं दशदर्भाः प्रकीर्तिताः।। सव्यहस्ते कुशत्रयं दक्षिणहस्ते कुशद्वयं धारयेत्।।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
27	07:33:59	09:42:53	11:58:26	14:16:54	16:20:42	18:09:57	19:40:36	21:11:04	22:48:45	00:49:42	03:01:25	06:21:27
28	07:30:02	09:38:56	11:54:29	14:12:57	16:16:45	18:06:00	19:36:39	21:07:07	22:44:48	00:45:45	02:57:28	06:17:30
29	07:26:05	09:34:59	11:50:32	14:09:00	16:12:48	18:02:03	19:32:42	21:03:10	22:40:51	00:41:48	02:53:31	06:13:33
30	07:22:08	09:31:02	11:46:35	14:05:03	16:08:51	17:58:06	19:28:45	20:59:13	22:36:54	00:37:51	02:49:34	06:09:36
31	07:18:11	09:27:05	11:42:38	14:01:06	16:04:54	17:54:09	19:24:48	20:55:16	22:32:57	00:33:54	02:45:37	06:05:39
01	07:14:14	09:23:08	11:38:41	13:57:09	16:00:57	17:50:12	19:20:51	20:51:19	22:29:00	00:29:57	02:41:40	06:01:42
02	07:10:17	09:19:11	11:34:44	13:53:12	15:57:00	17:46:15	19:16:54	20:47:22	22:25:03	00:26:00	02:37:43	05:57:45
03	07:06:20	09:15:14	11:30:47	13:49:15	15:53:03	17:42:18	19:12:57	20:43:25	22:21:06	00:22:03	02:33:46	05:53:48
04	07:02:23	09:11:17	11:26:50	13:45:18	15:49:06	17:38:21	19:09:00	20:39:28	22:17:09	00:18:06	02:29:49	05:49:51
05	06:58:26	09:07:20	11:22:53	13:41:21	15:45:09	17:34:24	19:05:03	20:35:31	22:13:12	00:14:09	02:25:52	05:45:54
06	06:54:29	09:03:23	11:18:56	13:37:24	15:41:12	17:30:27	19:01:06	20:31:34	22:09:15	00:10:12	02:21:55	05:41:57
07	06:50:32	08:59:26	11:14:59	13:33:27	15:37:15	17:26:30	18:57:09	20:27:37	22:05:18	00:06:15	02:17:58	05:38:00
08	06:46:35	08:55:29	11:11:02	13:29:30	15:33:18	17:22:33	18:53:12	20:23:40	22:01:21	00:02:18	02:14:01	05:34:03
09	06:42:38	08:51:32	11:07:05	13:25:33	15:29:21	17:18:36	18:49:15	20:19:43	21:57:24	23:58:21	02:10:04	05:30:06

कुशपवित्री के अभाव में- अन्यान्यपि पवित्राणि वुन्शदूर्वामियानि च। हेमात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। कुशाभावे तु काशाः स्युः काशाः वुन्शसमाः स्मृताः। काशाभावे गृहीतव्या अन्ये दर्भा यथोचिताः । दर्भाभावे स्वर्ण- रूप्यताम्रैः कार्याः छिद्रया: सदा।। अनामिकामूलदेशे पवित्रं धारयेत् द्विजः।।

भाद्रपद शुक्लपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु (10 सितम्बर से 25 सितम्बर 2018 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01	सोम	36/07	20:36	उ.फा.	53/45	27:39	साध्य	12/22	11:06	किंस्तु.	10:03	बव	20:36	06:09	18:26	30/42	कन्या 11:08	10
02	मङ्गल	29/50	18:05	हस्त	50/03	26:10	शुभ शुक्ल	04/02 56/43	07:46 28:50	बालव	07:20	कौलव तैतिल	18:05 29:06	06:09	18:25	30/40		11
03	बुध	24/55	16:08	चित्रा	47/23	25:07	ब्रह्म	50/38	26:25	गर	16:08	वणिज	27:30	06:10	18:24	30/35	तुला 13:31	12
04	गुरु	21/45	14:52	स्वाती	46/48	24:53	ऐन्द्र	46/05	24:36	विष्टि	14:52	बव	26:38	06:10	18:23	30/32		13
05	शुक्र	20/35	14:24	विशाखा	48/12	25:27	वैधृति	43/10	23:26	बालव	14:24	कौलव	26:34	06:10	18:22	30/30	वृश्चि 19:14	14
06	शनि	21/27	14:45	अनुराधा	51/37	26:49	विष्कु	41/50	22:54	तैतिल	14:45	गर	27:19	06:10	18:21	30/27		15
07	रवि	24/18	15:54	ज्येष्ठा	56/47	28:54	प्रीति	41/55	22:57	वणिज	15:54	विष्टि	28:49	06:11	18:20	30/22	धनु 25:55	16
08	सोम	28/53	17:44	मूल	00	00	आयु	43/17	23:30	बव	17:44	--	–	06:11	18:19	30/20		17
09	मङ्गल	34/43	20:04	मूल	03/28	07:34	सौभा	45/30	24:23	बालव	06:54	कौलव	20:04	06:11	18:18	30/18		18
10	बुध	41/10	22:40	पू.षा.	11/00	10:36	शोभ	48/05	25:26	तैतिल	09:22	गर	22:40	06:12	18:17	30/13	मकर 17:23	19
11	गुरु	47/40	25:16	उ.षा.	18/50	13:44	अति	50/40	26:28	वणिज	11:58	विष्टि	25:16	06:12	18:16	30/10		20
12	शुक्र	53/43	27:41	श्रवण	26/25	16:46	सुक	52/53	27:21	बव	14:28	बालव	27:41	06:12	18:15	30/07	कुंभ 06:11	21
13	शनि	58/48	29:44	धनिष्ठा	33/13	19:30	धृति	54/20	27:57	कौलव	16:42	तैतिल	29:44	06:13	18:14	30/03		22
14	रवि	00	00	शत.	39/00	21:49	शूल	54/58	28:12	गर	18:31	--	–	06:13	18:13	30/00	मीन 17:15	23
14	सोम	02/42	07:18	पू.भा.	43/38	23:40	गण्ड	54/38	28:04	वणिज	07:18	विष्टि	19:50	06:13	18:12	29/57		24
15	मङ्गल	05/23	08:22	उ.भा.	47/00	25:01	वृद्धि	53/18	27:32	बव	08:22	बालव	20:39	06:13	18:11	29/55		25

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) — दैनिकमुहूर्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

10 महत्तमाख्यशिवव्रत १६ ब्राह्मणों के साथ शिवपूजन। उ.फा. में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, व्यापार, कृषिकर्म, जलदुग्धादिव्यवसाय, चलायमानकार्य, प्रशिक्षणादि कार्य प्रतियोगितादि का मुहूर्त है।

11 हस्त में उग्रकर्म, रोगमुक्तस्नान, ऑप्रेशन, अमृत १८:०५ तक तदुपरान्त सिद्ध सूर्योदय तक। व्यापारारम्भ पशुपक्षीमत्स्यपालन, लेखनकर्म, भूमिभवनवाहनकर्म, नृत्यगीतशिल्पादि कार्यारम्भ, शिक्षणप्रशिक्षणकर्म, वस्त्रादिकर्म का मुहूर्त हैरवियोग ०२:०४ से, मृत्युयोग १६:०८ तक।।

12 भद्रा आरम्भ 27:30 से, सुवर्णगौरी/हरितालिका/गौरीतृतीयाव्रत, वराहजयन्ती, रुद्रसावर्णिमन्वादि, कंलकचतुर्थी, (चन्द्रदर्शन निषेध), सामवेदीय उपाकर्म,चित्रा में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन

13 भद्रा समाप्ति 14:52 पर, विनायकचतुर्थी, गणेशोत्सवारम्भ, **उ.फा. में सूर्य २०.४१ से**, स्वाती में रिक्तादोष, **रवियोग** २०:४१ से, मृत्युयोग १४:५२ तक तदपुरान्त सिद्ध सूर्योदय तक।।

14 ऋषिपञ्चमी, बौद्ध जयन्ती, विशाखा में वैधृति व रिक्ता दोष, सर्वार्थसिद्धि २५:२७ से सूर्योदय तक।। ऑप्रेशन,धान्यच्छेदन आदि का मुहूर्त है। **रवियोग** ०१:२७ से, अमृत १४:४५ तक।।

15 सूर्य/देव/लोलार्कषष्ठी, लोलार्केश्वर/कार्तिकेयदर्शन, अनुराधा में व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्यादिकर्म, भूमिभवनवाहनादिकर्म,कारखाना प्रारम्भ, रसायनिककार्य, गृहाच्छादनकार्य, स्थिरकार्य

16 भद्रा 15:54 से 28:49 तक, आमुक्ताभरण/भानु/सन्तान/फल/ललितासप्तमा व्रत, सूर्य का फल से पूजन विशेष। ज्येष्ठा में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है। सिद्धियोग १५:५४ से प्रारम्भ है।

17 नन्दादेवीपूजा, राधा/दूर्वा/दुर्गाशयनाष्टमी (उड़ीसा), विश्वकर्मा जयन्ती, महालक्ष्मी व्रतारम्भ (१६ दिवसीय), **सूर्य कन्या,पवेश ०६.४६ पुण्यकाल १२:४६ तक**,मूल में शनियुति मुहूर्ताभाव।।

18 अदु:खनवमी, श्रीचन्द्रजयन्ती, महानंदानवमी (ॐ नन्दायै नम: हूँ फट् का जप), रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान मुहूर्त है। **रवियोग** ०७:३५ से,। सिद्धि २०:३६ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक

19 दशावतार दशमी व्रत (जलाशय में स्नानकर देव पितरों का तर्पणकर भगवान के १० अवतारों का पूजन, जपहोमादि कर्म), उ.षा. में केतुयुति मुहूर्ताभाव, अमृत २२:४० से सूर्योदय तक।।

दुर्मरणयोग- षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे लग्ननाथेन वीक्षते। मन्दमान्द्यगुसंयुक्ते तस्य दुर्मरणं भवेत्।।अर्थात्- यदि चंद्रमा शनि, गुलिक, राहु से युक्त होकर ६,८,१२ वें भाव में हो और लग्नेश भी देखता हो तो अपमृत्यु होती है। मेषूरणस्थे यदि चित्रभानौ भौमे चतुर्थे न च सौम्ययुक्ते। सौम्ये विलग्नोपगते तु मृत्युं गोश्रृंगत: शूलनिपाततो वा।। अर्थात्- सूर्य १० में, मंगल ४ में, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट न हों, बुध लग्न में हो तो किसी हिंसक जानवर की चोट से व्यक्ति की अपमृत्यु हो जाती है। अन्य विशेष योग- शनि व सूर्य लग्न में राहु से दृष्ट हों तो वृक्षपतन से मृत्यु होती है। सूर्य व चंद्र षष्ठ/अष्टम हों तो भी जानवर से भय रहता है। चन्द्रशौ षष्ठेऽष्टमे वा विषेण मृत्यु:। धर्मे पापा: शुभादृष्टा: शरेण मृत्यु:। क्षीणेन्दावष्टमे जलघात:। लग्नेशेऽबले सुखे पापे जलघात:। सुखेशेऽबले सुखे पापे जलघात:। सुखपे सपापे केन्द्रे जलघात:।। चन्द्रारौ केन्द्रे वाऽष्टमे वाहनभयम्,सुखे क्षीणेन्दौ वाहनभयम्। शत्रुभे मन्दे शुक्रयुतदृष्टे करच्छेद:। भौमार्कौ रन्ध्रे मस्तकच्छेद:।।

20 पद्माएकादशीव्रत (सर्वेषाम्), कर्मा एकादशी, पार्श्वपरिवर्तन, उ.षा. में केतुयुति,श्रवण में जातकर्म, नामकरण, व्यापार, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रय, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, ब्यूटीपार्लर, भद्रा 11:58 से 25:16 तक।।

21 पञ्चक 16:46 से, शक्रद्वादशी, प्रदोषव्रत, वामनद्वादशी, महारविव्रत, श्रवणद्वादशी, श्रवण में जातकर्म, नामकरण, व्यापार, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रय, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, ब्यूटीपार्लर आदि कार्यो का मुहूर्त है। मृत्युयोग २७:४१ तक, सर्वार्थसिद्धि १६:४६ तक रहेगा।।

22 शनिप्रदोष, धनिष्ठा में व्यापार, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रय, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, कृषिकर्म, मशीनलगाना, फैक्ट्रीचलाना, समस्त मशीनरी स्थिरकार्यों का शुभ मुहूर्त है। **रवियोग** १९:३१ स प्रारम्भ, सिद्धियोग २९:४४ से सूर्योदय तक रहेगा ।।

23 महारविवार, अनन्तचतुर्दशीव्रत (मध्याह्न व्यापिनी कारणात् , १४ गाठों का अनन्तसूत्र निर्मितकर अनन्तपूजन करे मन्त्र- नमस्ते देव देवेश नमस्ते धरणीधर। नमस्ते सर्वनागेन्द्र नमस्ते पुरुषोत्तम, तदुपरान्त अन्नतधारण) श्रीशिवपरिवर्तनोत्सव, सायन सूर्य तुला में ०७.२४, रिक्तादोष मुहूर्ताभाव।।

24 भद्रा 07:18 से 19:50 तक, व्रतपूर्णिमा, गणपति विसर्जन, मध्याह्न में नान्दीमातामह श्राद्ध, चन्द्रोदय 18:03, रिक्तोपरान्त उ.भा. में पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापार, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म, धान्यच्छेदन, कृषिकर्म का मुहूर्त है। अमृतयोग ०७:१८ से सूर्योदय तक।।

25 भाद्रपदपूर्णिमा स्नान-दान,पितृपक्षीयपार्वण-तर्पणारम्भ, उमामहेश्वरव्रतअगस्त्यार्घ्यदानम्, प्रतिपदश्राद्ध, चन्द्रोदय 18:40, उ.भा. में ऑप्रेशन, उग्रकार्य, अग्निकार्य, भट्टालगाना आदि का मुहूर्त है। मृत्यु ०८:५७ से सूर्योदय तक सर्वार्थसिद्धि २५:०१ तक ।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
10	4	23	7	54	4	26	17	27	9	5	41	44	4	13	3	45	6	24	21	47	6	6	18	60	8	8	26	17	3	9	19	43
11	4	24	6	14	5	10	50	53	9	5	52	42	4	14	57	22	6	24	31	6	6	7	0	49	8	8	26	41	3	9	16	3
12	4	25	4	36	5	25	4	26	9	6	4	24	4	16	51	28	6	24	40	30	6	7	41	38	8	8	27	10	3	9	13	21
13	4	26	2	60	6	8	53	35	9	6	16	50	4	18	45	48	6	24	50	2	6	8	21	23	8	8	27	46	3	9	10	10
14	4	27	1	25	6	22	16	21	9	6	29	59	4	20	40	8	6	24	59	39	6	9	0	2	8	8	28	27	3	9	7	00
15	4	27	59	52	7	5	13	20	9	6	43	50	4	22	34	16	6	25	9	22	6	9	37	32	8	8	29	14	3	9	3	49
16	4	28	58	20	7	17	47	8	9	6	58	23	4	24	28	1	6	25	19	12	6	10	13	50	8	8	30	8	3	9	0	38
17	4	29	56	50	8	0	1	46	9	7	13	36	4	26	21	15	6	25	29	7	6	10	48	53	8	8	31	7	3	8	57	27
18	5	0	55	22	8	12	2	9	9	7	29	29	4	28	13	52	6	25	39	9	6	11	22	38	8	8	32	11	3	8	54	16
19	5	1	53	55	8	23	53	32	9	7	46	1	5	0	5	45	6	25	49	16	6	11	55	1	8	8	33	22	3	8	51	6
20	5	2	52	30	9	5	41	4	9	8	3	11	5	1	56	51	6	25	59	28	6	12	26	1	8	8	34	39	3	8	47	55
21	5	3	51	7	9	17	29	35	9	8	20	59	5	3	47	6	6	26	9	46	6	12	55	33	8	8	36	1	3	8	44	44
22	5	4	49	45	9	29	23	21	9	8	39	22	5	5	36	27	6	26	20	10	6	13	23	33	8	8	37	29	3	8	41	33
23	5	5	48	26	10	11	25	50	9	8	58	21	5	7	24	54	6	26	30	39	6	13	49	59	8	8	39	3	3	8	38	22
24	5	6	47	8	10	23	39	36	9	9	17	54	5	9	12	25	6	26	41	13	6	14	14	47	8	8	40	42	3	8	35	12
25	5	7	45	52	11	6	6	15	9	9	38	2	5	10	58	59	6	26	51	53	6	14	37	52	8	8	42	27	3	8	32	01

चतुर्थी में चन्द्र दर्शन विशेष -सिंहादित्ये शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां चन्द्रदर्शनम्। मिथ्याभिदूषणं कुर्यात्तस्मात्पश्येन्न तं सदा।। **सूर्यषष्ठी** -शुक्लभाद्रपदे षष्ठ्यां स्नानं भास्करपूजनम्। प्राशनं पञ्चगव्यश्च अश्वमेधफलाधिकम्।। **दूर्वाष्टमी में दूर्व पूजा** - त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासुरै:। सौभाग्यं संततिं देहि सर्वकार्यकरी भव।। यथा शाखाप्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले।। तथा ममापि संतानं देहि त्वमजरामरम्।।

17 सितम्बर 2018 प्रात: 05:29
भाद्रपद शुक्ल 8 सोमवार
पंक्तीष्टम् 58/15/00

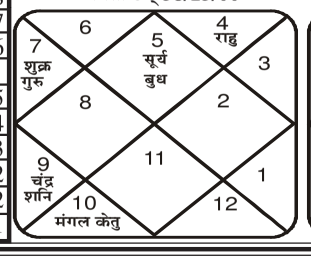

25 सितम्बर 2018 प्रात: 05:29
भाद्रपद शुक्ल 15 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 58/10/00

सौभाग्य चतुर्थी में गणेश पूजन- एकदन्तं शूर्पकर्णं नागयज्ञोपवीतिनम्। पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्।।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
10	06:38:41	08:47:35	11:03:08	13:21:36	15:25:24	17:14:39	18:45:18	20:15:46	21:53:27	23:54:24	02:06:07	05:26:09
11	06:34:44	08:43:38	10:59:11	13:17:39	15:21:27	17:10:42	18:41:21	20:11:49	21:49:30	23:50:27	02:02:10	05:22:12
12	06:30:47	08:39:41	10:55:14	13:13:42	15:17:30	17:06:45	18:37:24	20:07:52	21:45:33	23:46:30	01:58:13	05:18:15
13	06:26:50	08:35:44	10:51:17	13:09:45	15:13:33	17:02:48	18:33:27	20:03:55	21:41:36	23:42:33	01:54:16	05:14:18
14	06:22:53	08:31:47	10:47:20	13:05:48	15:09:36	16:58:51	18:29:30	19:59:58	21:37:39	23:38:36	01:50:19	05:10:21
15	06:18:56	08:27:50	10:43:23	13:01:51	15:05:39	16:54:54	18:25:33	19:56:01	21:33:42	23:34:39	01:46:22	05:06:24
16	06:14:59	08:23:53	10:39:26	12:57:54	15:01:42	16:50:57	18:21:36	19:52:04	21:29:45	23:30:42	01:42:25	05:02:27
17	06:11:02	08:19:56	10:35:29	12:53:57	14:57:45	16:47:00	18:17:39	19:48:07	21:25:48	23:26:45	01:38:28	04:58:30
	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
18	08:15:59	10:31:32	12:50:00	14:53:48	16:43:03	18:13:42	19:44:10	21:21:51	23:22:48	01:34:31	04:54:33	06:07:05
19	08:12:02	10:27:35	12:46:03	14:49:51	16:39:06	18:09:45	19:40:13	21:17:54	23:18:51	01:30:34	04:50:36	06:03:08
20	08:08:05	10:23:38	12:42:06	14:45:54	16:35:09	18:05:48	19:36:16	21:13:57	23:14:54	01:26:37	04:46:39	05:59:11
21	08:04:08	10:19:41	12:38:09	14:41:57	16:31:12	18:01:51	19:32:19	21:10:00	23:10:57	01:22:40	04:42:42	05:55:14
22	08:00:11	10:15:44	12:34:12	14:38:00	16:27:15	17:57:54	19:28:22	21:06:03	23:07:00	01:18:43	04:38:45	05:51:17
23	07:56:14	10:11:47	12:30:15	14:34:03	16:23:18	17:53:57	19:24:25	21:02:06	23:03:03	01:14:46	04:34:48	05:47:20
24	07:52:17	10:07:50	12:26:18	14:30:06	16:19:21	17:50:00	19:20:28	20:58:09	22:59:06	01:10:49	04:30:51	05:43:23
25	07:48:20	10:03:53	12:22:21	14:26:09	16:15:24	17:46:03	19:16:31	20:54:12	22:55:09	01:06:52	04:26:54	05:39:26

सर्वकार्य सिद्धि गणपति प्रयोग - मन्त्र - ॐ गं गणपतये नम: अथवा ॐ वक्रतुण्डाय हुम्। इनमें से किसी मन्त्र का साढे १२ लाख जप करने से असम्भव कार्य भी सिद्ध होता है। गणपति आराधना सभी विघ्नों को दूर करती है, प्रतिदिन निश्चित स्थान समय व जप संख्या का ध्यान करते हुए अनुष्ठान करना चाहिए। प्रयोग अवधि में नियमों का पालन अनिवार्य होता है। गणेशजी को मोदक का भोग लगाएँ।

आश्विन कृष्णपक्ष	विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940												सू.उ.	सू.अ	दि.मा.	च.रा.प्र.
तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	बुध	06/47	08:57	रेवती	49/13	25:55	ध्रुव	51/00	26:38	कौलव	08:57	तैतिल	21:00	06:14	18:10	29/50	मेष 25:55
02	गुरु	07/03	09:03	अश्विनी	50/22	26:23	व्याघा.	47/55	25:24	गर	09:03	वणिज	20:54	06:14	18:09	29/48	
03	शुक्र	06/18	08:45	भरणी	50/35	26:28	हर्ष.	44/03	23:51	विष्टि	08:45	बव	20:24	06:14	18:08	29/45	
04	शनि	04/32	08:04	कृतिका	49/58	26:14	वज्र	39/28	22:02	बालव	08:04	कौलव	19:34	06:15	18:07	29/40	वृष 08:26
05 06	रवि	02/02 58/45	07:04 29:45	रोहिणी	48/35	25:41	सिद्धि	34/20	19:59	तैतिल	07:04	गर वणिज	18:24 29:45	06:15	18:06	29/38	
07	सोम	54/45	28:09	मृगशिरा	46/30	24:51	व्यति.	28/35	17:41	विष्टि	16:57	बव	28:09	06:15	18:05	29/35	मिथु 13:18
08	मङ्गल	50/03	26:17	आर्द्रा	43/43	23:45	वरी.	22/13	15:09	बालव	15:13	कौलव	26:17	06:16	18:04	29/30	
09	बुध	44/45	24:10	पुनर्वसु	40/20	22:24	परिघ	15/20	12:24	तैतिल	13:13	गर	24:10	06:16	18:03	29/28	कर्क 16:45
10	गुरु	38/53	21:49	पुष्य	36/20	20:48	शिव	08/00	09:28	वणिज	10:59	विष्टि	21:49	06:16	18:02	29/25	
11	शुक्र	32/32	19:18	आश्ले.	31/52	19:02	सिद्ध साध्य	00/10 52/05	06:21 27:07	बव	08:33	बालव कौलव	19:18 29:59	06:17	18:01	29/20	सिंह 19:02
12	शनि	25/58	16:40	मघा	27/13	17:10	शुभ	43/50	23:49	तैतिल	16:40	गर	27:21	06:17	18:00	29/17	
13	रवि	19/25	14:03	पू.फा.	22/33	15:18	शुक्ल	35/40	20:33	वणिज	14:03	विष्टि	24:47	06:17	17:59	29/15	कन्या 20:51
14	सोम	13/05	11:32	उ.फा.	18/08	13:33	ब्रह्म	27/48	17:25	शकुनि	11:32	चतुष्पद	22:24	06:18	17:58	29/10	
30	मङ्गल	07/28	09:17	हस्त	14/28	12:05	ऐन्द्र	20/33	14:31	नाग	09:17	किंस्तु.	20:21	06:18	17:57	29/07	तुला 23:29

दिनांक	दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदऋतु (26 सितम्बर से 09 अक्टूबर 2018 ई. तक)	गुरु एवं शुक्र पश्चिम
	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)	दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
26	पञ्चक 25:55 तक, द्वितीयाश्राद्ध, अशून्यशयनव्रत, चन्द्रोदय 19:27, रेवती में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है , अमृत योग ०८:५७ तक तदुपरान्त सिद्धियोग सूर्योदय तक।।	
27	भद्रा आरम्भ 20:54 से, तृतीयाश्राद्ध, ✪**हस्त में सूर्य १२.१४ से**, अश्विनी में कृषिकर्म, व्यापारारम्भ का मुहूर्त है, अमृतयोग ०९:०३ से, सर्वार्थसिद्धियोग २६:२३ तक।।	
28	भद्रा समाप्ति 08:45 पर, चतुर्थी श्राद्ध, भरणीश्राद्ध (भरणी श्राद्ध का गयावत फल), चन्द्रोदय 20:35, रिक्ता पूर्व भरणी में कृषिकर्म, सिलाईकार्य का मुहूर्त है। ८:४५ से रिक्तादोष, अमृतयोग ०८:४५ से।।	
29	पञ्चमी श्राद्ध, चन्द्रोदय 21:19, रिक्ता के बाद कृत्तिका में भौमवेध के कारण मुहूर्ताभाव, सिद्धियोग०८:०४ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि २६:१४ से सूर्योदय तक।।	
30	भद्रा आरम्भ 29:45 से, **षष्ठी श्राद्ध**, चन्द्रषष्ठी, रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, वृक्षारोपण, व्यापार, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रय, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म का मुहूर्त है। अमृत ०७:०४ तक तदुप. मृत्युयोग सूर्यो. तक।।	
01	भद्रा समाप्ति 16:57 , महालक्ष्मीव्रतम्, सप्तमीश्राद्ध, रात्रि अन्त में 25:02 से पूर्व ओंगठन (मिथिला) मृगशिरा में केतुवेध व्यती.दोष मुहूर्ताभाव, **रवियोग १:४१ से**,मृत्युयोग २८:०९ तक, सर्वार्थसिद्धि २४:५१ तक।	
02	जीवितपुत्रिका(जीमूतवाहन) व्रत, अष्टमीश्राद्ध, गया मध्याष्टमी, बुधाष्टमी पर्व, महात्मागांधी जयन्ती, श्रीलालबहादुरशास्त्रीजयन्ती, आर्द्रा में ओंप्रेशन, उग्रकार्यादि किए जा सकते हैं।।	
03	मातृ/दुर्गा/अविधवा नवमी, अन्वष्टकाश्राद्ध, नवमीश्राद्ध, जीवितपुत्रिका पारण, पुनर्वसु में शनिवेध, रिक्तादोष।।	श्राद्ध में पितृप्रसन्नतार्थ - तुलसीपत्रमाघ्राय पितरस्तुष्टमानसाः। प्रयान्ति गरुडारूढास्तत्पदं चक्रपाणिनः।। आगस्त्यं भृंगराजं च तुलसी शतपत्रिका। चम्पकं तिलपुष्पं च षडेते पितृवल्लभाः।
04	भद्रा 10:59 से 21:49 तक, दशमीश्राद्ध, गुरुपुष्ययोग २०:४८ तक, पुष्य में राहुवेध, सिद्धि २१:४९ तक।।	
05	इन्दिरा एकादशीव्रत (सर्वेषाम्), एकादशी श्राद्ध, चन्द्रोदय 22:21, श्लेषा में उग्रकर्म, कृषिकर्म, धान्यच्छेदन, ओंप्रेशन, सिद्धि १९:१८ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।	
06	शनिप्रदोष, द्वादशीश्राद्ध, मघाश्राद्ध, यतिमह्लय, यतिवैष्णवश्राद्ध, मघा में ओंप्रेशन कार्य, उग्रकार्यों का मुहूर्त है।।	
07	भद्रा 14:03 से 24:47 तक, त्रयोदशीश्राद्ध, मासशिवरात्रि, अपराह्न में चतुर्दशीश्राद्ध, शस्त्रहतमह्लय, शास्त्रादिहत श्राद्ध, विश्वकर्मापूजन, पू.फा. में मासान्तदोष, सिद्धि १४:०३ तक, सर्वार्थसिद्धि १५:१८ से।।	
08	११.३२ तक चतुर्दशी श्राद्ध, सर्वपैत्री अमावस्या श्राद्ध, मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव रहेगा।, अमृतयोग ११:३३ से।।	
09	स्नान-दान-भौमवती अमा, दौहित्र द्वारा नाना का श्राद्ध, मासान्तदोष ९.१७ के बाद प्रतिपदा हस्त में आप्रेशन, उग्रकार्य, शान्तिकार्य।।	

गयाश्राद्धकाल: - मीने मेषेस्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुकेघटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरुशुक्रयोः न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च बृहस्पतौ । गयाश्राद्धं प्रकुर्वीत संक्रान्त्यादौ विशेषतः।। काले वा परपक्षे वा चतुर्थ्यादितिथिष्वपि। महालयं गयाश्राद्धं मातापित्रोर्मृतेऽहनि।। कृतोद्वाहोऽपिकुर्वीत पिण्डदानं यथाविधिः। मृताहश्च सपिण्डञ्च गयाश्राद्धं महालयम्।। श्राद्ध में त्याज्य- दन्तधावनताम्बूलं तैलाभ्यंगमभोजनम्। रत्यौषधं परान्नं च श्राद्धकृत् सप्त वर्जयेत्।। पुनर्भोजनमध्वानं भारमायासमैथुनम्। दानं प्रतिग्रहो होमः श्राद्धभुक् त्वष्ट वर्जयेत्।

कुतप काल- दिन के आठवाँ भाग कुतप काल कहलाता है लगभग ११:३० से १२:३० तक का काल कुतप काल प्रचलित है।
आठ कुतप- मध्याह्नः खड्गपात्रञ्च तथा नेपालकम्बलः। रूप्यं दर्भास्तिला गावो दौहित्रश्चाष्टमः स्मृतः।। पापं कुत्सितमित्याहुस्तस्य संतापकारिणः। अष्टावेते यतस्तस्मात् कुतपा इति विश्रुताः। कुत्सित (पाप) को नष्ट करने वाले को कुतप कहते हैं। त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः। रजतस्य तथा दानं कथासंकीर्तनादिकम्। गायत्रीजाप्यनिरतं हव्यकव्येषु योजयेत्।।

श्राद्धतिथि निर्णय -या तिथिर्यस्य मासस्य मृताहे तु प्रवर्तते। सा तिथिः पितृपक्षे तु पूजनीया प्रयत्नतः।। तिथिच्छेदो न कर्त्तव्यो विनाऽशौचं यदृच्छया। पिण्ड श्राद्धं च कर्तव्यं विच्छित्तिं न कारयेत्।। अशक्तः पक्षमध्ये तु करोत्येकदिने यदा। निषिद्धेऽपि दिने कुर्याद् पिण्डदानं यथाविधि।। **सन्यासिनां श्राद्धम् -** संन्यासिनां तु द्वादश्यां श्राद्ध कार्यम्। यतीनां च वनस्थानां वैष्णवानां विशेषतः। द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृष्णपक्षे विशेषतः।।(नि.सि.) श्राद्ध भेद- नित्यं नैमित्तकं काम्यं वृद्धिश्राद्धं सपिण्डनम्। पार्वण चेति विज्ञेयं गोष्ठ्यां शुध्यर्थमष्टमम्।। कर्मांगं नवमं प्रोक्तं दैविकं दशमं स्मृतम्। यात्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्टयर्थं द्वादशं स्मृतम्।। पितृ न मानने का दोष- न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धं न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते।। श्राद्ध महत्त्व- श्राद्धात्परतरं नान्यच्छ्रयस्करमुद्राहृतम्।। श्राद्ध लक्षण- अहन्यनि यच्छ्राद्धं तन्नित्यमिति कीर्तितम्। वैश्वदेवविहीनं तदशक्तावुदकेन तु। एकोद्दिष्टं तु यच्छ्राद्धं तन्नैमित्तिकमुच्यते तदप्यदैवं कर्तव्यमयुग्मान् भोजयेद् द्विजान्। कामाय विहितं काम्यम्। वृद्धौ यत्क्रियते श्राद्धं वृद्धिश्राद्धम्।अमायां यत्क्रियते तत् पार्वणम्। देवानुद्दिश्य यत्क्रियते दैविकम्। मनुष्य को प्रत्येक पर्व तिथि एवं श्राद्ध पक्ष में श्राद्धादिकार्य अवश्य करना चाहिए।।

श्राद्ध माहा. - आषाढ्याः पञ्चमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे। ये वै श्राद्धं नराः कुर्वादेकस्मिन्नपिवासरे।। तस्य संवत्सरं यावत् संतृप्ताः पितरो ध्रुवम्। **कन्यायोगे पुण्यतमत्वम्** - कन्यास्थार्कान्वितःपक्षः सोऽत्यन्तं पुण्यमुच्यते। **जीमूतवाहनव्रतम्-** इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।। द्वादशी श्राद्ध- यतीनां च वनस्थानां वेष्णवानां च विशेषतः। द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृष्णपक्षे विशेषतः।।सन्ध्यां दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। ब्रह्मभोज्यं व्रतं नैव कर्तव्यं मृतसूतके।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
26	5	8	44	38	11	18	46	29	9	9	58	42	5	12	44	37	6	27	2	37	6	14	59	13	8	8	44	18	3	8	28	50
27	5	9	43	26	0	1	40	10	9	10	19	55	5	14	29	18	6	27	13	27	6	15	18	45	8	8	46	15	3	8	25	39
28	5	10	42	16	0	14	46	40	9	10	41	38	5	16	13	3	6	27	24	21	6	15	36	24	8	8	48	17	3	8	22	28
29	5	11	41	8	0	28	5	6	9	11	3	53	5	17	55	53	6	27	35	21	6	15	52	8	8	8	50	24	3	8	19	18
30	5	12	40	3	1	11	34	39	9	11	26	38	5	19	37	47	6	27	46	25	6	16	5	51	8	8	52	38	3	8	16	7
01	5	13	38	60	1	25	14	47	9	11	49	52	5	21	18	48	6	27	57	34	6	16	17	32	8	8	54	57	3	8	12	56
02	5	14	37	59	2	9	5	18	9	12	13	35	5	22	58	57	6	28	8	48	6	16	27	7	8	8	57	21	3	8	9	45
03	5	15	37	0	2	23	6	4	9	12	37	47	5	24	38	13	6	28	20	6	6	16	34	33	8	8	59	51	3	8	6	34
04	5	16	36	4	3	7	16	43	9	13	2	26	5	26	16	39	6	28	31	29	6	16	39	46	8	9	2	26	3	8	3	24
05	5	17	35	10	3	21	36	6	9	13	27	32	5	27	54	15	6	28	42	56	6	16	42	45	8	9	5	7	3	8	0	13
06	5	18	34	19	4	6	1	49	9	13	53	5	5	29	31	3	6	28	54	27	6	16	43	26	8	9	7	53	3	7	57	2
07	5	19	33	29	4	20	29	60	9	14	19	4	6	1	7	3	6	29	6	3	6	16	41	47	8	9	10	45	3	7	53	51
08	5	20	32	42	5	4	55	21	9	14	45	29	6	2	42	16	6	29	17	43	6	16	37	47	8	9	13	42	3	7	50	40
09	5	21	31	57	5	19	11	50	9	15	12	19	6	4	16	43	6	29	29	27	6	16	31	23	8	9	16	44	3	7	47	30

02 अक्टूबर 2018 प्रातः 05:29
आश्विन कृष्ण 8 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 58/02/30

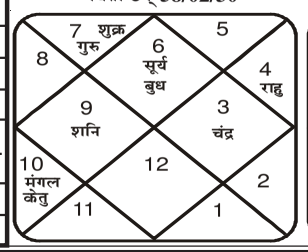

09 अक्टूबर 2018 प्रातः 05:29
आश्विन कृष्ण 30 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 57/57/30

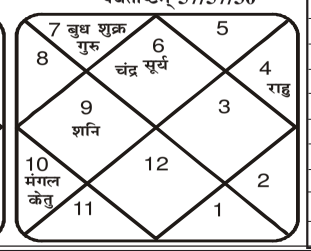

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
26	07:44:23	09:59:56	12:18:24	14:22:12	16:11:27	17:42:06	19:12:34	20:50:15	22:51:12	01:02:55	04:22:57	05:35:29
27	07:40:26	09:55:59	12:14:27	14:18:15	16:07:30	17:38:09	19:08:37	20:46:18	22:47:15	00:58:58	04:19:00	05:31:32
28	07:36:29	09:52:02	12:10:30	14:14:18	16:03:33	17:34:12	19:04:40	20:42:21	22:43:18	00:55:01	04:15:03	05:27:35
29	07:32:32	09:48:05	12:06:33	14:10:21	15:59:36	17:30:15	19:00:43	20:38:24	22:39:21	00:51:04	04:11:06	05:23:38
30	07:28:35	09:44:08	12:02:36	14:06:24	15:55:39	17:26:18	18:56:46	20:34:27	22:35:24	00:47:07	04:07:09	05:19:41
01	07:24:38	09:40:11	11:58:39	14:02:27	15:51:42	17:22:21	18:52:49	20:30:30	22:31:27	00:43:10	04:03:12	05:15:44
02	07:20:41	09:36:14	11:54:42	13:58:30	15:47:45	17:18:24	18:48:52	20:26:33	22:27:30	00:39:13	03:59:15	05:11:47
03	07:16:44	09:32:17	11:50:45	13:54:33	15:43:48	17:14:27	18:44:55	20:22:36	22:23:33	00:35:16	03:55:18	05:07:50
04	07:12:47	09:28:20	11:46:48	13:50:36	15:39:51	17:10:30	18:40:58	20:18:39	22:19:36	00:31:19	03:51:21	05:03:53
05	07:08:50	09:24:23	11:42:51	13:46:39	15:35:54	17:06:33	18:37:01	20:14:42	22:15:39	00:27:22	03:47:24	04:59:56
06	07:04:53	09:20:26	11:38:54	13:42:42	15:31:57	17:02:36	18:33:04	20:10:45	22:11:42	00:23:25	03:43:27	04:55:59
07	07:00:56	09:16:29	11:34:57	13:38:45	15:28:00	16:58:39	18:29:07	20:06:48	22:07:45	00:19:28	03:39:30	04:52:02
08	06:56:59	09:12:32	11:31:00	13:34:48	15:24:03	16:54:42	18:25:10	20:02:51	22:03:48	00:15:31	03:35:33	04:48:05
09	06:53:02	09:08:35	11:27:03	13:30:51	15:20:06	16:50:45	18:21:13	19:58:54	21:59:51	00:11:34	03:31:36	04:44:08

आश्विन शुक्लपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01 02	बुध	02/48 59/30	07:26 30:07	चित्रा	11/45	11:01	वैधृति	14/08	11:58	बव	07:26	बालव कौलव	18:46 30:07	06:19	17:56	29/02		10
03	गुरु	57/53	29:28	स्वाती	10/27	10:30	विष्कु	08/52	09:52	तैतिल	17:47	गर	29:28	06:19	17:55	29/00	वृश्चि 28:34	11
04	शुक्र	58/10	29:35	विशाखा	10/52	10:40	प्रीति	05/00	08:19	वणिज	17:31	विष्टि	29:35	06:19	17:54	28/57		12
05	शनि	00	00	अनुराधा	13/08	11:35	आयु	02/32	07:21	बव	18:01	--	–	06:20	17:53	28/53		13
05	रवि	00/20	06:28	ज्येष्ठा	17/15	13:14	सौभा	01/40	07:00	बालव	06:28	कौलव	19:16	06:20	17:52	28/50	धनु 13:14	14
06	सोम	04/20	08:05	मूल	23/03	15:34	शोभ	02/05	07:11	तैतिल	08:05	गर	21:11	06:21	17:51	28/45		15
07	मङ्गल	09/50	10:17	पू.षा.	30/05	18:23	अति	03/43	07:50	वणिज	10:17	विष्टि	23:33	06:21	17:50	28/42	मकर 25:08	16
08	बुध	16/13	12:50	उ.षा.	37/47	21:28	सुक	06/00	08:45	बव	12:50	बालव	26:06	06:21	17:50	28/42		17
09	गुरु	22/47	15:29	श्रवण	45/30	24:34	धृति	08/30	09:46	कौलव	15:20	तैतिल	28:43	06:22	17:49	28/38		18
10	शुक्र	28/58	17:57	धनिष्ठा	52/35	27:24	शूल	10/50	10:42	गर	17:57	--	–	06:22	17:48	28/35	कुंभ 14:02	19
11	शनि	34/05	20:01	शत.	58/30	29:47	गण्ड	12/27	11:22	वणिज	06:59	विष्टि	20:01	06:23	17:47	28/30		20
12	रवि	37/50	21:31	पू.भा.	00	00	वृद्धि	13/08	11:38	बव	08:46	बालव	21:31	06:23	17:46	28/27	मीन 25:12	21
13	सोम	39/57	22:23	पू.भा.	03/00	07:36	ध्रुव	12/33	11:25	कौलव	09:57	तैतिल	22:23	06:24	17:45	28/22		22
14	मङ्गल	40/30	22:36	उ.भा.	05/57	08:47	व्याघा.	10/47	10:43	गर	10:29	वणिज	22:36	06:24	17:45	28/22		23
15	बुध	39/35	22:15	रेवती	07/25	09:23	हर्ष.	07/47	09:32	विष्टि	10:25	बव	22:15	06:25	17:44	28/17	मेष 09:23	24

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु (10 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2018 ई. तक)

गुरु पश्चिम में एवं शुक्रास्त १६ अक्टूबर को पश्चिम में

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
10	शारदीयनवरात्रारम्भ, कलशस्थापन (चित्रा-वैधृतियोगवश अभिजित् मुहूर्त्त में),ध्वजारोहण ,चन्द्रदर्शन, प्रीतिद्वितीया, स्तनवृद्धिगौरीव्रत, महाराज अग्रसेन जयन्ती, ✿**चित्रा में सूर्य २५.१३ से**, चित्रा में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषिकर्म, अमृत ०७:२६ तक✍
11	तृतीयापूजा, स्वाती में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषिकर्म, अमृत २९:२८ तक।। ✍तदुपरान्त सिद्धियोग ३०:०७ तक
12	भद्रा 17:31 से 29:35 तक, विनायक चतुर्थीव्रत, संक्रान्तिपुण्यकाल मध्याह्न तक, रिक्तादोष, **रवियोग १०:४० से**, अमृत २९:२५ तक, सर्वार्थसिद्धि १०:४० से सूर्योदय तक।।
13	उपाङ्गललितागौरीव्रत, अनुराधा में व्यापारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषिकर्म, चिकित्साकार्य, रसायनिककार्य, कारखाना प्रारम्भ करना शुभ है।मृत्युयोग सम्पूर्ण दिन रहेगा।।
14	बिल्व आमन्त्रण, ज्येष्ठा में राहु वेध, मूल में शनियुति मूहूर्ताभाव है, **स्कन्दमाता का पूजन शुभ, रवियोग १३:१४ से**, अमृत ०६:२८ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।
15	सरस्वती आवाहन (मूल में), मूल में शनियुति है, १५:३४ तक मूल दोष व मूलशान्ति, **रवियोग १५:३३ तक**, सिद्धि ०८:०५ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।
16	भद्रा 10:17 से 23:33 तक, महानिशापूजा, बलिकर्म, देवीत्रिरात्रव्रत प्रारम्भ, पत्रिका प्रवेशन, पू.षा. में उग्रकर्म, ऑप्रेशन, अमृत १०:३७ तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
17	महाष्टमीव्रत, श्रीदुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णापरिक्रमा, सूर्यसायनतुला में 25:32,मोहर्रम (मु.) हिजरी सन् 1439 प्रारम्भ।✿**सूर्य तुला प्रवेश १८:४४, पुण्यकाल मध्याह्न बाद**, उ.षा. में केतुयुति के कारण मुहूर्ताभाव, श्रवण में रिक्तादोष मुहूर्ताभाव है, **रवियोग २१:२८ से**, मृत्युयोग १२:५० तक।।
18	पञ्चक आरम्भ २४.३४ से, महानवमी व्रत, दुर्गाविसर्जन, नवरात्र समाप्त, विजयदशमी, दशहरा, बलिहोमादि अर्पण, स्वारोचिषमन्वादि, रिक्तोपरान्त श्रवणा में वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय, कृषिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, वृक्षारोपण, मृत्युयोग १५:२९ तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक
19	अपराजिता पूज, शमीपूजा, दशरथगौरीव्रत, जगद्गुरुमाधवाचार्य जयन्ती, धनिष्ठा में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, प्रकाशन, लेखन, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषिकर्म, सिद्धि १७:५७ से।।
20	भद्रा 06:59 से 20:01 तक,पापांकुशा एकादशी (सर्वे.), भरतमिलाप (काशी), देवी, शतभिषा में पशुपक्षीमत्स्यादि पालन, वास्तु कृषिकार्य, व्यापारारम्भ, **रवियोग ०३:२४ तक**, अमृत २०:०१ तक।।
21	गोद्वादशी, पद्मनाभद्वादशी, पू.भा. में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है। रवि द्वादशी में सूर्य पूजन का विशेष फल होता है। **त्रिपुष्कर ०५:४७ से २१:३१ तक**, सिद्धि २१:३१ से प्रारम्भ होगा।।
22	सोमप्रदोषव्रत, उ.भा. में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषिकर्म, सभी व्यापारकार्यो का आरम्भ, शिक्षण प्रशिक्षणादि कर्म का मुहूर्त है। **रवियोग ०७:३७ से**,
23	भद्रा आरम्भ 22:36 से, कोजागरी, रात में अक्षक्रीड़ा, चन्द्रोदय 17:14, सायन सूर्य वृश्चिक में १६.५३, उ.भा. में रिक्तादोष, सर्वार्थसिद्धि ०८:४७ तक।। ✍कृषिकर्म, अमृत २२:१५ से सूर्योदय तक
24	भद्रा समाप्ति 10:25 पर, पञ्चक ०९.२३ तक, शरत् पूर्णिमा, कौमदीमहोत्सव, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, श्री वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायणव्रत, अन्नाभिषेक (द.भा.), चन्द्रोदय 17:52,✿**स्वाती में सूर्य ११.४४ से**, रेवती में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म✍

दुर्गा उपासना- शक्ति की उपासना प्रत्येक मनुष्य के लिए उपयोगी होती है। अत: नवरात्रि पर्व में सभी को दुर्गा अर्चन करना चाहिए। इसके लिए दुर्गा सप्तशती का पाठ किया जा सकता है। असर्थता में प्रतिदिन में कवच का पाठ/ सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ/ दुर्गा नवार्ण मन्त्र का जप करना चाहिए। दुर्गा पाठ हेतु सम्पुटित पाठ का अत्यधिक महत्त्व होता है। आवश्यकता के अनुसार सम्पुट का प्रयोग कर सकते हैं- धन वृद्धि के लिए- कां सोस्मिताम्... का सम्पुट, कार्य सिद्ध के लिए- यं यं चिन्यते कामम्.... का प्रयोग, अपमृत्युनाश के लिए- शूलेन पाहि नो देवि....... का सम्पुट, इच्छा पूर्ति हेतु- शरणागतदीनार्त...का प्रयोग, सर्वापत्तिनिवारण- सर्वाबाधाप्रशमनं.......। आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै। इस नवार्ण मन्त्र का नवरात्रि में जप होम कार्य सर्वकार्य साधक होता है। विशेष- कन्याओं की रक्षा करना महिलाओं का सम्मान करना ही शक्ति की मुख्य आराधना है यही शक्ति का मूलाधार है। अत: नवरात्रि काल में प्रतिदिन कन्याओं की पूजा करना, निर्धन कन्याओं के लिए वस्त्र पुस्तकादि का दान, अपंगों एवं भूखों को भोजन करवाना , अस्वस्थों के लिए दवा का वितरण करने से देवी की कृपा निरन्तर बनी रहती है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
10	5	22	31	14	6	3	13	29	9	15	39	33	6	5	50	26	6	29	41	15	6	16	22	36	8	9	19	52	3	7	44	19
11	5	23	30	33	6	16	55	31	9	16	7	12	6	7	23	23	6	29	53	7	6	16	11	24	8	9	23	5	3	7	41	8
12	5	24	29	54	7	0	14	57	9	16	35	14	6	8	55	37	7	0	5	3	6	15	57	49	8	9	26	23	3	7	37	57
13	5	25	29	17	7	13	11	3	9	17	3	38	6	10	27	8	7	0	17	3	6	15	41	52	8	9	29	46	3	7	34	46
14	5	26	28	42	7	25	45	10	9	17	32	25	6	11	57	55	7	0	29	6	6	15	23	35	8	9	33	14	3	7	31	36
15	5	27	28	9	8	8	0	26	9	18	1	34	6	13	27	59	7	0	41	13	6	15	3	1	8	9	36	48	3	7	28	25
16	5	28	27	37	8	20	1	16	9	18	31	3	6	14	57	21	7	0	53	23	6	14	40	15	8	9	40	26	3	7	25	14
17	5	29	27	7	9	1	52	48	9	19	0	53	6	16	25	59	7	1	5	37	6	14	15	22	8	9	44	9	3	7	22	3
18	6	0	26	39	9	13	40	37	9	19	31	3	6	17	53	54	7	1	17	53	6	13	48	30	8	9	47	58	3	7	18	52
19	6	1	26	12	9	25	30	13	9	20	1	32	6	19	21	4	7	1	30	13	6	13	19	45	8	9	51	51	3	7	15	42
20	6	2	25	48	10	7	26	46	9	20	32	19	6	20	47	30	7	1	42	36	6	12	49	18	8	9	55	48	3	7	12	31
21	6	3	25	25	10	19	34	46	9	21	3	25	6	22	13	10	7	1	55	3	6	12	17	18	8	9	59	51	3	7	9	20
22	6	4	25	4	11	1	57	45	9	21	34	48	6	23	38	2	7	2	7	32	6	11	43	58	8	10	3	58	3	7	6	9
23	6	5	24	44	11	14	37	56	9	22	6	28	6	25	2	5	7	2	20	4	6	11	9	28	8	10	8	10	3	7	2	58
24	6	6	24	27	11	27	36	9	9	22	38	25	6	26	25	16	7	2	32	38	6	10	34	4	8	10	12	26	3	6	59	48

नवरात्रि व्रतमाहात्म्य - नवरात्रव्रते शक्तस्त्रिरात्रं चैकरात्रकम्। व्रतं चरति यो भक्तस्तस्मै दास्यामि वाञ्छितम्।। **मूर्तिस्थापने विशेष**: -याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्धिनी। पश्चिमाभिमुखी नित्यं न स्थाप्या सौम्यदिङ्मुखी।। **पूजनकाल** -प्रातरावाहयेद्देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्। प्रात: प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत्।। यस्तेवकस्यामथाष्टम्यां नवम्यामथ साधक:। पूजयेद्वरदां देवीं महाविभवविस्तरै:।। कन्या पूजन - एकैकां पूजयेत्कनामेकवृद्धया तथैव च। द्विगुणं त्रिगुणं वाऽपि प्रत्येकं नवकं तु वा।। ऊँ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा अथवा ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इत्यस्य कामनार्थे जप:।

17 अक्टूबर 2018 प्रात: 05:29
आश्विन शुक्ल 8 बुधवार
पंक्तीष्टम् 57/50/00

24 अक्टूबर 2018 प्रात: 05:29
आश्विन शुक्ल 15 बुधवार
पंक्तीष्टम् 57/40/00

विजयदशमी- आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये। स कालो विजयो ज्ञेय: सर्वकार्यार्थसिद्धये।। देवे दत्त्वा तु दानानि देवे दद्याच्च दक्षिणाम्। तत् सर्वं ब्राह्मणो दद्यादन्यथानिष्फलं भवेत्।। शमी प्रार्थना- शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टका। धारिण्यर्जुन बाणानां रामस्य प्रियवादिनी।। अपराजिता धारणमन्त्र- जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

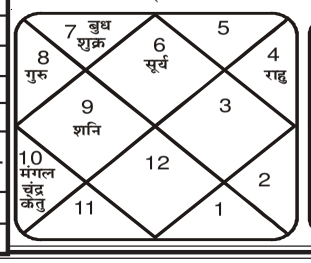

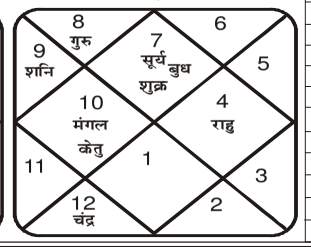

दि.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
10	06:49:05	09:04:38	11:23:06	13:26:54	15:16:09	16:46:48	18:17:16	19:54:57	21:55:54	00:07:37	03:27:39	04:40:11
11	06:45:08	09:00:41	11:19:09	13:22:57	15:12:12	16:42:51	18:13:19	19:51:00	21:51:57	00:03:40	03:23:42	04:36:14
12	06:41:11	08:56:44	11:15:12	13:19:00	15:08:15	16:38:54	18:09:22	19:47:03	21:48:00	23:59:43	03:19:45	04:32:17
13	06:37:14	08:52:47	11:11:15	13:15:03	15:04:18	16:34:57	18:05:25	19:43:06	21:44:03	23:55:46	03:15:48	04:28:20
14	06:33:17	08:48:50	11:07:18	13:11:06	15:00:21	16:31:00	18:01:28	19:39:09	21:40:06	23:51:49	03:11:51	04:24:23
15	06:29:20	08:44:53	11:03:21	13:07:09	14:56:24	16:27:03	17:57:31	19:35:12	21:36:09	23:47:52	03:07:54	04:20:26
16	06:25:23	08:40:56	10:59:24	13:03:12	14:52:27	16:23:06	17:53:34	19:31:15	21:32:12	23:43:55	03:03:57	04:16:29
17	06:21:26	08:36:59	10:55:27	12:59:15	14:48:30	16:19:09	17:49:37	19:27:18	21:28:15	23:39:58	03:00:00	04:12:32
	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
18	08:33:02	10:51:30	12:55:18	14:44:33	16:15:12	17:45:40	19:23:21	21:24:18	23:36:01	02:56:03	04:08:35	06:17:29
19	08:29:05	10:47:33	12:51:21	14:40:36	16:11:15	17:41:43	19:19:24	21:20:21	23:32:04	02:52:06	04:04:38	06:13:32
20	08:25:08	10:43:36	12:47:24	14:36:39	16:07:18	17:37:46	19:15:27	21:16:24	23:28:07	02:48:09	04:00:41	06:09:35
21	08:21:11	10:39:39	12:43:27	14:32:42	16:03:21	17:33:49	19:11:30	21:12:27	23:24:10	02:44:12	03:56:44	06:05:38
22	08:17:14	10:35:42	12:39:30	14:28:45	15:59:24	17:29:52	19:07:33	21:08:30	23:20:13	02:40:15	03:52:47	06:01:41
23	08:13:17	10:31:45	12:35:33	14:24:48	15:55:27	17:25:55	19:03:36	21:04:33	23:16:16	02:36:18	03:48:50	05:57:44
24	08:09:20	10:27:48	12:31:36	14:20:51	15:51:30	17:21:58	18:59:39	21:00:36	23:12:19	02:32:21	03:44:53	05:53:47

अपराजिता पूजा- **ॐ अपराजितायै नम:, ॐ क्रियाशक्त्यै नम:, ॐ उमायै नम:। प्रार्थना-** चारुणा मुखपद्मेन विचित्र कनकोज्ज्वला। जया देवी भवे भक्ता सर्वकामान् ददातु मे। काञ्चनेन विचित्रेण केयूरेण विभूषिता। जयप्रदा महामाया शिव-भावितमानसा।। विजया तु महाभागा ददातु विजयं मम। हारेण सुविचित्रेण भास्वत्कनकमेखला। अपराजिता रुद्ररता करोतु विजयं मम।।इत्यादि मन्त्रों से अपराजिता का पूतन करें

कार्तिक कृष्णपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु (25 अक्टूबर से 07 नवम्बर 2018 ई. तक) — गुरु पश्चिम में एवं शुक्रोदय ३० अक्टूबर को पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.
01	गुरु	37/27	21:24	अश्विनी	07/32	09:26	वज्र सिद्धि	03/47 58/53	07:56 29:58	बालव	09:49	कौलव	21:24	06:25	17:43	28/15	
02	शुक्र	34/20	20:10	भरणी	06/32	09:03	व्यति.	53/13	27:43	तैतिल	08:47	गर	20:10	06:26	17:42	28/10	वृष 14:54
03	शनि	30/30	18:38	कृतिका	04/45	08:20	वरी.	47/05	25:16	वणिज	07:24	विष्टि बव	18:38 29:46	06:26	17:42	28/10	
04	रवि	26/10	16:55	रोहिणी मृगशिरा	02/20 59/35	07:23 30:17	परिघ	40/33	22:40	बालव	16:55	कौलव	27:59	06:27	17:41	28/05	मिथुन 18:51
05	सोम	21/33	15:04	आर्द्रा	56/38	29:06	शिव	33/50	19:59	तैतिल	15:04	गर	26:06	06:27	17:40	28/02	
06	मङ्गल	16/40	13:08	पुनर्वसु	53/28	27:51	सिद्ध	26/57	17:15	वणिज	13:08	विष्टि	24:09	06:28	17:40	28/00	कर्क 22:10
07	बुध	11/45	11:10	पुष्य	50/15	26:34	साध्य	20/03	14:29	बव	11:10	बालव	22:10	06:28	17:39	27/57	
08	गुरु	06/42	09:10	आश्ले.	46/58	25:16	शुभ	13/00	11:41	कौलव	09:10	तैतिल	20:10	06:29	17:38	27/53	सिंह 25:16
09 10	शुक्र	01/40 56/40	07:10 29:10	मघा	43/43	23:59	शुक्ल ब्रह्म	05/57 58/58	08:53 30:05	गर	07:10	वणिज विष्टि	18:10 29:10	06:30	17:38	27/50	
11	शनि	51/50	27:14	पू.फा.	40/35	22:44	ऐन्द्र	52/08	27:21	बव	16:12	बालव	27:14	06:30	17:37	27/48	कन्या28:26
12	रवि	47/15	25:25	उ.फा.	37/40	21:35	वैधृति	45/25	24:41	कौलव	14:19	तैतिल	25:25	06:31	17:37	27/45	
13	सोम	43/10	23:47	हस्त	35/13	20:36	विष्कु	39/10	22:11	गर	12:36	वणिज	23:47	06:31	17:36	27/43	
14	मङ्गल	39/47	22:27	चित्रा	33/28	19:55	प्रीति	33/28	19:55	विष्टि	11:07	शकुनि	22:27	06:32	17:36	27/40	तुला 08:13
30	बुध	37/28	21:32	स्वाती	32/38	19:36	आयु	28/30	17:57	चतुष्पद	09:59	नाग	21:32	06:33	17:35	27/35	

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
25	दीपदान, अश्विनी में जातकर्म, नामकरण, वस्तुभूमिभवनवाहन क्रयादि, वास्तु/कृषिकर्म, चिकित्साकर्म, व्यापार, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन कर्म का मुहूर्त है, सर्वार्थसिद्धि ०९:२६ तक।।
26	अशून्यशयनव्रत, भरणी/ कृत्तिका में व्यतीपात दोष के कारण मुहूर्ताभाव है , मृत्युयोग २०:१० तक।।
27	भद्रा 07:24 से 29:46 तक, संकष्टहर/करकचतुर्थीव्रत, करवाचौथ, चन्द्रोदय 20:04, कृत्तिका व रोहिणी में व्यापार, स्थिरकार्य, वास्तु/कृषिकर्म, भूमिभवनक्रयविक्रय, ऑप्रेशन, वृक्षारोपणादि का मुहूर्त है।, सिद्धि १८:३८ से सर्वार्थसिद्धि ०८:२० से।।
28	चन्द्रोदय 20:56,रोहिणी एवं मृग. में रिक्ता दोष, अमृत १६:५५ से।।
29	आर्द्रा में शस्त्रादिकार्य , उग्रकर्म मुहूर्त है। अमृत १५:०४ तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
30	भद्रा 13:08 से 24:09 तक, अशोक चन्दन षष्ठी (मि.), पुन. शनिवेध, **त्रिपुष्कर १३:८ से रवियोग ५:६ से**, मृत्युयोग १३:८ तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
31	अहोइ अष्टमी, पुष्य में राहुयति, **त्रिपुष्कर ०३:५१ तक, रवियोग ०३:५२ तक**,अमृत ०९:१० तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक ।।
01	अष्टमीव्रत, राधाष्टमी/जयन्ती, कराष्टमी (महाराष्ट्र)। श्लेषा में उग्रकार्य, चिकित्सा, कृषिकर्म, धान्यच्छेदन, अमृत ०९:१० तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।
02	भद्रा 18:10 से 29:10 तक, चन्द्रोदय 20:17, रिक्तजोपरान्त मघा में ऑप्रेशन, धान्यच्छेदन, अमृत २७:१४ तक।।
03	रम्भा एकादशी सर्वेषाम्, पू.फा. मे उग्रकर्म, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, अमृत २७:१० तक।।
04	गोवत्स द्वादशी, कामेश्वरी जयन्ती, हस्त में सामान्यकार्य, **त्रिपुष्कर ०३:१४ से २१:३५ तक**, सिद्धि २५:२५ से, सर्वार्थसिद्धि सम्पूर्ण।।
05	भद्रा आरम्भ 23:47 से, सोमप्रदोष, धन्वन्तरी जयन्ती, धनत्रयोदशी,(धनतेरस) सायं दीपदान, नरकचतुर्दशी, यमदीपदान, मासान्तदोष।।
06	भद्रा समाप्ति 11:07 से, हनुमान जयन्ती, छोटी दिवाली, माषपत्रभक्षण, यमतर्पण, प्रेतचतुर्दशी, महाकालीपूजा (रात्रि में), ☼ **विशाखा में सूर्य १९.५३ से**, मासान्तदोष।।
07	अमावस्या स्नानादि, दीपावली, महालक्ष्मीपूजन, उल्काभ्रमण, प्रातः यमतर्पण, प्रातः हनुमत् पूजन .सायं लक्ष्मी-कुबेर-इन्द्रपूजा, सायंदीपदान,केदारव्रत, दरिद्रा निस्सारण, मासान्तदोष, अमृत २१:३२ से सूर्योदय तक ।।

दीपावली पूजन विशेष- दिवातत्र न भोक्तव्यमृते बालातुराज्जनात्। प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्।। दीपवृक्षाश्च दातव्या शक्त्या देवगृहेषु च। **लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उपाय** - श्रीसूक्त का वैदिक ब्राह्मणो द्वारा सहस्त्रपाठ श्रीयन्त्रार्चन के साथ करवाने से व्यापार में वृद्धि होती है। यदि पाठ रात्रि में श्रद्धापूर्वक किया जाये तो निश्चित ही धनलाभ होता है। दुर्गासप्तशती में लक्ष्मी मन्त्र का सम्पुटित पाठ भी लाभदायी होता है। निम्नांकित मन्त्र को श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक दीपावली की रात्रि या ग्रहणकाल में यथाशक्ति जाप करें। नवरात्रों में इस मन्त्र का जाप चमत्कारी होता है। इस मन्त्र का जाप करके श्रीसूक्त या निम्नांकित संक्षिप्त लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करने से कारोबार/व्यापार में अभूतपूर्व प्रगति एवं घर में वैभव दिखाई देगा।

मन्त्र :-ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

स्तोत्ररूप में प्रार्थना - **त्रैलोक्यपूजिते देवी कमले विष्णुवल्लभे। यस्य त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ।।**
ईश्वरी कमला लक्ष्मीरचला भूति हरिप्रिया । पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीपद्मधारिणी ।।
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत् । स्थिरा लक्ष्मी भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह ।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
25	6	7	24	12	0	10	51	40	9	23	10	38	6	27	47	33	7	2	45	16	6	9	57	58	8	10	16	47	3	6	56	37
26	6	8	23	58	0	24	22	27	9	23	43	6	6	29	8	53	7	2	57	56	6	9	21	26	8	10	21	13	3	6	53	26
27	6	9	23	47	1	8	5	34	9	24	15	49	7	0	29	11	7	3	10	38	6	8	44	42	8	10	25	43	3	6	50	15
28	6	10	23	38	1	21	57	43	9	24	48	48	7	1	48	25	7	3	23	24	6	8	8	3	8	10	30	17	3	6	47	4
29	6	11	23	31	2	5	55	55	9	25	22	0	7	3	6	27	7	3	36	11	6	7	31	43	8	10	34	55	3	6	43	54
30	6	12	23	26	2	19	57	48	9	25	55	27	7	4	23	13	7	3	49	1	6	6	55	57	8	10	39	38	3	6	40	43
31	6	13	23	23	3	4	1	50	9	26	29	8	7	5	38	36	7	4	1	54	6	6	21	0	8	10	44	25	3	6	37	32
01	6	14	23	23	3	18	7	5	9	27	3	2	7	6	52	28	7	4	14	48	6	5	47	5	8	10	49	16	3	6	34	21
02	6	15	23	24	4	2	12	51	9	27	37	9	7	8	4	39	7	4	27	45	6	5	14	26	8	10	54	12	3	6	31	10
03	6	16	23	28	4	16	18	10	9	28	11	30	7	9	14	59	7	4	40	44	6	4	43	14	8	10	59	11	3	6	28	00
04	6	17	23	34	5	0	21	24	9	28	46	3	7	10	23	16	7	4	53	45	6	4	13	41	8	11	4	14	3	6	24	49
05	6	18	23	42	5	14	19	60	9	29	20	49	7	11	29	16	7	5	6	48	6	3	45	55	8	11	9	22	3	6	21	38
06	6	19	23	52	5	28	10	37	9	29	55	47	7	12	32	43	7	5	19	52	6	3	20	7	8	11	14	33	3	6	18	27
07	6	20	24	4	6	11	49	36	10	0	30	57	7	13	33	18	7	5	32	59	6	2	56	22	8	11	19	48	3	6	15	16

कार्तिक में विशेष - कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः। जपन्हविष्यभुक्छान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **त्रयोदश्यां दीपदानमन्त्रः** - मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां ममेति।। कार्त्तिकस्यासितेपक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे। यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति।। इस मन्त्र से त्रयोदशी की संध्या में असमय मृत्यु निवारण हेतु घर के बाहर चतुर्मुख दीपदान करना चाहिए। **दीपावली में कृत्य -** प्रत्यूष आश्वयुग्दर्शे कृताभ्यंगादिमङ्गलः। भक्त्या प्रपूजयेद्देवीमलक्ष्मीविनिवृत्तये।। अर्द्धरात्रे भवत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्। अतः स्वलंकृता लिप्ता दीपैर्जाग्रज्जनोत्सवाः।।

दरिद्रा निस्सारण कृत्य - एवं गते निशीथे तु जने निद्रार्धलोचने। तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिंडमवादनैः।। निष्कास्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात्।। त्रयोदशी में स्वास्थ्य लाभ के लिए धन्वन्तरि पूजा व यम के लिए दीपदान करना चाहिए। चतुर्दशी को प्रातः तर्पण व सायंकाल दीपदान पूर्वक हनुमत् पूजा करनी चाहिए। दीपावली के दिन सायं १९.१८ से २१.२० व १.४७ से ३.५९ रात्रि में लक्ष्मीगणेशकुबेर श्रीयन्त्रार्चन, श्रीसूक्त पाठ, कनकधारा, गोपाल सहस्त्रनाम का पाठ करना चाहिए।

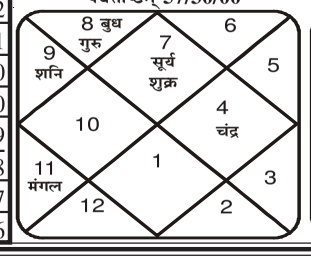

01 नवम्बर 2018 प्रातः 05:29
कार्तिक कृष्ण 8 गुरुवार
पंक्तीष्टम् 57/30/00

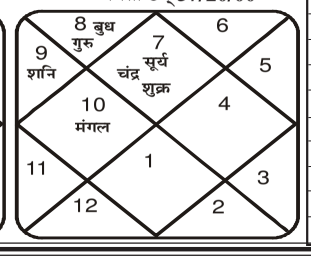

07 नवम्बर 2018 प्रातः 05:29
कार्तिक कृष्ण 30 बुधवार
पंक्तीष्टम् 57/20/00

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
25	08:05:23	10:23:51	12:27:39	14:16:54	15:47:33	17:18:01	18:55:42	20:56:39	23:08:22	02:28:24	03:40:56	05:49:50
26	08:01:26	10:19:54	12:23:42	14:12:57	15:43:36	17:14:04	18:51:45	20:52:42	23:04:25	02:24:27	03:36:59	05:45:53
27	07:57:29	10:15:57	12:19:45	14:09:00	15:39:39	17:10:07	18:47:48	20:48:45	23:00:28	02:20:30	03:33:02	05:41:56
28	07:53:32	10:12:00	12:15:48	14:05:03	15:35:42	17:06:10	18:43:51	20:44:48	22:56:31	02:16:33	03:29:05	05:37:59
29	07:49:35	10:08:03	12:11:51	14:01:06	15:31:45	17:02:13	18:39:54	20:40:51	22:52:34	02:12:36	03:25:08	05:34:02
30	07:45:38	10:04:06	12:07:54	13:57:09	15:27:48	16:58:16	18:35:57	20:36:54	22:48:37	02:08:39	03:21:11	05:30:05
31	07:41:41	10:00:09	12:03:57	13:53:12	15:23:51	16:54:19	18:32:00	20:32:57	22:44:40	02:04:42	03:17:14	05:26:08
01	07:37:44	09:56:12	12:00:00	13:49:15	15:19:54	16:50:22	18:28:03	20:29:00	22:40:43	02:00:45	03:13:17	05:22:11
02	07:33:47	09:52:15	11:56:03	13:45:18	15:15:57	16:46:25	18:24:06	20:25:03	22:36:46	01:56:48	03:09:20	05:18:14
03	07:29:50	09:48:18	11:52:06	13:41:21	15:12:00	16:42:28	18:20:09	20:21:06	22:32:49	01:52:51	03:05:23	05:14:17
04	07:25:53	09:44:21	11:48:09	13:37:24	15:08:03	16:38:31	18:16:12	20:17:09	22:28:52	01:48:54	03:01:26	05:10:20
05	07:21:56	09:40:24	11:44:12	13:33:27	15:04:06	16:34:34	18:12:15	20:13:12	22:24:55	01:44:57	02:57:29	05:06:23
06	07:17:59	09:36:27	11:40:15	13:29:30	15:00:09	16:30:37	18:08:18	20:09:15	22:20:58	01:41:00	02:53:32	05:02:26
07	07:14:02	09:32:30	11:36:18	13:25:33	14:56:12	16:26:40	18:04:21	20:05:18	22:17:01	01:37:03	02:49:35	04:58:29

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए कुबेर मन्त्र - **ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये समृद्धिं मे देहि, दापय दापय स्वाहा।** इस मन्त्र के जाप के बाद लाल पुष्पों से लक्ष्मी माता का ध्यान करें एवं कुबेर जी के निम्न मूल मन्त्र का जाप भी करें - **ॐ श्रीं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।** इस मन्त्र का जाप प्रतिदिन करें ।

कार्तिक शुक्लपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु (08 नवम्बर से 23 नवम्बर 2018 ई. तक) — गुरु १३ नवम्बर को पश्चिम में अस्त एवं शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	गुरु	36/28	21:08	विशाखा	33/08	19:48	सौभा	24/35	16:23	किंस्तु.	09:20	बव	21:08	06:33	17:35	27/35	वृश्चि 13:42	08	गोक्रीडा, मंगलमालिका, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा, आकाशदीपप्रारंभ अन्नकूट, द्यूतक्रीडा आदि का मुहूर्त है।, विशाखा में सूर्ययुति, सर्वार्थसिद्धि १९:४८ से।।
02	शुक्र	36/55	21:20	अनुराधा	35/00	20:34	शोभ	21/48	15:17	बालव	09:14	कौलव	21:20	06:34	17:34	27/30		09	यमपूजा,भ्रातृद्वितीया (भैयादूज) भगिनी गृह भोजन, चन्द्रदर्शन, काशी में गोवर्धनपूजा,अनुराधा में जातकर्म, नामकरण, वास्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म, व्यापारारम्भ, वृक्षारोपण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, ब्यूटीपार्लर का मुहूर्त है। मृत्यु २१:२० तक सर्वार्थसिद्धि २०:३४ तक।।
03	शनि	39/07	22:13	ज्येष्ठा	38/33	21:59	अति	20/18	14:41	तैतिल	09:46	गर	22:13	06:34	17:34	27/30	धनु 21:59	10	त्रिलोचनगौरीव्रत, ज्ये. में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, **रवियोग २१:५९ से**, सिद्धि २२:१३ तक।।
04	रवि	42/55	23:45	मूल	43/38	24:02	सुक	20/00	14:35	वणिज	10:59	विष्टि	23:45	06:35	17:33	27/25		11	भद्रा 10:59 से 23:45 तक, नागचतुर्थी, दूर्वागणपतिव्रत, विनायकचतुर्थी, त्रिदिवसीय सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ, प्रतिहारिषष्ठीव्रत का संयम, मूल में शनियुति व रिक्तादोष, अमृत २३:४५ से सूर्योदय तक ।।
05	सोम	48/08	25:51	पू.षा.	50/05	26:38	धृति	20/55	14:58	बव	12:48	बालव	25:51	06:36	17:33	27/23		12	नाग/सौभाग्यपञ्चमी, सूर्यषष्ठीव्रत द्वितीय दिन, पू.षा. में व्यापारारम्भ, वास्तुभूमिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, अमृत २५:५१तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
06	मङ्गल	54/25	28:22	उ.षा.	57/32	29:37	शूल	22/45	15:42	कौलव	15:06	तैतिल	28:22	06:36	17:33	27/23	मकर 09:21	13	स्कन्धषष्ठी, सूर्यषष्ठीव्रत (छठपूजा सायं कालिक अर्घदान)प्रतिहारिषष्ठीव्रत (सायं कालीन अर्घ), उ.षा. में उग्रकर्म, ऑप्रेशन, **रवियोग ०२:३७ से**, मृत्यु २८:२२ तक तदुपरान्त अमृत सूर्योदय तक।।
07	बुध	00	00	श्रवण	00	00	गण्ड	25/05	16:39	गर	17:43	--	--	06:37	17:32	27/18		14	प्रतिहारिषष्ठी का प्रात:कालीन अर्घ्यदान, कल्पादि सप्तमी, सूर्यषष्ठी व्रत की पारणा, श्रवण में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, वास्तुकर्म, धान्यच्छेदन, सिद्धि सम्पूर्ण।।
07	गुरु	01/05	07:04	श्रवण	05/18	08:45	वृद्धि	27/32	17:39	वणिज	07:04	विष्टि	20:22	06:38	17:32	27/15	कुंभ 22:17	15	पञ्चक 08:45 से, भद्रा 07:04 से 20:22 तक, श्रवण में भद्रादोष, अमृत ०७:०४ से ।।
08	शुक्र	07/35	09:40	धनिष्ठा	12/50	11:46	ध्रुव	29/38	18:29	बव	09:40	बालव	22:47	06:38	17:32	27/15		16	दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, कार्तवीर्योत्पत्ति,✿**सूर्य वृश्चिक प्रवेश १८:३१, पुण्यकाल मध्याह्न बाद**, धनि. में भौमयुति, रवियोग ११:४७ से, अमृत ०९:४० से।।
09	शनि	13/07	11:54	शत.	19/25	14:25	व्याघा.	30/50	18:59	कौलव	11:54	तैतिल	24:44	06:39	17:31	27/10		17	अक्षयनवमी, कूष्माण्डनवमी, सतयुगादि, विष्णुत्रिरात्रव्रत, धात्रीपूजन, अयोध्या मथुरा परिक्रमा, शतभिषा में भौमयुति के कारण मुहूर्ताभाव है,, रिक्तादोष, सिद्धि ११:५४ तक तदुपरान्त मृत्यु सूर्योदय तक।।
10	रवि	17/15	13:34	पू.भा.	24/37	16:31	हर्ष.	30/52	19:01	गर	13:34	वणिज	26:02	06:40	17:31	27/07	मीन 10:03	18	भद्रा 26:02 से, सायनसूर्यवृश्चिक में 10:57 पर, पू.भा. में व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन का मुहूर्त है।, अमृत १७:३४ तक तदुपरान्त मृत्यु/सर्वार्थसिद्धि १६:३१ से।।
11	सोम	19/33	14:30	उ.भा.	28/02	17:54	वज्र	29/30	18:29	विष्टि	14:30	बव	26:35	06:41	17:31	27/05		19	भद्रा समाप्ति 14:30 पर, हरिप्रबोधिनी, वरुथनी,देवउठनी एकादशीव्रत सर्वेषाम्, तुलसीविवाह, भीष्मपञ्चक आरम्भ, श्रीविष्णुत्रिरात्रनिवृत्ति, ✿**अनुराधा में सूर्य २५.५३ से**, उ.भा. में भद्रोपरान्त, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य, कृषिकर्म✍,
12	मङ्गल	19/57	14:40	रेवती	29/43	18:34	सिद्धि	26/42	17:22	बालव	14:40	कौलव	26:23	06:41	17:31	27/05	मेष 18:34	20	पञ्चक 18:34 तक, भौमप्रदोषव्रत,भीष्मपञ्चकव्रतारम्भ,गरुड़द्वादशी (उड़ीसा),चातुर्मास समाप्ति, १७:२२ से पूर्व रेवती में पुंसवन, सीमन्त, आभूषणादिकर्म, उग्रकर्म का मुहूर्त है। मृत्युयोग सूर्योदय तक, अमृत १४:४० तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि १८:३४ से।।
13	बुध	18/33	14:07	अश्विनी	29/30	18:30	व्यति.	22/27	15:41	तैतिल	14:07	गर	25:30	06:42	17:30	27/00		21	काशीविश्वनाथप्रतिष्ठा, श्रीमहाविष्णुपूजा, वैकुण्ठचतुर्दशी, प्रात: मणिकर्णिका स्नान, व्यतीपात के बाद रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है। **रवियोग १८:३१ से**, मृत्युयोग १४:०७ तक है।। ✍सिद्धि १४: ३० तक तदुपरान्त
14	गुरु	15/28	12:54	भरणी	27/48	17:50	वरी.	16/57	13:30	वणिज	12:54	विष्टि	24:01	06:43	17:30	26/57	वृष 23:35	22	भद्रा 12:54 से 24:01 तक, पाषाणचतुर्दशी, पूर्णिमाव्रत, त्रिपुरोत्सव तुलसी उद्यापन, पुष्करमेला, देवदीपावली ,भीष्मपञ्चकसमाप्ति, चन्द्रोदय 17:08,रिक्तादोष, सायन सूर्य धनु में १४.३१, मृत्युयोग १२:५४ तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
15	शुक्र	11/05	11:09	कृतिका	24/52	16:40	परिघ	10/25	10:53	बव	11:09	बालव	22:05	06:43	17:30	26/57		23	स्नान-दान-कार्तिकपूर्णिमा, कार्तिकव्रतोद्यापन, सत्यनारायणव्रत,गुरुनानकजयन्ती, ज.गु.निम्बार्कज., चन्द्रोदय 17:55,कृत्तिका में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म, ब्यूटीपार्लर, मृत्युयोग ११:०९ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक सर्वार्थसिद्धि १६:४० से ।।

भूमिखनन समय शुभाशुभ लक्षण- खाते यवाश्मा लभते हिरण्यं तथेष्टकायां च समृद्धिरत्र। द्रव्यं च रम्याणि सुखानि धत्ते ताम्राविधातुर्यदि तत्र वृद्धिः। भूमि खोदते समय हमें जिन जिन वस्तुओं की प्राप्ति होती है उसके अनुसार हमें शुभाशुभ लक्षण समझने चाहिए। यदि भूमि खोदते समय पत्थर मिले तो धन की वृद्धि व ईंट मिलने पर धनलाभ होता है। हड्डी,राख, बाल आदि के मिलने पर व्याधि होती है। यदि चींटी, मेढक, दीमक, आदि हों या ऐसे जीवों का बिल आदि हो तो वहाँ पर गृहस्वामी को निवास नहीं करना चाहिए। कौडी,रुई आदि से दु:ख, जली लकडी से रोग व लोह मिलने से मृत्युभय होता है। इस तरह हम जब नए घर का आरम्भ करें तब शुभाशुभ लक्षणों का विवेक कर लें।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
08	6	21	24	18	6	25	13	32	10	1	6	18	7	14	30	42	7	5	46	7	6	2	34	49	8	11	25	7	3	6	12	06
09	6	22	24	34	7	8	19	53	10	1	41	51	7	15	24	31	7	5	59	16	6	2	15	31	8	11	30	30	3	6	8	55
10	6	23	24	51	7	21	7	29	10	2	17	35	7	16	14	19	7	6	12	28	6	1	58	33	8	11	35	56	3	6	5	44
11	6	24	25	10	8	3	36	46	10	2	53	30	7	16	59	35	7	6	25	40	6	1	43	59	8	11	41	26	3	6	2	33
12	6	25	25	30	8	15	49	42	10	3	29	35	7	17	39	49	7	6	38	54	6	1	31	50	8	11	46	60	3	5	59	22
13	6	26	25	52	8	27	49	34	10	4	5	50	7	18	14	23	7	6	52	9	6	1	22	8	8	11	52	36	3	5	56	12
14	6	27	26	16	9	9	40	44	10	4	42	14	7	18	42	39	7	7	5	25	6	1	14	54	8	11	58	17	3	5	53	01
15	6	28	26	40	9	21	28	15	10	5	18	49	7	19	3	54	7	7	18	42	6	1	10	8	8	12	4	0	3	5	49	50
16	6	29	27	7	10	3	17	34	10	5	55	32	7	19	17	26	7	7	32	1	6	1	7	49	8	12	9	47	3	5	46	39
17	7	0	27	34	10	15	14	14	10	6	32	24	7	19	22	30	7	7	45	20	6	1	7	56	8	12	15	37	3	5	43	28
18	7	1	28	3	10	27	23	27	10	7	9	24	7	19	18	25	7	7	58	39	6	1	10	26	8	12	21	30	3	5	40	18
19	7	2	28	33	11	9	49	49	10	7	46	33	7	19	4	31	7	8	12	0	6	1	15	19	8	12	27	26	3	5	37	7
20	7	3	29	4	11	22	36	45	10	8	23	50	7	18	40	21	7	8	25	21	6	1	22	31	8	12	33	26	3	5	33	56
21	7	4	29	37	0	5	46	7	10	9	1	14	7	18	5	37	7	8	38	43	6	1	31	59	8	12	39	28	3	5	30	45
22	7	5	30	11	0	19	17	54	10	9	38	45	7	17	20	22	7	8	52	6	6	1	43	41	8	12	45	33	3	5	27	34
23	7	6	30	47	1	3	9	59	10	10	16	24	7	16	25	2	7	9	5	29	6	1	57	34	8	12	51	40	3	5	24	24

बलिपूजा -कृत्वैतत्सर्वमेवेह रात्रौ दैत्यपतेर्बले:। पूजां कुर्यान्नृपासाक्षाद्भूमौ मण्डलके शुभे।।
बलिमालिख्य दैत्येन्द्रं वर्णकै: पञ्चरङ्गकै:। गृहस्य मध्ये शालायां विशालायां ततोऽर्चयेत्।।
लोकश्चापि गृहस्यांत: शय्यायां शुक्लतण्डुलै:। संस्थाप्य बलिराजानं फलै: पुष्पैस्तु पूजयेत्।।
बलिराज नमस्तुभ्यं दैत्यदानववन्दित। इन्द्रशत्रोऽमराराते विष्णुसान्निध्यदो भव।।

16 नवम्बर 2018 प्रात: 05:29
कार्तिक शुक्ल 8 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 57/07/30

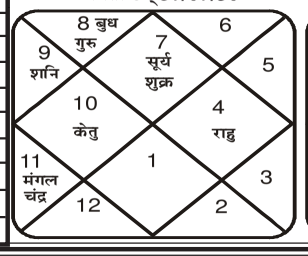

23 नवम्बर 2018 प्रात: 05:29
कार्तिक शुक्ल 15 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 56/55/00

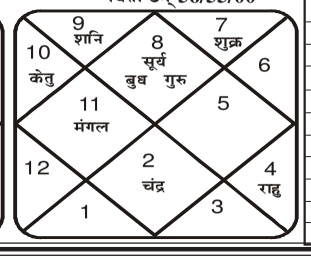

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
08	07:10:05	09:28:33	11:32:21	13:21:36	14:52:15	16:22:43	18:00:24	20:01:21	22:13:04	01:33:06	02:45:38	04:54:32
09	07:06:08	09:24:36	11:28:24	13:17:39	14:48:18	16:18:46	17:56:27	19:57:24	22:09:07	01:29:09	02:41:41	04:50:35
10	07:02:11	09:20:39	11:24:27	13:13:42	14:44:21	16:14:49	17:52:30	19:53:27	22:05:10	01:25:12	02:37:44	04:46:38
11	06:58:14	09:16:42	11:20:30	13:09:45	14:40:24	16:10:52	17:48:33	19:49:30	22:01:13	01:21:15	02:33:47	04:42:41
12	06:54:17	09:12:45	11:16:33	13:05:48	14:36:27	16:06:55	17:44:36	19:45:33	21:57:16	01:17:18	02:29:50	04:38:44
13	06:50:20	09:08:48	11:12:36	13:01:51	14:32:30	16:02:58	17:40:39	19:41:36	21:53:19	01:13:21	02:25:53	04:34:47
14	06:46:23	09:04:51	11:08:39	12:57:54	14:28:33	15:59:01	17:36:42	19:37:39	21:49:22	01:09:24	02:21:56	04:30:50
15	06:42:26	09:00:54	11:04:42	12:53:57	14:24:36	15:55:04	17:32:45	19:33:42	21:45:25	01:05:27	02:17:59	04:26:53
16	06:38:29	08:56:57	11:00:45	12:50:00	14:20:39	15:51:07	17:28:48	19:29:45	21:41:28	01:01:30	02:14:02	04:22:56
	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
17	08:53:00	10:56:48	12:46:03	14:16:42	15:47:10	17:24:51	19:25:48	21:37:31	00:57:33	02:10:05	04:18:59	06:34:32
18	08:49:03	10:52:51	12:42:06	14:12:45	15:43:13	17:20:54	19:21:51	21:33:34	00:53:36	02:06:08	04:15:02	06:30:35
19	08:45:06	10:48:54	12:38:09	14:08:48	15:39:16	17:16:57	19:17:54	21:29:37	00:49:39	02:02:11	04:11:05	06:26:38
20	08:41:09	10:44:57	12:34:12	14:04:51	15:35:19	17:13:00	19:13:57	21:25:40	00:45:42	01:58:14	04:07:08	06:22:41
21	08:37:12	10:41:00	12:30:15	14:00:54	15:31:22	17:09:03	19:10:00	21:21:43	00:41:45	01:54:17	04:03:11	06:18:44
22	08:33:15	10:37:03	12:26:18	13:56:57	15:27:25	17:05:06	19:06:03	21:17:46	00:37:48	01:50:20	03:59:14	06:14:47
23	08:29:18	10:33:06	12:22:21	13:53:00	15:23:28	17:01:09	19:02:06	21:13:49	00:33:51	01:46:23	03:55:17	06:10:50

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु (24 नवम्बर से 07 दिसम्बर 2018 ई. तक) — गुर्वस्त एवं शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01 02	शनि	05/43 59/42	09:01 30:38	रोहिणी	21/05	15:10	शिव सिद्ध	03/02 55/13	07:57 28:49	कौलव	09:01	तैतिल गर	19:49 30:38	06:44	17:30	26/55	मिथुन 26:19	24	रोहिणी में व्यापार, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, स्थिरकर्म, अमृत ०९:०१ तक, सर्वार्थसिद्धि १५:१० तक, **द्विपुष्कर** १५:०९ से ।।
03	रवि	53/25	28:07	मृगशिरा	16/42	13:26	साध्य	47/03	25:34	वणिज	17:22	विष्टि	28:07	06:45	17:30	26/52		25	भद्रा 17:22 से 28:07 तक, सौभाग्यसुन्दरी व्रत,चन्द्रोदय 19:43, मृग. में केतुवेध, सिद्धि २८:१७ तक, **द्विपुष्कर** ०६:३७ तक,।।
04	सोम	47/05	25:35	आर्द्रा	12/10	11:37	शुभ	38/50	22:17	बव	14:51	बालव	25:35	06:45	17:30	26/52	कर्क 28:16	26	संकष्टचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20:44, रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है, अमृत २५:३५ सूर्योदय तक ।।
05	मङ्गल	40/57	23:09	पुनर्वसु	07/40	09:50	शुक्ल	30/47	19:05	कौलव	12:22	तैतिल	23:09	06:46	17:30	26/50		27	पुन. में शनिवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्युयोग २३:०९ से सूर्योदय तक।। ✉पशुपक्षीमत्स्यपालन, कलात्मककार्यादि का मुहूर्त है, अमृत १६:५३ से।।
06	बुध	35/10	20:51	पुष्य आश्ले.	03/25 59/38	08:09 30:38	ब्रह्म	23/00	15:59	गर	10:00	वणिज	20:51	06:47	17:30	26/48		28	भद्रा 20:51 से, पुष्य में राहुयति, श्लेषा में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, **रवियोग** ०८:०९ से, अमृत २०:५१ तक तदुपरान्त सिद्धियोग।।
07	गुरु	29/58	18:46	मघा	56/25	29:21	ऐन्द्र	15/37	13:02	विष्टि	07:48	बव बालव	18:46 29:50	06:47	17:30	26/48	सिंह 06:38	29	भद्रा 07:48 तक, सावित्री कल्प, रुक्मणी अष्टमी, कालभैरवाष्टमी, भद्रा समाप्ति 07:48 पर, मघा में चिकित्साकार्य, ऑप्रेशन, रोगमुक्तस्नान, अमृत १८:४६ से।।
08	शुक्र	25/18	16:55	पू.फा.	53/45	28:18	वैधृति	08/40	10:16	कौलव	18:46	तैतिल	28:07	06:48	17:30	26/45		30	कालाष्टमी, पू.फा. में वैधृतिदोष के कारण मुहूर्ताभाव है,, तदुपरान्त व्यापाराम्भ, ब्यूटीपार्लर, वस्तुभूमिभवनवाहनादि कार्य, रेडीमेड उद्योग, फर्नीचरकार्य ✉
09	शनि	21/15	15:19	उ.फा.	51/43	27:30	विष्कु प्रीति	02/13 56/20	07:42 29:21	गर	16:55	वणिज	26:40	06:49	17:30	26/42	कन्या 10:04	01	भद्रा 26:40 से, उ.फा. में रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है, तदु.स्थिरकार्य, चिकित्साकार्य, फैक्ट्रीलगाने का मुहूर्त है, सिद्धि १५:१९ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सम्पूर्ण ।
10	रवि	17/58	14:01	हस्त	50/25	27:00	आयु	51/00	27:14	विष्टि	15:19	बव	25:30	06:50	17:30	26/40		02	भद्रा समाप्ति 15:19 पर, **✿ज्येष्ठा में सूर्य ३०.१४ से,** हस्त में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, गृहशोधनादि कर्म, वाटिकारोपण, शान्तिकर्म, अनुष्ठानारम्भ, कार्यसिद्धि का मुहूर्त है, कृषिकर्म, अमृत १४:०१ तक तदुपरान्त मृत्यु सूर्योदय तक।।
11	सोम	15/25	13:00	चित्रा	49/57	26:49	सौभा	46/20	25:22	बालव	14:01	कौलव	24:40	06:50	17:30	26/40	तुला 14:52	03	उत्पन्ना एकादशी सर्वेषाम्, चित्रा में जातकर्म, नामकरण, व्यापाररम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, कृषि, वास्तुकर्म, पशुपक्षामत्स्यादिपालन, दुग्धजलादि का व्यवसाय, चरकार्य, वाटिकावृक्षादिरोपण, अनुष्ठानारम्भ, पुराणश्रवणादि का मुहूर्त है, सिद्धि १३:०० तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।
12	मङ्गल	13/42	12:20	स्वाती	50/20	26:59	शोभ	42/20	23:47	तैतिल	13:00	गर	24:11	06:51	17:30	26/37		04	भौमप्रदोष, गुरूदय 18:50 पूर्व में, स्वाती में भौमवेध, अमृत १२:२०तक तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
13	बुध	12/58	12:03	विशाखा	51/45	27:34	अति	39/07	22:31	वणिज	12:20	विष्टि	24:07	06:52	17:30	26/35	वृश्चि 21:23	05	भद्रा 12:20 से 24:07 तक, मासशिवरात्रि, चन्द्रोय 20:50, मासान्तदोष, मृत्युयोग १२:०३ तक।।
14	गुरु	13/20	12:12	अनुराधा	54/18	28:35	सुक	36/50	21:36	शकुनि	12:03	चतुष्पद	24:31	06:52	17:30	26/35		06	श्राद्धादि अमा., मासान्तदोष, ज्येष्ठा में राहुवेध, मृत्यु १२:१२ तक तदुपरान्त सिद्धि/सर्वार्थसिद्धि २८:३५ तक।।
30	शुक्र	14/53	12:50	ज्येष्ठा	58/03	30:06	धृति	35/30	21:05	नाग	12:12	किंस्तु.	25:25	06:53	17:30	26/33	धनु 30:06	07	स्नानदानादि अमा., मूल में शनियुति, मासान्तदोष, सिद्धि १२:५० से ।।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

करमाला - अनामिकामूलमारभ्य कनिष्ठादित एव च। तर्जनीमध्यपर्यन्तमष्टपर्वसु संजपेत् । । प्रातः कर्म- ब्राह्मेकाले समुत्थाय गणेशादीन्स्मरेत्ततः। प्रातः स्तोत्रं मंगलानि पठित्वा शौचमाचरेत्। । प्रातः दर्शनीय- श्रोत्रियं सुभगां गाञ्च अग्निमग्निचितं तथा। प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते। यज्ञोपवीत नियम- मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे वसन्तिमनरब्रवीत्। मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे बामकर्णके। उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतवत्। । मलमूत्रं त्यजेद् विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्। उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा। । मौनकर्म- पुरीषे मैथुने होमे प्रस्रावे दन्तधावने। स्नानभोजनजाप्येषु सदामौनं समाचरेत्। (कर्मठगुरु)

संकल्प- संकल्चमूल कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतं नियमधर्मौ च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः। । चंदन नियम- ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत्। अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम्। । मृद्भस्म चन्दनं प्रोक्तं तोयं चैव चतुर्थकम्। गायत्रीजप- अष्टोत्तरशतं नित्यमष्टाविंशतिरेव वा। विधिना दशकं वापि त्रिकालेषु जपेद्बुधः। न स द्विजो यो न करोति सन्ध्यां, सन्ध्या न सा या मनसा विशुद्धम्। शुद्धिर्न सा यत्र सत्यमस्ति सत्यन्न तन्निर्भयता न यत्र। (कर्मठगुरु)

विवाह में सपिण्ड निषेध

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने । मनु कहतें हैं कि जो कन्या माता या पिता से असपिण्ड (सात पीढी तक न हो) हो, पिता के गोत्र की न हो ऐसी कन्या के साथ ही विवाह करना चाहिए। **लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्।।** मत्स्यपराण में कहा है कि सातपीढी तक सापिण्ड रहता है । गुरु और शिष्य आदि का भी श्राद्धदेवता होने से सापिण्ड है। वसिष्ठ के अनुसार - **पञ्चमीं सप्तमीं चैव मातृतः पितृतस्तथा ।** अर्थात् माता से पांचवी और पिता से सातवी पंक्ति में विवाह ग्राह्य है ।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
24	7	7	31	24	1	17	18	22	10	10	54	9	7	15	20	31	7	9	18	52	6	2	13	33	8	12	57	51	3	5	21	13
25	7	8	32	2	2	1	37	52	10	11	32	1	7	14	8	15	7	9	32	15	6	2	31	36	8	13	4	4	3	5	18	2
26	7	9	32	42	2	16	2	47	10	12	9	60	7	12	50	10	7	9	45	39	6	2	51	38	8	13	10	20	3	5	14	51
27	7	10	33	23	3	0	27	54	10	12	48	4	7	11	28	40	7	9	59	2	6	3	13	37	8	13	16	38	3	5	11	40
28	7	11	34	6	3	14	49	4	10	13	26	15	7	10	6	23	7	10	12	27	6	3	37	27	8	13	22	59	3	5	8	30
29	7	12	34	51	3	29	3	24	10	14	4	32	7	8	46	8	7	10	25	51	6	4	3	6	8	13	29	22	3	5	5	19
30	7	13	35	37	4	13	9	12	10	14	42	55	7	7	30	34	7	10	39	15	6	4	30	30	8	13	35	48	3	5	2	8
01	7	14	36	25	4	27	5	37	10	15	21	23	7	6	22	2	7	10	52	39	6	4	59	34	8	13	42	15	3	4	58	57
02	7	15	37	14	5	10	52	8	10	15	59	57	7	5	22	29	7	11	6	2	6	5	30	15	8	13	48	46	3	4	55	46
03	7	16	38	5	5	24	28	15	10	16	38	37	7	4	33	15	7	11	19	26	6	6	2	29	8	13	55	18	3	4	52	36
04	7	17	38	57	6	7	53	19	10	17	17	23	7	3	55	11	7	11	32	49	6	6	36	13	8	14	1	53	3	4	49	25
05	7	18	39	50	6	21	6	24	10	17	56	13	7	3	28	37	7	11	46	11	6	7	11	22	8	14	8	29	3	4	46	14
06	7	19	40	45	7	4	6	32	10	18	35	9	7	3	13	27	7	11	59	33	6	7	47	55	8	14	15	8	3	4	43	3
07	7	20	41	40	7	16	52	56	10	19	14	10	7	3	9	16	7	12	12	55	6	8	25	46	8	14	21	48	3	4	39	52

रविवार को त्याज्य वस्तु- क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। नष्टवस्तु विचार - तिथिवारं च नक्षत्र लग्नं वह्नि विमिश्रितम्। पञ्चभिस्तुहरेत् भागं शेषं तत्त्वं विनिर्दिशेत्। पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयमप्सु व्योम्नि च लभ्यते। तेजस्सु राजसाज्ज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत्। अर्थात् प्रश्न की तिथि वार नक्षत्र व लग्न को जोड़कर ३ मिलाकर ५ का भाग दें। १ बचे तो पृथ्वी में २ बचे तो जल में, ३ बचे तो आकाश में (ऊपर किसी स्थान में) ४ बचे तो अग्नि अथवा धूप के स्थान में, ० शेष में निर्जन स्थान में वस्तु कहनी चाहिए।

30 नवम्बर 2018 प्रात: 05:29
मार्गशीर्ष कृष्ण 8 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 56/42/30

07 दिसम्बर 2018 प्रात: 05:29
मार्गशीर्ष कृष्ण 30 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 56/30/00

भैरव विशेष - कृत्वा च विविधां पूजां महासम्भारविस्तरैः। नरो मार्गासिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्नमुत्सृजेत्। तीर्थे कालोदके स्नात्वा कृत्वा तर्पणमत्वरः। विलोक्य कालराजानं निरयादुद्धरेत्पितृन्। इस प्रकार भैरवाष्टमी पर्व में कालोदक तीर्थ में स्नान करने के बाद कालराज भैरव का पूजन करने से व रात्रिजागरण पूर्वक् व्रत करने से वर्ष भर के विघ्न दूर होते है। **आठ महाद्वादशी -** शुद्धाधिकैकादशीयुता द्वादशी उन्मीलनी संज्ञा। द्वादश्येव शुद्धाधिका वर्द्धते चेत्सा वञ्जुली। वासरत्रयस्पर्शिनी त्रिस्पृशा। अग्रे पर्वणः सम्पूर्णा धिकत्वे पक्षवर्द्धिनी। पुष्यर्क्षयुता जया। श्रवणयुता विजया। पुनर्वसुयुता जयन्ती। रोहिणीयुता पापनाशिनी।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
24	08:25:21	10:29:09	12:18:24	13:49:03	15:19:31	16:57:12	18:58:09	21:09:52	00:29:54	01:42:26	03:51:20	06:06:53
25	08:21:24	10:25:12	12:14:27	13:45:06	15:15:34	16:53:15	18:54:12	21:05:55	00:25:57	01:38:29	03:47:23	06:02:56
26	08:17:27	10:21:15	12:10:30	13:41:09	15:11:37	16:49:18	18:50:15	21:01:58	00:22:00	01:34:32	03:43:26	05:58:59
27	08:13:30	10:17:18	12:06:33	13:37:12	15:07:40	16:45:21	18:46:18	20:58:01	00:18:03	01:30:35	03:39:29	05:55:02
28	08:09:33	10:13:21	12:02:36	13:33:15	15:03:43	16:41:24	18:42:21	20:54:04	00:14:06	01:26:38	03:35:32	05:51:05
29	08:05:36	10:09:24	11:58:39	13:29:18	14:59:46	16:37:27	18:38:24	20:50:07	00:10:09	01:22:41	03:31:35	05:47:08
30	08:01:39	10:05:27	11:54:42	13:25:21	14:55:49	16:33:30	18:34:27	20:46:10	00:06:12	01:18:44	03:27:38	05:43:11
01	07:57:42	10:01:30	11:50:45	13:21:24	14:51:52	16:29:33	18:30:30	20:42:13	00:02:15	01:14:47	03:23:41	05:39:14
02	07:53:45	09:57:33	11:46:48	13:17:27	14:47:55	16:25:36	18:26:33	20:38:16	23:58:18	01:10:50	03:19:44	05:35:17
03	07:49:48	09:53:36	11:42:51	13:13:30	14:43:58	16:21:39	18:22:36	20:34:19	23:54:21	01:06:53	03:15:47	05:31:20
04	07:45:51	09:49:39	11:38:54	13:09:33	14:40:01	16:17:42	18:18:39	20:30:22	23:50:24	01:02:56	03:11:50	05:27:23
05	07:41:54	09:45:42	11:34:57	13:05:36	14:36:04	16:13:45	18:14:42	20:26:25	23:46:27	00:58:59	03:07:53	05:23:26
06	07:37:57	09:41:45	11:31:00	13:01:39	14:32:07	16:09:48	18:10:45	20:22:28	23:42:30	00:55:02	03:03:56	05:19:29
07	07:34:00	09:37:48	11:27:03	12:57:42	14:28:10	16:05:51	18:06:48	20:18:31	23:38:33	00:51:05	02:59:59	05:15:32

व्यतिपातनिर्णय

श्रवणाश्विधनिष्ठाद्रा-नागदैवतमस्तवैः। यद्यामा रविवारेण व्यतीपातः स उच्यते। वृद्धमनु का कथन है कि - श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, मृगशीर्ष, नक्षत्र यदि अमावास्या और रविवार से युत हो तो उसे व्यतिपात कहेतें है। किसीके मत से मृगशिरा का प्रथम पाद लेना चाहिए ।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01	शनि	17/45	14:00	मूल	00	00	शूल	35/07	20:57	बव	14:00	बालव	26:50	06:54	17:31	26/33		08
02	रवि	21/57	15:41	मूल	03/02	08:07	गण्ड	35/45	21:12	कौलव	15:41	तैतिल	28:45	06:54	17:31	26/33		09
03	सोम	27/18	17:50	पू.षा.	09/15	10:37	वृद्धि	37/13	21:48	गर	17:50	--	–	06:55	17:31	26/30	मकर 17:18	10
04	मङ्गल	33/37	20:22	उ.षा.	16/25	13:29	ध्रुव	39/20	22:39	वणिज	07:06	विष्टि	20:22	06:55	17:31	26/30		11
05	बुध	40/25	23:06	श्रवण	24/10	16:36	व्याघा.	41/47	23:39	बव	09:44	बालव	23:06	06:56	17:32	26/30	कुंभ 30:11	12
06	गुरु	47/10	25:49	धनिष्ठा	32/00	19:45	हर्ष.	44/10	24:37	कौलव	12:27	तैतिल	25:49	06:57	17:32	26/28		13
07	शुक्र	53/17	28:16	शत.	39/22	22:42	वज्र	46/08	25:24	गर	15:02	वणिज	28:16	06:57	17:32	26/28		14
08	शनि	58/07	30:13	पू.भा.	45/40	25:14	सिद्धि	47/10	25:50	विष्टि	17:14	बव	30:13	06:58	17:33	26/28	मीन 18:39	15
09	रवि	00	00	उ.भा.	50/25	27:08	व्यति.	47/03	25:47	बालव	18:51	--	–	06:58	17:33	26/28		16
09	सोम	01/15	07:29	रेवती	53/15	28:17	वरी.	45/23	25:08	कौलव	07:29	तैतिल	19:43	06:59	17:33	26/25	मेष 28:17	17
10	मङ्गल	02/22	07:57	अश्विनी	54/05	28:38	परिघ	42/05	23:50	गर	07:57	वणिज	19:46	07:00	17:34	26/25		18
11 12	बुध	01/27 58/35	07:35 30:26	भरणी	53/00	28:12	शिव	37/18	21:55	विष्टि	07:35	बव बालव	19:00 30:26	07:00	17:34	26/25		19
13	गुरु	53/55	28:35	कृतिका	50/08	27:04	सिद्ध	31/00	19:25	कौलव	17:30	तैतिल	28:35	07:01	17:35	26/25	वृष 09:58	20
14	शुक्र	47/50	26:09	रोहिणी	45/53	25:22	साध्य	23/27	16:24	गर	15:22	वणिज	26:09	07:01	17:35	26/25		21
15	शनि	40/40	23:18	मृगशिरा	40/33	23:15	शुभ	14/55	13:00	विष्टि	12:43	बव	23:18	07:02	17:36	26/25	मिथुन 12:21	22

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु (08 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2018 ई. तक)

गुरु का पूर्वोदय ८ दिसम्बर में एवं शुक्र पूर्व में

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) — दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

08 अमृत १४:०० तक,मूल में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है, कृषिकर्म, मूलदोष व शान्ति।। ✉ शिल्पकला, नृत्यगीतारम्भादि कार्य का मुहूर्त है, अमृत २३:०६ से सूर्योदय तक ।।

09 रम्भाव्रत, पू.षा. में सामान्यकर्म, मूलदोष व शान्ति, सिद्धि १५:४१ से।।

10 उ.षा. में पू.षा, में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, उ.षा. में केतुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है, **रवियोग १०:३६ से।।**

11 भद्रा 07:06 से 20:22 तक, विनायक चतुर्थी, अंगारकीचतुर्थीव्रत, रिक्तादोष व केतुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है।।

12 पंचक १६:३६ से, रामविवाहोत्सव, नागपञ्चमी, श्रवण में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, वस्तुभमिभवनवाहन क्रयविक्रय,प्रिण्टिंग, लेखनादिकार्यारम्भ ✉

13 स्कन्दषष्ठी, संहारषष्ठी, मल्लारषष्ठी, चम्पाषष्ठी (महाराष्ट्र)सुब्रह्मण्यम् षष्ठी (द.भा.), धनि. में जातकर्म, नामकरण, वस्त्राभूषण, वस्तुभमिभवनवाहनादिकर्म ।।

14 भद्रा 28:16 से, नन्दासप्तमी, मित्रसप्तमी, व्यापारारम्भ,शतभिषा में व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म, मृत्यु १८:१६ तक।।

15 भद्रा समाप्ति 17:14 पर, दुर्गाष्टमी, पू.भा. में भौमयुति व्यतीपात दोष, सिद्धि ३०:१३ से सूर्योदय तक।।

16 महानवमीव्रत, कल्पादि ९, **☼सूर्य धनु प्रवेश ०९:०९, पुण्यकाल १५:०९ तक, ☼ मूल में सूर्य ०९.१० से**, उ.भा.रिक्तादोष, रवियोग १:१३ से,सर्वार्थसिद्धि २७:०८ तक।।

17 पंचक २८:१७ तक, रिक्तोपरान्त रेवती में जातकर्म, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म, कृषिकर्म, **रवियोग ०३:७ से**, अमृत ०७:२९ से।।

18 भद्रा 19:46 से, अश्विनी में रोगमुक्तस्नान, ऑप्रेशन, उग्रकर्म, मृत्यु ०७:५७ से सर्वार्थसिद्धि ३०:२६ तक।।

19 भद्रा समाप्ति 07:35 पर, मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती, बैकुण्ठ एकादशी, भरणी में रसायनकर्म, ऑप्रेशन, अमृत ०७:३५ से तदुपरान्त सिद्धि ३०:२६ तक, सर्वार्थसिद्धि २८:१२ से ।।

20 कृत्तिका में व्यापारारम्भ, अग्निकार्य, धान्यच्छेदन, मशीनलगाना, अमृत २८:३५ तक तदुपरान्त मृत्युयोग सूर्योदय तक।।

21 भद्रा 26:09 से, रिक्तादोष, चन्द्रोदय 16:32, सायन सूर्य मकर में २७.५३, **रवियोग ०३:०५ से**, अमृत २६:०९ तक।।

22 भद्रा समाप्ति 12:43, व्रत व स्नान दान मार्गशीर्ष पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत, काशी पिशाच मोचनयात्रा-दर्शन-तर्पण, चन्द्रोदय 17:27, मृग. में केतुवेध, मृत्यु २३:१८ तदु.अमृत सूर्यो.तक।।

भूमि के शुभाशुभ लक्षण- दक्षिणे पश्चिमें चैव नैऋतौ वायुकोणके। एभिरुच्चाभेवद्भूमि: गजपृष्ठाभिधीयते।। मध्ये तूच्चं भवेद्यत्र नीचं चैव चतुर्दिशम्। कूर्मपृष्ठाभवेद्भूमि: तत्र वास: शुभप्रद:। पूर्वाग्निशम्भुकोणेषु भूमौ यद्युन्नतिर्भवेत्। पश्चिमे च यदा नीचं दैत्यपृष्ठाऽभिधीयते।।पूर्वपश्चिमयोर्दैर्घ्यं दक्षिणोत्तर उच्चता। नागपृष्ठं विजानीयात् कर्तुरुच्चाटनं भवेत्।।

भूमि	ऊँचाई-निचाई-दिशा	फल
गजपृष्ठ	दक्षिण पश्चिम, नैर्ऋत्य एवं वायव्य में ऊँची	आयुवृद्धि धनलाभ
कर्मपृष्ठ	मध्य से ऊँची और चारों ओर नीची	उत्साह, धनवृद्धि
दैत्य पृष्ठ	पूर्व, ईशान एवं आग्नेय में ऊँची तथा पश्चिम में नीची	धन, पुत्र एवं पशुओं की हानि
नागपृष्ठ	पूर्व पश्चिम की ओर लम्बी उत्तर-दक्षिण में ऊँची और मध्य में नीची	पत्नी हानि, पुत्र हानि एवं शत्रुवृद्धि

अन्य लक्षण- पश्चिम में ऊँची-पूर्व में नीची शुभ, पूर्व में ऊँची-पश्चिम में नीची अशुभ, उत्तर में ऊँची-दक्षिण में नीची अशुभ, दक्षिण में ऊँची-उत्तर में नीची शुभ होती है।गृहसमीप शुभ वृक्ष- पूर्व में वट, आग्नेय में अनार, दक्षिण में गूलर, नैऋत्य में इमली, दक्षिण में जामुन व कदम्ब, वायव्य में बेल, उत्तर में पाकर, ईशान में आँवला ईशान-पूर्व में कटहल व आम शुभदायक होता है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
08	7	21	42	37	7	29	25	20	10	19	53	16	7	3	15	28	7	12	26	15	6	9	4	54	8	14	28	30	3	4	36	42
09	7	22	43	35	8	11	44	8	10	20	32	27	7	3	31	15	7	12	39	35	6	9	45	16	8	14	35	14	3	4	33	31
10	7	23	44	33	8	23	50	41	10	21	11	42	7	3	55	48	7	12	52	54	6	10	26	47	8	14	42	0	3	4	30	20
11	7	24	45	33	9	5	47	13	10	21	51	1	7	4	28	14	7	13	6	12	6	11	9	26	8	14	48	48	3	4	27	9
12	7	25	46	33	9	17	36	55	10	22	30	25	7	5	7	44	7	13	19	28	6	11	53	10	8	14	55	36	3	4	23	58
13	7	26	47	33	9	29	23	42	10	23	9	53	7	5	53	30	7	13	32	44	6	12	37	56	8	15	2	27	3	4	20	47
14	7	27	48	35	10	11	12	9	10	23	49	24	7	6	44	48	7	13	45	58	6	13	23	43	8	15	9	18	3	4	17	37
15	7	28	49	36	10	23	7	16	10	24	28	60	7	7	40	59	7	13	59	11	6	14	10	27	8	15	16	12	3	4	14	26
16	7	29	50	39	11	5	14	14	10	25	8	38	7	8	41	25	7	14	12	22	6	14	58	7	8	15	23	6	3	4	11	15
17	8	0	51	41	11	17	38	1	10	25	48	20	7	9	45	36	7	14	25	32	6	15	46	40	8	15	30	1	3	4	8	4
18	8	1	52	44	0	0	23	4	10	26	28	6	7	10	53	3	7	14	38	40	6	16	36	5	8	15	36	58	3	4	4	54
19	8	2	53	48	0	13	32	40	10	27	7	54	7	12	3	21	7	14	51	47	6	17	26	19	8	15	43	56	3	4	1	43
20	8	3	54	52	0	27	8	24	10	27	47	45	7	13	16	9	7	15	4	52	6	18	17	21	8	15	50	54	3	3	58	32
21	8	4	55	56	1	11	9	40	10	28	27	39	7	14	31	8	7	15	17	55	6	19	9	10	8	15	57	54	3	3	55	21
22	8	5	57	1	1	25	33	23	10	29	7	35	7	15	48	2	7	15	30	56	6	20	1	43	8	16	4	54	3	3	52	10

दत्तात्रेयजयन्ती -मार्गशीर्षे तथा मासि दशमेह्नि सुनिर्मिले। मृगशीर्षयुते पौर्णमास्यां यज्ञस्य वासरे।। जनयामास दैदीप्यमानं पुत्रं सती शुभम्।। तं विष्णुमागतं ज्ञात्वा अत्रिर्नामा करोत्स्वयम्।। दत्तवान् स्वस्य पुत्रत्वाद्दत्तात्रेय इतीश्वर:।। पिशाचमोचनश्राद्ध - मार्गशीर्ष चतुर्दश्यां पिशाचमोचनतीर्थे श्राद्धम्। मार्ग शुक्ल चतुर्दशी में पिशाचमोचन तीर्थ काशी में श्राद्ध करने का विशेष फल है। यह श्राद्ध एकोद्दिष्ट होता है जिसमें अज्ञात मित्र, बन्धु या आत्मीय लोगों के कल्याण के लिए पिण्डदान किया जाता है। जिससे हमें सदैव प्रसन्नता होती है।

15 दिसम्बर 2018 प्रात: 05:29
मार्गशीर्ष शुक्ल 8 शनिवार
पंक्तीष्टम् 56/17/30

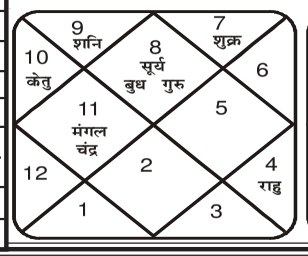

22 दिसम्बर2018 प्रात: 05:29
मार्गशीर्ष शुक्ल 15 शनिवार
पंक्तीष्टम् 56/07/30

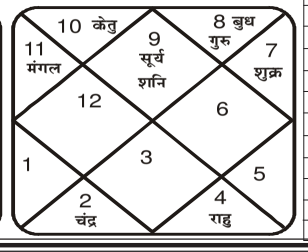

नाग पञ्चमी - शुक्लामार्गगिरेपुण्या श्रावणे या च पञ्चमी स्नानदानै: बहुफला नागलोक प्रदायिनी। पञ्चमीनागपूजायां कार्या षष्ठी समन्विता तस्यां तु तुषिता नागा इतरा स चतुर्थिका। **चम्पाषष्ठी** - मार्गे भाद्रपदे शुक्ला षष्ठी वैधृति संयुता। रविवारेण संयुक्ता सा चम्पेतीह कीर्तिता।। **स्कन्दमन्त्र** - सेनाविदारक स्कन्द महासेन महाबल। रुद्रोमाग्निज षड्वक्त्र गङ्गागर्भ नमोऽस्तुते।। अनेन स्कन्दं समर्चयेत्।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
08	07:30:03	09:33:51	11:23:06	12:53:45	14:24:13	16:01:54	18:02:51	20:14:34	23:34:36	00:47:08	02:56:02	05:11:35
09	07:26:06	09:29:54	11:19:09	12:49:48	14:20:16	15:57:57	17:58:54	20:10:37	23:30:39	00:43:11	02:52:05	05:07:38
10	07:22:09	09:25:57	11:15:12	12:45:51	14:16:19	15:54:00	17:54:57	20:06:40	23:26:42	00:39:14	02:48:08	05:03:41
11	07:18:12	09:22:00	11:11:15	12:41:54	14:12:22	15:50:03	17:51:00	20:02:43	23:22:45	00:35:17	02:44:11	04:59:44
12	07:14:15	09:18:03	11:07:18	12:37:57	14:08:25	15:46:06	17:47:03	19:58:46	23:18:48	00:31:20	02:40:14	04:55:47
13	07:10:18	09:14:06	11:03:21	12:34:00	14:04:28	15:42:09	17:43:06	19:54:49	23:14:51	00:27:23	02:36:17	04:51:50
14	07:06:21	09:10:09	10:59:24	12:30:03	14:00:31	15:38:12	17:39:09	19:50:52	23:10:54	00:23:26	02:32:20	04:47:53
15	07:02:24	09:06:12	10:55:27	12:26:06	13:56:34	15:34:15	17:35:12	19:46:55	23:06:57	00:19:29	02:28:23	04:43:56
16	06:58:27	09:02:15	10:51:30	12:22:09	13:52:37	15:30:18	17:31:15	19:42:58	23:03:00	00:15:32	02:24:26	04:39:59
	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
17	08:58:18	10:47:33	12:18:12	13:48:40	15:26:21	17:27:18	19:39:01	22:59:03	00:11:35	02:20:29	04:36:02	06:54:30
18	08:54:21	10:43:36	12:14:15	13:44:43	15:22:24	17:23:21	19:35:04	22:55:06	00:07:38	02:16:32	04:32:05	06:50:33
19	08:50:24	10:39:39	12:10:18	13:40:46	15:18:27	17:19:24	19:31:07	22:51:09	00:03:41	02:12:35	04:28:08	06:46:36
20	08:46:27	10:35:42	12:06:21	13:36:49	15:14:30	17:15:27	19:27:10	22:47:12	23:59:44	02:08:38	04:24:11	06:42:39
21	08:42:30	10:31:45	12:02:24	13:32:52	15:10:33	17:11:30	19:23:13	22:43:15	23:55:47	02:04:41	04:20:14	06:38:42
22	08:38:33	10:27:48	11:58:27	13:28:55	15:06:36	17:07:33	19:19:16	22:39:18	23:51:50	02:00:44	04:16:17	06:34:45

मार्गशीर्ष में रविवार व्रत- मार्गादिरविवारेषु काम्यं व्रतमुक्तं हेमाद्रौ। तत्र भक्ष्याण्युक्तानि संग्रहे - पत्रात्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथघृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोय-अञ्जलीनांत्रिमरिचकमथो त्रि: पला: सक्तव: स्यु: गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।।

पौष कृष्णपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु (23 दिसम्बर 2018 से 05 जनवरी 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01	रवि	32/55	20:12	आर्द्रा	34/33	20:51	शुक्ल ब्रह्म	05/42 56/08	09:19 29:29	बालव	09:45	कौलव तैतिल	20:12 30:35	07:02	17:36	26/25		23	आर्द्रा में शनिवेध, त्रिपुष्कर २०:५१ से, मृत्यु २०:१२ तक।।
02	सोम	24/50	16:59	पुनर्वसु	28/18	18:22	ऐन्द्र	46/25	25:37	गर	16:59	वणिज	27:23	07:03	17:37	26/25	कर्क 12:59	24	भद्रा आरम्भ २७:१३ से, पुन. में सामान्यकार्य, पुरातनकार्य, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, त्रिपुष्कर ०७:०३ तक मृत्युयोग १६:५९तक, सर्वार्थसिद्धि १८:२२ से।।
03	मङ्गल	16/53	13:48	पुष्य	22/10	15:55	वैधृति	36/55	21:49	विष्टि	13:48	बव	24:17	07:03	17:37	26/25		25	भद्रा समाप्ति 13:48 पर, संकष्टहर चतुर्थी, चन्द्रोदय 20:38। पुष्य में वैधृतिदोष, सिद्धि १३:४८ तक।।
04	बुध	09/20	10:47	आश्ले.	16/33	13:40	विष्कु	27/53	18:12	बालव	10:47	कौलव	21:25	07:03	17:38	26/28	सिंह 13:39	26	प्रदोषव्रत, अखण्ड द्वादशी, मत्स्या द्वादशी, पाषाणचतुर्दशी, हनुमद् व्रत। चन्द्रोदय 21:43, श्लेषा में रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान कार्य, ।।
05 06	गुरु	02/28 56/38	08:03 29:43	मघा	11/32	11:41	प्रीति	19/28	14:51	तैतिल	08:03	गर वणिज	18:53 29:43	07:04	17:38	26/25		27	भद्रा आरम्भ २९:४३, धरणीव्रत। मघा में अग्निकार्य, मशीनलगाना, धान्यच्छेदन, ऑप्रेशन, रवियोग ११:४१ से, सिद्धि ०८:०३ तक,।।
07	शुक्र	51/55	27:50	पू.फा.	07/38	10:07	आयु	11/53	11:49	विष्टि	16:46	बव	27:50	07:04	17:39	26/27	कन्या15:47	28	भद्रा समाप्ति 16:46 से, पू.फा. में ब्यूटीपार्लर, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, व्यापारारम्भ, मृत्युयोग २७:५० तक,।।
08	शनि	48/25	26:27	उ.फा.	04/47	09:00	सोभा शोभ	05/12 57/08	09:10 30:56	बालव	18:08	कौलव	26:27	07:05	17:39	26/25		29	अष्टकाश्राद्ध, कालाष्टमी, पूपाष्टमी, ✿ **पूषा में सूर्य ११:२७ से,** उ.फा. में वस्त्राभूषण, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकार्य, सिद्धि २६:२७ से सूर्यो.तक,।।
09	रवि	46/15	25:35	हस्त	03/18	08:24	अति	55/02	29:06	तैतिल	14:01	गर	25:35	07:05	17:40	26/28	तुला 20:17	30	अन्वष्टकाश्राद्ध, हस्त में रिक्तादोष, अमृत २५:३५ से सूर्यो. तक, सर्वार्थसिद्धि ०८:२४ तक,।।
10	सोम	45/28	25:16	चित्रा	03/02	08:18	सुक	51/30	27:41	वणिज	13:25	विष्टि	25:16	07:05	17:41	26/30		31	भद्रा 13:25 से 25:16 तक, आंग्ल वर्ष २०१८ समाप्त। चित्रा में पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकार्य, अमृत २५:२६ तदुप. सिद्धि सूर्यो.तक,।।
11	मङ्गल	45/57	25:29	स्वाती	04/05	08:44	धृति	48/58	26:41	बव	13:22	बालव	25:29	07:06	17:41	26/28	वृश्चि 27:23	01	सफला एकादशी, आंग्ल नववर्ष २०१९ आरम्भ, स्वाती में उग्रकार्य, ऑप्रेशन, मृत्युयोग २५:२४ तक,।।
12	बुध	47/43	26:11	विशाखा	06/22	09:39	शूल	47/23	26:03	कौलव	13:50	तैतिल	26:11	07:06	17:42	26/30		02	विशाखा में अग्निकार्य, रासायनिककार्य, धान्यच्छेदन, त्रिपुष्कर १:२८ से ०७:०६ तक, सिद्धि २६:११ तदुप.मृत्युयोग सूर्यो. तक,।।
13	गुरु	50/38	27:21	अनुराधा	09/53	11:03	गण्ड	46/43	25:47	गर	14:46	वणिज	27:21	07:06	17:42	26/30		03	भद्रा 27:21 से, प्रदोष, अनुराधा में मासान्तदोष, अमृत २७:२१ तदुप. मृत्यु सूर्यो.तक,।।
14	शुक्र	54/40	28:58	ज्येष्ठा	14/27	12:53	वृद्धि	46/50	25:50	विष्टि	16:09	शकुनि	28:58	07:06	17:43	26/33	धनु 12:53	04	भद्रा 16:09 तक, मासशिवरात्रि व्रत, मासान्तदोष, अमृत २८:५८ तक।।
30	शनि	59/37	30:58	मूल	20/00	15:07	ध्रुव	47/43	26:12	चतुष्पद	17:58	नाग	30:28	07:07	17:44	26/33		05	स्नादानश्राद्धादि/शनिअमावस्या, मासान्तदोष मृत्युयोग ३०:५८ तदुप अमृत सूर्यो.तक, ।।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

गण्डान्त जनन दोष - गण्डान्त जनन दोष तीन प्रकार का होता है - तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त और लग्नगण्डान्त। इनका विचार जन्म, यात्रा और विवाहादि कार्यों में करना चाहिए जैसा कि बृहत्पाराशर होराशास्त्र में प्राप्त होता है - **तिथिनक्षत्र लग्नानां गण्डान्तं त्रिविधं स्मृतम्। जन्म यात्रा विवाहादौ भवेत्तन्निधनप्रदम्।।**

तिथिगण्डान्त - पूर्णा तिथि की अन्तिम २ घटी तथा नन्दा तिथि की आरम्भिक २ घटी मिलाकर ४ घटी का तिथिगण्डान्त होता है। अर्थात् पूर्णिमा की अन्तिम २ घटी और प्रतिपदा की आरम्भिक २ घटी, पञ्चमी की अन्तिम २ घटी तथा षष्ठी की आरम्भिक २ घटी एवं दशमी की अन्तिम २ घटी तथा एकादशी की प्रारम्भिक २ घटी में तिथिगण्डान्त होता है। **नक्षत्र गण्डान्त -** रेवत्यन्त अश्विनी का आदि, श्लेषान्त मघा का आदि और ज्येष्ठान्त मूलादि की २-२ घटी अर्थात् ४ घटी नक्षत्र गण्डान्त होता है। **लग्न गण्डान्त -** मीन-मेष की, कर्क-सिंह की, वृश्चिक-धनु लग्न की सीमा में आधी घटी मिलाकर कुल १ घटी लग्नगण्डान्त कहा जाता है। **अभुक्तमूल जनन दोष -** पूर्वोक्त गण्डान्तों में ज्येष्ठा के अन्त की ५ घटी एवं मूल के आरम्भ की ८ घटी अभुक्त मूल कहा गया है। यह विघ्नकारक एवं अशुभफलदायक माना जाता है। अभुक्तमूल जनन दोष के बारे में ग्रन्थों में मतान्तर प्राप्त होते हैं जैसा कि रामदैवज्ञ ने मुहूर्त्तचिन्तामणि में प्रतिपादित किया है - **अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं हि नारदः। वसिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणकम्।।** अर्थात् अभुक्तमूल जनन दोष के सन्दर्भ में नारद का मत है ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम की ४ घटी और मूल के आदि की ४ घटी दोनों को मिलाकर ८ घटी अभुक्त मूल होता है। वसिष्ठ के मत में ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की १ घटी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की २ घटी दोनों की ३ घटी अभुक्तमूल जनन दोष होता है। बृहस्पति के अनुसार ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त और मूल नक्षत्र की आदि की आधी-आधी घटी दोनों मिलाकर १ घटी अभुक्तमूलजननदोष होता है। अन्य आचार्यों का मत भी प्रासंगिक है। **अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्यो मूलस्य शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः। जातं शिशुं तत्र परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत्।।** अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त्य की ८ घटी और मूल नक्षत्र की आदि की ५ घटी दोनों को मिलाकर १३ घटी अभुक्तमूल होता है। मूल व अश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का नक्षत्र चरणानुसार शुभाशुभ फल मुहूर्त्तचिन्तामणिकार ने इस प्रकार प्रतिपादित किया है - **आद्ये पिता नाशमुपैति मूले पादे द्वितीये जननी तृतीये। धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम्।।** मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में पिता का नाश होता है, द्वितीय चरण में माता का नाश होता है, तृतीय चरण में धन का नाश और चतुर्थ चरण में जन्म हो तो शुभ होता है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
23	8	6	58	6	2	10	14	6	10	29	47	33	7	17	6	37	7	15	43	55	6	20	54	58	8	16	11	55	3	3	49	00
24	8	7	59	11	2	25	4	41	11	0	27	34	7	18	26	41	7	15	56	51	6	21	48	56	8	16	18	57	3	3	45	49
25	8	9	0	17	3	9	57	17	11	1	7	37	7	19	48	3	7	16	9	46	6	22	43	33	8	16	25	59	3	3	42	38
26	8	10	1	24	3	24	44	28	11	1	47	43	7	21	10	34	7	16	22	39	6	23	38	48	8	16	33	3	3	3	39	27
27	8	11	2	31	4	9	20	11	11	2	27	50	7	22	34	7	7	16	35	29	6	24	34	41	8	16	40	6	3	3	36	16
28	8	12	3	39	4	23	40	13	11	3	7	59	7	23	58	36	7	16	48	17	6	25	31	9	8	16	47	10	3	3	33	06
29	8	13	4	47	5	7	42	17	11	3	48	11	7	25	23	55	7	17	1	3	6	26	28	12	8	16	54	15	3	3	29	55
30	8	14	5	56	5	21	25	40	11	4	28	24	7	26	49	58	7	17	13	45	6	27	25	47	8	17	1	20	3	3	26	44
31	8	15	7	5	6	4	50	51	11	5	8	40	7	28	16	43	7	17	26	26	6	28	23	55	8	17	8	25	3	3	23	33
01	8	16	8	15	6	17	59	1	11	5	48	57	7	29	44	6	7	17	39	3	6	29	22	32	8	17	15	30	3	3	20	22
02	8	17	9	25	7	0	51	40	11	6	29	16	8	1	12	3	7	17	51	38	7	0	21	39	8	17	22	36	3	3	17	12
03	8	18	10	35	7	13	30	22	11	7	9	37	8	2	40	34	7	18	4	10	7	1	21	13	8	17	29	40	3	3	14	01
04	8	19	11	46	7	25	56	40	11	7	50	0	8	4	9	35	7	18	16	38	7	2	21	15	8	17	36	46	3	3	10	50
05	8	20	12	57	8	8	11	60	11	8	30	25	8	5	39	6	7	18	29	4	7	3	21	42	8	17	43	51	3	3	7	39

पौषे मेघगर्भपुष्टि विचार:- वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपात: करकावघात:। अकालसन्ध्यापरिवेषणश्च नवप्रकारै: प्रभवन्ति गर्भा:।। **पौषमासकृत्यम् -** पौषमासे तु कौन्तेय एकभक्तेन य: क्षिपेत्। सुभगो दर्शनीयश्च यशोभागी च जायते।। (महाभारते) प्रासादनगरादीनि गृहप्रावरणानि च। नारायणस्य तुष्ट्यर्थे पौषे देयानि यत्नत:।। (वामनपुराणे)

29 दिसम्बर 2018 प्रात: 05:29
पौष कृष्ण 8 शनिवार
पंक्तीष्टम् 56/00/00

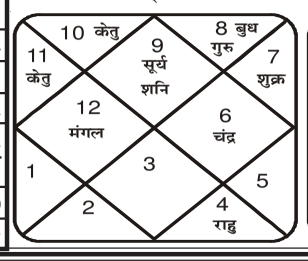

05 जनवरी 2018 प्रात: 05:29
पौष कृष्ण 30 शनिवार
पंक्तीष्टम् 55/55/00

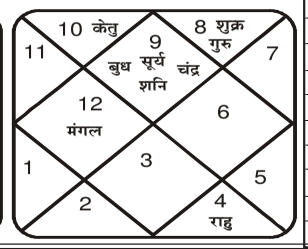

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
23	08:34:36	10:23:51	11:54:30	13:24:58	15:02:39	17:03:36	19:15:19	22:35:21	23:47:53	01:56:47	04:12:20	06:30:48
24	08:30:39	10:19:54	11:50:33	13:21:01	14:58:42	16:59:39	19:11:22	22:31:24	23:43:56	01:52:50	04:08:23	06:26:51
25	08:26:42	10:15:57	11:46:36	13:17:04	14:54:45	16:55:42	19:07:25	22:27:27	23:39:59	01:48:53	04:04:26	06:22:54
26	08:22:45	10:12:00	11:42:39	13:13:07	14:50:48	16:51:45	19:03:28	22:23:30	23:36:02	01:44:56	04:00:29	06:18:57
27	08:18:48	10:08:03	11:38:42	13:09:10	14:46:51	16:47:48	18:59:31	22:19:33	23:32:05	01:40:59	03:56:32	06:15:00
28	08:14:51	10:04:06	11:34:45	13:05:13	14:42:54	16:43:51	18:55:34	22:15:36	23:28:08	01:37:02	03:52:35	06:11:03
29	08:10:54	10:00:09	11:30:48	13:01:16	14:38:57	16:39:54	18:51:37	22:11:39	23:24:11	01:33:05	03:48:38	06:07:06
30	08:06:57	09:56:12	11:26:51	12:57:19	14:35:00	16:35:57	18:47:40	22:07:42	23:20:14	01:29:08	03:44:41	06:03:09
31	08:03:00	09:52:15	11:22:54	12:53:22	14:31:03	16:32:00	18:43:43	22:03:45	23:16:17	01:25:11	03:40:44	05:59:12
01	07:59:03	09:48:18	11:18:57	12:49:25	14:27:06	16:28:03	18:39:46	21:59:48	23:12:20	01:21:14	03:36:47	05:55:15
02	07:55:06	09:44:21	11:15:00	12:45:28	14:23:09	16:24:06	18:35:49	21:55:51	23:08:23	01:17:17	03:32:50	05:51:18
03	07:51:09	09:40:24	11:11:03	12:41:31	14:19:12	16:20:09	18:31:52	21:51:54	23:04:26	01:13:20	03:28:53	05:47:21
04	07:47:12	09:36:27	11:07:06	12:37:34	14:15:15	16:16:12	18:27:55	21:47:57	23:00:29	01:09:23	03:24:56	05:43:24
05	07:43:15	09:32:30	11:03:09	12:33:37	14:11:18	16:12:15	18:23:58	21:44:00	22:56:32	01:05:26	03:20:59	05:39:27

पौष शुक्लपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु (06 जनवरी से 21 जनवरी 2019 ई.तक) — गुरु एवं शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक
01	रवि	00	00	पू.षा.	26/30	17:43	व्याघा.	49/12	26:48	किंस्तु.	20:08	--	--	07:07	17:44	26/33	मकर 24:25	06
01	सोम	05/30	09:19	उ.षा.	33/43	20:36	हर्ष.	51/18	27:38	बव	09:19	बालव	22:36	07:07	17:45	26/35		07
02	मङ्गल	11/58	11:54	श्रवण	41/23	23:40	वज्र	53/40	28:35	कौलव	11:54	तैतिल	25:16	07:07	17:46	26/37		08
03	बुध	18/48	14:38	धनिष्ठा	49/17	26:50	सिद्धि	56/07	29:34	गर	14:38	वणिज	28:00	07:07	17:47	26/40	कुंभ 13:15	09
04	गुरु	25/38	17:22	शत.	56/58	29:54	व्यति.	58/25	30:29	विष्टि	17:22	बव	30:38	07:07	17:47	26/40		10
05	शुक्र	31/58	19:55	पू.भा.	00	00	वरी.	00	00	बालव	19:55	--	--	07:08	17:48	26/40	मीन 26:03	11
06	शनि	37/22	22:05	पू.भा.	03/57	08:43	वरी.	00/10	07:12	कौलव	09:00	तैतिल	22:05	07:08	17:49	26/42		12
07	रवि	41/25	23:42	उ.भा.	09/55	11:06	परिघ	01/07	07:35	गर	10:53	वणिज	23:42	07:08	17:49	26/42		13
08	सोम	43/43	24:37	रेवती	14/20	12:52	शिव सिद्ध	00/55 59/20	07:30 30:52	विष्टि	12:09	बव	24:37	07:08	17:50	26/45	मेष 12:52	14
09	मङ्गल	44/02	24:45	अश्विनी	17/00	13:56	साध्य	56/13	29:37	बालव	12:41	कौलव	24:45	07:08	17:51	26/48		15
10	बुध	42/20	24:04	भरणी	17/40	14:12	शुभ	51/28	27:43	तैतिल	12:24	गर	24:04	07:08	17:52	26/50	वृष 20:08	16
11	गुरु	38/35	22:34	कृतिका	16/20	13:40	शुक्ल	45/13	25:13	वणिज	11:19	विष्टि	22:34	07:08	17:52	26/50		17
12	शुक्र	33/05	20:22	रोहिणी	13/12	12:25	ब्रह्म	37/32	22:09	बव	09:28	बालव कौलव	20:22 30:58	07:08	17:53	26/52	मिथुन 23:32	18
13	शनि	26/05	17:34	मृगशिरा	08/28	10:31	ऐन्द्र	28/40	18:36	तैतिल	17:34	गर	27:56	07:08	17:54	26/55		19
14	रवि	18/00	14:19	आर्द्रा पुनर्वसु	02/30 55/38	08:07 29:22	वैधृति	18/58	14:42	वणिज	14:19	विष्टि	24:32	07:07	17:54	26/57	कर्क 24:05	20
15 01	सोम	09/08 59/55	10:46 31:05	पुष्य	48/20	26:27	विष्कु प्रीति	08/35 57/55	10:33 30:17	बव	10:46	बालव कौलव	20:55 31:05	07:07	17:55	27/00		21

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
06	पू.षा. में सूर्ययुति, मृत्युयोग सम्पूर्ण, सर्वार्थसिद्धि १७:४३ से,।।
07	शुक्रास्त 08:38 पूर्व में। उ.षा. में जातकर्म,नामकरण, अन्नप्राशन, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म, वस्त्राभूषण, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य, जलीयकार्य। सिद्धि ९:१९ तदुप.मृत्युयोग सूर्यो. तक।।
08	पंचक २३:४० से, प्रदोषव्रत, धनुसंक्रान्ति 27:01, श्रवण में पुंसवन, सीमन्त, उग्रकार्य, ऑप्रेशन, **रवियोग २३:४० से**, अमृत ११:५९ तदुप. सिद्धियोग।।
09	भद्रा 28:00 से, पुण्यकाल मध्याह्न तक। वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी। धनि. में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणादिकर्म, व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, चिकित्साकर्म, मृत्युयोग ४:३८।।
10	भद्रा 17:22 तक, शत. में रिक्ता व व्यतीपात दोष, मृत्यु योग १७:२२ तदुप.सिद्धि।।
11	✿ **उषा में सूर्य १३.२१ से**, पू.भा. में व्यापारारम्भ, ब्यूटीपार्लर, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, **रवियोग ०५:५४ से**, सिद्धि१९:५३ से।।
12	सायनसूर्य मकर में 21:58, उ.भा. में भौमयुति, **रवियोग ०८:४३ से**, अमृत २२:०५ तक।।
13	भद्रा 23:42 से, भानुसप्तमी, गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती, रेवती में भौमयुति, सिद्धि २३:४२से, सर्वार्थसिद्धि ११:६ तक, ।।
14	भद्रा 12:09 तक, पंचक १२:५२ तक, ✿**सूर्य मकर पवेश १९:५१, पुण्यकाल मध्याह्न बाद अगले दिन मध्याह्न तक**, रेवती में भौमयुति, अश्विनी में व्यापारारम्भ, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, चिकित्साकार्य, कृषिकर्म, ।।
15	महाभद्राष्टमीव्रत। रिक्तादोष, **रवियोग १३:५५ से**, सर्वार्थसिद्धि १३:४६ तक।।
16	साम्बदशमी, सूर्यपूजा (उड़ीसा), भरणी में व्यापारारम्भ, रसायनिककार्य, अग्निकार्य, मशीनलगाना, धान्यच्छेदन, अमृत २४:४ से सर्वार्थसिद्धि १४:१२से।।
17	भद्रा 11:09 से 22:34 तक, पुत्रदा एकादशीव्रत (सर्वेषाम्), मन्वादि रैवत ११। कृत्तिका में व्यापारारम्भ, अग्निकार्य, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन,धान्यच्छेदन, ।।
18	कूर्मद्वादशी, प्रदोषव्रत। रोहिणी में वस्त्राभूषण, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य, कृषि, मृत्युयोग २०:२२ तक, ।।
19	मृग. में सूर्यवेध, **रवियोग १०:३१ से**, सिद्धि १७:३४ से सूर्यो.तक,।।
20	भद्रा 14:29 से 24:32 तक, व्रतपूर्णिमा भद्रा 11:05 से 21:54 तक, चन्द्रोदय 17:09, सायन सूर्य कुम्भ में १४.२९,आर्द्रा में शनिवेध, अमृत १४:१९ से।।
21	स्नान दान पौषी पूर्णिमा, दशाश्वमेघ गंगा स्नान, शाकम्भरी जयन्ती, माघस्नान आरम्भ, तूलपरीक्षा,श्रीसत्यनारायण व्रत,। चन्द्रोदय 18:15, पुष्य में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, अमृत १०:४६ तदुप.सिद्धि, सर्वार्थसिद्धि २६:२७ तक,

द्वार (कपाट) सम्बन्धी दोष	शुभाशुभफल
स्वयमेव किवाड़ खुलना	उन्माद, भ्रम
स्वयमेव किवाड़ बन्द होना	कुलनाश
मान से अधिक द्वार	राजभय
नाप से कम द्वार	चोरभय, दु:ख, विपत्ति
द्वार के ठीक ऊपर अन्य द्वार	अशुभ, संकट
द्वार व कपाट की चौड़ाई कम या अधिक	क्षुधा व पीड़ा कारक
टेढ़ा-मेढ़ा या झुका द्वार या कपाट	कुलनाश
कपाटों में जोड़	पीड़ाकारक
गृह में भीतर की ओर झुका द्वार	धन जन की हानि
बाहर की ओर झुका द्वार	प्रवास
अन्य दिशा में झुका या खुला द्वार	दस्युभय, चौरभय

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
06	8	21	14	7	8	20	17	49	11	9	10	51	8	7	9	6	7	18	41	26	7	4	22	35	8	17	50	57	3	3	4	28
07	8	22	15	18	9	2	15	45	11	9	51	18	8	8	39	33	7	18	53	45	7	5	23	51	8	17	58	1	3	3	1	18
08	8	23	16	28	9	14	7	39	11	10	31	47	8	10	10	27	7	19	6	0	7	6	25	30	8	18	5	6	3	2	58	7
09	8	24	17	39	9	25	55	45	11	11	12	18	8	11	41	47	7	19	18	12	7	7	27	31	8	18	12	10	3	2	54	56
10	8	25	18	49	10	7	42	49	11	11	52	49	8	13	13	34	7	19	30	21	7	8	29	54	8	18	19	14	3	2	51	45
11	8	26	19	58	10	19	32	5	11	12	33	22	8	14	45	48	7	19	42	25	7	9	32	38	8	18	26	17	3	2	48	34
12	8	27	21	7	11	1	27	19	11	13	13	55	8	16	18	28	7	19	54	26	7	10	35	41	8	18	33	20	3	2	45	23
13	8	28	22	15	11	13	32	43	11	13	54	30	8	17	51	35	7	20	6	23	7	11	39	4	8	18	40	21	3	2	42	13
14	8	29	23	23	11	25	52	42	11	14	35	5	8	19	25	10	7	20	18	15	7	12	42	45	8	18	47	23	3	2	39	2
15	9	0	24	30	0	8	31	43	11	15	15	41	8	20	59	13	7	20	30	4	7	13	46	44	8	18	54	23	3	2	35	51
16	9	1	25	37	0	21	33	45	11	15	56	18	8	22	33	44	7	20	41	48	7	14	51	0	8	19	1	22	3	2	32	40
17	9	2	26	43	1	5	1	52	11	16	36	55	8	24	8	44	7	20	53	29	7	15	55	34	8	19	8	20	3	2	29	30
18	9	3	27	48	1	18	57	30	11	17	17	32	8	25	44	15	7	21	5	4	7	17	0	23	8	19	15	18	3	2	26	19
19	9	4	28	52	2	3	19	52	11	17	58	10	8	27	20	17	7	21	16	36	7	18	5	29	8	19	22	14	3	2	23	08
20	9	5	29	55	2	18	5	28	11	18	38	47	8	28	56	50	7	21	28	3	7	19	10	50	8	19	29	9	3	2	19	57
21	9	6	30	58	3	3	8	2	11	19	19	25	9	0	33	56	7	21	39	25	7	20	16	26	8	19	36	3	3	2	16	46

भूमिशयन - सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ और २६वें नक्षत्र में चन्द्र के रहने पर भूमिशयन कहा जाता है। भूमिशयन में गृहारम्भ हेतु खात खनन, वापी, कूप, तड़ागादि हेतु खनन आदि कार्य नहीं करने चाहिए। **पौष पूर्णिमा से माघ स्नान आरम्भ** - दु:खदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रात: स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशने।। **माघे अर्घ्यदानमन्त्र** - सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा।

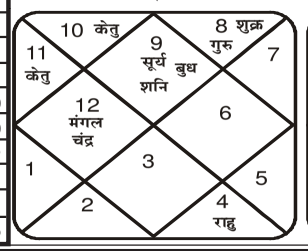

माघ में विष्णु पूजा - पौष्यां तु समतीतायां यावद्भवति पौर्णिमा। माघमासस्य तावद्धि पूजा विष्णोर्विधीयते।।

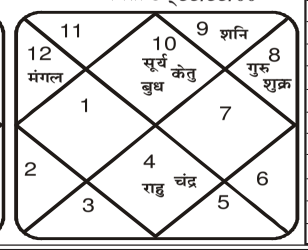

14 जनवरी 2018 प्रात: 05:29
पौष शुक्ल 8 सोमवार
पंक्तीष्टम् 55/52/30

21 जनवरी 2018 प्रात: 05:29
पौष शुक्ल 15 सोमवार
पंक्तीष्टम् 55/55/00

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
06	07:39:18	09:28:33	10:59:12	12:29:40	14:07:21	16:08:18	18:20:01	21:40:03	22:52:35	01:01:29	03:17:02	05:35:30
07	07:35:21	09:24:36	10:55:15	12:25:43	14:03:24	16:04:21	18:16:04	21:36:06	22:48:38	00:57:32	03:13:05	05:31:33
08	07:31:24	09:20:39	10:51:18	12:21:46	13:59:27	16:00:24	18:12:07	21:32:09	22:44:41	00:53:35	03:09:08	05:27:36
09	07:27:27	09:16:42	10:47:21	12:17:49	13:55:30	15:56:27	18:08:10	21:28:12	22:40:44	00:49:38	03:05:11	05:23:39
10	07:23:30	09:12:45	10:43:24	12:13:52	13:51:33	15:52:30	18:04:13	21:24:15	22:36:47	00:45:41	03:01:14	05:19:42
11	07:19:33	09:08:48	10:39:27	12:09:55	13:47:36	15:48:33	18:00:16	21:20:18	22:32:50	00:41:44	02:57:17	05:15:45
12	07:15:36	09:04:51	10:35:30	12:05:58	13:43:39	15:44:36	17:56:19	21:16:21	22:28:53	00:37:47	02:53:20	05:11:48
13	07:11:39	09:00:54	10:31:33	12:02:01	13:39:42	15:40:39	17:52:22	21:12:24	22:24:56	00:33:50	02:49:23	05:07:51
	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
14	08:56:57	10:27:36	11:58:04	13:35:45	15:36:42	17:48:25	21:08:27	22:20:59	00:29:53	02:45:26	05:03:54	07:07:42
15	08:53:00	10:23:39	11:54:07	13:31:48	15:32:45	17:44:28	21:04:30	22:17:02	00:25:56	02:41:29	04:59:57	07:03:45
16	08:49:03	10:19:42	11:50:10	13:27:51	15:28:48	17:40:31	21:00:33	22:13:05	00:21:59	02:37:32	04:56:00	06:59:48
17	08:45:06	10:15:45	11:46:13	13:23:54	15:24:51	17:36:34	20:56:36	22:09:08	00:18:02	02:33:35	04:52:03	06:55:51
18	08:41:09	10:11:48	11:42:16	13:19:57	15:20:54	17:32:37	20:52:39	22:05:11	00:14:05	02:29:38	04:48:06	06:51:54
19	08:37:12	10:07:51	11:38:19	13:16:00	15:16:57	17:28:40	20:48:42	22:01:14	00:10:08	02:25:41	04:44:09	06:47:57
20	08:33:15	10:03:54	11:34:22	13:12:03	15:13:00	17:24:43	20:44:45	21:57:17	00:06:11	02:21:44	04:40:12	06:44:00
21	08:29:18	09:59:57	11:30:25	13:08:06	15:09:03	17:20:46	20:40:48	21:53:20	00:02:14	02:17:47	04:36:15	06:40:03

मकरसंक्रान्तौ स्नानमन्त्र: - मकस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव। स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। मकरे तिलवस्त्रम् इष्ठान्नादीनां दानं कल्याणाय भवति।

माघ कृष्णपक्ष | **विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940** | सू.उ. | सू.अ | दि.मा. | च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि	घ.प.	घ.मि.
02	मङ्गल	50/48	27:26	आश्ले.	41/02	23:32	आयु	47/20	26:03	तैतिल	17:15	गर	27:26	07:07	17:56	27/03	सिंह 23:32
03	बुध	42/10	23:59	मघा	34/10	20:47	सौभा	37/10	21:59	वणिज	13:42	विष्टि	23:59	07:07	17:57	27/05	
04	गुरु	34/28	20:54	पू.फा.	28/05	18:21	शोभ	27/40	18:11	बव	10:26	बालव कौलव	20:54 29:18	07:07	17:57	27/05	कन्या 23:49
05	शुक्र	27/58	18:18	उ.फा.	23/15	16:25	अति	19/10	14:47	तैतिल	07:36	गर	18:18	07:07	17:58	27/07	
06	शनि	23/03	16:19	हस्त	19/55	15:04	सुक	11/52	11:51	वणिज	16:19	विष्टि	27:40	07:06	17:59	27/12	तुला 26:39
07	रवि	19/50	15:02	चित्रा	18/15	14:24	धृति	05/55	09:28	बव	15:02	बालव	26:46	07:06	18:00	27/15	
08	सोम	18/30	14:30	स्वाती	18/25	14:28	शूल गण्ड	01/25 58/22	07:40 30:27	कौलव	14:30	तैतिल	26:35	07:06	18:00	27/15	
09	मङ्गल	18/58	14:41	विशाखा	20/20	15:14	वृद्धि	56/40	29:46	गर	14:41	वणिज	27:07	07:06	18:01	27/17	वृश्चि 08:59
10	बुध	21/10	15:33	अनुराधा	23/58	16:40	ध्रुव	56/12	29:34	विष्टि	15:33	बव	28:17	07:05	18:02	27/23	
11	गुरु	24/52	17:02	ज्येष्ठा	28/58	18:40	व्याघा.	56/45	29:47	बालव	17:02	कौलव	30:01	07:05	18:02	27/23	धनु 18:40
12	शुक्र	29/50	19:00	मूल	35/08	21:07	हर्ष.	58/05	30:18	तैतिल	19:00	--	--	07:04	18:03	27/28	
13	शनि	35/37	21:19	पू.षा.	42/05	23:54	वज्र	00	00	गर	08:09	वणिज	21:19	07:04	18:04	27/30	मकर 30:39
14	रवि	42/02	23:53	उ.षा.	49/38	26:55	वज्र	00/03	07:05	विष्टि	10:36	शकुनि	23:53	07:04	18:04	27/30	
30	सोम	48/48	26:34	श्रवण	57/25	30:01	सिद्धि	02/18	07:58	चतुष्पद	13:13	नाग	26:34	07:03	18:05	27/35	

दिनांक | **उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु (22 जनवरी से 04 फरवरी 2019 ई. तक)** | गुरु एवं शुक्र पूर्व में

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) | दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)

22	माघस्नान, प्रतिदिन गंगास्नान, मूलीत्याग। श्लेषा में उग्रकार्य, अमृत २७:४६ तदुप. सिद्धि।।
23	भद्रा 13:42 से 23:59 तक, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, तिल/ गौरीचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 20:30, मघा में कृषिकर्म, अग्निकर्म, ऑप्रेशन, प्रिण्टिंग, व्यापारारम्भ मूहर्त है, मृत्युयोग २३:५९ तक,।।
24	श्री गणेशसंकटहर चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21:34, ✪ **श्रवण में सूर्य १५.४२ से**,पू.फा. में रिक्तादोष। मृत्युयोग २०:५४ तदुप. सिद्धि सूर्यो. तक, ।।
25	उ.फा. में भौमवेध, सिद्धि १८:१८ तदुप. मृत्युयोग सूर्यो. तक, ।।
26	भद्रा 16:19 से 27:40 तक, गणतन्त्र दिवस, चन्द्रोदय 20:26, चन्द्रार्घ्यदान। हस्त में ऑप्रेशन, स्थिरकर्म, वृक्षारोपण मूहर्त है, **रवियोग १५:०५ से**, अमृत १६:१९ तक, **द्विपुष्कर १६:१९ से**।।
27	व्यष्टकाश्राद्ध, भानुसप्तमी, श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती। चित्रा में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, वास्तुकृषिकर्म, वाटिकालगाना मूहूर्त है, सिद्धि १५:०२ से, **द्विपुष्कर १४:२४ तक**,।।
28	अष्टकाश्राद्ध। स्वाती में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, वास्तुकृषिकर्म, चिकित्साकार्य मूहूर्त है, ।।
29	भद्रा 27:07 से, **E**षोडशकारणव्रतप्रारम्भ (जैन) पोंगल (द.भारत),बिहू (आसाम), माघी (हिमाचलप्रदेश) तिल संक्रान्ति (मध्यभारत),खिचड़ी संक्रान्ति, रिक्तोपरान्त विशाखा में रसायनिककर्म, अग्निकर्म, उग्रकर्म, ऑप्रेशन।।
30	भद्रा 15:33 तक, महात्मा निर्वाण दिवस, अनुराधा में जातकर्म, अन्नप्राशन, कृषिकर्म, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म मूहूर्त है, अमृत १५:३३ से, सर्वार्थसिद्धि १६:४० तक, ।।
31	षटतिला एकादशी व्रत (सर्वेषाम्)। ज्ये, में पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, ।।
01	तिलद्वादशी, लोहड़ी (पंजाब)। मूल में राहुवेध, मृत्युयोग १९:०० तक,।।
02	भद्रा 21:19 से, शनिप्रदोष, मासशिवरात्रि,मेरुत्रयोदशी (जैन)। मासान्तदोष, सिद्धि २१:१९ से सूर्यो.तक, ।।
03	भद्रा 10:36 तक, मासान्तदोष, अमृत २३:५३से सूर्यो.तक, सर्वार्थसिद्धि २६:५५ तक, ।।
04	पञ्चक 30:01 से, श्राद्ध अमा., माघ/ मौनी /भौमवतीअमावस्या, त्रिवेणीगंगास्नान, थई अमावस्या (द.भा.)।मासान्तदोष, अमृत २६:३४ तदुप. सिद्धि सूर्यो. तक, सर्वार्थसिद्धि ३०:०१ तक, ।।

वास्तु में वेधवस्तु	**शुभाशुभफल**
रास्ता, गलियाला	गृहस्वामी का नाश
वृक्ष	घर के बालकों के लिए दोष
कीचड़ व जलस्थान	शोककारक
नली	धनव्यय
कुआँ	मानसिक अस्थिरता मिर्गी रोग
देवप्रतिमा	गृहस्वामी विनाश
स्तम्भ (खम्बा)	स्त्रियों के लिए दोष
ब्रह्म स्थान (गृहमध्य)	कुलनाश
ब्राह्मण गृह	कुलनाश

गर्भिणी प्रश्न विचार - तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमे तृतीयभूमुन्नवपञ्चमे च गर्भापुमान्वैत्रऋषिभिःप्रणीतश्चाऽन्येग्रहे स्त्रीविबुधैः प्रणीताः। गर्भप्रश्न में लग्न से तीसरे, सातवें, पांचवें और नवम् में यदि सूर्य मङ्गल व गुरु का प्रभाव हो शुभ सम्बन्ध हो तो पुत्र योग कहना चाहिए अन्यथा कन्या योग समझना चाहिए।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
22	9	7	32	0	3	18	19	5	11	20	0	3	9	2	11	36	7	21	50	42	7	21	22	17	8	19	42	55	3	2	13	36
23	9	8	33	2	4	3	29	1	11	20	40	42	9	3	49	51	7	22	1	55	7	22	28	22	8	19	49	46	3	2	10	25
24	9	9	34	3	4	18	28	32	11	21	21	20	9	5	28	41	7	22	13	3	7	23	34	40	8	19	56	36	3	2	7	14
25	9	10	35	3	5	3	10	0	11	22	1	58	9	7	8	8	7	22	24	6	7	24	41	12	8	20	3	24	3	2	4	3
26	9	11	36	3	5	17	28	19	11	22	42	36	9	8	48	12	7	22	35	4	7	25	47	57	8	20	10	11	3	2	00	52
27	9	12	37	2	6	1	21	5	11	23	23	14	9	10	28	54	7	22	45	56	7	26	54	54	8	20	16	56	3	1	57	42
28	9	13	38	1	6	14	48	20	11	24	3	53	9	12	10	14	7	22	56	44	7	28	2	3	8	20	23	40	3	1	54	31
29	9	14	38	59	6	27	51	57	11	24	44	31	9	13	52	14	7	23	7	26	7	29	9	23	8	20	30	21	3	1	51	20
30	9	15	39	57	7	10	34	54	11	25	25	10	9	15	34	54	7	23	18	2	8	0	16	55	8	20	37	1	3	1	48	9
31	9	16	40	53	7	23	0	43	11	26	5	48	9	17	18	13	7	23	28	33	8	1	24	37	8	20	43	39	3	1	44	58
01	9	17	41	50	8	5	12	59	11	26	46	26	9	19	2	11	7	23	38	59	8	2	32	29	8	20	50	15	3	1	41	48
02	9	18	42	45	8	17	15	5	11	27	27	5	9	20	46	48	7	23	49	18	8	3	40	31	8	20	56	50	3	1	38	37
03	9	19	43	39	8	29	10	3	11	28	7	43	9	22	32	4	7	23	59	31	8	4	48	43	8	21	3	21	3	1	35	26
04	9	20	44	33	9	11	0	30	11	28	48	21	9	24	17	57	7	24	9	39	8	5	57	4	8	21	9	51	3	1	32	15

माघमासनियमाः - भूमौ शयीतहोतव्यं साज्यं तिलसमन्वितम्। सर्वान् कामानवाप्नोति विन्दते परमं सुखम्।। **गणेशोत्पत्तिः** - सर्वदेवमयः साक्षात्सर्व मङ्गलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणेश्वरः।। **माघे प्रातःस्नानफलम्** -यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभे। स्नानं समाचरति चासनदीप्रवाहे।। उद्धत्य सप्तपुरुषान् पितमातृवंश्यान्। स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। माघमास में कर्त्तव्य - तुला मकरमेषेषु प्रातः स्नायी सदा भवेत्। हविष्यं ब्रह्मचर्यं च माघस्नाने महाफलम्।। माघ में प्रतिदिन स्नान व विष्णुपूजा करने से अनन्त फल की प्राप्ति होती है।

28 जनवरी 2018 प्रात: 05:29
माघ कृष्णा 8 सोमवार
पंक्तीष्टम् 55/57/30

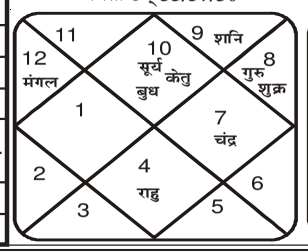

04 फरवरी 2018 प्रात: 05:29
माघकृष्णा 30 सोमवार
पंक्तीष्टम् 56/05/00

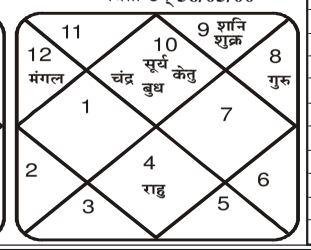

सांख्यशास्त्रानुसारं पञ्चविंशतितत्त्वानि भवन्ति। यथा - १. महत्, २.अहंकारः, ३.शब्दतन्मात्रम्, ४.स्पर्शतन्मात्रम्, ५.रूपतन्मात्रम्, ६.रसतन्मात्रम्, ७.गन्धतन्मात्रम्, ८.चक्षुज्ञनिन्द्रियम्, ९.श्रोत्रज्ञानेन्द्रियम्, १०.घ्राणज्ञानेन्द्रियम्, ११.रसज्ञानेन्द्रियम्, १२.त्वक्ज्ञानेन्द्रियम्, १३.वाक्कर्मेन्द्रियम्, १४.पाणिकर्मेन्द्रियम्, १५.पादकर्मेन्द्रियम्, १६.पायुकर्मेन्द्रियम्, १७.उपस्थकर्मेन्द्रियम्, १८.आकाशमहाभूतम्, १९.वायुमहाभूतम्, २०.अग्निमहाभूतम्, २१.जलमहाभूतम्, २२.पृथ्वीमहाभूतम्, २३.मनःएकादशेन्द्रियम्, २४.मूलप्रकृतिः, २५.पुरुषः इति।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
22	08:25:21	09:56:00	11:26:28	13:04:09	15:05:06	17:16:49	20:36:51	21:49:23	23:58:17	02:13:50	04:32:18	06:36:06
23	08:21:24	09:52:03	11:22:31	13:00:12	15:01:09	17:12:52	20:32:54	21:45:26	23:54:20	02:09:53	04:28:21	06:32:09
24	08:17:27	09:48:06	11:18:34	12:56:15	14:57:12	17:08:55	20:28:57	21:41:29	23:50:23	02:05:56	04:24:24	06:28:12
25	08:13:30	09:44:09	11:14:37	12:52:18	14:53:15	17:04:58	20:25:00	21:37:32	23:46:26	02:01:59	04:20:27	06:24:15
26	08:09:33	09:40:12	11:10:40	12:48:21	14:49:18	17:01:01	20:21:03	21:33:35	23:42:29	01:58:02	04:16:30	06:20:18
27	08:05:36	09:36:15	11:06:43	12:44:24	14:45:21	16:57:04	20:17:06	21:29:38	23:38:32	01:54:05	04:12:33	06:16:21
28	08:01:39	09:32:18	11:02:46	12:40:27	14:41:24	16:53:07	20:13:09	21:25:41	23:34:35	01:50:08	04:08:36	06:12:24
29	07:57:42	09:28:21	10:58:49	12:36:30	14:37:27	16:49:10	20:09:12	21:21:44	23:30:38	01:46:11	04:04:39	06:08:27
30	07:53:45	09:24:24	10:54:52	12:32:33	14:33:30	16:45:13	20:05:15	21:17:47	23:26:41	01:42:14	04:00:42	06:04:30
31	07:49:48	09:20:27	10:50:55	12:28:36	14:29:33	16:41:16	20:01:18	21:13:50	23:22:44	01:38:17	03:56:45	06:00:33
01	07:45:51	09:16:30	10:46:58	12:24:39	14:25:36	16:37:19	19:57:21	21:09:53	23:18:47	01:34:20	03:52:48	05:56:36
02	07:41:54	09:12:33	10:43:01	12:20:42	14:21:39	16:33:22	19:53:24	21:05:56	23:14:50	01:30:23	03:48:51	05:52:39
03	07:37:57	09:08:36	10:39:04	12:16:45	14:17:42	16:29:25	19:49:27	21:01:59	23:10:53	01:26:26	03:44:54	05:48:42
04	07:34:00	09:04:39	10:35:07	12:12:48	14:13:45	16:25:28	19:45:30	20:58:02	23:06:56	01:22:29	03:40:57	05:44:45

सोमवती अमावास्या

अमा वा सोमवारेण रविवारेण सप्तमी। चतुर्थी भौमवारेण विषुवत्सदृशं फलम्।। सिनीवाली कुहूर्वापि यदि सोमदिने भवेत्। गोसहस्रफलं दद्यात् स्नानं चेन्मौनिना कृतम्

माघ शुक्लपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु (05 फरवरी से 19 फरवरी 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	मङ्गल	55/33	29:16	धनिष्ठा	00	00	व्यति.	04/43	08:56	किंस्तु.	15:55	बव	29:16	07:03	18:06	27/38	कुंभ 19:35	05	गुप्तनवरात्र आरम्भ,वल्लभाचार्य जयन्ती। धनि.में सूर्ययुति, मृत्युयोग २९:१६ तदुप.अमृत सूर्यो.तक।।
02	बुध	00	00	धनिष्ठा	05/15	09:08	वरी.	07/10	09:54	बालव	18:34	--	--	07:02	18:06	27/40		06	चन्द्रदर्शन, ✿ **धनिष्ठा में सूर्य १८.४७ से**, शतभिषा में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, सिद्धि सम्पूर्ण, **द्विपुष्कर** ०५:१५ से ०७:०२ तक,।।
02	गुरु	02/05	07:52	शत.	12/48	12:09	परिघ	09/23	10:47	कौलव	07:52	तैतिल	21:01	07:02	18:07	27/43		07	पू.भा. में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, ब्यूटीपार्लर, धान्यच्छेदन, अमृत ७:५२ से,।।
03	शुक्र	08/13	10:18	पू.भा.	19/52	14:58	शिव	11/17	11:32	गर	10:18	वणिज	23:22	07:01	18:08	27/48	मीन 08:17	08	भद्रा 23:22 से, गौरीतृतीयाव्रत,तिल चतुर्थी, कुन्दचतुर्थी, विनायक चतुर्थी, गुड-लवणदान, रिक्ता पूर्व व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, ब्यूटीपार्ल। **रवियोग** १४:५९ से, अमृत १०:१८ से, ।।
04	शनि	13/33	12:26	उ.भा.	26/12	17:30	सिद्ध	12/35	12:03	विष्टि	12:26	बव	25:17	07:01	18:08	27/48		09	भद्रा 12:26 तक, सोपपदा चतुर्थी, रिक्तोपरान्त उ.भा/ रेवती में पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, कृषिकर्म, वाटिकालगाना, सिद्धि १२:२६ तदुप. मृत्युसूर्यो. तक, ।।
05	रवि	17/52	14:09	रेवती	31/32	19:37	साध्य	13/10	12:16	बालव	14:09	कौलव	26:45	07:00	18:09	27/53	मेष 19:37	10	पञ्चक 19:37 तक, मदन/श्री/वसंतपञ्चमी, सरस्वती पूजन, लेखनीपूजा (बंगाल), वागीश्वरीजयन्ती, तक्षकपूजा। रेवती में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, अमृत १४:९ तदुप. मृत्यु योग, सर्वार्थसिद्धि १९.३७ से।।
06	सोम	20/52	15:21	अश्विनी	35/30	21:12	शुभ	12/45	12:06	तैतिल	15:21	गर	27:38	07:00	18:10	27/55		11	अश्विनी में भौमयुति, सिद्धि १५.२१ तक तदुप. मृत्यु सूर्योदय तक।।
07	मङ्गल	22/20	15:55	भरणी	38/00	22:11	शुक्ल	11/10	11:27	वणिज	15:55	विष्टि	27:51	06:59	18:10	27/58	वृष 28:19	12	भद्रा 15:55 से 27:51 तक, अभोज्यार्कव्रतम्, रथ/अचला/आरोग्य/मन्वादिसप्तमी, सूर्यजयन्ती, नर्मदा जयन्ती, भरणी में उग्ररसायनिककर्म, अग्निकर्म, सिद्धि १५.५५ से।।
08	बुध	22/03	15:47	कृतिका	38/42	22:27	ब्रह्म	08/18	10:17	बव	15:47	बालव	27:20	06:58	18:11	28/02		13	भीमाष्टमी, दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, बुधाष्टमी, ✿**सूर्य कुम्भ प्रवेश ०८:४८, पुण्यकाल १४:४८ तक**,कृत्तिका में अग्निकर्म, प्रिण्टिंग, लेखनव्यापारादि, **रवियोग** २२:२७ से, मृत्युयोग १५.४७ तक, सर्वार्थसिद्धि २२.२७ से।।
09	गुरु	19/50	14:54	रोहिणी	37/37	22:01	ऐन्द्र वैधृति	03/58 58/12	08:33 30:15	कौलव	14:54	तैतिल	26:06	06:58	18:12	28/05		14	महानन्दानवमी, नन्दिनीदेवी पूजा, श्रीहरसूब्रह्मजयन्ती, गुप्तनवरात्रसमाप्त, रोहिणी में रिक्ता व वैधृतिदोष, मृत्यु १४.५४ तक तदुप. सिद्धि सूर्योदय तक।।
10	शुक्र	15/55	13:19	मृगशिरा	34/48	20:52	विष्कु	51/03	27:22	गर	13:19	वणिज	24:10	06:57	18:12	28/07	मिथुन 09:32	15	भद्रा 24:10 से, मृग. में केतुवेध, सिद्धि १३.१९ से।।
11	शनि	10/12	11:02	आर्द्रा	30/20	19:05	प्रीति	42/37	24:00	विष्टि	11:02	बव	21:36	06:57	18:13	28/10		16	भद्रा 11:02 तक, जया (भैमी)एकादशी (सर्वे.)भक्त पुण्डरीक उत्सव (पण्ढरपुर), आर्द्रा में शनिवेध, **त्रिपुष्कर** १९:०५ से, अमृत ११.०२ तक।।
12 13	रवि	03/05 54/45	08:10 28:50	पुनर्वसु	24/35	16:46	आयु	33/10	20:12	बालव	08:10	कौलव तैतिल	18:30 28:50	06:56	18:13	28/12	कर्क 11:23	17	भीम/वराहद्वादशी, सन्तान/आमलकी द्वादशी, प्रदोषव्रत, भीष्मद्वादशी/तर्पण, कल्पादि १३। पुन.में राहुवेध, रविपुष्य में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, ब्यूटीपार्लर, **त्रिपुष्कर** ०८:१० तक, सिद्धि ८.१० से २८.५० तक, सर्वार्थसिद्धि१४.२ तक ।।
14	सोम	45/43	25:12	पुष्य	17/48	14:02	सौभा	22/58	16:06	गर	15:01	वणिज	25:12	06:55	18:14	28/18		18	भद्रा 25:12 से, प्रदोषव्रत, चन्द्रोदय 16:57, सायन सूर्य मीन में २८.३४ पुष्य में रिक्तादोष, अमृत २५.१२ से सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि १४.०२ तक।।
15	मङ्गल	36/15	21:24	आश्ले.	10/22	11:03	शोभ	12/15	11:48	विष्टि	11:18	बव	21:24	06:54	18:14	28/20	सिंह 11:03	19	भद्रा 11:18 तक, माघीस्नानदानादि पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्ति, श्रीसत्यनारायण व्रत, गुरुरविदासजयन्ती, कम्बलदान, थईपूषम् (द.भा.), चन्द्रोदय 18:05,✿ **शतभिषा में सूर्य २३.१८ से**,श्लेषा में उग्रकार्य, रसायनिककार्य, अग्निकर्म, मृत्युयोग २१.२४ से सूर्योदय तक।।

माघशुक्लचतुर्थी

माघशुक्लचतुर्थी एव तिलचतुर्थी। सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नक्तव्रतपरायणाः। ये त्वां ढुण्ढेऽर्चयिष्यन्ति तेऽर्च्याः स्युरसुरद्रुहाम्। माघमासे चतुर्थ्यां तु तस्मिन् काल उपोषितः। अर्चयित्वा तु यो देवि जागरं तत्र कारयेत्।। इयमेव कुन्दचतुर्थी प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। माघशुक्लचतुर्थ्यां तु कुन्दपुष्पैः सदाशिवम्। सम्पूज्य यो हि नक्ताशी स प्राप्नोति श्रियं नरः।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
05	9	21	45	25	9	22	48	44	11	29	28	59	9	26	4	25	7	24	19	40	8	7	5	33	8	21	16	19	3	1	29	4
06	9	22	46	16	10	4	36	49	0	0	9	37	9	27	51	25	7	24	29	35	8	8	14	11	8	21	22	44	3	1	25	54
07	9	23	47	6	10	16	26	43	0	0	50	15	9	29	38	55	7	24	39	24	8	9	22	57	8	21	29	6	3	1	22	43
08	9	24	47	54	10	28	20	32	0	1	30	52	10	1	26	51	7	24	49	6	8	10	31	51	8	21	35	27	3	1	19	32
09	9	25	48	41	11	10	20	36	0	2	11	29	10	3	15	8	7	24	58	41	8	11	40	53	8	21	41	44	3	1	16	21
10	9	26	49	27	11	22	29	36	0	2	52	5	10	5	3	39	7	25	8	10	8	12	50	1	8	21	47	60	3	1	13	10
11	9	27	50	11	0	4	50	37	0	3	32	41	10	6	52	16	7	25	17	32	8	13	59	17	8	21	54	12	3	1	10	0
12	9	28	50	54	0	17	27	2	0	4	13	17	10	8	40	51	7	25	26	48	8	15	8	40	8	22	0	22	3	1	6	49
13	9	29	51	35	1	0	22	24	0	4	53	51	10	10	29	12	7	25	35	56	8	16	18	9	8	22	6	29	3	1	3	38
14	10	0	52	14	1	13	40	4	0	5	34	25	10	12	17	6	7	25	44	57	8	17	27	45	8	22	12	33	3	1	00	27
15	10	1	52	52	1	27	22	38	0	6	14	58	10	14	4	18	7	25	53	51	8	18	37	27	8	22	18	34	3	0	57	16
16	10	2	53	28	2	11	31	21	0	6	55	30	10	15	50	30	7	26	2	38	8	19	47	16	8	22	24	32	3	0	54	6
17	10	3	54	2	2	26	5	19	0	7	36	2	10	17	35	22	7	26	11	17	8	20	57	10	8	22	30	27	3	0	50	55
18	10	4	54	34	3	11	0	54	0	8	16	32	10	19	18	30	7	26	19	49	8	22	7	10	8	22	36	19	3	0	47	44
19	10	5	55	5	3	26	11	29	0	8	57	2	10	20	59	27	7	26	28	14	8	23	17	17	8	22	42	8	3	0	44	33

माघ शुक्ल पञ्चमी - बसंतपंचमी पर्व मुख्यत: माता सरस्वती की आराधना का है। इस दिन पीतवस्त्र धारण, पीत भोजन व पीतपुष्पों से माता की पूजा लाभार्थ होती है। इसी दिन कामदेव की आराधना की जाती है। पञ्चमी को नौ नागों की पूजा भी कल्याणप्रद होती है। **सूर्यसप्तमी** - अरुणोदयवेलायां शुक्लामाघस्य सप्तमी प्रयागे यदि लभ्येत कोटि सूर्यग्रहैःसमा। सूर्य सप्तमी व्रत में सूर्य की पूजा आयु, आरोग्यता तथा सम्पत्ति प्रदान करती है। निम्न मन्त्र से भास्कर को अर्घ्य दें - जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।

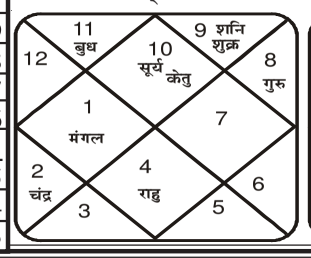

सूर्य को आक के पत्तों पुष्पों दूर्वा, चावल, जौ,दूध, कुशा, दही, तिल चन्दन इत्यादि से अर्घ्य प्रदान करें। यद्यज्जन्मकृतं पापं मया जन्मसु सप्तसु तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी।

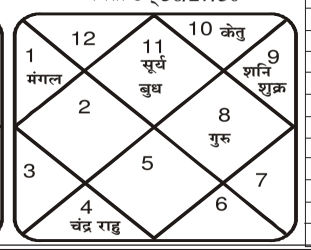

13 फरवरी 2018 प्रात: 05:29
माघ शुक्ल 8 बुधवार
पंक्तीष्टम् 56/17/30

19 फरवरी 2018 प्रात: 05:29
माघ शुक्ल 15 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 56/27/30

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
05	07:30:03	09:00:42	10:31:10	12:08:51	14:09:48	16:21:31	19:41:33	20:54:05	23:02:59	01:18:32	03:37:00	05:40:48
06	07:26:06	08:56:45	10:27:13	12:04:54	14:05:51	16:17:34	19:37:36	20:50:08	22:59:02	01:14:35	03:33:03	05:36:51
07	07:22:09	08:52:48	10:23:16	12:00:57	14:01:54	16:13:37	19:33:39	20:46:11	22:55:05	01:10:38	03:29:06	05:32:54
08	07:18:12	08:48:51	10:19:19	11:57:00	13:57:57	16:09:40	19:29:42	20:42:14	22:51:08	01:06:41	03:25:09	05:28:57
09	07:14:15	08:44:54	10:15:22	11:53:03	13:54:00	16:05:43	19:25:45	20:38:17	22:47:11	01:02:44	03:21:12	05:25:00
10	07:10:18	08:40:57	10:11:25	11:49:06	13:50:03	16:01:46	19:21:48	20:34:20	22:43:14	00:58:47	03:17:15	05:21:03
11	07:06:21	08:37:00	10:07:28	11:45:09	13:46:06	15:57:49	19:17:51	20:30:23	22:39:17	00:54:50	03:13:18	05:17:06
12	07:02:24	08:33:03	10:03:31	11:41:12	13:42:09	15:53:52	19:13:54	20:26:26	22:35:20	00:50:53	03:09:21	05:13:09
13	08:29:06	09:59:34	11:37:15	13:38:12	15:49:55	19:09:57	20:22:29	22:31:23	00:46:56	03:05:24	05:09:12	06:58:27
	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
14	08:25:09	09:55:37	11:33:18	13:34:15	15:45:58	19:06:00	20:18:32	22:27:26	00:42:59	03:01:27	05:05:15	06:54:30
15	08:21:12	09:51:40	11:29:21	13:30:18	15:42:01	19:02:03	20:14:35	22:23:29	00:39:02	02:57:30	05:01:18	06:50:33
16	08:17:15	09:47:43	11:25:24	13:26:21	15:38:04	18:58:06	20:10:38	22:19:32	00:35:05	02:53:33	04:57:21	06:46:36
17	08:13:18	09:43:46	11:21:27	13:22:24	15:34:07	18:54:09	20:06:41	22:15:35	00:31:08	02:49:36	04:53:24	06:42:39
18	08:09:21	09:39:49	11:17:30	13:18:27	15:30:10	18:50:12	20:02:44	22:11:38	00:27:11	02:45:39	04:49:27	06:38:42
19	08:05:24	09:35:52	11:13:33	13:14:30	15:26:13	18:46:15	19:58:47	22:07:41	00:23:14	02:41:42	04:45:30	06:34:45

भीष्माष्टमी तर्पण मन्त्र - वैयाघ्रपदगोत्राय सांस्कृत्य प्रवराय च। गंगापुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे। अपुत्राय जलं दद्मि नमो भीष्माय वर्मणे। भीष्मः शान्तनवौ वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रान्वितां क्रियाम्। तर्पणम् अपसव्येन दद्यादर्घ्यं च सव्यतः। वसुनामवताराणां शान्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे।। इस मन्त्र से भीष्म को तर्पण करना चाहिए।

फाल्गुन कृष्णपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु (20 फरवरी से 06 मार्च 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) सर्वार्थसिद्धि योगादि / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर योगादि)
01	बुध	26/48	17:37	मघा पू.फा.	02/45 55/25	08:00 29:04	अति सुक	01/22 50/45	07:27 27:12	बालव	07:30	कौलव तैतिल	17:37 27:49	06:54	18:15	28/22		20	मघा में प्रिण्टिंग में व्यापारारम्भ, अग्निकार्य, रसायनिककर्म, पू.फा. में भौमवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, अमृत १७.३७ से तदुपरान्त सिद्धि सूर्योदय तक।।
02	गुरु	17/53	14:02	उ.फा.	48/52	26:26	धृति	40/45	23:11	गर	14:02	वणिज	24:26	06:53	18:15	28/25	कन्या 10:22	21	भद्रा 24:26 से, उ.फा. में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, अमृत १४.०२ से।।
03	शुक्र	09/55	10:50	हस्त	43/32	24:17	शूल	31/43	19:33	विष्टि	10:50	बव	21:30	06:52	18:16	28/30		22	भद्रा 10:50 तक, संकष्टहरचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21:19 शुक्रोदय 29:45 पश्चि.में। चन्द्रोदय 21:19, हस्त में व्यापारारम्भ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, अमृत १०.५० से।।
04 05	शनि	03/20 58/28	08:11 30:14	चित्रा	39/50	22:47	गण्ड	23/52	16:24	बालव	08:11	कौलव तैतिल	19:12 30:14	06:51	18:17	28/35	तुला 11:27	23	चन्द्रोदय 22:20, रिक्तोपरान्त में चित्रा में स्थिरकार्य, मशीनलगाना, सिद्धि ८.११ तक तदुप. ३०.१४ तक तदुप. अमृत सूर्योदय तक।।
06	रवि	55/32	29:04	स्वाती	37/57	22:02	वृद्धि	17/30	13:51	गर	17:30	वणिज	29:04	06:51	18:17	28/35		24	भद्रा 29:04 से, स्वाती में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है,, **रवियोग** २२:०२ से, मृत्युयोग २९.०४ तक।।
07	सोम	54/53	28:47	विशाखा	38/15	22:08	ध्रुव	12/50	11:58	विष्टि	16:55	बव	28:47	06:50	18:18	28/40	वृश्चि 16:02	25	भद्रा 16:55 तक, विशाखा में अग्निकर्म, रसायनिककर्म, उग्रकर्म, **त्रिपुष्कर** ०५:०४ से ६:५० तक, मृत्युयोग २८.४७ तक, सर्वार्थसिद्धि २२.०८ से।।
08	मङ्गल	56/20	29:21	अनुराधा	40/35	23:03	व्याघा.	09/53	10:46	बालव	17:04	कौलव	29:21	06:49	18:18	28/42		26	अष्टकाश्राद्धम् , सीताष्टमी, जानकीजयन्ती, कालाष्टमी, व्यष्टकाश्राद्ध। अनुराधा में ऑप्रेशन, धान्यच्छेदन का मुहूर्त है, सिद्धि २९.२१ तक।।
09	बुध	59/45	30:41	ज्येष्ठा	44/52	24:45	हर्ष.	08/30	10:12	तैतिल	18:01	गर	30:41	06:48	18:19	28/47	धनु 24:45	27	ज्येष्ठा में पशुपक्षीमत्स्यादिपालन।।
10	गुरु	00	00	मूल	50/48	27:06	वज्र	08/35	10:13	वणिज	19:40	--	--	06:47	18:19	28/50		28	भद्रा 19:40 से, मूल में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है,, सिद्धि सम्पूर्ण।।
10	शुक्र	04/40	08:39	पू.षा.	57/48	29:54	सिद्धि	09/47	10:42	विष्टि	08:30	बव	21:52	06:47	18:20	28/52		01	भद्रा 08:30 तक, पू.षा. में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है,, सिद्धि ०८.३९ से।।
11	शनि	10/48	11:05	उ.षा.	00	00	व्यति.	11/50	11:30	बालव	11:05	कौलव	24:25	06:46	18:20	28/55	मकर 12:40	02	विजया एकादशीव्रत सर्वेषाम् । उ.षा. मे केतुयुति, **त्रिपुष्कर** ११:०४ से, अमृत ११.०५ तक।।
12	रवि	17/30	13:45	उ.षा.	05/35	08:59	वरी.	14/20	12:29	तैतिल	13:45	गर	27:07	06:45	18:21	29/00		03	प्रदोषव्रत, महाद्वादशी, कुम्भसंक्रान्ति 26:48,। श्रवण में पुंसवन, सीमन्त, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म, वाटिकाकर्म, धान्यच्छेदन, **त्रिपुष्कर** ८:५९ तक, सिद्धि १३.४५ से, सर्वार्थसिद्धि ०८.५
13	सोम	24/22	16:29	श्रवण	13/35	12:10	परिघ	17/00	13:32	वणिज	16:29	विष्टि	29:48	06:44	18:21	29/02	कुंभ 25:44	04	पञ्चक 12:10 से, भद्रा आरम्भ 16:29 से 29:48 तक, महाशिवरात्रि, मासान्तदोष, ✿ **पूभा में सूर्य २९.३७ से**,सर्वार्थसिद्धि १२.१० तक ।।
14	मङ्गल	31/00	19:07	धनिष्ठा	21/23	15:16	शिव	19/30	14:31	शकुनि	19:07	--	--	06:43	18:21	29/05		05	आरटन्ती चतुर्दशी, चतुर्दशलिङ्गपूजा, मासान्तदोष, ।।
30	बुध	37/10	21:34	शत.	28/47	18:13	सिद्ध	21/40	15:22	चतुष्पद	08:20	नाग	21:34	06:42	18:22	29/10		06	स्नानदान-अमा, ब्रह्मपूजा, फाल्गुन अमावस्या, द्वापरोत्पत्ति, श्रीरामकृष्णपरमहंसजयन्ती, पञ्चक आरम्भ 20:40 से । मासान्तदोष, मृत्युयोग २५.३४ तक सर्वार्थसिद्धि २३.१० से।।

कालपुरुषाङ्गविभाग:

शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणि कटिबस्तिगुह्यसंज्ञानि । ऊरूजानूजंघे चरणाविति राशयोऽजाद्या: ।। कालनरस्यावयवान् पुरुषाणां चिन्तयेत्प्रसवकाले । सदसद्ग्रहसंयोगात् पुष्टा: सोपद्रवास्ते च ।। अर्थात् कालपुरुषस्य द्वादशभागेषु एते राशय: अङ्ग इव सन्निवेष्टिता: सन्ति । येन ब्रह्माण्डस्थ प्रत्येकजीवानामुपरि एतेषां प्रभाव: प्रतिफलति । अत: कालपुरुषस्य अङ्गावयवै: साकं एतेषां यथाक्रमं स्वरूपम् आलोच्यते । अस्य चापि महानुपयोग: फलकथने भवति। मत्स्यद्वयाकार: मीनराशि:, घटधारकपुरुषस्याकार: कुम्भराशि:, स्त्रीपुरुषयो: युगलचित्रं मिथुनराशि: अत्र पुरुषस्य हस्ते गदा तथा स्त्रिया: हस्ते वीणा शोभते, धनुर्धारिपुरुषस्याकार: धनुरत्र पुरुषस्य कटिप्रदेशादध: भाग: अश्वाकार: ऊर्ध्वभागश्च पुरुषाकार:, मकरराशि: मकरसदृश: वर्तते, परन्तु तस्य मुखं हरिणसदृशं, तुलराशे: स्वरूपं तुलधारिपुरुषस्य वर्तते, कन्याराशे: स्वरूपं बालिकाया: वर्तते यस्या: एकस्मिन् हस्तेऽग्निरन्यस्मिन् च अन्नं वर्तते तथा च सा नावोपरि उपविष्टा भवति, मेषराशे: मेष इव स्वरूपं, बृषराशे: वृष इव, कर्कस्य कर्क इव, सिंहस्य सिंह इव तथा च वृश्चिकस्य वृश्चिक इव स्वरूपं वर्तते ।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
20	10	6	55	34	4	11	27	53	0	9	37	30	10	22	37	46	7	26	36	31	8	24	27	28	8	22	47	53	3	0	41	22
21	10	7	56	2	4	26	39	37	0	10	17	58	10	24	12	53	7	26	44	40	8	25	37	46	8	22	53	36	3	0	38	12
22	10	8	56	28	5	11	36	38	0	10	58	24	10	25	44	15	7	26	52	42	8	26	48	9	8	22	59	15	3	0	35	01
23	10	9	56	53	5	26	10	51	0	11	38	49	10	27	11	15	7	27	0	35	8	27	58	37	8	23	4	50	3	0	31	50
24	10	10	57	16	6	10	17	18	0	12	19	14	10	28	33	16	7	27	8	21	8	29	9	10	8	23	10	22	3	0	28	39
25	10	11	57	38	6	23	54	16	0	12	59	38	10	29	49	40	7	27	15	58	9	0	19	48	8	23	15	51	3	0	25	28
26	10	12	57	58	7	7	2	55	0	13	40	0	11	0	59	47	7	27	23	28	9	1	30	32	8	23	21	16	3	0	22	18
27	10	13	58	18	7	19	46	24	0	14	20	22	11	2	3	1	7	27	30	49	9	2	41	19	8	23	26	38	3	0	19	7
28	10	14	58	35	8	2	9	7	0	15	0	43	11	2	58	45	7	27	38	1	9	3	52	12	8	23	31	55	3	0	15	56
01	10	15	58	52	8	14	15	56	0	15	41	3	11	3	46	28	7	27	45	5	9	5	3	8	8	23	37	9	3	0	12	45
02	10	16	59	6	8	26	11	44	0	16	21	22	11	4	25	41	7	27	52	0	9	6	14	9	8	23	42	19	3	0	9	34
03	10	17	59	19	9	8	1	1	0	17	1	41	11	4	56	1	7	27	58	47	9	7	25	13	8	23	47	26	3	0	6	24
04	10	18	59	31	9	19	47	41	0	17	41	58	11	5	17	10	7	28	5	24	9	8	36	21	8	23	52	28	3	0	3	13
05	10	19	59	41	10	1	35	1	0	18	22	15	11	5	28	60	7	28	11	53	9	9	47	33	8	23	57	26	3	0	0	02
06	10	20	59	49	10	13	25	35	0	19	2	30	11	5	31	27	7	28	18	12	9	10	58	48	8	24	2	20	2	29	56	51

महाशिवरात्रिव्रतमहात्म्यम् - माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी, दत्तं शिव: फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरै:।। शिवरात्रिरित ख्याता मत्कलैव पृथक स्थिता।।मम भक्तस्तु यो देवि शिवरात्री मुपोषक:। गणत्वमक्षयं दिव्यं लभते शिवशासनम्।। सर्वान्भुक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात्। **शिवरात्रिव्रते तिथि निर्णय**: - तत्काल व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिव्रते तिथि:। अर्धरात्रादधश्चोर्ध्वं युक्ता यत्र चतुर्दशी।। आज के दिन शिव का चारों प्रहर में अभिषेक, पूजन अनन्त फल देने वाला होता है। अर्धरात्रि का पूजन व बिल्वार्चन सिद्धिप्रद है।

26 फरवरी 2019 प्रात: 05:29
फाल्गुन कृष्ण 8 मङ्गलवार
पंक्तीष्टम् 56/40/00

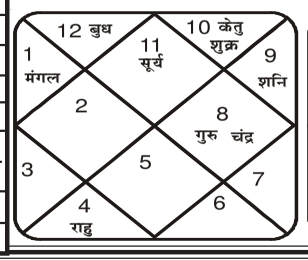

06 मार्च 2019 प्रात: 05:29
फाल्गुन कृष्ण 30 बुधवार
पंक्तीष्टम् 56/57/30

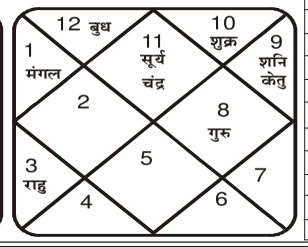

फाल्गुनामायां शतभिषक्योग:- माघासिते पञ्चदशी कदाचिदुपैति योगं यदि वारुणेन। ऋक्षेण काल: स पर: पितृणां न ह्यल्पपुण्यैर्नृप लभ्यतेऽसौ।। दत्तं तिलान्नं प्रददाति तृप्तिं वर्षायुतं तत्कुलजैर्मनुष्यै:।। शिवरात्रि पूजा विशेष - प्रथम प्रहर दूध से ऊँ ह्रौं ईशानाय नम:, द्वितीय प्रहर दही से ऊँ ह्रौं अघोराय नम:, तृतीय प्रहर घी से ऊँ ह्रौं वामदेवाय नम:, चतुर्थ प्रहर में मधु से ऊँ ह्रौं सद्योजाताय नम: से क्रमश: पूजन व अभिषेक करना चाहिए।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
20	08:01:27	09:31:55	11:09:36	13:10:33	15:22:16	18:42:18	19:54:50	22:03:44	00:19:17	02:37:45	04:41:33	06:30:48
21	07:57:30	09:27:58	11:05:39	13:06:36	15:18:19	18:38:21	19:50:53	21:59:47	00:15:20	02:33:48	04:37:36	06:26:51
22	07:53:33	09:24:01	11:01:42	13:02:39	15:14:22	18:34:24	19:46:56	21:55:50	00:11:23	02:29:51	04:33:39	06:22:54
23	07:49:36	09:20:04	10:57:45	12:58:42	15:10:25	18:30:27	19:42:59	21:51:53	00:07:26	02:25:54	04:29:42	06:18:57
24	07:45:39	09:16:07	10:53:48	12:54:45	15:06:28	18:26:30	19:39:02	21:47:56	00:03:29	02:21:57	04:25:45	06:15:00
25	07:41:42	09:12:10	10:49:51	12:50:48	15:02:31	18:22:33	19:35:05	21:43:59	23:59:32	02:18:00	04:21:48	06:11:03
26	07:37:45	09:08:13	10:45:54	12:46:51	14:58:34	18:18:36	19:31:08	21:40:02	23:55:35	02:14:03	04:17:51	06:07:06
27	07:33:48	09:04:16	10:41:57	12:42:54	14:54:37	18:14:39	19:27:11	21:36:05	23:51:38	02:10:06	04:13:54	06:03:09
28	07:29:51	09:00:19	10:38:00	12:38:57	14:50:40	18:10:42	19:23:14	21:32:08	23:47:41	02:06:09	04:09:57	05:59:12
01	07:25:54	08:56:22	10:34:03	12:35:00	14:46:43	18:06:45	19:19:17	21:28:11	23:43:44	02:02:12	04:06:00	05:55:15
02	07:21:57	08:52:25	10:30:06	12:31:03	14:42:46	18:02:48	19:15:20	21:24:14	23:39:47	01:58:15	04:02:03	05:51:18
03	07:18:00	08:48:28	10:26:09	12:27:06	14:38:49	17:58:51	19:11:23	21:20:17	23:35:50	01:54:18	03:58:06	05:47:21
04	07:14:03	08:44:31	10:22:12	12:23:09	14:34:52	17:54:54	19:07:26	21:16:20	23:31:53	01:50:21	03:54:09	05:43:24
05	07:10:06	08:40:34	10:18:15	12:19:12	14:30:55	17:50:57	19:03:29	21:12:23	23:27:56	01:46:24	03:50:12	05:39:27
06	07:06:09	08:36:37	10:14:18	12:15:15	14:26:58	17:47:00	18:59:32	21:08:26	23:23:59	01:42:27	03:46:15	05:35:30

फाल्गुनकृष्णाष्टमी

फाल्गुनस्य च मासस्य कृष्णाष्टम्यां महीपते। इत्युपक्रम्य जाता दाशरथे: पत्नी तस्मिन्नहनि जानकी। उपोषितो रघुपति: समुद्रस्य तटे तदा ।। रामपत्नी च सम्पूज्या सीता जनकनन्दिनी।। फाल्गुन कृष्णाष्टमी के दिन जनक नन्दिनी का जन्म हुआ था अत: इस दिन सीता का पूजन करें

फाल्गुन शुक्लपक्ष — विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.
01	गुरु	42/38	23:44	पू.भा.	35/33	20:54	साध्य	23/23	16:02	किंस्तु.	10:39	बव	23:44	06:41	18:22	29/13	मीन 14:51
02	शुक्र	47/15	25:34	उ.भा.	41/30	23:16	शुभ	24/30	16:28	बालव	12:39	कौलव	25:34	06:40	18:23	29/17	
03	शनि	51/00	27:03	रेवती	46/38	25:18	शुक्ल	24/57	16:38	तैतिल	14:18	गर	27:03	06:39	18:23	29/20	मेष 25:18
04	रवि	53/43	28:07	अश्विनी	50/48	26:57	ब्रह्म	24/40	16:30	वणिज	15:35	विष्टि	28:07	06:38	18:24	29/25	
05	सोम	55/15	28:43	भरणी	53/52	28:10	ऐन्द्र	23/33	16:02	बव	16:25	बालव	28:43	06:37	18:24	29/27	
06	मङ्गल	55/35	28:50	कृतिका	55/42	28:53	वैधृति	21/32	15:13	कौलव	16:46	तैतिल	28:50	06:36	18:24	29/30	वृष 10:23
07	बुध	54/28	28:23	रोहिणी	56/13	29:05	विष्कु	18/27	13:59	गर	16:36	वणिज	28:23	06:36	18:25	29/32	
08	गुरु	51/58	27:22	मृगशिरा	55/18	28:42	प्रीति	14/20	12:19	विष्टि	15:52	बव	27:22	06:35	18:25	29/35	मिथुन 16:58
09	शुक्र	47/57	25:45	आर्द्रा	52/55	27:44	आयु	09/02	10:11	बालव	14:33	कौलव	25:45	06:34	18:26	29/40	
10	शनि	42/30	23:33	पुनर्वसु	49/10	26:13	सौभा शोभ	02/35 54/55	07:35 28:31	तैतिल	12:39	गर	23:33	06:33	18:26	29/43	कर्क20:38
11	रवि	35/48	20:51	पुष्य	44/08	24:11	अति	46/20	25:04	वणिज	10:12	विष्टि	20:51	06:32	18:26	29/45	
12	सोम	28/00	17:43	आश्ले.	38/08	21:46	सुक	36/55	21:17	बव	07:17	बालव कौलव	17:43 28:01	06:31	18:27	29/50	सिंह 21:46
13	मङ्गल	19/32	14:19	मघा	31/27	19:05	धृति	26/57	17:17	तैतिल	14:19	गर	24:32	06:30	18:27	29/52	
14	बुध	10/40	10:45	पू.फा.	24/30	16:17	शूल	16/45	13:11	वणिज	10:45	विष्टि	20:59	06:29	18:27	29/55	कन्या21:35
15 01	गुरु	01/52 53/33	07:13 27:53	उ.फा.	17/45	13:34	गण्ड वृद्धि	06/38 56/55	09:07 29:14	बव	07:13	बालव कौलव	17:33 27:53	06:28	18:28	30/00	

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु (07 मार्च से 21 मार्च 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पूर्व में

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
07	चन्द्रदर्शन। पू.भा. में सूर्ययुति के कारण मूहूर्ताभाव है।।
08	सायन सूर्य मेष में 22:48, उ.भा. में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, ब्यूटीपार्लर, रेडीमेड व्यवसाय, कलात्मक कार्य का मुहूर्त है ।।
09	पञ्चक 25:18 तक, रेवती में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, फैक्ट्री लगाना, मशीनरी कार्यादि का मुहूर्त है।, सिद्धि २७.०३ से प्रारम्भ है।।
10	भद्रा 15:35 से 28:07 तक, विनायक चतुर्थी (रविवार विशेष), पुत्रगणपतिव्रत। अश्विनी में रिक्ता दोष के कारण मुहूर्ताभाव है। **रवियोग ०१:१८ से,** अमृत २८.०७ से सर्वार्थसिद्धि २६.५७ से।।
11	भरणी में भौमयुति के कारण मुहूर्ताभाव है। अमृत २८.४३ तक तदुपरान्त सिद्धियोग।।
12	कृत्तिका में वैधृतिदोष के कारण मुहूर्ताभाव, तदुपरान्त उग्रकर्म, अग्निकार्य, **रवियोग ०४:१० से,** मृत्युयोग २८.५० तदुप. अमृत सूर्योदय तक, सर्वार्थसिद्धि २८.०३ तक।।
13	भद्रा 28:23 से, कामदासप्तमीव्रत, रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, धान्यच्छेदन, सिद्धि २८.३२ तक तदुप. मृत्यु, सर्वार्थसिद्धियोग सम्पूर्ण।।
14	भद्रा 15:52 तक, होलाष्टक प्रारम्भ, **✪सूर्य मीन प्रवेश २९:४०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,** मृग. में केतु वेध के कारण मुहूर्ताभाव, अमृत २७.२२ तक तदुप. मृत्युयोग सूर्योदय तक।।
15	रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान, रवियोग ०४:४२ से, अमृत २५.४५ तक सर्वार्थसिद्धि २७.४४ से ।।
16	फलगुदशमी (उड़ीसा)। पुन. में राहुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्यु २३.३३ तक तदुप. अमृत योग।।
17	भद्रा 10:12 से 20:51 तक, **आमलकी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, रंगभरी एकादशी। रविपुष्य में** व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यकर्म, धान्यच्छेदन, ब्यूटीपार्लर , मृत्युयोग २०.५१ तक सर्वार्थसिद्धि २४.११।।
18	भौमप्रदोष व्रत, द्वादशीव्रत, नृसिंह द्वादशी, गोविन्द द्वादशी। **✪ उभा में सूर्य १४:०० से,** श्लेषा में धान्यच्छेदन, कृषिकर्म, मृत्युयोग १७.४३ तक।।
19	मघा में अग्निकर्म, रसायनिककर्म, उग्रकर्म, **रवियोग १९:०४ से,** सिद्धि १४.१९ तक।। ✍रिक्तोपरान्त पू.भा. में अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म।।
20	भद्रा 10:45 से 20:59 तक, अनुदया पूर्णिमा, पूर्णिमाव्रत, चैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, होलाष्टक समाप्त, भद्रोपरान्त होलिका दहन, मन्वादि १५, कुलदेवता को सिन्दूर अर्पण (पातरिदान) सायन सूर्य मेष प्रवेश २७:२८, चन्द्रोदय 17:54, ✍
21	होली (वसन्तोत्सव), होलिका भस्मधारण, धुलैण्डी, होलामेला (पंजाब), आम्रकुसुमप्राशन, चन्द्रोदय 18:58, उ.भा. में अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, वृक्षारोपण, कृषिकर्म, सिद्धि ०७.१३ तक।।

अथारिष्टशान्ते शताक्षरी गायत्रीमन्त्र जपविधि

ॐ अस्य श्रीशताक्षरीगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचि-कश्यपवशिष्टाऋषयो गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवितृजातवेदस्त्र्यम्बको देवता: गायत्र्यक्षराणि बीजानित्रिष्टुबक्षराणि शक्तय: अरिष्टशान्तये जपे विनियोग:। विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्टऋषिभ्यो नम: शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्देभ्यो नम: मुखे। सवितृजातवेद: त्र्यम्बकदेवेभ्यो नम: हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानी गुह्ये। त्रिष्टुवक्षराणि शक्तये नम: पादयो:। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नम:। ॐ धियो यो न: प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसेसुनवामसोम-मारातीयतोनिदहातिवेद: शिखायै वषट्। ॐ स न: पर्षदातिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरतात्याग्नि: कवचाय हुँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्व्वारूकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्। **अथ ध्यानम्।** स्मर्तव्याखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते। तद्वत्कृक्षितिसिद्धये अस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं मह:। एवं ध्यात्वा शताक्षरां भावयेत्। **अथ होमार्थशताक्षरागायत्रीमन्त्र:** - ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतो निदहातिवेद: स न: पर्षदतिदुर्ग्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्याग्नि:। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
07	10	21	59	55	10	25	21	20	0	19	42	45	11	5	24	41	7	28	24	23	9	12	10	7	8	24	7	10	2	29	53	40
08	10	22	59	59	11	7	23	48	0	20	22	58	11	5	8	57	7	28	30	24	9	13	21	29	8	24	11	56	2	29	50	30
09	10	24	0	2	11	19	34	14	0	21	3	11	11	4	44	45	7	28	36	15	9	14	32	54	8	24	16	37	2	29	47	19
10	10	25	0	2	0	1	53	52	0	21	43	22	11	4	12	42	7	28	41	57	9	15	44	21	8	24	21	14	2	29	44	8
11	10	26	0	1	0	14	24	5	0	22	23	33	11	3	33	38	7	28	47	30	9	16	55	52	8	24	25	47	2	29	40	57
12	10	26	59	57	0	27	6	38	0	23	3	42	11	2	48	30	7	28	52	53	9	18	7	25	8	24	30	15	2	29	37	46
13	10	27	59	51	1	10	3	42	0	23	43	50	11	1	58	26	7	28	58	6	9	19	19	1	8	24	34	39	2	29	34	36
14	10	28	59	43	1	23	17	40	0	24	23	57	11	1	4	37	7	29	3	9	9	20	30	39	8	24	38	58	2	29	31	25
15	10	29	59	32	2	6	50	58	0	25	4	2	11	0	8	22	7	29	8	3	9	21	42	20	8	24	43	13	2	29	28	14
16	11	0	59	20	2	20	45	29	0	25	44	6	10	29	10	56	7	29	12	46	9	22	54	3	8	24	47	23	2	29	25	03
17	11	1	59	5	3	5	1	53	0	26	24	9	10	28	13	38	7	29	17	20	9	24	5	49	8	24	51	28	2	29	21	52
18	11	2	58	48	3	19	38	52	0	27	4	11	10	27	17	38	7	29	21	43	9	25	17	37	8	24	55	28	2	29	18	42
19	11	3	58	28	4	4	32	32	0	27	44	11	10	26	24	3	7	29	25	57	9	26	29	27	8	24	59	24	2	29	15	31
20	11	4	58	7	4	19	36	8	0	28	24	9	10	25	33	49	7	29	29	60	9	27	41	20	8	25	3	15	2	29	12	20
21	11	5	57	43	5	4	40	43	0	29	4	6	10	24	47	47	7	29	33	52	9	28	53	15	8	25	7	1	2	29	9	9

होलकाष्टक निषेध - विपाशेरावती तीरे शुतद्रूश्च त्रिपुष्करे। विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग्दिनाष्टकम्।। होलिकाष्टक का दोष केवल विपाशा, इरावती, शतद्रू और त्रिपुष्कर नदी के किनारे ही होता है, अन्य क्षेत्रों में नहीं। **होलिका दहन मुहूर्त्त** -प्रदोषव्यापिनी चेत् स्याद्यदा पूर्वदिने तदा। भद्रामुखं वर्जयित्वा होलिकाया: प्रदीपनम्।। निशागमे प्रपूज्येत होलिका सर्वदा बुधै:। न दिवा पूजयेड्ढुण्ढां पूजिता दु:खदा भवेत्।। **होलिका प्रदीपनमन्त्र-** दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नम:। हिताय सर्वजगत: प्रीतये पार्वतीपते:।।

14 मार्च 2019 प्रात: 05:29
फाल्गुन शुक्ल 8 गुरुवार
पंक्तीष्टम् 57/15/00

21 मार्च 2019 प्रात: 05:29
फाल्गुन शुक्ल 15 गुरुवार
पंक्तीष्टम् 57/32/30

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

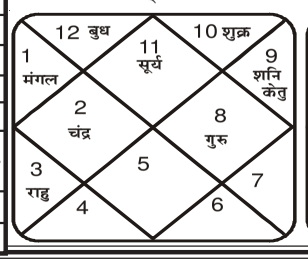

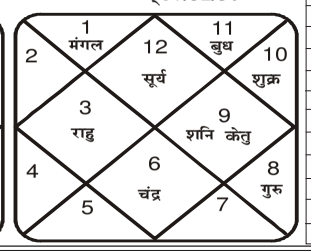

दि.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
07	07:02:12	08:32:40	10:10:21	12:11:18	14:23:01	17:43:03	18:55:35	21:04:29	23:20:02	01:38:30	03:42:18	05:31:33
08	06:58:15	08:28:43	10:06:24	12:07:21	14:19:04	17:39:06	18:51:38	21:00:32	23:16:05	01:34:33	03:38:21	05:27:36
09	06:54:18	08:24:46	10:02:27	12:03:24	14:15:07	17:35:09	18:47:41	20:56:35	23:12:08	01:30:36	03:34:24	05:23:39
10	06:50:21	08:20:49	09:58:30	11:59:27	14:11:10	17:31:12	18:43:44	20:52:38	23:08:11	01:26:39	03:30:27	05:19:42
11	06:46:24	08:16:52	09:54:33	11:55:30	14:07:13	17:27:15	18:39:47	20:48:41	23:04:14	01:22:42	03:26:30	05:15:45
12	06:42:27	08:12:55	09:50:36	11:51:33	14:03:16	17:23:18	18:35:50	20:44:44	23:00:17	01:18:45	03:22:33	05:11:48
13	06:38:30	08:08:58	09:46:39	11:47:36	13:59:19	17:19:21	18:31:53	20:40:47	22:56:20	01:14:48	03:18:36	05:07:51
14	06:34:33	08:05:01	09:42:42	11:43:39	13:55:22	17:15:24	18:27:56	20:36:50	22:52:23	01:10:51	03:14:39	05:03:54
	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
15	08:01:04	09:38:45	11:39:42	13:51:25	17:11:27	18:23:59	20:32:53	22:48:26	01:06:54	03:10:42	04:59:57	06:30:36
16	07:57:07	09:34:48	11:35:45	13:47:28	17:07:30	18:20:02	20:28:56	22:44:29	01:02:57	03:06:45	04:56:00	06:26:39
17	07:53:10	09:30:51	11:31:48	13:43:31	17:03:33	18:16:05	20:24:59	22:40:32	00:59:00	03:02:48	04:52:03	06:22:42
18	07:49:13	09:26:54	11:27:51	13:39:34	16:59:36	18:12:08	20:21:02	22:36:35	00:55:03	02:58:51	04:48:06	06:18:45
19	07:45:16	09:22:57	11:23:54	13:35:37	16:55:39	18:08:11	20:17:05	22:32:38	00:51:06	02:54:54	04:44:09	06:14:48
20	07:41:19	09:19:00	11:19:57	13:31:40	16:51:42	18:04:14	20:13:08	22:28:41	00:47:09	02:50:57	04:40:12	06:10:51
21	07:37:22	09:15:03	11:16:00	13:27:43	16:47:45	18:00:17	20:09:11	22:24:44	00:43:12	02:47:00	04:36:15	06:06:54

रामनवमी में पूजन - कल्पाादि निणर्य- ब्रह्मणो या दिनस्यादि: कल्पादि: सा प्रकीर्तिता। वैशाखस्य तृतीया या कृष्णा या फाल्गुनस्य च। पंचमी चैत्रमासस्य तथैवान्त्या तथा परा। शुक्ला त्रयोदशी माघे कार्तिकस्य तु सप्तमी। नवमी मार्गशीर्षस्य सप्तैता: संस्मराम्यहम्।।

चैत्र कृष्णपक्ष विरोधकृत् संवत्सर, वि.संवत् 2075, शक 1940 | सू.उ. | सू.अ. | दि.मा. | च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
02	शुक्र	46/13	24:56	हस्त	11/37	11:06	ध्रुव	48/05	25:41	तैतिल	14:24	गर	24:56	06:27	18:28	30/02	तुला 22:02
03	शनि	40/15	22:32	चित्रा	06/37	09:05	व्याघा.	40/23	22:35	वणिज	11:44	विष्टि	22:32	06:26	18:29	30/07	
04	रवि	36/07	20:52	स्वाती	03/10	07:41	हर्ष.	34/07	20:04	बव	09:42	बालव	20:52	06:25	18:29	30/10	वृश्चि 25:08
05	सोम	34/00	20:00	विशाखा	01/37	07:03	वज्र	29/32	18:13	कौलव	08:26	तैतिल	20:00	06:24	18:29	30/13	
06	मङ्गल	34/07	20:02	अनुराधा	02/10	07:15	सिद्धि	26/40	17:03	गर	08:01	वणिज	20:02	06:23	18:30	30/18	
07	बुध	36/22	20:55	ज्येष्ठा	04/53	08:19	व्यति.	25/30	16:34	विष्टि	08:28	बव	20:55	06:22	18:30	30/20	धनु 08:19
08	गुरु	40/33	22:34	मूल	09/32	10:10	वरी.	25/50	16:41	बालव	09:44	कौलव	22:34	06:21	18:30	30/22	
09	शुक्र	46/10	24:48	पू.षा.	15/52	12:41	परिघ	27/22	17:17	तैतिल	11:41	गर	24:48	06:20	18:31	30/27	मकर 19:23
10	शनि	52/40	27:23	उ.षा.	23/15	15:37	शिव	29/43	18:12	वणिज	14:05	विष्टि	27:23	06:19	18:31	30/30	
11	रवि	59/25	30:04	श्रवण	31/10	18:46	सिद्ध	32/23	19:15	बव	16:43	बालव	30:04	06:18	18:31	30/33	
12	सोम	00	00	धनिष्ठा	39/03	21:54	साध्य	35/00	20:17	कौलव	19:21	--	–	06:17	18:32	30/37	कुंभ 08:21
12	मङ्गल	05/58	08:39	शत.	46/23	24:49	शुभ	37/15	21:10	तैतिल	08:39	गर	21:47	06:16	18:32	30/40	
13	बुध	11/43	10:56	पू.भा.	52/53	27:24	शुक्ल	38/50	21:47	वणिज	10:56	विष्टि	23:53	06:15	18:33	30/45	मीन 20:48
14	गुरु	16/33	12:51	उ.भा.	58/25	29:36	ब्रह्म	39/42	22:07	शकुनि	12:51	चतुष्पद	25:35	06:14	18:33	30/48	
30	शुक्र	20/18	14:20	रेवती	00	00	ऐन्द्र	39/42	22:06	नाग	14:20	किंस्तु.	26:51	06:13	18:33	30/50	

उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्तऋतु (22 मार्च से 05 अप्रैल 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पूर्व में

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक, यायी, स्थायी एवं त्रिपुष्कर सर्वार्थसिद्धि योगादि)
22	हस्त में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्यु २४.५६ तक।।
23	भद्रा 11:44 से 22:32 तक, चन्द्रोदय 21:02, चित्रा में स्थिरकर्म, मशीन लगाना , सिद्धि २२.३२ से।।
24	संकष्टचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22:02 । स्वाती में रोगमुक्तस्नान, रिक्तादोष, अमृत २०.५२ से।।
25	रंगपंचमी, विशाखा में वृक्षारोपण, अग्निकर्म, उग्रकर्म, रासायनिककर्म, अमृत २०.०० तक तदुप. सिद्धि।।
26	भद्रा आरम्भ 20:02 से , स्कन्दषष्ठी (बंगाल)। अनु. में व्यतीपात पूर्व जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वास्तुकृषिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, वस्त्राभूषणकर्म, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, मृत्युयोग २०.२ तक तदुप. अमृत।।
27	भद्रा 08:28 तक, व्यष्टकाश्राद्धम् , भानुसप्तमी। व्यतीपात दोष के कारण मूहूर्ताभाव, सिद्धि २०.५५ तदुपरान्त मृत्यु।।
28	अष्टकाश्राद्धम् , शीतलाष्टमी (वासोड़ा)। मूल में राहुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, अमृत २२.३४ तदुप. मृत्युयोग।।
29	पू.षा. में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है,, अमृत २४.४८ तक तदुप. मृत्युयोग।। ✉ दुग्धजलादि व्यवसाय, यात्रादिकार्य, कार्य हेतु अधिकारियों से मिलना, अनुष्ठानारम्भ का मुहूर्त है। सिद्धि ०६.४ तक तदुप. मृत्युयोग।।
30	भद्रा 14:05 से 27:23 तक, उ.षा. में केतुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्युयोग २७.२३ तक तदुप. अमृत।।
31	पञ्चक 18:46 से, पापमोचिनी एकादशीव्रत (सर्वे.), वृद्धांगारक पर्व (बुढ़वामंगला)। ✿ **रेवती में सूर्य २४:५४ से, श्रवण में भौमवेध, मृत्युयोग सम्पूर्ण।।**
01	प्रदोषव्रत, मीन संक्रान्ति 23:43, पुण्यकाल मध्याह्न बाद। धनि. में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्त्राभूषणकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, चरकार्य, वाटिकारोपण, रेडीमेड कार्य, अन्नकार्य✉
02	शत. में रोगमुक्तस्नान, उग्रकर्म, ऑप्रेशन, अमृत ०८.३९ तक तदुप. सिद्धि।।
03	भद्रा 10:56 से 23:53 तक, मासशिवरात्रिव्रत। मासान्तदोष , मृत्यु १०.५६।।
04	मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव है, मृत्युयोग १२.५७ तक तदुप. सिद्धि।।
05	स्ना-दा.चैत्री श्राद्धादि अमा., मन्वादि, वर्षान्त, विक्रम संवत 2075 पूर्ण। मासान्तदोष , सिद्धि १४.२० से।।

चैत्रकृष्ण प्रतिपदि वसन्तोत्सव

चैत्रकृष्णप्रतिपदि वसन्तोत्सवः। सा चौदयिकी ग्राह्या। प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवौ। इति भविष्योक्तेः। दिनद्वये तथात्वे पूर्वा। वत्सरादौ वसन्तादौ बलिराज्ये तथैव च। पूर्वविद्धैव कर्तव्या प्रतिपत्सर्वदा बुधैः। इति वसिष्ठवचनात्। चैत्रे मासि महाबाहो पुण्ये तु प्रतिपद्दिने। यस्तत्र स्नपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्य दुरितं किञ्चिन्नाधयो व्याधयो नृप।। तथा कथ्यते - प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवौ। कृत्वा चावश्यकार्याणि सन्तर्प्य पितृदेवताः वन्देयेद्धोलिकाभूमिं सर्वदुःखोपशान्तये ।। तत्र मन्त्रः - **वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शङ्करेण च। अस्तस्त्वं पाहि नो देवि भूते भूतिप्रदा भव।।**

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मंगल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्टराहु			
22	11	6	57	17	5	19	36	24	0	29	44	2	10	24	6	35	7	29	37	35	10	0	5	12	8	25	10	42	2	29	5	58
23	11	7	56	49	6	4	14	3	1	0	23	56	10	23	30	43	7	29	41	7	10	1	17	12	8	25	14	18	2	29	2	48
24	11	8	56	20	6	18	26	51	1	1	3	49	10	23	0	33	7	29	44	28	10	2	29	14	8	25	17	50	2	29	59	37
25	11	9	55	49	7	2	11	9	1	1	43	41	10	22	36	16	7	29	47	39	10	3	41	18	8	25	21	16	2	29	56	26
26	11	10	55	15	7	15	26	28	1	2	23	31	10	22	18	0	7	29	50	40	10	4	53	24	8	25	24	37	2	29	53	15
27	11	11	54	41	7	28	14	58	1	3	3	20	10	22	5	45	7	29	53	29	10	6	5	32	8	25	27	53	2	29	50	04
28	11	12	54	4	8	10	40	38	1	3	43	8	10	21	59	27	7	29	56	8	10	7	17	42	8	25	31	4	2	29	46	54
29	11	13	53	25	8	22	48	33	1	4	22	55	10	21	58	58	7	29	58	35	10	8	29	54	8	25	34	9	2	29	43	42
30	11	14	52	45	9	4	44	11	1	5	2	41	10	22	4	7	8	0	0	52	10	9	42	8	8	25	37	9	2	29	40	32
31	11	15	52	3	9	16	32	55	1	5	42	25	10	22	14	42	8	0	2	58	10	10	54	23	8	25	40	4	2	29	37	21
01	11	16	51	19	9	28	19	42	1	6	22	8	10	22	30	31	8	0	4	53	10	12	6	40	8	25	42	54	2	29	34	10
02	11	17	50	34	10	10	8	52	1	7	1	50	10	22	51	17	8	0	6	36	10	13	18	59	8	25	45	38	2	29	31	00
03	11	18	49	46	10	22	3	53	1	7	41	31	10	23	16	48	8	0	8	9	10	14	31	19	8	25	48	17	2	29	27	49
04	11	19	48	57	11	4	7	19	1	8	21	10	10	23	46	48	8	0	9	30	10	15	43	40	8	25	50	50	2	29	24	38
05	11	20	48	5	11	16	20	51	1	9	0	49	10	24	21	3	8	0	10	40	10	16	56	3	8	25	53	18	2	29	24	38

चैत्र कृष्ण प्रतिपदि कर्त्तव्य :- प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवौ। कृत्वा चावश्यकार्याणि सन्तर्प्य पितृदेवताः।। वन्देयेत् होलिकाभूमिं सर्वदुःखोपशान्तये। यस्तत्रश्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्य दुरितं किंचिन्नाधयो व्याधयो नृप।। **होलिका भस्म धारण मन्त्र** -वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः,अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।। **चूतकुसुमप्राशन मन्त्रः** - चूतमग्र्यं वसन्तस्य माकन्दकुसुमं तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये।।

28 मार्च 2019 प्रातः 05:29
चैत्र कृष्ण 8 गुरुवार
पंक्तीष्टम् 57/50/00

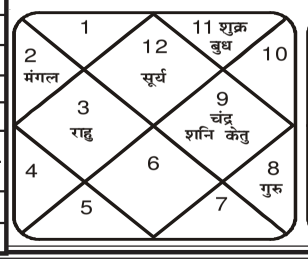

05 अप्रैल 2019 प्रातः 05:29
चैत्र कृष्ण 15 शुक्रवार
पंक्तीष्टम् 58/10/00

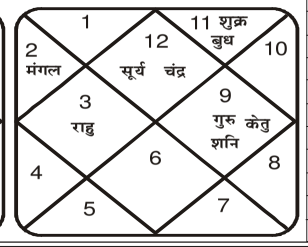

चैत्र अमावास्या - चैत्रामावास्या मन्वादिः। सा च पराह्णव्यापिनी ग्राह्या कृष्णपक्षस्थत्वात्। चैत्रकृष्ण की अमावास्या मन्वादि है और वह अपराह्णव्यापिनी ग्रहण करे क्योंकि कृष्णपक्ष होने से। यो भाट्टतन्त्रगहनार्णवकर्णधारः शास्त्रान्तरेषु निखिलेष्वपि मर्मभेत्ता। योऽत्र श्रमः किल कृतः कमलाकरेण प्रीतोऽमुना तु सुकृती बधुरामकृष्णः।।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
22	07:33:25	09:11:06	11:12:03	13:23:46	16:43:48	17:56:20	20:05:14	22:20:47	00:39:15	02:43:03	04:32:18	06:02:57
23	07:29:28	09:07:09	11:08:06	13:19:49	16:39:51	17:52:23	20:01:17	22:16:50	00:35:18	02:39:06	04:28:21	05:59:00
24	07:25:31	09:03:12	11:04:09	13:15:52	16:35:54	17:48:26	19:57:20	22:12:53	00:31:21	02:35:09	04:24:24	05:55:03
25	07:21:34	08:59:15	11:00:12	13:11:55	16:31:57	17:44:29	19:53:23	22:08:56	00:27:24	02:31:12	04:20:27	05:51:06
26	07:17:37	08:55:18	10:56:15	13:07:58	16:28:00	17:40:32	19:49:26	22:04:59	00:23:27	02:27:15	04:16:30	05:47:09
27	07:13:40	08:51:21	10:52:18	13:04:01	16:24:03	17:36:35	19:45:29	22:01:02	00:19:30	02:23:18	04:12:33	05:43:12
28	07:09:43	08:47:24	10:48:21	13:00:04	16:20:06	17:32:38	19:41:32	21:57:05	00:15:33	02:19:21	04:08:36	05:39:15
29	07:05:46	08:43:27	10:44:24	12:56:07	16:16:09	17:28:41	19:37:35	21:53:08	00:11:36	02:15:24	04:04:39	05:35:18
30	07:01:49	08:39:30	10:40:27	12:52:10	16:12:12	17:24:44	19:33:38	21:49:11	00:07:39	02:11:27	04:00:42	05:31:21
31	06:57:52	08:35:33	10:36:30	12:48:13	16:08:15	17:20:47	19:29:41	21:45:14	00:03:42	02:07:30	03:56:45	05:27:24
01	06:53:55	08:31:36	10:32:33	12:44:16	16:04:18	17:16:50	19:25:44	21:41:17	23:59:45	02:03:33	03:52:48	05:23:27
02	06:49:58	08:27:39	10:28:36	12:40:19	16:00:21	17:12:53	19:21:47	21:37:20	23:55:48	01:59:36	03:48:51	05:19:30
03	06:46:01	08:23:42	10:24:39	12:36:22	15:56:24	17:08:56	19:17:50	21:33:23	23:51:51	01:55:39	03:44:54	05:15:33
04	06:42:04	08:19:45	10:20:42	12:32:25	15:52:27	17:04:59	19:13:53	21:29:26	23:47:54	01:51:42	03:40:57	05:11:36
05	06:38:07	08:15:48	10:16:45	12:28:28	15:48:30	17:01:02	19:09:56	21:25:29	23:43:57	01:47:45	03:37:00	05:07:39

विवाह-मेलापक

वर और वधू की कुण्डली को मिलाने का ही नाम मेलापक है। यह मेलापक दो प्रकार का होता है, राशिमेलापक और ग्रहमेलापक। राशिमेलापक वर और वधु के जन्मराशि एवं जन्मनक्षत्र को आधार मानकर अष्टकूटों की सहायता से गुण निर्णय द्वारा किया जाता है। आठ कूटों के कुल गुण ३६ होते हैं। इनमें से कम से १८ (आधा) और उससे अधिक गुण प्राप्त होने पर शुभ माना जा सकता है।

राशिमेलापक - जातक की मनोवृत्ति चन्द्रमा के अधीन है। अत: जन्मनक्षत्र एवं जन्मराशि के आधार पर पति और पत्नि की अनुकूलता का विचार किया जाता है। इस अनुकूलता को परखने के लिए महर्षियों ने मुख्य रूप से आठ मानदण्ड सुनिश्चित किये है, जिन्हें अष्टकूट कहते है

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्। गणमैत्रं भकूटं च नाड़ीचैते गुणाधिका:।।

गुण प्राप्त होने पर भी निषिद्ध विचार- कभी कभी अपेक्षित अंक प्राप्त होने पर भी विवाह शुभ न होने की सम्भावना होती है। उसका मुख्य कारण होता है अष्टकूटों में निषिद्ध परिस्थितियाँ। भकूट में षष्टाष्टक, द्विर्द्वादश, नवपञ्चक आदि दोष, योनि कूट में योनि वैर, नाड़ी में एक नाड़ी आदि कुछ दोष ऐसे होते है जो अपेक्षित अंक प्राप्त होने पर भी विवाह को स्वीकार न करने में कारक बनते है।

दुष्टभकूटविचार - ३६ गुणो में से आधे अंक प्राप्त होने पर विवाह का चिन्तन कर सकते है। यह एक सामान्य नियम है। किन्तु यदि अंको में कमी दुष्ट भकूट के कारण हो रहा हो तब अवश्य इस पर पुनर्विचार करना आवश्यक है। ये दोष है षष्टाष्टक, नवपञ्चक व द्विर्द्वादश। वर एवं वधू की राशि एक दूसरे से ६-८ हो, ५-९ हो व ०२-१२ हो तो क्रमश: ये दोष उत्पन्न होते है। इन दोषों में क्रमश: मृत्यु, अपत्यहानि, निर्धनता सम्भव है।

मृत्यु:षष्टाष्टके ज्ञेयोपत्यहानिर्नवात्मजे। द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत।।

(मुहूर्तचिन्तामणि,विवाहप्रकरण, पृष्ठ ३४६)

षष्ठाष्टके मृतिर्नन्दनवमे त्वनपत्यता।नै:स्वं द्विर्द्वादशे न्येशु दम्पत्यो: प्रीतिरुत्तमा।।

(महर्षि नारद)

इनका एक परिहार इस प्रकार से है - पुरुष की राशि से स्त्री की राशि यदि पांचवी हो तो सन्तान हानि होती है। स्त्री की राशि से पुरुष की राशि यदि पांचवी हो तो वह स्त्री धनी एवं पतिवल्लभा होती है। इसी तरह स्त्री की राशि पुरुष की राशि से द्वितीय होने पर धननाश, बारहवीं होने पर पति की प्रिया (पतिवल्लभा) एवं धनवती होती है।

पुंसो गृहात्सुतगृहे सुतहा च कन्या धर्मे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।
द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या रिष्फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।।

(ज्योति:प्रकाश,पीयूषधारा,पृ.३४६)

दूसरा परिहार - भकूट दोष होने पर भी यदि राश्याधिपति एक हो अथवा राश्याधिपतियों में मैत्री हो तथा नाड़ी शुद्ध हो तो विवाह हो सकता है।

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-ऽथो राशीश्वरसौहृदेपि गदितो नाड्यृक्षशुद्धिर्यदि।।

(मुहूर्तचिन्तामणि,पृ.३४८)

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणनां न दोष:। खेटारित्वं वाशयेत् तद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।। (मुहूर्तचिन्ताणि,पृष्ठ ३५४) राश्याधिपतियों की मित्रता व शत्रुता तथा मित्रादि षष्टाष्टक, द्विर्द्वादश, नवपञ्चक आदि का ज्ञान तत्त सम्बन्धि कोष्ठकों से कर सकते है।

नाड़ी दोष - वर एवं वधू का एक नाड़ी होने पर सामान्यत: विवाह निषिद्ध है। इसका परिहार वचन निम्न प्रकार से मिलता है - **राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयो: स्यान् नक्षत्रैक्येराशियुग्मं तथैव। नाडी दोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।।** (मुहूर्तचिन्तामणि)

ग्रहमेलापक (मांगलिकयोगविचार) - वरवधू की कुण्डलियों में ग्रहस्थिति भी उन दोनों की अनुकूलता पर प्रभाव डालती है। मुख्य रूप से मंगल वैवाहिकजीवन पर घातक प्रभाव दिखाता है,यदि वह प्रतिकूल हो। लग्न अथवा चन्द्रमा से मंगल १, ४, ७, ८, १२ स्थानों में स्थित होने पर मंगली योग उत्पन्न होता है, जिसे कुजदोष के नाम से जाना जाता है। यदि वर वधू दोनों की कुण्डली में यह योग हो तो यह योग बाधक नहीं अपितु शुभ माना जाता है।

पाराशर वचन - पातालेऽपि तनौ रन्ध्रे जामित्रे वापि च व्यये। स्थित: कुज: पतिं हन्ति न चेच्छुभयुतेक्षित:।। इन्दोरप्युक्तगेहेषु स्थितो भौमोऽथवा शनि:। पतिहन्ता स्त्रियाश्चैवं वरस्य यदि स्त्रीमृति:।।

फल एवं परिहार - स्त्रीणां वैधव्यदो योग: पुंसां जन्मनि चेत् भवेत्। तदा पत्नी विनाश: स्यादुभयोश्चेच्छुभं स्मृतम्।। **दोषपरिहार** - अन्य ग्रहों के योगवश तथा अन्य राशियों के स्थितिवश भी इस मांगलिक दोष का भंग होता है जैसे - सप्तमे वाऽष्टमे भौमो गुरुणा चेन्निरीक्षित:। तदा तु सर्वसौख्यं स्यात् भौमदोषो विनश्यति।। (ज्योतिष रत्नमाला) गुरु से देखा जाता हुआ सप्तमस्थ अथवा अष्टमस्थ मंगल का दोष नष्ट होकर सभी प्रकार का सौख्य प्रदान करने वाला होता है। लग्नाद् विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपो वा। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्ययोगं च विषाङ्गनाख्यम्।। (ज्योतिष रत्नमाला) यदि जन्मकुण्डली में लग्न या चन्द्र से सप्तम स्थान में कोई शुभग्रह अथवा सप्तमेश स्थित हो तो अनपत्यदोष विषकन्या योग एवं वैधव्ययोग इन सभी नष्ट कर देता है। **केन्द्रे कोणे शुभा: खेटा: त्रिषडायेष्वसद्ग्रहा:।तदा भौमोत्थदोषो न मदे वा मदनाधिप:।।** (ज्योतिष रत्नमाला) केन्द्र (१,४,७,१०) एवं कोण (५,९) स्थानों में शुभग्रह हों तथा त्रिषडाय (३,६,११) स्थानों में पापग्रह हों, अथवा सप्तम स्थान में सप्तमेश स्थित हो तो भौमकृत मंगलीदोष का परिहार हो जाता है।

भौम तुल्यो यदा भौम: पापो वा तादृशो भवेत्। तदा शुभो विवाह: स्याच्चिरायु: पुत्रपौत्रद:।।

(ज्योतिष रत्नमाला)

अर्थात् कन्या की कुण्डली में यदि मंगल मांगलिक योग बना रहा हो तथा वर की कुण्डली में भी उसी प्रकार मंगल के द्वारा मांगलिक योग बन रहा हो अथवा वर या वधू की कुण्डली में मंगल के समान प्रभावशाली शनि, सूर्य, राहु या केतु मांगलिक स्थानों में स्थित हो तो मांगिलकदोष नष्ट होकर विवाह हेतु शुभ होता है। इसी प्रकार मांगलिक दोष के परिहार के अन्य योग भी है। जैसे-

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाश कृत।।

(फलित नवरत्न संग्रह)

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते।।

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, मकर राशि का सप्तम में, कर्क राशि का अष्टम में तथा धनु राशि का व्यय स्थान में हो मंगल का दोष नहीं होता है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे। वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते।।

बली गुरु शुक्र के लग्न या सप्तम भाव में होने पर तथा मंगल के वक्री, नीचस्थ, शत्रुगृही तथा अस्तंगत होने पर भी मंगल का दोष समाप्त हो जाता है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।द्यूने मृगे कर्किं चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते।।

अन्य आचार्य के मत में वृषराशि के मंगल को सप्तम भाव तथा कुम्भराशि के मंगल को अष्टमभाव में होने पर भौमदोष नहीं होता है।

सबलौ गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे। वक्रीनीचारिगृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोष:।।

द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तथा केन्द्र स्थित राहु मंगल की युति हो तो मंगली दोष नहीं होता है। **न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीव:। न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे।।** केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३,६,११ वें भाव में अशुभग्रह सप्तमेश स्वग्रही हो तो मंगल का दोष नहीं होता है। अत: विद्वान दैवज्ञ से ग्रह मेलापक अवश्य करवाना चाहिए।

विवाह मेलापन करने के लिए आवश्यक चक्र एवं उनका विवरण - यहाँ चक्र (सारणी) दिये हैं। उसमें पहला गुणबोधक चक्र तथा दूसरा शतपदचक्र। शतपदचक्र की सहायता से नामाद्याक्षर के आधार पर उसका नक्षत्र, राशि, वर्ण, वश्य, योनि, योनिवैर, राशीश, गुण जाना जा सकता है तथा गुणबोधक की सहायता से वर वधू के नक्षत्र एवं चरण के आधार पर अष्टकूटोत्पन्न गुण का ज्ञान किया जा सकता है।

वधूवरगुणमेलनचक्र देखने की विधि - इस चक्र में प्रत्येक नक्षत्र का प्रत्येक नक्षत्र के साथ उनके राशियों के आधार पर गुण दिये हुए है। सीधे नीचे के क्रम में दिये गये नक्षत्र स्त्री राशि के है तथा बाये से दाये के क्रम से दिए गए नक्षत्र पुरुष राशि के है।

उदाहरण - पुरुष नक्षत्र आर्द्रा का तृतीय चरण है। स्त्री नक्षत्र शतभिषा का प्रथम चरण है। बाये से दाये के क्रम में पुरुष का नक्षत्र आठवें खाने में तथा स्त्री का ऊपर से नीचे के क्रम में २३ वे खाने में है। अत: ऊपर से २३वा एवं बाये से ७ वे खाने के योग में जो सारिणी का खाना पड़ रहा है वहा १० दिया गया है। अर्थात् इन दोनों का मेलन से १० अंक मिला है जो अपेक्षित अंक से अत्यन्त कम है। अत: प्राथमिक दृष्ट्या आर्द्रा का पुरुष एवं शतभिषा की स्त्री का विवाह उत्तम नहीं माना जा सकता है।

शतपदचक्र देखने की विधि - शतपदचक्र में अष्टकूट के अन्तर्गत नक्षत्र के आधार पर देखे जाने वाले कूट, नक्षत्र का चरणाक्षर व स्वामी दिये गये है। शेष स्पष्ट है। इसी चक्र में नक्षत्रों की योनि भी दी गई है। घोड़ा-भैंसा, सिंह-हाथी, मेष-वानर, नकुल-साँप, मृग-कुत्ता, बिल्ली-चूहा, व्याघ्र-गौ इनका वैर होता है। योनिवैर में विवाह निषिद्ध है।

ग्रहों के मित्र सम एवं शत्रु ग्रह तथा उच्च नीच तथा उनसे मेलापक विचार-

मेलापक में राश्याधिपतियों के मित्र सम व शत्रु होने का प्रभाव अत्यन्त महत्त्व रखता है। मेलन में पर्याप्त अंक के मिलने पर भी इनकी स्थिति उस मेलनांक को असिद्ध कर सकती है। अत: आवश्यकता के अनुसार यहाँ पर मित्रादि कोष्ठक प्रस्तुत है।

नवपञ्चक एवं षष्टाष्टक में दोनों राशियों के अधिपतियों के मित्र होने पर मित्रनवपञ्चक व मित्रषष्टाष्टक कहा जाता है। यह मित्रता किन किन राशियों के योग में है इसका विवरण आगे दी गयी तालिकाओं में प्रदत्त है। शत्रु नवपञ्चक व शत्रुषष्टाष्टक में विवाह उत्तम नहीं हो सकता है।

विवाह मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धतिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके विवाहमुहूर्त्त का लग्न चयन करना आवश्यक है। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रह
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरण	फल

यथा - सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो । सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२ वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोष युक्त हुआ। अथवा विवाह नक्षत्र अश्विनी होने पर सूर्य यदि अनुराधा में हो तो सूर्य की लत्ता दोष एवं गुरु धनिष्ठा में हो तो गुरु की लत्तादोष मानी जाएकी। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जनना चाहिए। चन्द्र के लत्तादोष के विचारार्थ चन्द्रनक्षत्र विगत पूर्णिमान्त कालिक लेना चाहिए। **ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिता: स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि । संलत्तयन्तेऽर्कशनीज्यभौमा: सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात्।।** (मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.५९)

लत्तादोष कोष्ठक

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	स्वाती	विशा.
चन्द्र	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	स्वाती	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
मंगल	उ.भा.	भर.	कृत्ति.	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	शत.	पू.भा.
बुध	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
गुरु	धनि.	उ.भा.	रेव.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	उ.षा.	श्रवण
शुक्र	मृग.	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.
शनि	उ.षा.	शत.	पू.भा.	कृत्ति.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वाती	विशा.	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा.	धनि.	शत.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	ज्येष्ठा	मूल

(२) पातदोष ज्ञान चक्र

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् । अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत्स्यात् ।।

(मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.६०)

हर्षण, वैधृति, शूल, गण्ड, साध्य, व्यतिपात निर्दिष्ट ६ योगों के अन्त में विद्यमान नक्षत्र पातदोष से दूषित हो जाता है और शूल योग के अन्त में विद्यमान विवाहनक्षत्र **भुजंगपात दोष** नामक अपरिहार्य दोष से दूषित होता है। यहां दिए गए इस पातदोष कोष्ठक से विवाहनक्षत्रकालिक सूर्यनक्षत्र द्वारा पातदूषित विवाहनक्षत्र पर्याप्त आसन्नता से जाना जा सकता है। जैसे विवाहनक्षत्र यदि मृगशिर्ष हो तो मृग., आर्द्रा, मघा, हस्त, ज्येष्ठ, धनिष्ठा में सूर्य होने पर यह पात दोष होगा। **भुजंग** नामक विशेष पात विवाह में सर्वत्र वर्जित माना गया है। जहां कहीं भी यह दोष है, वहां इस कोष्ठक में भु.पा.(भुजंगपात) लिखा दिया गाया है।

(२) पातदोष ज्ञान चक्र

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
	रेव.	आर्द्रा भु.पा.	मृग भु.पा	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	रोहि.	कृत्ति.	अश्वि.	रोहि.	भर.	अश्वि.	रेव.	भर.	अश्वि.
	आश्ले भु.पा.	पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	आश्ले	पुष्य	आर्द्रा	आश्ले	पुन.	आर्द्रा	मृग.	पू.फा. भु.पा.	मघा भु.पा.
	मघा	पू.फा	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्येष्ठा भु.पा.	विशा. भु.पा.	स्वाती भु.पा.	चित्रा भु.पा.	उ.फा.	पू.फा.
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा.	स्वाती	धनि. भु.पा.	श्रव भु.पा.	पू.षा. भु.पा.	मूल	अनु.	विशा.	स्वाती	विशा.	स्वाती
	अनु.	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा. भु.पा.	शत. भु.पा.	शत.	धनि.	उ.षा.	धनि.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	मूल	ज्ये.
	श्रव.	शत.	धनि.	रेव. भु.पा.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	रेव.	पू.भा.	उ.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	शत.	धनि.

(३) क्रान्तिसाम्य महापातदोष कोष्ठक

सूर्य और चन्द्र की क्रान्तियों में साम्य होना ही क्रान्ति साम्य दोष होता है। क्रान्ति साम्य दोष के दो भेद होते हैं। १) व्यतिपात, २) वैधृति। **व्यतिपात -** अयन भेद हो और गोल एक ही हो ऐसी स्थिति में सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्ति तुल्य हो तो व्यतिपात नामक (क्रान्तिसाम्य) दोष होता है। **वैधृति -** अयन एक हो और गोल भिन्न भिन्न होने पर सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्तियों में समता होने पर वैधृति नामक (क्रान्तिसाम्य) दोष होता है। यथा कहा गया है - **पङ्क्तास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यलौ चापयुग्मे । तत्राऽन्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ।।** (मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.६१) अर्थात् सिंह-मे, वृष-मकर, तुला-कुम्भ, कन्या-मीन, कर्क-वृश्चिक, धनु-मिथुन, इन दो दो राशियों में सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति से क्रान्ति साम्य नामक दोष होता है। जो मङ्गल कार्यों में शुभ नहीं माना गया है। यथा - सिंह में सूर्य तथा मेष में चन्द्रमा अथवा मेष में सूर्य और सिंह में चन्द्रमा हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होगा। इसे महापात दोष भी कहा जाता है।

क्रान्तिसाम्य चक्र

सू./च. नक्षत्र मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुल वृश्चि.धनु मक. कुम्भ मीन
च./सू. नक्षत्र सिंह मक. धनु वृश्चि. मेष मीन कुम्भ कर्क मिथु. वृष तुल कन्या

(४) यामित्र दोष कोष्ठक

(नक्षत्रानुसार)

यह दोष सभी ग्रहों से देखा जाता है। जैसे यदि विवाह नक्षत्र चित्रा हो और कोई ग्रह रेवती में हो तब उस ग्रह का वहां यामित्र दोष माना जाएगा। विशेषतः इसका विचार

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
ग्रह न.	चित्रा	अनु.	ज्येष्ठा	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	कृत्ति.	मृग.	पुन.	पुष्य	श्लेषा	उ.फा.	हस्त

मुहूर्तचिन्तामणिमतानुसार जामित्रदोष

लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम् । किं वा बाणशुगमितलवगे जामित्रं स्यादशुभकरमिदम्।। (मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.६७) लग्न और चन्द्र से सप्तम भाव में यदि कोई भी ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है। इसमें विवाह नहीं करना चाहिए। अथवा लग्न एवं चन्द्र से ५ वें नवमांश पर यदि कोई भी ग्रह हो तो जामित्र दोष विशेष अशुभ कारक होता है। (यह सूक्ष्म जामित्र दोष है।) सामान्य रूप से जामित्र दोष में सम्पूर्ण लग्न का परित्याग किया जाता है। अधिकांश आचार्यों के मतों से यही स्पष्ट होता है कि जिस लग्न या राशि से सप्तम भाव में कोई भी ग्रह हो तो विवाह में उस लग्न या राशि का परित्याग कर देना चाहिए।

जामित्रदोष का परिहार - तुङ्गत्रिकोणभवने भवने निजे वा सौम्याधिमित्रगृहगोऽपि तदीक्षितो वा । जामित्रकादि परिसञ्चितदोषराशिं हृत्वा ददाति बहुशः सुखमेव चन्द्रः।।

(५) बाण पञ्चक

सूर्य के गतांशों द्वारा बाण निर्णय

रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितिरथ तष्टाऽङ्कैर्यदा पञ्च शेषाः । रुगनलनृपचौरा मृत्युसंज्ञश्च बाणो नवहृतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्यः ।। सूर्य के भुक्तांश को पृथक् पृथक् पाँच स्थानों में रखकर उनमें ६, ३, १, ८, ४ को क्रम से जोडकर ९ का भाग देने से यदि ५ शेष हो तो क्रम से रोग, अग्नि, नृप, चोर और मृत्यु संज्ञक पञ्चबाण होते हैं। अर्थात् यदि प्रथम स्थान में ५ शेष हो तो रोगबाण, द्वितीय स्थान में ५ शेष हो तो अग्निबाण इसी प्रकार तीसरे स्थान में नृपबाण, चौथे में चोरबाण तथा पाँचवें स्थान में ५ शेष हो तो मृत्युबाण होता है। मृत्युबाण को विवाह, अग्निबाण को गृहच्छादन, नृपबाण को राजसेवा, चौरबाण को यात्रा और रोगबाण को व्रतबन्ध में वर्जित किया जाता है। अर्थात् **८/१७/२६ गतांश से रोगबाण। २/११/२०/२९ गतांश से सशल्य अग्निबाण। ४/१३/२२ गतांश से नृपबाण। ६/१५/२४ गतांश से चौरबाण। १/१०/१९/२८ गतांश से मृत्युबाण होता है।**

बाणदोष परिहार

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययोर्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ । रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे वर्ज्याश्च क्रमतो बुधैः रुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिः ।।(मुहू.चिन्त.विवा.प्र.श्लो.) वैसे मृत्यु को बुधवार, दोनों सन्ध्याकालों में, अग्नि को मंगलवार सर्वदा, नृप को शनिवार दिन के समय, चौर को मंगलवार रात्रि में और रोग को रविवार रात्रि में वर्जित लिखा गया है। लेकिन मुहूर्त्तशोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्जित करना चाहिए।

(६) एकार्गल दोष

यह दोष सूर्यनक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्र पर चन्द्र स्थिति के समय विष्कम्भ आदि योग होने पर होता है। जैसे - विवाहनक्षत्र मघा के समय यदि सूर्य पू.षा, अभि., धनि., पू.भा. आदि में से किसी नक्षत्र में विद्यमान हो तो एकार्गलदोष होगा, बशर्ते कि विवाहनक्षत्र के समय विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, परिघ, व्यतीपात या वैधृति योगों में से कोई योग वहां हो। यहां नक्षत्र गणना साभिजित् होगी।

व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वशूलान्त्यवज्रे परिघातिगण्डे ।
योगे विरुद्धे त्वभिजित्समेतः खार्जूरमर्काद्विषमे शशी चेत् ।।(मुहू.चिन्त.विवा.प्र.श्लो.६२)

विशेष - वस्तुतः उक्त योग का नाम एकार्गल दोष ही है। खार्जूर चक्र से इसका विचार किया जाता है, तथा खार्जूरचक्र एकार्गल का ही अगंभूत है, अतः इस दोष को खार्जूर दोष भी कहा जाता है। खार्जूरचक्र के निर्माण की विधि नारदादि आचार्यों ने भिन्न प्रकार से बतलाया है। व्याघात, शूल, परिघ, पात, विष्कुम्भ, गण्ड, अतिगण्ड, वज्र एवं वैधृति योगों में क्रम से पुनर्वसु, मृगशिरा, मघा, आश्लेषा, अश्विनी, मूल, अनुराधा, पुष्य एवं चित्रा नक्षत्रों को खार्जूर चक्र के शीर्ष में स्थापित करना चाहिये। खार्जूरचक्र का निर्माण १ उर्ध्वाधः तथा १३ तिरछी रेखाओं से होता है। यहाँ साभिजित् गणना ग्रहण नहीं की गई है। परन्तु अभिजित् का परित्याग करने पर एक रेखा में विषम नक्षत्र नहीं आसकेगे। अतः चक्र में अभिजित् को ग्रहण करना आवश्यक है।

एकार्गल (खार्जूर) दोष चक्र

विव. नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	अश्वि	पू.भा.	शत.	पू.षा.	ज्येष्ठा	अनु.	विशा.	स्वाती	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	मृग.	रोहि.	कृत्ति.	भर.
	कृत्ति.	रेव.	उ.भा.	अभि.	पू.षा.	मूल	ज्येष्ठा	अनु.	स्वाती	हस्त	पू.फा.	पुन.	आर्द्रा	मृग.	रोहि.
	मृग.	भर.	अश्वि.	धनि.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	हस्त	आश्ले.	पुष्य	पुन.	आर्द्रा
	पुन.	रोहि.	कृत्ति.	पू.भा.	धनि.	श्रव.	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	पू.फा.	मघा	आश्ले.	पुष्य
	आश्ले.	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	उ.षा.	मूल	अनु.	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुन.	भर.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव.	उ.षा.	मूल	स्वाती	चित्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	आश्ले.	रोहि.	भर.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	शत.	श्रव.	उ.षा.	अनु.	विशा.	स्वाती	चित्रा
	मूल	विशा	स्वाती	मघा	पू.ष्या	पुन.	आर्द्रा	मृग.	कृत्ति.	अश्वि.	उ.भा.	श्रव.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्येष्ठा	अनु.	उ.फा.	मघा	आश्ले.	पुष्य	पुन.	मृग.	कृत्ति.	अश्वि.	शत.	धनि.	श्रव.	अभि.
	श्रव.	उ.षा.	मूल	चित्रा	पू.फा.	उ.फा.	मघा	आश्ले.	पुन.	मृग.	कृत्ति.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	धनि.
	शत.	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	मृग.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्येष्ठा	विशा.	स्वाती	चित्रा	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	कृत्ति.	भर.	अश्वि.	रेवती

(७) उपग्रहदोष चक्र

सूर्य नक्षत्र से चान्द्रनक्षत्र यदि ५, ८, १०, १४, ७, १९, १५, १८, २१, २२, २३, २४, २५ संख्यक हों तो उपग्रह नामक दोष होता है। यह कुरु बाह्लीक देश वासियों के लिए शुभकारक नहीं होता है। उपग्रह दोष का ज्ञान इस कोष्ठक द्वारा सूर्यनक्षत्र और विवाह नक्षत्र से किया जाता है। जैसे विवाह नक्षत्र यदि उ.फा. हो तो पुष्य, आर्द्रा, मृग. या कृत्तिका आदि किसी भी नक्षत्र में सूर्य के होने पर यह दोष होता है।

उपग्रहदोष चक्र (केवल सूर्य नक्षत्र से देखिए)

विव. नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	शत.	रेव.	अश्वि.	आर्द्रा	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	श्रव.	धनि.
नक्षत्र	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	स्वाती	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
	मूल	श्रव.	धनि.	अश्वि.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु.	ज्येष्ठा
	स्वाती	ज्येष्ठा	मूल	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले.	मघा	हस्त	चित्रा
	चित्रा	अनु.	ज्येष्ठा	धनु.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	कृत्ति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त
	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	श्लेषा	मघा
	मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	पुष्य	श्लेषा
	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	आर्द्रा	पुन.
	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
	आर्द्रा	श्लेषा	मघा	स्वाती	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
	मृग.	पुष्य	श्लेषा	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.
	रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृत्ति.

।। शतपदचक्र ।।

नक्षत्र	चरण	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाडी
अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	देव	आदि
भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका-१	अ	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	मेढ़ा	राक्षस	अन्त्य
कृत्तिका२,३,४	इ,उ,ए	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	मेढा	राक्षस	अन्त्य
रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	मनुष्य	अन्त्य
मृगशिरा १,२	वे,वो	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	देव	मध्य
मृगशिरा ३,४	का,की	मिथुन	बुध	शूद्र	नर	सर्प	देव	मध्य
आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	शूद्र	नर	श्वान	मनुष्य	आदि
पुनर्वसु १,२,३	के,को,हा	मिथुन	बुध	शूद्र	नर	मार्जार	देव	आदि
पुनर्वसु ४	ही	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	देव	आदि
पुष्य	हू,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मेढ़ा	देव	मध्य
आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	राक्षस	अन्त्य
मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	राक्षस	अन्त्य
पू.फाल्गुनी	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मनुष्य	मध्य
उ.फाल्गुनी १	टे	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	गौ	मनुष्य	आदि
उ,फा.२,३,४	टो,पा,पी	कन्या	बुध	वैश्य	नर	गौ	मनुष्य	आदि
हस्त	पू,षा,ण,ढ	कन्या	बुध	वैश्य	नर	महिष	देव	आदि
चित्रा १,२	पे, पो	कन्या	बुध	वैश्य	नर	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
चित्रा ३,४	रा,री	तुला	शुक्र	शूद्र	नर	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
स्वाती	रु,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	शूद्र	नर	महिष	देव	अन्त्य
विशाखा १,२,३	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	शूद्र	नर	व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य
विशाखा ४	तो	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य
अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	मृग	दैव	मध्य
ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	मृग	राक्षस	आदि
मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	क्षत्रिय	नर	श्वान	राक्षस	आदि
पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	क्षत्रिय	नर चतुष्पद	वानर	मनुष्य	मध्य
उ.षाढा १	भे	धनु	गुरु	क्षत्रिय	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य
उ.षाढा २,३,४	भो,जा,जी	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य
श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद जलचर	वानर	देव	अन्त्य
धनिष्ठा १,२	गा,गी	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद	सिंह	राक्षस	मध्य
धनिष्ठा ३,४	गू,गे	कुम्भ	शनि	शूद्र	नर	सिंह	राक्षस	मध्य
शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	शूद्र	नर	अश्व	राक्षस	आदि
पू.भाद्र.१,२,३	से,सो,दा	कुम्भ	शनि	शूद्र	नर	सिंह	मनुष्य	आदि
पूर्वा भाद्र. ४	दी	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	सिंह	मनुष्य	आदि
उ.भाद्रपद	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य
रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	गज	देव	अन्त्य

।। ग्रहमैत्री,उच्च नीच चक्र।।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल
मित्र	चन्द्र,मंगल,गुरु	सूर्य,बुध	सूर्य,चन्द्र,गुरु
सम	बुध	मंगल,गुरु,शुक्र,शनि	शुक्र,शनि
शत्रु	शुक्र,शनि		बुध
उच्च	मेष-१०	वृष-०३	मकर-२८
नीच	तुला-१०	वृश्चिक-०३	कर्क-२८

।। ग्रहमैत्री,उच्च नीच चक्र।।

ग्रह	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	सूर्य,शुक्र	सूर्य,चन्द्र,मंगल	बुध,शनि	बुध,शुक्र
सम	मंगल,गुरु,शनि	शनि	मंगल,गुरु	गुरु
शत्रु	चन्द्र	बुध,शुक्र	सूर्य,चन्द्र	सुर्य,चन्द्र,मंगल
उच्च	कन्या-१५	कर्क-०५	मीन-२७	तुला-२०
नीच	मीन-१५	मकर-०५	कन्या-२७	मेष-२०

।। द्विद्वादशचक्र ।।

मित्रद्विद्वादश						शत्रुद्विद्वादश					
१२	०२	०४	०६	०८	१०	०१	०३	०५	०७	०९	११
०१	०३	०५	०७	०९	११	०२	०४	०६	०८	१०	१२

।। नव पंचमचक्र ।।

मित्रनवपंचमचक्र						शत्रुनवपंचमचक्र					
०१	०२	०३	०५	०७	०८	०९	१०	१२	११	०६	०४
०५	०६	०७	०९	११	१२	०१	०२	०४	०३	१०	०८

।। षडाष्टकचक्र ।।

मित्रषडाष्टक						शत्रुषडाष्टक					
०१	०३	०५	०७	०९	११	०१	०३	०५	०७	०९	११
०८	१०	१२	०२	०४	०६	०६	०८	१०	१२	०२	०४

।। वर्गचक्र ।।

गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष
अ,इ,उ,ए	क,ख,ग,घ,ङ	च,छ,ज,झ,ञ	ट,ठ,ड,ढ,ण	त,थ,द,ध,न	प,फ,ब,भ,म	य,र,ल,व	श,ष,स,ह

।।विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम् ।।

रविः	चन्द्रः	गुरुः	ग्रहाः
३/६/१०/११	३/६/७/१०/११	२/५/७/९/११	शुभस्थानानि
१/२/५/७/९	१/२/५/९	१/३/१०/६	पूज्यस्थानानि
४/८/१२	४/८/१२	४/८/१२	अशुभस्थानानि

अष्टविधमेलापक चक्र

१ वर्णगुण ।।वर।।

कन्या

वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

२ वश्यगुण ।।वर।।

कन्या

वश्य	चतु.	मान.	जल	वन	कीट
चतु.	2	1	1	0	1
मान.	1	2	।।	0	1
जल	1	।।	2	1	1
वन	0	0	1	2	0
कीट	1	1	1	0	2

३ तारागुण ।।वर।।

कन्या

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
2	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
3	1।।	1।।	0	1।।	0	1।।	0	1।।	1।।
4	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
5	1।।	1।।	0	1।।	0	1।।	0	1।।	1।।
6	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
7	1।।	1।।	0	1।।	3	1।।	0	1।।	1।।
8	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
9	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3

४ योनिकूटगुण ।।वर।।

कन्या

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	1	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	2	2	2	2	0
मेष	3	3	4	3	2	3	3	3	3	1	3	0	3	0
सर्प	2	2	3	4	2	2	1	1	2	2	2	2	2	0
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	2	2	3	2	1	4	0	2	2	1	2	2	2	2
मूषक	2	2	2	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	1	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्याघ्र	1	2	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	2	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	3
वानर	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
नकुल	2	2	3	0	2	2	2	3	2	2	2	4	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	2	2	3	2	2	2	2	4

५ ग्रहमैत्रीगुण ।।वर।।

कन्या

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	।।	।।
मंगल	5	4	5	।।	5	3	।।
बुध	4	1	।।	5	।।	5	4
गुरु	5	4	5	।।	5	।।	3
शुक्र	0	।।	3	5	।।	5	5
शनि	0	।।	।।	4	3	5	5

६ गणगुण ।।वर।।

कन्या

गण	देव	मानव	राक्षस
देव	6	5	0
मानव	5	6	0
राक्षस	0	0	6

८ नाड़ीगुण ।।वर।।

नाडी	आद्य	मध्य	अन्त्य
आद्य	0	8	8
मध्य	8	0	6
अन्त्य	8	8	0

७ राशिकूटगुण ।।वर।।

कन्या

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	7
वृष	0	7	0	7	7	7	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

ग्रहमैत्रीविचार

	मित्रग्रह	समग्रह	शत्रुग्रह
सूर्य	चं. मं. गु.	बु.	शु.श.रा.
चन्द्र	सू.बु.	मं.गु.शु.श.	रा.के.
मंगल	सू. चं. गु.	शु. श.	बु.रा.के.
बुध	सू. शु.रा.	मं.गु.श.	चं.के.
गुरु	सू. चं. मं.	श.	बु.शु.रा.के.
शुक्र	बु.श.रा.	गु.	सू.चं.के.
शनि	बु.शु.रा.	गु.	सू.चं.मं.के.
राहु	बु.शु.श.	गु.	सू.चं.मं.के.
केतु	सू.चं. मं.	बु. गु.	शु.श. रा.

वरवधूगुणबोधक चक्र

वर — कन्या	अश्विनी	भरणी	कृति.१	कृति.२	कृति.३	रोहिणी	मृग.१	मृग.२	आर्द्रा	पुन.१	पुन.२	पुन.३	पुष्य	अश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.२	उ.फा.३	हस्त	चित्रा१	चित्रा२	स्वाती	विशा.१	विशा.२	विशा.३	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.१	उ.षा.२	उ.षा.३	श्रवण	धनि.१	धनि.२	शत.	पू.भा.१	पू.भा.२	पू.भा.३	उ.भा.	रेवती
अश्विनी	28	33	28	18	21	22	26	17	18	22	31	27	21	26	16	11	09	13	22	26	22	19	26	14	13	26	24	26	26	20	20	15	16	14	24	26
भरणी	34	28	29	19	22	14	18	26	26	30	23	24	20	18	26	21	20	05	14	29	22	19	17	19	20	19	27	28	27	10	10	20	24	22	17	26
कृति.१	27	29	28	18	10	18	22	20	23	26	27	23	16	19	20	15	16	18	27	16	19	16	21	26	24	18	14	15	12	25	25	27	19	17	19	12
कृति.२	18	20	19	28	21	26	17	17	18	22	24	20	18	21	22	21	21	23	22	11	14	21	26	31	20	13	09	13	11	23	29	31	23	20	22	13
कृति.३	23	23	09	18	28	36	27	23	23	27	27	13	12	26	27	25	26	20	19	15	09	16	30	24	14	20	11	16	18	20	26	24	30	27	26	19
रोहिणी	23	14	18	27	35	28	19	24	23	27	20	22	20	16	25	23	26	13	11	25	17	23	22	25	15	11	17	21	26	12	19	27	29	26	17	27
मृग.१	27	18	22	18	27	20	28	33	31	19	12	15	23	19	27	30	34	21	14	27	20	14	12	14	23	19	25	21	26	13	14	22	24	26	17	27
मृग.२	19	27	21	18	24	26	34	28	25	13	20	13	22	28	21	24	24	27	20	27	20	13	17	03	16	28	28	23	22	18	19	12	17	19	27	27
आर्द्रा	19	26	23	20	22	24	32	24	28	16	23	17	22	26	20	23	24	26	19	27	21	14	20	06	14	27	27	22	23	18	19	11	17	19	27	27
पुन.३	21	28	23	22	25	26	19	10	14	28	35	28	16	20	14	17	18	20	19	27	21	20	26	11	08	21	21	26	27	22	12	07	11	17	25	24
पुन.१	30	21	26	23	25	18	11	18	21	35	28	30	18	14	23	26	27	12	11	26	21	20	19	22	17	11	22	27	25	13	04	14	18	24	18	27
पुष्य	26	23	22	19	12	21	14	12	16	28	30	28	15	15	17	19	20	24	24	12	16	14	20	25	22	15	07	11	12	27	18	18	12	18	20	13
अश्ले.	21	20	17	17	11	18	22	21	21	16	18	17	28	30	26	15	16	21	24	11	16	22	25	32	24	19	09	05	06	18	23	24	17	18	19	12
मघा	25	19	20	21	23	15	19	27	26	23	18	17	30	28	34	23	21	07	10	24	18	24	22	24	18	17	25	21	19	04	09	18	23	23	17	25
पू.फा.	16	25	20	21	25	23	27	20	20	17	26	19	26	34	28	17	16	13	16	25	16	22	31	17	09	25	26	22	21	12	17	11	15	16	27	25
उ.फा.१	13	21	16	21	25	23	30	23	23	19	28	21	17	25	19	28	27	24	16	25	16	18	28	13	14	29	30	26	25	16	16	10	14	18	29	27
उ.फा.२	11	20	17	22	25	26	33	22	23	19	28	22	17	21	16	26	28	28	20	26	18	20	26	12	15	27	28	24	25	21	21	06	15	19	27	28
उ.फा.३	14	06	19	23	20	13	20	26	25	21	13	26	22	08	14	24	28	28	20	20	26	28	12	25	27	13	21	17	19	17	17	24	17	21	11	22
हस्त	23	15	28	23	20	13	14	20	19	21	13	25	25	11	17	17	21	21	28	28	34	23	07	21	27	13	22	25	27	25	19	26	19	14	04	15
चित्रा१	28	29	17	12	15	26	27	26	27	28	28	14	12	24	25	25	27	21	28	28	20	10	21	16	23	27	19	22	23	29	23	21	27	21	20	13
चित्रा२	23	23	20	15	10	19	20	20	21	22	22	18	17	19	17	17	19	27	34	20	28	18	17	20	27	21	14	17	17	31	25	26	21	15	13	06
चित्रा३	17	17	14	19	14	23	13	12	13	19	19	14	21	23	21	18	19	27	22	08	17	28	28	31	21	15	08	12	12	26	25	25	20	20	18	11
स्वाती	24	14	19	24	27	20	11	16	19	25	18	20	24	20	29	25	25	11	06	21	17	28	28	31	15	13	21	25	26	13	13	21	26	25	18	26
विशा.१	12	17	24	29	22	23	13	03	05	10	20	25	31	23	16	13	12	25	19	15	19	31	31	28	14	17	16	20	21	26	25	18	11	10	21	21
विशा.२	12	20	24	19	13	14	22	15	13	09	18	24	24	18	09	13	14	26	26	22	26	22	16	15	28	28	26	15	16	20	28	21	14	16	25	28
विशा.३	26	19	18	12	19	11	19	27	27	23	13	17	19	17	25	28	26	12	12	27	20	16	16	18	28	28	34	23	24	08	16	23	30	32	23	32
अनु.	25	27	14	08	11	18	25	27	27	23	24	09	09	25	26	29	28	21	21	19	13	10	24	18	26	34	28	17	15	15	23	23	29	31	32	23
ज्येष्ठा	28	29	15	13	16	22	20	22	22	28	29	14	05	21	22	25	24	17	24	22	16	14	28	22	16	25	19	28	26	26	17	17	23	30	31	22
मूल	27	27	13	11	17	26	23	21	22	28	26	15	06	18	20	23	24	18	25	22	16	14	28	23	17	23	14	25	28	30	20	18	23	30	29	22
पू.षा.	21	11	26	23	20	13	10	16	17	23	13	28	18	04	12	16	20	16	23	27	30	28	15	28	21	09	16	26	30	28	18	23	19	26	15	23
उ.षा.१	21	11	26	30	27	20	13	19	19	15	05	20	24	10	18	17	22	18	19	23	25	26	13	26	29	17	24	18	22	20	28	33	28	18	07	15
उ.षा.२	16	21	28	32	25	27	21	12	13	08	16	20	25	19	12	11	10	25	26	21	26	26	22	19	22	24	24	18	19	25	33	28	19	09	17	17
उ.षा.३	18	25	20	24	31	31	24	17	18	13	21	14	18	24	16	15	17	18	19	28	21	21	27	12	15	31	30	24	25	20	28	19	28	18	23	20
श्रवण	14	21	16	19	26	26	25	18	19	18	26	18	16	22	14	16	18	19	12	21	14	21	27	11	15	31	30	29	30	25	17	07	16	28	33	30
धनि.२	24	15	18	21	25	17	16	25	27	26	19	20	17	15	25	27	26	09	02	19	12	19	20	22	24	22	31	30	29	14	06	16	21	33	28	34
धनि.२	25	24	11	14	17	26	25	24	25	24	27	13	12	22	23	25	26	20	13	11	05	12	27	22	26	30	21	20	22	22	14	16	18	29	34	28

।। ग्रहों की विंशोंतरी दशामान एवं अन्तर्दशा चक्र ।।

सूर्य दशावर्ष ६ कृ.उ.फा.उ.षा. अन्तर्दशा				चन्द्र दशावर्ष १० रो.ह.श्रवण अन्तर्दशा				मंगल दशावर्ष ७ मृ.चि.धनिष्ठा अन्तर्दशा				राहु दशावर्ष १८ आ.स्वा.शत. अन्तर्दशा				गुरु दशावर्ष १६ पुन.वि.पू.भा. अन्तर्दशा				शनि दशावर्ष १९ पुष्य.अनु.उ.भा. अन्तर्दशा				बुध दशावर्ष १७ अश्ले.ज्ये.रेवती अन्तर्दशा				केतु दशावर्ष ७ मघा मूल.अश्वि. अन्तर्दशा				शुक्र दशावर्ष २० पू.फा.पू.षा.भ. अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	००	०३	१८	च.	००	१०	००	म.	००	०४	२७	रा.	०२	०८	१२	गु.	०२	०१	१८	श.	०३	००	०३	बु.	०२	०४	२७	के.	००	०४	२७	शु.	०३	०४	००
च.	००	०६	००	म.	००	०७	००	रा.	०१	००	१८	गु.	०२	०४	२४	श.	०२	०६	१२	बु.	०२	०८	०९	के.	००	११	२७	शु.	०१	०२	००	सू.	०१	००	००
म.	००	०४	०६	रा.	०१	०६	००	गु.	००	११	०६	श.	०२	१०	०६	बु.	०२	०३	०६	के.	०१	०१	०९	शु.	०२	१०	००	सू.	००	०४	०६	च.	०१	०८	००
रा.	००	१०	२४	गु.	०१	०४	००	श.	०१	०१	०९	बु.	०२	०६	१८	के.	००	११	०६	शु.	०३	०२	००	सू.	००	१०	०६	च.	००	०७	००	म.	०१	०२	००
गु.	००	०९	१८	श.	०१	०७	००	बु.	००	११	२७	के.	०१	००	१८	शु.	०२	०८	००	सू.	००	११	१२	च.	०१	०५	००	म.	००	०४	२७	रा.	०३	००	००
श.	००	११	१२	बु.	०१	०५	००	के.	००	०४	२७	शु.	०३	००	००	सू.	००	०९	१८	च.	०१	०७	००	म.	००	११	२७	रा.	०१	००	१८	गु.	०२	०८	००
बु.	००	१०	०६	के.	००	०७	००	शु.	०१	०२	००	सू.	००	१०	२४	चं.	०१	०४	००	म.	०१	०१	०९	रा.	०२	०६	१८	गु.	००	११	०६	श.	०३	०२	००
के.	००	०४	०६	शु.	०१	०८	००	सू.	००	०४	०६	चं.	०१	०६	००	मं.	००	११	०६	रा.	०२	१०	०६	गु.	०२	०३	०६	श.	०१	०१	०९	बु.	०२	१०	००
शु.	०१	००	००	सू.	००	०६	००	चं.	००	०७	००	मं.	०१	००	१८	रा.	०२	०४	२४	गु.	०२	०६	१२	श.	०२	०८	०९	बु.	००	११	२७	के.	०१	०२	००

अन्तर्दशावर्षादि विंशोत्तरी का = $\frac{\text{ग्रहदशावर्ष} \times \text{इष्ट दशावर्ष}}{१२०}$ प्रत्यन्तर्दशा = $\frac{\text{अन्तर्दशा वर्ष} \times \text{ग्रह दशावर्ष}}{१२०}$

।। योगिनी दशा एवं अन्तर्दशा चक्र ।।

मंगला १ श्रवण आर्द्रा चित्रा			पिंगला २ धनिष्ठा.पुन. स्वाती			धान्या ३ शत.पुष्य विशाखा			भ्रामरी ४ अश्वि.अश्ले. अनु.पूर्वाभाद्र			भद्रिका ५ भरणी मघा ज्येष्ठा			उल्का ६ कृति.पू.फा.मूल रेवती			सिद्धा ७ रो. उ.फा. पू.षा.			संकटा ८ मृग. हस्त. उ.षा.		
द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.
मं.	००	१०	पि.	०१	१०	धा.	०३	००	भ्रा.	०५	१०	भ.	०८	१०	उ.	१२	००	सि.	१६	१०	स.	२१	१०
पि.	००	२०	धा.	०२	००	भ्रा.	०४	००	भ.	०६	२०	उ.	१०	००	सि.	१४	००	स.	१८	२०	मं.	०२	२०
धा.	०१	००	भ्रा.	०२	२०	भ.	०५	००	उ.	०८	००	सि.	११	२०	स.	१६	००	मं.	०२	१०	पि.	०५	१०
भ्रा.	०१	१०	भ.	०३	१०	उ.	०६	००	सि.	०९	१०	स.	१३	१०	मं.	०२	००	पि.	०४	२०	धा.	०८	००
भ.	०१	२०	उ.	०४	००	सि.	०७	००	स.	१०	२०	मं.	०१	२०	पि.	०४	००	धा.	०७	००	भ्रा.	१०	२०
उ.	०२	००	सि.	०४	२०	स.	०८	००	मं.	०१	१०	पि.	०३	१०	धा.	०६	००	भ्रा.	०९	१०	भ.	१३	१०
सि.	०२	१०	स.	०५	१०	मं.	०१	००	पि.	०२	२०	धा.	०५	००	भ्रा.	०८	००	भ.	११	२०	उ.	१६	००
स.	०२	२०	मं.	००	२०	पि.	०२	००	धा.	०४	००	भ्रा.	०६	२०	भ.	१०	००	उ.	१४	००	सि.	१८	२०

अन्तर्दशावर्षादि योगिनी = $\frac{\text{ग्रहदशावर्ष} \times \text{इष्ट दशावर्ष}}{३६}$ = वर्षादिफल

विंशोत्तरी दशासाधन

गतर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडी सहिता भभोग: ।। (ता.नी.श्लो१७)

भयात = (६० - गतनक्षत्रमान) + इष्टकाल

भभोग = (६० - गतनक्षत्रमान) + जन्मनक्षत्रमान

भयातगुणितं रवेटदशामानं भभोगहृत् ।
भुक्तवर्षादिकं तस्य भोग्यं मानं विशोधनात् ।। (बृ.पा.हो.४७/१४)

भुक्तदशावर्षादि = $\frac{\text{पलात्मकभयात} \times \text{दशावर्ष}}{\text{पलात्मकभभोग}}$

यहाँ लब्धि वर्ष होगा, जो शेष बचेगा उसको १२ से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने से लब्धि मास होगा और शेष को पुन: ३० से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने से लब्धि दिन होगा। उसी प्रकार ६० से गुणा करके भभोग से भाग देकर घटी एवं पल बना लेना चाहिए।
भोग्यदशावर्षादि = दशावर्ष - ग्रहभुक्तदशावर्ष

।। दिन का चौघड़िया ।।

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३।।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
३।।।	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
३।।।	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३।।।	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
३।।।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
३।।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३।।।	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
३।।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

।। रात का चौघड़िया ।।

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३।।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३।।।	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
३।।।	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
३।।।	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
३।।।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
३।।।	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३।।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
३।।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

।। छिक्का विचार ।।

पूर्वदिशा	आग्नेयदिशा	दक्षिणदिशा	नैऋत्यदिशा	पश्चिमदिशा	वायव्यदिशा	उत्तरदिशा	ईशानदिशा	बासर :
विघ्न	विलम्ब	उत्तम	मृति	शुभम्	आगमन	लाभ	विलम्ब	**रवि**
लाभ	विलम्ब	मृति	लाभ	शुभम्	उत्तम	अल्पलाभ	विलम्ब	**चन्द्र**
मित्रागमन	लाभ	विलम्ब	मृति	लाभ	विदेशयात्रा	सुख	लाभ	**भौम**
सिद्धि	देहकष्ट	अरिष्ट	विलम्ब	मृति	धननाश	चौरभय	देहकष्ट	**बुध**
चिन्ता	वार्ता	विलम्ब	उत्तम	चौरभय	मृति	कष्ट	वार्ता	**गुरु**
धनादि	कलह	मित्रागमन	अर्थलाभ	उत्तम	विलम्ब	मरणम्	कलह	**शुक्र**
अर्थनाश	कष्टनाश	वार्ता	मित्रागमन	उत्तम	शुभ	विलम्ब	कष्टनाश	**शनि**

।। पल्लीपतन के फल ।।

स्थानं	फलं	स्थानं	फलं	स्थानं	फलं	स्थानं	फलं	स्थानं	फलं
शिरसि	राज्यलाभ:	ललाटे	बंधुदर्शनम्	भ्रूमध्ये	राज्यसम्मानम्	उत्तरोष्ठे	धननाश:	अधरोष्ठे	धनैश्वर्यप्राप्ति
नासाग्रे	व्याधिपीड़नं	दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	वामकर्णे	लाभ:	नेत्रयो:	धनप्राप्ति:	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यं
वामभुजे	राजभीति:	कण्ठे	शत्रुनाश:	स्तनद्वये	दौर्भाग्यम्	उदरे	भूषणलाभ:	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाश:
जानुद्वये	शुभगम:	जंघयो:	शुभावह:	हस्तद्वये	वस्त्रलाभ:	स्कन्धयो:	विजयीभवेत्	नाभौ	बहुधनं
कटिभागे	अश्वलाभ:	द.मणिबंधे	धनहानि:	वामणिवन्धे	अपकीर्ति:	हृदये	धनलाभ:	मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
गुल्फयो:	बंधनभीति:	केशान्ते	मरणम्	दक्षिणपादे	गमनम्	वामपदे	बंधुविनाश:	पादमध्ये	खीनाश:

।। नष्टवस्तुज्ञान ।।

अंधलोक.	रोहिणी	पुष्य	उ.फा	विशा.	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	पूर्व में शीघ्र
मंदलो.	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	दक्षिण में ३ दिन
मध्यलो.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	पश्चिम में ६४ दिन
सुलोचन	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	उत्तरे नष्टं

।। दिशाशूल बोधक चक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
शनि	चन्द्र	गुरु	बुध	रवि	शुक्र	मंगल	बुध	दिनानि

।। अङ्गस्फुरण के फल ।।

मस्तक	पृथ्वीलाभ:	नाक	प्रीति:सुखम्	ग्रीवार्धस्फुरण	रिपु भयम्
ललाट	स्थानलाभ:	हस्त	वांछितसिद्धि:	पृष्ठस्फुरण	युद्धपराजय:
स्कन्ध	भोगसमृद्धि:	कटि	प्रभोदेबलञ्च	कपोलस्फुरण	वरांगना प्राप्ति
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति:	कटिपार्श्व	प्रीतिरनुत्तमा	मुखस्फुरण	मित्रप्राप्ति:
भ्रूयुग्म	महत्सौरव्यम्	कुक्षिस्फुरण	स्त्रीप्राप्ति:	बाहुस्फुरण	मधुरभोजनम्
कपाल	शुभावाप्ति:	ओष्ठस्फुरण	प्रियवस्तुलाभ	ब्राहुमध्ये	धनागम:
नेत्र	धनप्राप्ति:	हनुदेशस्फुरण	भयं महत्	उरुस्फुरण	वस्त्रलाभ:
नेत्रसमीप	प्रियसमागम:	कण्ठस्फुरण	ऐश्वर्यलाभ:	जानुस्फुरण	शत्रुवृद्धि:
				जंघस्फुरण	स्वामीप्रीति:

।। नक्षत्र कष्टावली ।।

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रवशाद् रोगदिन संख्या 1	2	3	4	रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्यबलि
अश्विनी	भोजनदान	09	11	10	20	मृत्युञ्जय मंत्रजप:	घोड़े के लिए धान्य बलि।
भरणी	गो-अन्नादिदान	00	80	40	11	यमायतवेति मन्त्रजप:	गज के लिए तिल बलि।
कृतिका	स्वर्णदान	09	11	16	28	अग्निर्मूर्धेतिमन्त्रजप:	कछुए के लिए घृतदान।
रोहिणी	घृतदान	07	09	18	30	ब्रह्मायज्ञेतिमन्त्रजप:	सर्प को दूध दान।
मृगशिरा	तिलदान	09	05	07	10	इमं देवेति मन्त्रजप:	खरगोश के लिए भोजन दान।
आर्द्रा	गोदान	00	18	00	00	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र:	बकरे को भोजन करवाना।
पुनर्वसु	पीततलदान	07	15	02	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्र:	सूअर को धान्य खिलाए।
पुष्य	तैल एवं अन्नदान	07	07	10	21	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे को दही खिलाए।
आश्लेषा	गो-अजादि दान	00	07	41	00	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाब को दूध पिलाए।
मघा	वस्त्र एवं घृतदान	15	07	17	20	पितृभ्य: इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलाए।
पू.फा.	भोजनदान	00	15	00	30	भगमप्रणेति मन्त्रजप:	ऊंट को शहद खिलाऐ।
उ.फा.	अन्नदान	07	14	07	60	दध्यावद्धेति मन्त्रजप:	गाय को शाक खिलाए।
हस्त	तैलदान	15	17	15	00	उदत्यं जातवेदेति मन्त्र:	भैंसे को अन्न खिलाए।
चित्रा	दुग्धदान	11	09	09	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्र:	तगर-धतूरे के फूल वन में रखे।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	00	वायोरग्नेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलाए।
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	15	00	04	13	इन्द्राग्नी इति मन्त्र:	वन में गुड़ुँ भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्र:	पशुओं को कुत्थी सहित भात गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	09	06	04	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें।
मूल	चांदी के पात्रदान	00	09	15	06	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गाय व मोतीदान	00	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्र:	कछुए के लिए अन्नकणदान करें
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य खिलाएं।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	06	09	विष्णोरराटेति मन्त्र:	भैंसे को मीठा खिलाए
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	04	20	21	वसो- पवित्रेति मन्त्र:	मनुष्य को दही, अन्न खिलाए
शतभिषा	भोजन, अन्नदान	04	45	03	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्र:	गौ को चावल खिलाए।
पू.भा.	भोजनदान	00	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र:	कौए को फल खिलाएं।
उ.भा.	अन्नदान	10	03	09	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र:	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान	18	10	09	20	पूषन्नयेति	हाथी को अनाज खिलाए

।। यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्र ज्ञान ।।

अश्विनी	पुनर्वसु	अनुराधा	मृगशिरा	पुष्य	रेवती	हस्त	श्रवण	धनिष्ठा	शुभ
रोहिणी	उत्तरा ३		पूर्वा ३		मूल	शतभिषा		ज्येष्ठा	मध्य
भरणी	कृतिका	आर्द्रा	आश्लेषा	मघा	चित्रा	स्वाती		विशाखा	निन्द्य
श्रवण	हस्त	मृगशिरा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्विनी	अनुराधा	एषु सर्वदा सर्वदिक्		रिक्तादिक
पू. ३	कृतिका	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठा	विशाखा	श्लेषा	चित्रा	आवश्यक में
16	21	11	07	14	14	14	14	30	त्याज्य घटी

।।नक्षत्रस्वामी संज्ञा-तारा-स्वरूपादि बोधक सारणी

संख्या	नाम	स्वामी	संज्ञा	ता.सं.	स्वरूप	जाति
01	अश्विनी	अश्विनीकु	क्षिप्र, लघु	03	अश्वमुख	वैश्य
02	भरणी	यम	उग्र, क्रूर	03	योनि	चांडाल
03	कृतिका	अग्नि	मिश्र, साधारण	06	क्षुर	ब्राह्मण
04	रोहिणी	ब्रह्मा	ध्रुव, स्थिर	05	शकट	शूद्र
05	मृगशिरा	चन्द्र	मृदु, मैत्र	03	मृगस्य	कृषक
06	आर्द्रा	रुद्र	तीक्ष्ण, दारुण	01	मणि	क्रूर
07	पुनर्वसु	अदिति	चर, चल	04	गृह	वैश्य
08	पुष्य	गुरु	क्षिप्र, लघु	03	शर	क्षत्रिय
09	आश्लेषा	सर्प	तीक्ष्ण, दारुण	05	चक्र	चांडाल
10	मघा	पितृ	उग्र, क्रूर	05	भवन	शूद्र
11	पू.फा.	भग	उग्र, क्रूर	02	मंच	ब्राह्मण
12	उ.फा.	अर्यमा	ध्रुव, स्थिर	02	शय्या	क्षत्रिय
13	हस्त	सूर्य	क्षिप्र, लघु	05	हाथ	वैश्य
14	चित्रा	त्वष्टा	मृदु, मैत्र	01	मुक्ता	कृषक
15	स्वाती	वायु	चर, चल	01	मूँगा	क्रूर
16	विशाखा	इन्द्राणी	मिश्र, साधारण	04	तोरण	चांडाल
17	अनुराधा	मित्र	मृदु, मैत्र	04	बलि	शूद्र
18	ज्येष्ठा	इन्द्र	तीक्ष्ण, दारुण	03	कुंडल	कृषक
19	मूल	निर्ऋति	तीक्ष्ण, दारुण	11	सिहंपु.	क्रूर
20	पू.षा.	जल	उग्र, क्रूर	02	गजदंत	ब्राह्मण
21	उ.षा.	विश्वे	ध्रुव, स्थिर	02	मंच	क्षत्रिय
22	अभि.	ब्रह्मा	क्षिप्र, लघु	--	--	--
23	श्रवण	विष्णु	चर, चल	03	वामन	चांडाल
24	धनिष्ठा	वसु	चर, चल	04	मृदंग	कृषक
25	शतभिषा	वरुण	चर, चल	100	वृत्त	क्रूर
26	पू.भा.	अजच.	उग्र, क्रूर	02	मंच	ब्राह्मण
27	उ.भा.	अहिर्बु	ध्रुव, स्थिर	02	यमल	क्षत्रिय
28	रेवती	पूषा	मृदु, मैत्र	32	मृदंग	शूद्र

।।स्वप्न विचार।।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अग्नि उठाना	कष्ट	गुरु दर्शन	कार्यसफलता	दुग्धस्नान	धनलाभ	बारात दर्शन	चिन्ता	लौह दर्शन	स्वास्थहानि
अग्नि दर्शन	शुभकार्य	गुलाब दर्शन	मनोकामनपूर्ण	दुर्घटना दर्शन	रोगसम्भावना	बिच्छुदंश	कष्टभय	वर्षा दर्शन	हानि,चिन्ता
आग लगी दर्शन	दु:ख की प्राप्ति	घर जलना	लाभ	देवदर्शन	धनलाभ	भगिनी दर्शन	सौभाग्यवृद्धि	वाटिका दर्शन	सुखप्राप्ति
अजा दर्शन	धनलाभ	गृहनिर्माण	प्रसिद्धिप्राप्ति	देवस्थल दर्शन	सुखमयजीवन	भाषण श्रवण	वादविवाद	विकृतशरीर दर्शन	दु:खप्राप्ति
अर्थी दर्शन	सफलता	गौ दुग्धपान	धनलाभ	जुआं खेलना	धनहानि	भूकम्प दर्शन	सन्तानकष्ट	विदेशगमन	कार्यावरुद्ध
आकाश से गिरना	चिन्ता,मानहानि	ग्रहण दर्शन	रोग,चिन्ता	द्विचक्रचालन दर्शन	कार्यसिद्धि	भोजन को पचाना	रोग	विधवा दर्शन	हानि
बाजार का दर्शन	धनलाभ	चन्द्र दर्शन	बन्धन	धर्मशास्त्र श्रवण	धनप्राप्ति	मदिरापान	मृत्यु	विमान दर्शन	सौभाग्यसूचक
आम खाना	लाभ	चिता दर्शन	सफलता	दौड़ना	समस्या	मधुमक्खी दर्शन	शुभफल	विवाह	मृत्यु
आशीर्वाद ग्रहण	धनलाभ	छिपकली दर्शन	दुर्भाग्यसंकेत	धूपदर्शन	शत्रुनाश	मन्दिर दर्शन	धनलाभ	विषभक्षण	परेशानी
उत्तरदिग्गमन	गृहत्याग	जलपान	भाग्योदय	ध्वजदर्शन	धनलाभ	मयूर दर्शन	शोक	वृद्धस्त्री दर्शन	दु:खप्राप्ति
जूता पहनना	सम्मानप्राप्ति	जल में गिरना	चिन्ता	मगरमच्छ दर्शन	शत्रुकष्ट	मल्लयुद्ध दर्शन	मुकदमा	बैल दर्शन	धर्मकार्य
ऊँट का दर्शन	भय	जादुगर दर्शन	अशुभलक्षण	नदीदर्शन	आकांक्षापूर्ति	महात्मा दर्शन	धनप्राप्ति	बैल द्वारा मारना	हानि
ऊँट से गिरना	अवनति	टिकट ग्रहण	पदत्याग	नागदर्शन	लज्जित	मीनदर्शन	मङ्गलकार्य	वेद्य दर्शन	रोग
गर्मजलपान	अशुभ	डोली दर्शन	समस्यायुक्त	नृत्यदर्शन	मृत्यु	मिष्ठान्नखाना	संकट	शवदर्शन	सफलता
औषधि ग्रहण	स्वस्थ	चावल खाना	शुभसमाचार	निराश	सफलता	मुद्राप्राप्ति	रोजगार	शस्त्रदर्शन	युद्ध
कच्चाफल दर्शन	अशुभ	तपस्वी दर्शन	आत्मोन्नति	पकाफलदर्शन	शुभ	मुण्डन	मृत्यु	शस्त्र गिरना	पराजय
कन्या का दर्शन	तीर्थयात्रा	पान खाना	मिलाप	पदच्युतदर्शन	मृत्यु	मूषक दर्शन	दुर्भाग्यसूचक	शस्त्र उठाना	विजय
कपिल वस्त्रधारण	ख्याति	ताम्र दर्शन	यात्रादुर्घटना	पर्वदर्शन	शुभ	यज्ञदर्शन	सौभाग्यसूचक	शुकदर्शन	धनलाभ
कबूतर दर्शन	शुभसंदेश	तिल खाना	ऋण	पश्चिमदिग्गमन	बाधायुक्त	यमुना दर्शन	रोगाप्ति	श्रृंगार करना	अपमान
कमल दर्शन	धनप्राप्ति	तीर्थ स्नान	त्याग	पहरेदार दर्शन	चोरी	युवती दर्शन	नगदलाभ	सफेद कुत्ते पर बैठना	सुखसमृद्धिप्राप्ति
करतल दर्शन	प्रसन्नताप्राप्ति	तैलपान	मृत्यु	प्रसन्नता दर्शन	विफलता	रक्त दर्शन	उन्नति	शौचगमन	व्यय
कौआ दर्शन	अशुभ	त्रिशूल दर्शन	सफलताप्राप्ति	प्रसाद प्राप्ति	धनलाभ	रजक दर्शन	सफलता	समुद्र दर्शन	धनलाभ
कारागारगमन	बन्धनग्रस्त	दक्षिणदिग्गमन	रोग	पत्थर दर्शन	विपत्ति	रजत दर्शन	विश्वासघात	समाचार पढना	सफलता
कुत्ता पालना	संकट	दधि दर्शन	सफलता	पितृदर्शन	धनलाभ	रथदर्शन	यात्रा	सर्प का डसना	धनलाभ
कोलाहल दर्शन	राजभय	दर्पण दर्शन	विचलित	पुष्पप्राप्ति	धनलाभ	रसोइघर में प्रवेश	मृत्यु	स्वर्गदर्शन	आयुपूर्ण
खड्ग धारण	उच्चपदप्राप्ति	अनार खाना	रोग	पूर्वदिग्गमन	विजय	राक्षस दर्शन	कष्टनिवृत्ति	सर्प खाना	विफलता
खटिया पर सोना	सौभाग्यसूचक	दाहसंस्कार दर्शन	दीर्घायु	फकीर दर्शन	शुभफलदायक	रुद्राक्ष दर्शन	कल्याण	सर्प मारना	शत्रुदमन
गङ्गा स्नान	सन्यास	दुग्ध दोहन	भारोत्थापन	फलप्राप्ति दर्शन	धनलाभ	रोगी दर्शन	दु:खनिवृत्ति	सीताफलदर्शन	सौभाग्यसूचक
हाथी दर्शन	व्यवसायवृद्धि	दुग्धपान	प्रतिष्ठा	बालक का रोना श्रवण	रोग,निराशा	रोटी खाना	रोग	सुवर्ण दर्शन	रोग,धनहानि

।। पुरुष जन्मकुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दु:खी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्ट	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्टस्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी,पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीरपीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी,गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्त्र	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दु:खी	धनहानि	पराक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दु:खी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्रीरोगी	रोगी	दैन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दु:खी	मूर्ख	सबल	स्त्रीहानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

।। स्त्री जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दु:खार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सु:खार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्या	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्या	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दु:खिनी	सुदक्षा	द्वद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दु:खनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढ़ा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दु:खिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दु:खिनी	दु:खार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दु:खिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

।। गोचर में ग्रहों का द्वादशभावस्थ फल ।।

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	ह्रानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

।। वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	त्रिदोषपीड़ा	कुटुम्बविरोध	भातृपीड़ा	कृषि,पशुहानि	पित्तप्रकोप	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	भ्रातृकष्ट	भ्रातृपीड़ा	धनमानलाभ	धनी,विलासी	उद्विग्नता
चन्द्र	कफरोगी	कुटुम्ब पर प्रभाव	भ्रातृसुख,धनी	व्यापारलाभ	प्रबुद्धमित्र	वाद-विवाद	खांसी,वातरोग	मूत्ररोग	भाग्योदय	वैरीनाश,धनी	व्यापारलाभ	नेत्ररोग
मंगल	नेत्ररोगी	धनहानि	वाहनसुख	अग्निकष्ट,व्रण	सन्तानकष्ट	शत्रुनाश	स्त्रीरोग	शत्रुकष्ट	भाग्ययशवृद्धि	धनवृद्धि	राज्यधनलाभ	व्यय,व्याधि
बुध	स्त्रीसुखवृद्धि	वाहनलाभ	धनयशपुत्रसुख	भूमिलाभ	धनपुत्रलाभ	स्त्रीकष्ट	विलासी	कफ,ज्वर	धनपुत्रलाभ	पुत्रधनवृद्धि	धनयशवृद्धि	वैरीविवाद
गुरु	यशस्वी	धनलाभ	कीर्तिलाभ	वाहनसुख	सन्ततिसुख	शत्रुकष्ट,स्त्रीकष्ट	दाम्पत्यसुख	ज्वरवृद्धि	धनलाभ	राज्यलाभ	विजयलाभ	रोगी,शत्रुवृद्धि
शुक्र	यशस्वी	धनमानलाभ	सहोदरसुख	कृषिवाहनसुख	सन्तानवृद्धि	उदरविकार	स्त्रीसुख	शरीरकष्ट	धर्मशील	व्यापारी,धनी	सन्तानवृद्धि	नेत्र,चर्मरोग
शनि	वातरोगी	भ्रातृनाश	पराक्रमी	अग्निपीड़ा	पुत्रहानि	कीर्तिवृद्धि	स्त्रीकष्ट	ज्वरपीड़ा	भाग्योदय	कृषिहानि	कीर्तिवृद्धि	विशेषव्यय
राहु	स्त्रीकष्ट	बन्धुविवाद	धन-यशवृद्धि	वाहनकष्ट	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	गुप्तरोग	मृत्युतुल्यकष्ट	धर्मवृद्धि	यशवृद्धि	शत्रुनाश	स्थानभ्रंश
केतु	चिन्ता,व्रण	परिवारक्लेश	यशवृद्धि	वाहनपीड़ा	कुबुद्धि	रोगनाश	विवाद	अरिष्टप्राप्ति	भाग्यनाश	अर्थप्राप्ति	विविधलाभ	दुष्टसंगति

।। ग्रहों के दान पदार्थ ।।												जपसंख्या	जपनीय मन्त्र	दानसमय	हवनसमिधा
सुर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेंहू	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग,रक्तगाय	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर,श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्राय नम:	सन्ध्या	पलाश
मंगल	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी,रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:	घटी २ शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर,शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:	घटी ५ शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक,घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि,श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल,घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल,बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:	रात्रि	कुशा

ग्रहों के यजुर्वेदीय शान्ति मन्त्र-

सूर्य- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। **चन्द्र -** ॐ इमं देवाऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा।। **मङ्गल -** ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति।। **बुधस्य-** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्तेसि ँ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। **गुरु -** ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।। **शुक्र -** ॐ अन्नात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। **शनि-** ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। **राहु-** ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। केतु- ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथा।।

ग्रहों के शान्त्यर्थ बीज मन्त्र-

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः। **चन्द्र-** ॐ सों सोमाय नमः। **मङ्गल-** ॐ अं अङ्गारकाय नमः। **बुध-** ॐ बुं बुधाय नमः। **गुरु-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः। **शुक्र-** ॐ शुं शुक्राय नमः। **शनि-** ॐ शं शनैश्चराय नमः। **राहु-** ॐ रां राहवे नमः। **केतु-** ॐ कें केतवे नमः।

।। पुरुषसूक्तम् (विष्णुसूक्तम्) ।।

ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि ँ सर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।१।। पुरुषऽएवेद ँ सर्व्वं यद्भूतंयच्चभाव्व्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्यमहिमातो ज्ज्यायाँश्श्च पूरुषः। पादोऽस्याव्विश्श्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।३।। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततोव्विष्ष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।। ततोव्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्चाद्भूमिमथोपुरः।।५।। तस्मा द्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्श्चक्रेव्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्यश्श्च ये।।६।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे। छन्दा ᳪसि जज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्मा-दजायत।।७।। तस्म्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे-तस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः।।८।। तं यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्श्चये।।९।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्यन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते।।१०।। ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः। ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्या ᳪशूद्रोऽअजायत।।११।। चन्द्रमामनसो जातश्श्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत।श्रोत्राद्वायुश्श्च प्राणश्श्च मुखादग्निरजायत।।१२।। नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्प्पयन्।।१३।। यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत। व्वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यङ्ग्रीष्म्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।१५।। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन्। तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।१६।।

।। रुद्रसूक्तम् ।।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतो तऽइषवेनमः बाहुब्भ्यामुत ते नमः।।१।। या तेरुद्र शिवातनूरघोरापापकाशिनी। तयानस्तन्न्वा शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हि ँ सीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमनाऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमोदैव्व्यो भिषक्। अहींश्श्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्श्चयातुधान्न्यो धराचीः परासुव।।५।। असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ँ रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषा ᳪहेडईमहे।।६।। असौ योऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः।।७।। नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवायसहस्राक्षाय मीढुषे। अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः।।८।। प्प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्ज्याम्। याश्श्चतेहस्तऽइषवः परा ताभगवोव्वप।।९।। विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्ल्योबाणवाँ२ऽउत। अनेशन्नस्ययाऽइषवऽ आभुरस्यनिषङ्गधिः।।१०।। या तेहेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्मया परिभुज।।११।। परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मन्व्वृणक्तुव्विश्श्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम्। अवतत्यधनुष्टव ँ सहस्राक्षशतेषुधे।। निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ।।१३।। नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्ष्णवे। उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने।।१४।। मानोमहान्तमुतमानोऽबर्भ्भं कम्मानऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्। मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः।१५।। मानस्तोकेतनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्श्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हं विष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

।। ब्रह्मसूक्तम् ।।

ॐ तेजोसि शुक्क्रममृतमायुष्म्मा ऽआयुमे पाहि। देवस्य त्वा सवितुःप्प्रसवेऽश्विनो व्वाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्यामाददे।।१।। इमामगृब्भ्णन्नशनामृतस्य पूर्व्वऽआयुषि व्विदथेषु कव्व्या। सा नो ऽअस्मिन्त्सुतऽ आ वभूव ऽऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती।।२।। अभिधा ऽअसि भुवनमसि यन्तासि धर्ता। स त्वमग्निं व्वैश्वानर ँ स प्प्रथसङ्गच्छ स्वाहा कृतः।।३।। स्वगात्वां देवब्भ्यः प्प्रजापतये व्व्रह्मन्नश्श्वम्भन्त्स्यामि देवेब्भ्यः प्रजापतये तेन राद्ध्यासम्। तम्वधानदेवेब्भ्यः प्प्रजापतये तेन राध्ध्नुहि।।४।। प्रजापतये त्वा जुष्टम्प्रोक्षामीन्द्राग्निब्भ्यान्त्वा जुष्टम्प्रोक्षामि व्वायवे त्वा जुष्टमप्रोक्षामि विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टम्प्रोक्षामि सर्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यो जुष्टाम्प्रोक्षामि। योऽअर्व्वन्तञ्जिघा ᳪसति तमब्भ्यमीतिव्वरुणः। परो मर्त्तः परः श्श्वा।।५।। अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा पाम्मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा व्वायवे स्वाहा व्विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्प्पतये स्वाहा मित्त्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा।।६।। ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रप्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा ग्घ्राताय स्वाहा निविठ्ष्ठाय स्वाहोपविष्ट्ाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विज्रम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा स ँ हानाय स्वाहो पस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा।।७।। ॐ यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा

जवाय स्वाहा बलायविवर्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा बिधूऩवानाय स्वाहा व्विधूताय स्वाहा शुश्श्रुषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा व्वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत्पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रङ्करोति तस्मै स्वाहा कुर्व्वते स्वाहा कृत्ताय स्वाहा।।८।। ॐ तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।९।। ॐ हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये। सचेत्ता देवता पदम्।।१०।। ॐ देवस्य चेततो महीम्प्रसवितुर्हवामहे। सुमतिꣳ सत्यराधसम्।।११।। ॐ सुष्टुतिꣳ सुमती वृधोरातिꣳ सवितुरीमहे। प्रदेवाय मतीविदे।।१२।। ॐ रातिꣳ सत्पतिम्महे सवितारमुपह्वये। आसवन्देववीतये।।१३।। ॐ देवस्य सबितुर्म्मतिमासवं व्विश्वदेव्व्यम्। धिया भगम्मनामहे।।१४।। ॐ अग्निꣳ स्तोमेन बोधाय समिधानो ऽअमर्त्यम्। हव्या देवेषु नो दधत्।।१५।। ॐ सह व्यवाडमर्त्य ऽउशिगदूतश्च नो हितः। अग्निर्द्धिया समृण्वति।।१६।। ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्ब्रुवे। देवाँ२। ऽआसादयादिह।।१७।। ॐ अजीजनो हि पवमानसूर्य्यं विधारेशक्क्मना पयः। गोजीरया रꣳहमाणः पुरन्ध्या।।१८।। ॐ व्विभूर्म्मात्रा प्रभूः पित्रा श्श्वोसि हयोस्यत्योसि मयोस्यर्व्वासि सप्तिरसि व्वाज्ज्यसि व्वृषासि नृमणा ऽअसि। यषुर्न्नामासि शिशुर्न्नामास्यादित्यानाम्पत्वान्निवहि देवा ऽआशापाला ऽएतन्देवेभ्योश्श्च म्मेधाय प्प्रोक्षितःꣳ रक्षते हरन्ति रिहरमता मिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा।।१९।। ॐ काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहा धिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा चित्तं व्विज्ञाता यादित्यै स्वाहादित्यै मह्यै स्वाहादित्यै समृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै वृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे न रन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा त्वेष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा व्विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा।।२०।। ॐ विश्श्वो देवस्य नेतुर्म्मर्तोव्वुरीत् सक्ख्यम्। व्विश्वो राय ऽइषुदद्धयति द्युम्नं व्वृणीत पुष्य्यसे स्वाहा।।२१।।ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्व्रह्म वर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषुव्व्योतिव्व्याधी महारथो जायतान्दोग्ग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषां जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्च्यन्तां य्योक्षेमो नः कल्प्पताम्।।२२।। प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।२३।। ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहोदीच्चै दिशे स्वाहावाच्च्यै दिशे स्वाहा स्वाहोदूर्ध्वयै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा वाच्च्यै दिशे स्वाहाव्वाच्च्यै दिशे स्वाहा।।२४।। ॐ अदूभ्यः स्वाहा व्वाब्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्य्याभ्यः स्वाहा र्ण्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा।।२५।। व्वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहाभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा व्विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहाबस्फूर्ज्जते स्वाहाव्वर्षते स्वाहा ववर्षते स्वाहोग्ग्रं व्वर्षते स्वाहा शीग्घ्रं व्वर्षते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्ग्रहीताय स्वाहा प्रष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्प्रुष्वाभ्यः स्वाहा हादनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा।।२६।। ॐ अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहाशाभ्यः स्वाहोर्व्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यैः दिशे स्वाहा।।२७।। ॐ नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्त्रेभ्यः स्वाहार्द्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऽऋतुभ्यः स्वाहार्तवेभ्यः स्वाहा संव्वत्सराय स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्याꣳ स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा रश्मिभ्य स्वाहा व्वसवभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा व्विश्श्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा व्वनस्प्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ।।२८।। ॐ पृथिव्यैः स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा व्वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लेभ्यः स्वाहाचराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा।।२९।।ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सः सर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्ज्योतिषे स्वाहा मलिम्म्लुचाय स्वाहा दिवापतय ते स्वाहा।।३०।। ॐ मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहोषाय स्वाहोर्ज्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाꣳहसस्पतय स्वाहा।।३१।। ॐ व्वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा पिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्वः स्वाहा मूर्ध्वो स्वाहा व्व्यश्नु विने स्वाहान्त्याय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा।।३२।। आयुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहापानो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहाव्व्यानो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहोदाने यज्ञेन कल्प्पताꣳ। स्वाहा समानो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा चक्षुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा श्रोत्रं य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा व्वाग्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा मनो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहात्कमा यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा ब्व्रह्मा यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा स्वर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा पृष्ठं य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्प्पताꣳस्वाहा।।३३।। ॐ एक स्मै स्वाहा द्वाभ्याꣳ स्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्व्युष्टयै स्वाहा स्वर्ग्गाय स्वाहा।।३४।।

।। श्रीसूक्तम् ।।

ॐहिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।। चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनेमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रुपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। आर्द्रां यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

।। यमसूक्तम् ।।

ॐ तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः। तदेव शुक्रन्तद्ब्रह्म ता ऽआपः स प्रजापतिः।।१।। ॐ सर्वे निमेषा जज्ञिरे व्विद्युतः पुरुषादधि। नैनमूर्द्धन्नतिर्य्यञ्चन्नमद्धये परिजग्ग्रभत्।।२।। ॐ न तस्य प्रतिमा ऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः। हिरण्यगर्भ ऽइत्येष मा मा हिꣳसीदित्येषा यस्मान्न जात ऽइत्येषः।।३।। ॐ एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्व्वाः पूर्वो ह जातः स ऽउ गर्ब्भेऽअन्तः। स ऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्व्वतो मुखः।।४।। यस्म्माज्जातन्न पुरा किञ्च नैव य ऽआबभूव भुवनानि व्विश्श्वा। प्रजापतिः प्रजया सꣳ रगणस्त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि सचते सषोडशी।।५।। येन द्यौरुग्ग्रा पृथिवी च दृढा येन स्स्वस्तभितं य्येन नाकः। यो ऽअन्तरिक्षे रजसो व्विमानः कस्म्मै देवाय हविषा व्विधेम।।६।। यङ्क्रन्दसी ऽअवसा तस्तभाने ऽअभ्यैक्षेताम्मनसा रेजमाने। यत्राधिसूर ऽउदितो व्विभाति कस्स्मै देवाय हविषा व्विधेम। आपो ह यद्बृहतीर्य्यश्चिदापः।।७।। व्वेनस्तत्पश्यन्निहितङ्गुहा सद्यत्र व्विश्श्वम्भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निदꣳ सञ्चव्विवैति सर्वꣳ स ऽओतः प्रोतश्च व्विभूः प्रजासु।।८।। प्रतद्वोचेदमृतन्नु व्विद्वान्नगन्धर्व्वो धाम व्विभृतङ्गुहा सत्। त्रीणि पदानि निहिता गुहास्स्य यस्तानि व्वेद स पितुः पिता सत् ।९।। स नो बन्धुज्जर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि व्विश्वा।।यत्र देवा ऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नद्धयेरयन्त।।१०।। परित्य भूतानि परीत्य लोकान्नपरीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्त्थाय प्रथमजामृतस्यात्क्मनात्क्मानमभि संव्विवेश।।११।। परिद्यावापृथिवी सद्य ऽइत्वा परि लोकान्परि दिशः परिस्स्वः। ऋतस्य तन्तुं व्विततं व्विचृत्यतदपश्यत्तदमवत्तदासीत्।।१२।। सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्म्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳ स्वाहा।।१३।। याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनङ्कुरः स्वाहा।।१४।। मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्श्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा।।१५।। इदम्मे ब्व्रह्म च क्षत्रञ्चोभे श्श्रियमश्नुताम्। मयि देवा दधतु श्श्रियमुत्तमां त्तस्यै ते स्वाहा।।१६।।

।। प्रेतसूक्तम् ।।

ॐ अपेतो यन्तु पणयोसुम्म्ना देवपीयवः। अस्य लोक्कः सुतावतः द्युभिरहोभिरक्तुभि व्व्यक्तं य्यमो ददात्ववसानमस्म्यै।।१।। सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्व्या ल्लोकमिच्छतु। तस्म्मै युज्ज्यन्तामु स्त्रियाः।।२।। व्वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्य्यस्य व्वर्च्चसा। व्विमुच्च्यन्तामु स्त्रियाः।।३।। अश्श्वत्थेवो निषदनम्पर्ण्णेवो व्वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।४।। सविता ते शरीराणि मातुरुपस्त्थ ऽआवपतु। तस्मै पृथिवि शम्भव।।५।। प्रजापतौ त्वा देवतायामुपोदके लोके निदधाम्म्यसौ। अप नः शोशुचदघम्।।६।। परम्मृत्यो ऽअनुपरे हि पन्थाँ य्यस्ते ऽअन्न्य ऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्म्मते श्श्रृण्वते ते ब्व्रवीमि मा नः प्रजाꣳरीरिषो मोत व्वीरान्।।७।। शं व्वातः शꣳ हिते घृणिः शन्ते भवन्त्विष्टकाः। शन्ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभिशूशुचन्।।८।। कल्प्पन्तान्ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यम्भवन्तु सिन्धवः। अन्तरिक्षꣳ शिवन्तुभ्यङ्कल्प्पन्तान्ते दिशः सर्वाः।।९।। अश्म्मन्व्वतीरीयिते सꣳ रभद्ध्वमुत्तिष्ठतप्रतरता सखायः। अत्राजहीमो शिवाये असिञ्छवाञ्वयमुत्तरे माभिवाजान्।।१०।। अपाघमपकिल्व्विषमपकृत्यामपपोरपः। अपामार्गत्वमस्म्मदपदुः ष्वप्प्न्यꣳ सुव।।११।। सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु। दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्म्मान्द्वेष्टि यञ्च व्वयन्द्विष्म्मः।।१२।। अनड्वाहमन्नवारभामहे सौरभेयꣳ स्वस्तये। स न ऽइन्द्र ऽइव

देवेभ्यो वह्निः सन्तारणो भव।।१३।। उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त ऽउत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।१४।। इमञ्जीवेभ्यः परिधिन्दधामि मैषान्नुगादपरो ऽअर्त्थमेतम्। शतञ्जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तम्मृत्युन्दधताम्पर्व्वतेन।।१५।। अग्न ऽआयू्ँषि पवस ऽआसुवोर्ज्जमिषञ्च नः। आरेबाधस्वदुच्छुनाम्।।१६।। आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतम्प्रीतको घृतयोनिरेधि। घृतम्पीत्वा मधु चारुगव्यम्पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्थ्यस्वाहा।।१७।। परीमे गामनेषत पर्य्यग्निमहृषत्। देवेष्क्रृतश्रवः क ऽइमाँ २। ऽआदधर्षति।।१८।। कव्यादमग्निम्प्रहिणोमि दूरं य्यमराज्ज्यङ्गच्छतु रिप्प्रवाहः। इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं व्वहतु प्प्रजानन्।।१९।। व्वहव्वपाञ्जातवेदः प्पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थ निहितान्परावेके। मेदसः कुल्ल्या ऽउपतान्त्स्रवन्तु सत्या ऽएषामाशिषः सन्नमन्ता७ स्वाहा।।२०।। स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः। अप नः शोशुचद्घम्।।२१।। अस्म्मात्वमधि जातोसि त्वदयञ्जायताम्पुनः। असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।।२२।।

।। पितृ-सूक्तम्।।

उदीरताम् अवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुम् यऽ ईयुर-वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु।। अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वनो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयम् सुमतो यज्ञियानम् अपि भद्रे सौमनसे स्याम्।। ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः। तेभिर यमः सरराणो हवींष्य उशन्न उशद्भिः प्रतिकामम् अत्तु।। त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठम् अनु नेषि पंथाम्। तव प्रणीती पितरो न देवेषु रत्नम् अभजन्त धीराः।। त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः। वन्वन् अवातःपरिधीन् ऽरपोर्णु वीरेभिः अश्वैः मघवा भवा नः।। त्वं सोम पितृभिः संविदानो ऽनु द्यावा-पृथवीऽ आततन्थ। तस्मै तऽ इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। बर्हिषदः पितरः ऊत्य-वर्गिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्। तऽ आगत अवसा शन्तमे नाथा नः शंयोर ऽरपो दधात।। आहं पितृन्त् सुविदत्रान् ऽअवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः। बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वः तऽ इहागमिष्ठाः।। उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु। तऽ आ गमन्तु तऽ इह श्रुवन्तु अधि ब्रुवन्तु ते ऽअवन्तु-अस्मन्।। अग्निष्वात्ताः पितरः एह गच्छत सदःसदः सदत सु-प्रणीतयः। अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्य-था रयिम् सर्व-वीरं दधातन।। येऽ अग्निष्वात्ता येऽ अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते। तेभ्यः स्वराड-सुनीतिम् एताम् यथा-वशं तन्वं कल्पयाति।।अग्निष्वात्तान् ऋतुमतो हवामहे नाराशं-से सोमपीथं यऽ आशुः। ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयं स्यामः पतयो रयीणाम्।। आच्या जानु दक्षिणतो निषद्य इमम् यज्ञम् अभि गृहीत विश्वे। मा हिंसिद्य पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम।। आसीनासोऽ अरुणीनाम् उपस्थे रयिम् धत्त दाशुषे मर्त्याय। पुत्रेभ्यः पितरः तस्य वस्वः प्रयच्छत तऽ इह ऊर्जम् दधात।।

यज्ञोपवीत धारण विधि

यज्ञोपवीत में देवताओं के आवाहन की विधि-

यज्ञोपवीत को पलाश आदि के पत्ते पर रखकर जल से प्रक्षालित करे, फिर निम्नलिखित मन्त्रों को पढते हुए एक एक चावल अथवा एक एक फूल को यज्ञोपवीत पर छोड़ते जाए -

प्रथमतन्तौ ॐ ओंमकारमावाहयामि। द्वितीयतन्तौ ॐ अग्निमावाहयामि। तृतीयतन्तौ ॐ सर्पानावाहयामि। चतुर्थतन्तौ ॐ सोममावाहयामि। पञ्चमतन्तौ ॐ पितृनावाहयामि। षष्ठतन्तौ ॐप्रजापतिमावाहयामि। सप्तमतन्तौ ॐ अनिलमावाहयामि। ॐअष्टमतन्तौ ॐसूर्यमावाहयामि। नवमतन्तौ ॐ विश्वान् देवानावाहयामि। प्रथमग्रन्थौ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावहयामि। द्वितीयग्रन्थौ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि। तृतीयग्रन्थौ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि। इसके बाद प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः - इस मन्त्र से यथास्थानं न्यसामि कहकर उन-उन तन्तुओं में न्यास कर चन्दन आदि से पूजा करें। फिर जनेऊ को दस बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

यज्ञोपवीत धारण विधि - इसके बाद नूतन यज्ञोपवीत धारण का संकल्प कर निम्नलिखित विनियोग पढकर जल गिराये। फिर मन्त्र पढकर एक जनेऊ पहने, इसके बाद आचमन करें। फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करे। एक-एक कर यज्ञोपवीत पहनना चाहिए।

विनयोग - ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, लिङ्गोक्ताः देवताः, त्रिष्टुप् छन्दः, यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

इस मन्त्र से जनेऊ पहने -

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि

जीर्ण यज्ञोपवीत का त्याग - इसेक बाद निम्नलिखित मन्त्र पढकर पुराने जनेऊ को कण्ठी जैसा बनाकर सिर पर से पीठ की ओर निकालकर उसे जल में प्रवाहित कर दे-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

इसके बाद यथाशक्ति गायत्री मन्त्र का जप करे और आगे का वाक्य बोलकर भगवान् को अर्पित कर दे - ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु। फिर हाथ जोडकर भगवान का स्मरण करे।

।।षोडशोपचार-देवपूजनविधि।।

पूजन के दिन शान्तचित्त होकर शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर अथवा उत्तर की ओर मुख करके प्राणायाम के अनन्तर अपने इष्टदेवता का स्मरण करके पूजन का प्रारम्भ करना चाहिए।

सर्वप्रथम निम्नमन्त्र से तीन बार आचमन करें- **ॐकेशवाय नमः, ॐमाधवाय नमः, ॐनारायणाय नमः।** तथा ऋषिकेशाय नमः कहकर हाथ धोवें।

निम्नमन्त्र से पवित्री धारण करें -

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

जल से शुद्धि हेतु हाथ में जल कुश लेकर निम्न मन्त्र को पढ़े- **ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याऽभ्यान्तरः शुचिः।।**

इसके बाद पुण्डरीकाक्षः पुनातु का तीन बार उच्चारण करें। इसके बाद जल को पूजन सामग्री एवं अपने शरीर पर छिडके। हाथ में जल लेकर गङ्गादि नदियों व प्रयागादि तीर्थों का स्मरण करते हुए निम्न मन्त्र से जल शुद्धि करें- **ॐ गङ्गे च यमने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।**

निम्न मन्त्र को पढ़कर आसन शुद्धि के लिए आसन पर जल छिड़के- **ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। विनियोग- पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः, कूर्मोदेवता आसन शोधने विनियोगः।**

निम्नलिखित मन्त्र के द्वारा दिग् रक्षण हेतु पीली सरसों अथवा अक्षत दशों दिशाओं में छोड़े- **ॐ अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।** तदन्तर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर इष्टदेवता का ध्यान करते हुए स्वस्तिवाचन मन्त्रों का पाठ करें।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सद्मिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां ७ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवाना ७सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण ७ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभु व्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्णया युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्वणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः सुशान्तिर्भवतु।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके।। शरण्ये त्र्यम्बके ! नारायणि नमोऽस्तुते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानर्दनाः।। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।। वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

अथ सङ्कल्पः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वतेवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे

कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तरगते .....पुण्यप्रदेशे.....नगरे.....ग्रामे.....क्षेत्रे.....संवत्सरे.....अयने.....ऋतौ.....मासे.....पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्त/दासोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं दैहिक-दैविक-भौतिक-त्रिविध तापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षप्राप्त्यर्थं सकलदुरितोपशमनार्थं, सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकदुःस्थानेस्थितग्रहदोषनिवारणार्थं तथा च नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं.....देवस्य पूजनं च अहं करिष्ये।

आहवानम्- आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठः! भवन्त्वत्र स्थिरा समे।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्तिष्ठन्तु सन्निधौ।।

वैदिकम्- ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिꣳसर्वतस पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
आवाहनार्थं पुष्पं समर्पयामि।

लौकिकम्- ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रेलोक्यतिमिरापह।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम।।

देव्याः- ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

लौकिकम्- ॐ नमो दैव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
आवाहनार्थं पुष्पाक्षतान् समर्पयामि।

आसनम्- वैदिकम्- ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वं यद्भूतंव्यच्चभाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्ये शानोयदन्नेनातिरोहति।।

लौकिकम्- अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इमं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।
पुष्पासनं समर्पयामि।

प्रतिष्ठा- वैदिकम्- ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

लौकिकम्- अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।
देवाः सुप्रतिष्ठित वरदाभव प्राणप्रतिष्ठापूर्वकं नमस्करोमि।

पाद्यं वैदिकम्- ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः।
पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

लौकिकम्- ॐ गङ्गोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं वैदिकम्- ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततोव्विष्वङव्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।

लौकिकम्- गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं मध्ये सम्पादितं मया।।
गृहाण भगवन् देव !प्रसन्नो वरदो भव ।।
अर्घ्यम् समर्पयामि।

आचमन वैदिकम्- ॐतर्तोव्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्च्यतपश्श्वाद्भूमिमथोपुरः।।

लौकिकम्- कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु-शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरः।।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दुग्धस्नानं वैदिकम्- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

लौकिकम्- कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।
पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानं वैदिकम्- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳषि तारिषत्।।

लौकिकम्- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं वैदिकम्- ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

लौकिकम्- नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानं वैदिकम्- ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।।

लौकिकम्- पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानं वैदिकम्-ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्।
अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तम वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं
गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

लौकिकम्- इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिवां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानं वैदिकम्-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति ससोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

लौकिकम्- पञ्चामृतं मायनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानं वैदिकम्-ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

लौकिकम्- मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम्।।
गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं वैदिकम्-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त
आश्विनाः श्वेतः श्येताक्षोऽरुणस्ते
रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

लौकिकम्- गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रं वैदिकम्- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्योऽ३ मनसा देवयन्तः।।

लौकिकम्- शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।
वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रं वैदिकम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुवमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ सं व्ययस्व विभावसो।।

लौकिकम्- यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन् सिद्धयति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्।।
उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत वैदिकम्- ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

लौकिकम्- नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनं वैदिकम्- ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

लौकिकम्- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतं वैदिकम्- ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरि।।

लौकिकम्- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प वैदिकम्- ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

लौकिकम्- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पुष्पं समर्पयामि।

दूर्वा वैदिकम्- ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ।।

लौकिकम्- दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।
दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर वैदिकम्- ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

लौकिकम्- सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्य वैदिकम्- ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परिपातु विश्वतः।।

लौकिकम्- अबीरं च गुलालं च हरिद्राविसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।
नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यं वैदिकम्-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

लौकिकम्- दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।
सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

धूप वैदिकम्- ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

लौकिकम्- वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
धूपमाघ्रापयामि।

दीप वैदिकम्- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो
ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः
स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

लौकिकम्- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य वैदिकम्- ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।

लौकिकम्- शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
नैवेद्यं निवेदयामि।

ऋतुफलं वैदिकम्- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्तव ँ हसः।।

लौकिकम्- इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूल वैदिकम्- ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

लौकिकम्- पूगीफलं महाद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
पूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा वैदिकम्- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

लौकिकम्- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।

आरती वैदिकम्- ॐ इदं ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ आ रात्रि पर्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ँसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।

लौकिकम्- कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
आरार्तिक्यं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापराधार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाःसभासद इति।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विस्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।।

लौकिकम्- श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।
नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

लौकिकम्- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थना- विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय।गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत। त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

।। तर्पण प्रयोग विधि ।।

गायत्री मन्त्र से शिखा बाँधकर तिलक लगाकर प्रथम दाहिनी अनामिका के मध्य पोर में दो कुशों और बायीं अनामिका में तीन कुशों की पवित्री धारण करें। फिर हाथ में त्रिकुश,यव, अक्षत और जल लेकर सङ्कल्प पढ़े-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैक देशान्तरगते .. ... पुण्यप्रदेशे..... नगरे.....ग्रामे.....क्षेत्रे..... संवत्सरे.....अयने..... ऋतौ..... मासे.....पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्त/दासोऽहं अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

आवाहन मन्त्र- ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

देव तर्पण विधि- देव तथा ऋषि तर्पण में पूर्व दिशा की ओर मुख करें, जनेउ को सव्य रखे, दाहिना घुटना जमीन पर लगाकर बैठें। अर्घ्यपात्र में चावल छोड़े। तीनों कुशों को पूर्व की ओर अग्रभाग कर रखे। जल की अञ्जलि एक एक हो। देवतीर्थ से अर्थात् दायें हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग से दे। जलाञ्जलि को सोना, चाँदी ,ताँबा अथवा काँसे के बर्तन में डाले। यदि नदी में तर्पण किया जाय तो दोनों हाथों को मिलाकर जल से भरकर गौ के सींग जितना ऊँचा उठाकर जल में ही अञ्जलि डालें।

निम्नलिखित प्रत्येक नाम मन्त्र के बाद तृप्यताम् कहकर एक-एक अञ्जलि जल देते जाय।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्।ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषि तर्पण विधि - इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्रवाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि दे- ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्य मनुष्य तर्पण - दिव्य मनुष्य तर्पण में उत्तर दिशा की ओर मुख करें, जनेऊ को कंठी की तरह कर ले, गमछे को भी कंठी की तरह कर लें, सीधा बैठें। कोई घुटना जमींन पर न लगाएं। अर्घ्यपात्र में जौ छोड़े। तीनों कुशों को उत्तराग्र रखे। प्राजापत्य (काय) तीर्थ से अर्थात् कुशों को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मूल भाग में रखकर यहीं से जल दें। दों-दो-अञ्जलियाँ दें।

अञ्जलिदान के मन्त्र - ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्। ॐ सनातनस्तृप्यताम्। ॐ कपिलस्तृप्यताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यताम्। ॐ वोढुस्तृप्यताम्। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्।

दिव्यपितृतर्पण - पितृ तर्पण में दक्षिण दिशा की ओर मुख करें, अपसव्य हो जाएं अर्थात् जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर बायें हाथ के नीचे ले जाएं, गमछे को भी दाहिने कंधे पर रखें। बायां घुटना जमीन पर लगाकर बैठे, अर्घ्य पात्र में कृष्ण तिल छोड़े, कुशा को बीच से मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभाग को दाहिने हाथ में तर्जनी और अँगूठे के बीच में रखे, पितृ तीर्थ से अर्थात् अँगूठे और तर्जनी के मध्यभाग से अञ्जलि दें। तीन-तीन अञ्जलियाँ दे।

उपर्युक्त नियम से प्रत्येक मन्त्र से तीन-तीन अञ्जलियाँ देने के मन्त्र निम्लिखित है- ॐकव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः,तस्मै स्वधा नमः,तस्मै स्वधा नमः(३)।.ॐसोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः(३)। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः(३)। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः(३)। ॐअग्निष्वात्ताःपितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः(३)। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यान्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः(३)।

यम तर्पण - इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नाम से यमराज को पितृतीर्थ से ही दक्षिणाभिमुख हो तीन-तीन अञ्जलियाँ दे- ॐ यमाय नमः (३)। ॐ धर्मराजाय नमः(३)। ॐ मृत्यवे नमः(३)। ॐ अन्तकाय नमः(३) ॐ वैवस्वताय नमः(३)। ॐ कालाय नमः(३)। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (३)। ॐ औदुम्बराय नमः(३)। ॐ दध्नाय नमः(३)। ॐ नीलाय नमः(३)। ॐ परमेष्ठिने नमः(३)। ॐ वृकोदराय नमः(३)। ॐ चित्राय नमः(३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः(३)।

मनुष्य पितृ तर्पण - पितरों का तर्पण करने के पूर्व निम्नाङ्कित मन्त्रों से हाथ जोड़कर प्रथम उनका आवाहन करे- ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे।। आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मन्दतोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। **लौकिकम् -** ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्। इसी तरह नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण कर तिल के साथ तीन-तीन अञ्जलियाँ दे-

अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः,तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।(३) अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।(३) अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वाधा नमः।(३) अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः,तस्यै स्वधाः नमः।(३) अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्यै स्वधा नमः।(३) अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्यै स्वधा नमः।(३)

यदि सौतेली माँ मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दे - अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृतीर्थ से जल गिराते रहे-

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मन्दतोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिसुतम्।स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन।।

पितृभ्यः स्वधायिभ्य स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तः पितरः पितरः शुन्धध्वम्। ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वाधाभिर्यज्ञ ँ सुकृतं जुषस्व।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ करें-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।

द्वितीय गोत्र तर्पण- इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहाल के) मातामह (नाना) आदि का तर्पण करें। यहाँ भी पहले की भाँति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिल सहित जल की तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दे - अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकः वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)। अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुक रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)। अमुकगोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः (वृद्ध परनाना) अमुकः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः(३)। अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः(३)। अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपातृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः(३)। अमुकगोत्रा अस्मद् वृद्धप्रमातामही (वृद्ध परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः(३)।

पत्न्यादि तर्पण - इसके आगे पत्नी से लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हो, उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दें - अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटाः) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकीदेवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्भ्राता(अस्मत्सापत्नभ्राता) (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी (बूआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगनी (अपनी बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छवशुरः(श्वसुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदाचार्य पत्नी अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो सीधे बैठ जाय। कुशों को सीधा कर उनके अग्रभाग को पूर्व की ओर कर ले। फिर नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए देवतीर्थ से जल गिराये- देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।। जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।

इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अंगोछे को भी दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाए। कुशों को बीच से मोड़कर इनकी जड़ और अग्रभाग को दक्षिण की ओर कर दे। फिर नीचे लिखे हुए श्लोकों को पढ़कर पितृतीर्थ से जल गिराये-

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।। येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।। ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः। अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

वस्त्र निष्पीडनं- इस प्रकार सब पितरों का तर्पण हो जाने के बाद अँगोछे की चार तह कर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर निचोड़े - ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

भीष्मतर्पण- इसके बाद भीष्मपितामह को पितृतीर्थ और कुशों से जल दें-

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।।

सूर्य को अर्घ्यदान- इसके पश्चात् पात्र को जल तथा मिट्टी से स्वच्छ कर ले। उसके बाद पूर्वोक्त रीति से आचमन और प्राणायाम कर सव्य हो जाय अर्थात् जनेऊ को बायें कंधे पर कर ले। अर्घ्य में फूल चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य दे -

नमो विवस्वते ब्रह्मन ! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करे । इसके बाद दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवाताओं का वन्दन करें- १.ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः। २. ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः।३.ॐ दक्षिणाय नमः,ॐ यमाय नमः। ४.ॐ नैर्ऋत्यै नमः,ॐ निर्ऋतये नमः। ५.ॐ प्रतीच्यै नमः,ॐ

वरुणाय नमः। ६.ॐ वायव्यै नमः, वायवे नमः। ७.ॐ उदीच्यै नमः,ॐ कुबेराय नमः। ८.ॐ ऐशान्यै नमः,ॐ ईशानाय नमः। ९.ॐ ऊर्ध्वायै नमः,ॐ ब्रह्मणे नमः। १०.ॐ अधरायै नमः,ॐ अनन्ताय नमः।

इस प्रकार दिशाओं और देवताओं को नमस्कार कर आसन पर बैठकर के नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर एक-एक जलाञ्जलि दे- ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

समर्पण -

निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण कर्म भगवान् को समर्पित करें-

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

तदन्तर हाथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करते हुए पाठ करें-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि।न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्।।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

पञ्चबलि-विधि

१. गोबलि (सव्य होकर पत्ते पर)-

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।। इदं गोभ्यो न मम।

२. श्वानबलि (जनेऊ कण्ठी कर पत्ते पर)- ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ।। इदं श्वाभ्यां न मम।

३. काकबलि (अपसव्य होकर भूमि पर) - ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतस्तथा।वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्।। इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

४. देवादिबलि (सव्य होकर पत्ते पर) - ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांशि, सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।। इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

५. पिपीलिकादिबलिः (पत्ते पर) - पिपीलिकाःकीटपतङ्गकाद्या, बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं, तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।। इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

।। नवग्रहस्तोत्रम् ।।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्।बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।
नरनारीनृपाणाञ्च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्ताडकाग्निसमुद्भवाः।ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

।। महर्षिव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिं चबुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

।।श्रीकनकधारास्तोत्रम्।।

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः।।
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।।
दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः।।
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।।
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।
दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टास्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रकृत्रिमं दयायाः।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।

।। श्रीभगवत्पादशङ्करविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अरिष्टशान्तये महामृत्युञ्जयवैदिकमन्त्रजपविधिः

आचम्य प्राणायामं कृत्वा, शान्तिपाठः, सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा संकल्पः - अमुकमासीयामुकपक्षीय अमुकतिथौ अमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे उत्पन्नोत्पास्य अखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यतावाप्तये श्रीमृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।

ऋष्यादिन्यासः - वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः मूर्ध्नि।। पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे। श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

मन्त्रः - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।।

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठऋषः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुपूछन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसंसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः ऊर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं हौं कवचाय हुं।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वाल मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।। इति षडाङ्गन्यासः।। त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिं नेत्रयोः। पुष्टिवर्द्धनं मुखे। उर्व्वारूकं गण्डयोः। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योः लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मां जान्वोः। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकं कृत्वा ध्यानं कुर्यात् **अथध्यानम्** -

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।।
अक्षसंङ्गमृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषार्द्रव्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।।
चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलहास्यास्यपङ्केरुहम्।।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रां कुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।

मानसोपचारैः संपूज्य, ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। मन्त्र जपेत्। मन्त्रः - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।। ततपोजपान्तरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वर।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।। अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।।

स्थान नाम	अक्षांश	रेखांश
अकोला, महाराष्ट्र	20.42 उ.	77.02 पू.
अक्याब (सित्वे), बर्मा	20.09 उ.	92.57 पू.
अंकलेश्वर, गुजरात	21.38 उ.	73.02 पू.
अंकारा, तुर्की	39.57 उ.	32.54 पू.
अगरतला, त्रिपुरा	23.50 उ.	91.16 पू.
अजमेर, राजस्थान	26.27 उ.	74.42.पू.
अजंता, महाराष्ट्र	20.33 उ.	75.48.पू.
अदन, दक्षिण यमन	12.45 उ.	45.04.पू.
अनंतनाग, ज. और क.	33.43 उ.	75.17.पू.
अनुराधापुर, श्री लंका	8.22 उ.	80.23.पू.
अन्नपूर्णा शिखर, नेपाल	28.35 उ.	83.57 पू.
अबादान, ईरान	30.20 उ.	48.16 पू.
अबिदजान, आइवरी कोस्ट	5.19 उ.	04.02 पू.
अबोहर, पंजाब	30.08 उ.	74.12.पू.
अमरावती, महाराष्ट्र	20.56 उ.	77.48 पू.
अमृतसर, पंजाब	31.37 उ.	74.55 पू.
अम्बाला, हरियाणा	30.21 उ.	76.52 पू.
अम्मान, जार्डन	31.57 उ.	35.56.पू.
अराकान योमा, बर्मा	20.00 उ.	94.20.पू.
अरारात पर्वत, तुर्की	39.42 उ.	44.35 पू.
अरावली, प.मा., राजस्थान	25.00 उ.	73.10 पू.
अर्कनसास, यू.एस.ए.	38.20 उ.	100.00पू.
अलवए, केरल	10.07 उ.	76.24 प.
अलवर, राजस्थान	27.34 उ.	76.38 पू.
अलाबामा, यू.एस.ए	31.15 उ.	87.45 पू.
अलीबाग, महाराष्ट्र	18.39 उ.	72.55 प.
अलेघो, सीरिया	36.10 उ.	37.00 पू
अल्जियर्स, अल्जीरिया	36.50 उ.	03.00 पू.
अल्टाई प.मा.,एशिया	48.00 उ.	90.00 पू
अल्मा आटा, यू.एस.एस.आर.	43.12 उ.	76.45 पू.
अल्मोड़ा, उत्तर प्रदेश	29.37 उ.	79.40 पू
असाई, महाराष्ट्र	20.15 उ.	76.58 पू.
असेन्शन द्वीप, अंध महासागर	07.57 उ.	14.28 पू.
अस्त्रखान, यू.एस.एस.आर.	46.15 उ.	48.04 प.
अहमदाबाद, गुजरात	23.03 उ.	72.40 पू
ॲदिस अबाबा, इथीयोपिया	09.02 उ.	38.44 पू.
ॲटलांटा, यू.एस.ए.	33.45 उ.	84.21 पू.
ॲपलेशियन प.मा., यू.एस.ए.	38.00 उ.	80.00 प.
ॲमस्टरडम,नेदरलैंड	52.23 उ.	04.53 प.
आईजोल, मिजोरम	23.36 उ.	93.00 पू.
आगरा, उत्तर प्रदेश	27.10 उ.	78.05 पू.
आदम शिखर, श्री लंका	06.49 उ.	80.30 पू.
आनंद, गुजराज	22.32 उ.	73.00 पू.
आबू, राजस्थान	24.40 उ.	72.45 पू.
आस्वान, मिश्र	24.53 उ.	32.57 पू.
आर्केजल, यू.एस.एस.	64.33 उ.	40.33 पू.
आल्प्स प.मा., यूरोप	46.00 उ.	07.00 पू.
आसनसोल, प.बंगाल	23.42 उ.	87.01 पू.
ऑकलैंड, न्यूजीलैंड	36.52 उ.	174.42 पू.
ऑस्लो, नॉर्वे	59.54 उ.	10.45 पू.
इटारसी, मध्य प्रदेश	22.30 उ.	77.55 पू.
इन्दौर, मध्य प्रदेश	22.44 उ.	75.50 पू.
इर्कुतस्क, यू.एस.एस.आर.	52.36 उ.	104.10 पू.
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	25.28 उ.	81.54 पू.
इस्तंबुल, तुर्की	41.00 उ.	29.00 पू.
इस्फहान, ईरान	32.37 उ.	51.38 पू.
इस्लामाबादा, पाकिस्तान	33.44 उ.	73.10 पू.
इम्फाल, मणिपुर	24.44 उ.	93.58 पू.
ईरी झील, उत्तर अमेरिका	47.59 उ.	106.52 पू.
उज्जैन, मध्य प्रदेश	23.09 उ.	75.43 पू
उटाकमंड, तमिलनाडु	11.24 उ.	76.44 पू
उदयपुर, राजस्थान	27.43 उ.	75.33 पू.
उपसाला, स्वीडन	59.50 उ.	17.45 पू.
एर्नाकुलम, केरल	10.00 उ.	76.15 पू.
एलबुज प., यू.एस.एस.आर.	43.23 उ.	42.27 पू
एलरु, आन्ध्र प्रदेश	16.43 उ.	81.09 पू.
एलोरा, महाराष्ट्र	20.02 उ.	75.13 पू.
एवरेस्ट शिखर, नेपाल	28.05 उ.	86.58 पू.
ऐर्जेरूम, तुर्की	39.55 उ.	41.10 पू.
ओक्लाहोमा सिटी, यू.एस.ए.	35.29 उ.	97.31 पू.
ओटावा, कैनेडा	45.27 उ.	75.42 प.
ओडेसा, यू.एस.एस.आर.	46.27 उ.	30.48 प.
ओटेरियो झी, उत्तर अमेरिका	43.40 उ.	78.00 पू.
ओमान, अरब	23.30 उ.	57.00 प.
ओम्स्क, यू.एस.एस.आर.	55.00 उ.	73.38 पू.
ओसाका, जापान	34.40 उ.	135.27 पू.
ओहियो, यू.एस. ए.	40.20 उ.	82.00 पू.
ओरनबर्ग, यू.एस.एस.आर.	54.46 उ.	55.07 प.
ओरलीन्स, फ्रांस	47.54 उ.	10.45 प.
औरंगाबाद, महाराष्ट्र	19.53 उ.	75.23 पू.
कड़प्पा, आंध्र प्रदेश	14.28 उ.	78.52 पू.
कण्णूर, केरल	11.52 उ.	75.25 पू.
कंधार, अफगानिस्तान	31.37 उ.	65.30 पू.
कपूरथला, पंजाब	31.23 उ.	75.25 पू.
कम्पाला, उगंडा	00.19 उ.	32.25 पू.
करनाल, हरियाणा	29.42 उ.	77.02 पू.
करमान, ईरान	30.17 उ.	57.05 पू.
कराकोरम प.मा., एशिया	36.10 उ.	75.00 पू.
कराची, पाकिस्तान	24.51 उ.	67.04 पू.
करीमनगर, आंध्र प्रदेश	18.28 उ.	79.06 पू.
कर्णफूली कुंड, बांग्लादेश	22.55 उ.	91.50 पू.
कलकत्ता, पं.बंगाल	22.34 उ.	88.24 पू.
कलात, पाकिस्तान	25.02 उ.	64.03 पू.
कलाहंडी, उड़ीसा	19.40 उ.	83.00 पू.
कलिनिग्राड, यू.एस.एस.आर.	54.43 उ.	20.30 पू.
काकीनाडा, आंध्र प्रदेश	16.57 उ.	82.15 पू.
काठमांडू, नेपाल	27.42 उ.	85.12 पू.
काबुल, अफगानिस्तान	34.30 उ.	69.18 पू.
कानपुर, उत्तर प्रदेश	26.28 उ.	80.24 पू.
कांचीपुरम्, तमिलनाडु	12.00 उ.	79.45 पू.
कामेट शिखर, उत्तर प्रदेश	30.56 उ.	79.36 पू.
कारिकल, तमिलनाडु	10.55 उ.	79.52 पू.
कार्पेथियन प.मा., यूरोप	49.00 उ.	22.30 पू.
काशगर, चीन	39.20 उ.	74.04 पू.
काहिरा, मिश्र	30.03 उ.	31.15 पू.
कॉकेशस प.मा., प. एशिया	43.00 उ.	44.00 पू.
किजिलकुम मरुभूमि, यू.एस.एस.आर.	42.00 उ.	64.44 पू.
कंचनजंगा शिखर, नेपाल	27.53 उ.	88.11 पू.
कर्शिासा, जेयर	04.18 उ.	15.18 पू.
किसनगनी, जेयर	00.30 उ.	25.10 पू.
कीव, यू.एस.एस.आर.	50.28 उ.	30.11 पू.
कुआलालमपुर, मलेशिया	33.11 उ.	01.40 पू.
कुइबिशेव, यू.एस.एस.आर.	53.10 उ.	50.10 पू.
कुंमिंग, चीन	25.02 उ.	102.42पू.
कुंभकोनम, तमिलनाडु	10.59 उ.	79.24 पू.
कुमारी अंतरीप, भारत	08.04 उ.	77.36 पू.
कुमिल्ला, बांग्लादेश	23.25 उ.	91.13 पू.
कुष्टिया, बांग्लादेश	23.25 उ.	89.10 पू.
कुवैत, प. एशिया	28.59 उ.	47.52 पू.
कूचबिहार, प. बंगाल	26.20 उ.	89.29 पू.
कृष्णनगर, प. बंगाल	23.25 उ.	89.30 पू.
केगल्ला, श्री लंका	07.15 उ.	80.20 पू.
केडिज, स्पेन	36.32 उ.	06.17 पू.
के^{2} शिखर, भारत	35.30 उ.	76.32 पू.
केपटाउन, द. अफ्रीका	33.56 उ.	18.25 पू.
कैम्बलपुर, पाकिस्तान	33.47 उ.	72.23 पू.
कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया	35.17 उ.	149.18पू.
कैंडी, श्री लंका	07.18 उ.	80.40 पू.
कांसास सिटी, यू. एस. ए.	39.05 उ.	94.35 पू.
कैलाश शिखर. भारत	28.33 उ.	77.16 प.
कोचीन, केरल	09.58 उ.	76.17 पू.
कोटा, राजस्थान	25.10 उ.	75.52 पू.
कोट्टयम्, केरल	09.36 उ.	76.34 पू.
कोणार्क,ओडिशा	19.53 उ.	86.08 पू.
कोपनहेगन, डेनमार्क	55.40 उ.	12.30 पू.
कोबे, जापान	34.41 उ.	135.12पू.
कोयमुत्तुर, तमिलनाडु	11.00 उ.	77.00 पू.
कोरापुट ओडिशा	18.48 उ.	82.41 पू.
कोलंबो, श्री लंका	06.56 उ.	79.56 पू.
कोलार स्वर्ण खदान, कर्नाटक	12.55 उ.	78.17 पू.
कोल्लम, केरल	08.54 उ.	76.38 पू.
कोल्हापुर, महाराष्ट्र	16.42 उ.	74.16 पू.
कोह्राट, पाकिस्तान	33.35 उ.	71.29 पू.
कोहिमा, नागालैंड	25.40 उ.	94.08 पू.
कांगडा, हिमाचल प्रदेश	32.05 उ.	76.18 पू.
क्वांगचाउ (कैण्टंन), चीन	23.11 उ.	113.14पू.
क्विटो, इक्वेडोर	00.10 द.	78.35 पू.
क्वेटा, पाकिस्तान	30.12 उ.	67.00 प.
क्यूबा,कैरिबियन सागर	22.00 उ.	80.00 पू.
क्यूबेक, कैनेडा	46.83 उ.	71.15 प.
क्यूशू द्वीप, जापान	32.30 उ.	131.00 प.
क्योटो, जापान	35.01 उ.	135.45 पू.
क्राइस्टचर्च, न्यूजीलैंड	43.30 द.	172.40 पू.
क्रीमिया, यू.एस.एस.आर.	45.30 उ.	35.00 पू.
क्रीट द्विप, भूमध्य सागर	35.10 उ.	25.00 पू.
क्रेकऊ, पोलेंड	50.50 उ.	19.50 पू.
क्लीवलैंड ओहियो, यू एस ए	41.28 उ.	81.40 पू.
क्लोन, एफ आर जी	50.56 उ.	06.57 प.
खड्गपुर, प. बंगाल	22.30 उ.	87.20 पू.
खन्ना, पंजाब	30.42 उ.	76.14 पू.
खुम्रेर प्रजातंत्र, द. एशिया	12.00 उ.	105.00 पू.
खारकोव, यू.एस.एस.आर.	49.53 उ.	36.11 पू.
खारगोन, मध्य प्रदेश	21.50 उ.	75.37 पू.
खार्तुम, सूडान	15.35 उ.	32.35 पू.
खुलना, बांग्लादेश	22.48 उ.	89.37 पू.
खोतान, चीन	37.04 उ.	80.02 पू.
खैरपुर, पाकिस्तान	27.30 उ.	68.60 पू.
गजनी , अफगानिस्तान	33.43 उ.	68.17 पू.
गंगटोक, सिक्किम	27.20 उ.	88.40 पू.
गंगानगर , राजस्थान	29.49 उ.	73.50 पू.
गंगापुर , राजस्थान	26.29 उ.	76.46 पू.
गजंम ,ओडिसा	19.22 उ.	85.06 पू.
गया , बिहार	24.49 उ.	85.01 पू.
गाजा , मिश्र	31.30 उ.	34.27 पू.
गांधीधाम , गुजरात	23.07 उ.	70.10 पू.
गांधीनगर , गुजरात	23.15 उ.	72.45 पू.
गांधी सागर बांध ,मध्य प्रदेश	24.39 उ.	75.41 पू.
गॉले, श्री लंका	06.02 उ.	80.13 पू.
गुजरात, पाकिस्तान	32.26 उ.	74.05 पू.
गुजरांवाला, पाकिस्तान	32.10 उ.	74.14 पू.
घुड़गांव, हरियाणा	28.37 उ.	77.04 पू.
घुंदूर, आन्ध्र प्रदेश	16.18 उ.	80.29 पू.
गुंतकल आंध्र प्रेदश	15.11 उ.	77.25 पू.
गुरदासपुर, पंजाब	32.03 उ.	75.27 पू.
घुलबर्गा, कर्नाटक	17.19 उ.	79.54 पू.
गोधरा, गुजरात	22.45 उ.	73.40 पू.
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश	26.45 उ.	83.24 पू.
गोंडल, गुजरात	21.55 उ.	70.52 पू.
घौहाटी, असम	26.11 उ.	91.47 पू.
ग्रनाडा, स्पेन	37.12 उ.	03.37 पू.
ग्रान चाको , द. अमेरिका	23.30 द.	60.00 पू.
ग्रेट बेयर झील, कैनेडा	66.00 उ.	120.00 पू.
ह्रोट साल्ट झील, यू एस ए	41.10 उ.	112.30 पू.
घ्लोसगो, यू के	55.52 उ.	04.15 पू.
ग्वाटेमाला, मध्य अमेरिका	14.38 उ.	90.22 पू.
ग्वादर पाकिस्तान	25.07 उ.	62.30 पू.
ग्वालियर, मध्य प्रदेश	26.14 उ.	78.10 पू.
चंडीगढ़, संघीय क्षैत्र भारत	30.43 उ.	76.54 पू.
चंद्रपुर, (चांदा), महाराष्ट्र	19.57 उ.	79.21 पू.
चंबा, हिमाचल प्रदेश	32.29 उ.	76.10 पू.
चाइबासा, बिहार	22.33 उ.	85.51 पू.
चालिसगांव, महाराष्ट्र	20.33 उ.	75.10 पू.
चांगशुन, चीन	43.54 उ.	125.20 पू.
चांग्शा, चीन	28.09 उ.	112.45 पू.
चार्लस्टन, यू एस ए	32.50 उ.	79.58 पू.
चिकबल्लापुर, कर्नाटक	13.26 उ.	77.46 पू.
चित्तरंजन, प. बंगाल	23.50 उ.	87.00 पू.
चित्तूर, आंध्र प्रदेश	13.13 उ.	79.08 पू.
चित्तौरगढ, राजस्थान	24.54 उ.	74.42 पू.
चित्रदुर्ग, कर्नाटक	14.14 उ.	76.26 पू.
चित्राल, पाकिस्तान	35.48 उ.	71.52 पू.
चिटगाँव, बांग्लादेश	22.21 उ.	91.53 पू.
चिंदविन, बर्मा	22.30 उ.	95.00 पू.
चिद्रांबरम्, तमिलनाडु	11.24 उ.	79.44 पू.
चियांग मेई, थाईलैंड	18.50 उ.	98.53 पू.
चिल्का झील, ओडिसा	19.50 उ.	85.30 पू.
चीता, यू.एस.एस.आर.	53.10 उ.	113.40 पू.
चुंकिंग, चीन	29.30 उ.	106.50 पू.
चुरू, राजस्थान	28.18 उ.	74.01 पू.
चेदुबा, बर्मा	18.40 उ.	93.30 पू.
चेरापुंजी, मेघालय	25.17 उ.	91.47 पू.
चैनेल द्वीप, यू के	49.30 उ.	02.30 पू.
छतरपुर, मध्य प्रदेश	24.54 उ.	79.38 पू.
छपरा, बिहार	25.47 उ.	84.47 पू.
छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश	22.03 उ.	78.59 पू.
जकार्ता (इन्डोनेशिया)	06.12 उ.	106.50 पू.
जबलपुर मध्यप्रदेश	23.10 उ.	79.59 पू.
जंजीबार अफ्रिका	05.00 उ.	38.30 पू.
जमखंडी कर्नाटक	60.30 उ.	75.20 पू.
जमशेदपुर बिहार	22.50 उ.	86.10 पू.
जमालपुर बिहार	25.19 उ.	86.32 पू.
जमैका बेस्ट इण्डीज	18.00 उ.	77.00 पू.
जेनेवा स्विटजरलैंड	46.13 उ.	06.07 प.
जयपुर राज.	26.55 उ.	75.52 पू.
जरुसलम पश्चिम एशिया	31.40 उ.	33.14 पू.
जलपाईगुड़ी पश्चिम बंगाल	26.32 उ.	88.46 पू.
जाग्रेब युगोस्लाविया	45.50 उ.	16.00 पू.
जाफना श्रीलंका	09.17 उ.	79.57 पू.
जामनगर गुजरात	22.27 उ.	70.07 पू.
जालंधर पंजाब	31.19 उ.	75.18 पू.
जार्जटाऊन गुयाना	06.50 उ.	58.12 पू.
जाहिदान ईरान	29.34 उ.	60.58 प.
जिबूटी अफ्रिका	11.34 उ.	43.09 पू.
जिब्राल्टर ब्रि.स्पेन	36.08 उ.	05.19 पू.
जींद हरियाणा	29.19 उ.	76.23 प.
जूनागढ गुजरात	21.31 उ.	70.36 पू.
जेकबाबाद पाकिस्तान	28.17 उ.	68.29 पू.
जेनोआ इटली	44.25 उ.	08.57 पू.
जैसलमेर राज.	26.55 उ.	70.57 पू.
जैसोर बांग्लादेश	23.10 उ.	89.10 पू.
जोधपुर राज.	26.18 उ.	73.04 पू.
जोरहाट असम	26.46 उ.	94.16 पू.
जोहान्सवर्ग द.अफ्रिका	26.13 द.	28.56 पू.
ज्यूरिख स्विटजरलैड	47.26 उ.	08.22 पू.
झरिया बिहार	23.50 उ.	86.33 पू.
झाबुआ मध्यप्रदेश	22.45 उ.	74.38 पू.
झालावाड.	24.37 उ.	76.12 पू.
झांसी उत्तरप्रदेश	25.27 उ.	78.37 पू.
झुंझुनु राज.	28.06 उ.	75.25 पू.
टिबकटू माली	16.45 उ.	02.55 पू.
टिराना अल्बानिया	41.20 उ.	19.50 पू.
टीकमगढ़ मध्यप्रदेश	24.45 उ.	78.53 पू.
टुलाँ फ्रांस	43.08 उ.	05.56 पू.
टूर फ्रांस	47.24 उ.	00.42 पू.
टेब्रिज ईरान	38.02 उ.	46.20 पू.
टैंजियर मोराक्को	35.49 उ.	05.52 पू.
टोकियो जापान	35.40 उ.	138.45 पू.
टेबेगो वेस्ट इंडीज	11.15 उ.	60.40 प.
टोम्स्क यू एस एस आर	56.30 उ.	85.12 पू.
टोरांटो कैनेडा	43.39 उ.	79.20 पू.
टोंक राजस्थान	26.11 उ.	75.50 पू.
ट्यूनिस ट्यूनिसिया	36.49 उ.	10.10 पू.

ट्रिएस्ट इटली	45.35	उ.	13.45	पू.	त्रिशूर केरल	10.30	उ.	76.15	पू.	निकोबार द्वी.हिंदमहासागर	08.00	उ.	94.00	पू.	पर्नाम्बुको ब्राजील	09.09	उ.	34.47	प.	फगवाड़ा पंजाब	31.13	उ.	75.47	पू.	बसीन बर्मा	16.54	उ.	94.50	पू.	बेलगांव कर्नाटक	15.52	उ.	74.34	पू.
ट्राहीम नार्वे	63.26	उ.	10.24	पू.	थिम्पू भूटान	27.32	उ.	89.53	पू.	निकोशिया साइप्रेस	35.10	उ.	33.23	पू.	पलिताना गुजरात	21.31	उ.	71.53	पू.	फरीदकोट पंजाब	30.40	उ.	74.57	पू.	बस्तर मध्यप्रदेश	19.10	उ.	81.30	पू.	बेलग्राड यूगोस्लाविया	44.50	उ.	20.30	पू.
ट्रिनिडैड बेस्ट इंडीज	10.30	उ.	16.00	पू.	दमन गो.द.दी.	20.25	उ.	72.53	पू.	नीलगिरी तमिलनाडु	11.24	उ.	76.47	पू.	पलेमबंग सुमात्रा	03.00	उ.	104.39	पू.	फरुखाबाद उत्तरप्रदेश	27.24	उ.	79.37	पू.	बस्ती उत्तरप्रदेश	26.48	उ.	82.46	पू.	बेलिटुंगदीप इंडोनेशिया	02.30	द.	108.00	पू.
ट्रेपोली लिबिया	32.45	उ.	13.15	पू.	दमश्क सीरिया	33.30	उ.	36.14	पू.	नूबियन मरुभूमि अफ्रिका	21.00	उ.	34.00	पू.	पाकले लाओस	18.10	उ.	101.24	प.	फाजिल्का पंजाब	30.25	उ.	74.04	पू.	बहावलपुर पाक.	28.24	उ.	71.47	पू.	बेसीन महाराष्ट्र	19.22	उ.	77.12	पू.
डगलस यू.के.	54.12	उ.	04.25	प.	दर-ए-सलाम तंजानिया	06.50	उ.	39.17	पू.	नूरेनबर्ग एफ आर जी	49.27	उ.	11.05	पू.	पाँक स्ट्रेट भारत श्रीलंका	10.00	उ.	80.00	पू.	फाजिल्का पंजाब	51.45	उ.	59.00	प.	बहामा द्वी.सं. वेस्ट इंडीज	23.00	उ.	74.00	प.	बैंकाक थाईलैंड	13.43	उ.	100.31	पू.
डंडी यू.के	56.29	उ.	03.00	पू.	दादरा और नगर हवेली भारत	20.10	उ.	73.00	पू.	नेगेंबो श्रीलंका	07.12	उ.	79.50	पू.	पाटन गुजरात	23.52	उ.	72.10	पू.	फाँकलैंड अमेरिका	51.45	उ.	59.00	प.	बह्मरेन प. एशिया	26.00	उ.	50.30	पू.	बैडुमबंग खमेर प्रजातंत्र	13.06	उ.	103.13	पू.
डब्लिन आयरिश प्रजातंत्र	53.20	उ.	06.15	पू.	दार्जिलिंग प.बंगाल	27.03	उ.	88.18	प.	नेटाल द.अफ्रिका	29.00	उ.	30.30	पू.	पानीपत हरियाणा	29.23	उ.	77.01	पू.	फिजी द्वीप प्रशांत महासागर	16.00	द.	180.00	पू.	बाकू यूएस ए आर	40.22	उ.	49.51	पू.	बैरनद्वीप अलास्का	58.45	उ.	152.00	प.
डरबन द.अफ्रिका	29.52	द.	31.01	पू.	दिल्ली भारत	28.37	उ.	77.10	पू.	नेत्रकोना बांग्लादेश	24.53	उ.	90.47	पू.	पाँडिचेरी पा.	11.56	उ.	79.53	पू.	फिरोजपुर पंजाब	30.55	उ.	74.70	पू.	बांकुड़ा पं.बंगाल	23.14	उ.	87.67	पू.	बोगरा बांग्लादेश	24.51	उ.	89.26	पू.
डाकार सैनगल	14.40	उ.	17.26	पू.	दीव गो.द.दी.	20.42	उ.	71.01	पू.	नेपल्स इटली	40.51	उ.	14.26	पू.	पांडु असम	26.10	उ.	91.42	पू.	फिलडिलफिया यू.एस.ए	39.57	उ.	75.10	प.	बागलकोट कर्नाटक	16.12	उ.	75.45	पू.	बोरसद गुजरात	22.25	उ.	72.54	पू.
डार्विन आस्ट्रेलिया	12.30	उ.	31.00	पू.	देहरादून उत्तरप्रदेश	30.19	उ.	78.04	प.	नेफूद मरुभूमि साउदी	28.30	उ.	41.00	पू.	पाबना बांग्लादेश	24.01	उ	89.18	पू.	फुचाउ चीन	26.26	उ.	119.19	पू.	बाडन एफ आर जी	48.45	उ.	08.15	पू.	बोस्टन यूएस ए	42.21	उ.	71.04	प.
डिबूगढ असम	27.29	उ.	94.58	पू.	द्वारका गुजरात	22.14	उ.	69.01	पू.	नेब्रास्का राज्य यूएसए	41.30	उ.	100.00	प.	पार्श्वनाथ बिहार	24.00	उ.	86.11	पू.	फ्रेंज मोराक्को	34.08	उ.	05.06	पू.	बाथर्स्ट गंबिया	13.28	उ.	16.40	पू.	बोर्डो फ्रांस	44.50	उ.	00.34	प.
ड्रीजाँ फ्रांस	47.20	उ.	05.03	पू.	दरभंगा बिहार	26.10	उ.	58.14	पू.	नेल्लूर आन्ध्र प्रदेश	14.27	उ.	80.02	पू.	पालघाट केरल	10.46	उ.	76.42	पू.	फेयरबैक्स अलास्का	64.59	उ.	148.10	प.	बांडुगु इंडोनेशिया	06.54	उ.	107.36	प.	बोलंगीर उड़ीसा	20.40	उ.	83.30	पू.
डुआला कैमरुन	04.05	उ.	09.40	पू.	धनबाद बिहार	23.47	उ.	86.30	पू.	नेवादा राज्य यूएसए	40.00	उ.	120.00	प.	पालनपुर गुजरात	24.12	उ.	72.28	प.	फैजाबाद उत्तरप्रदेश	26.47	उ.	82.12	पू.	बांदा उत्तरप्रदेश	25.20	उ.	80.22	पू.	बोलान दर्रा पाक.	29.40	उ.	67.36	पू.
डेनवेर यू.एस.ए.	39.45	उ.	105.00	पू.	धनुषकोडि तमिलनाडु	09.10	उ.	79.28	प.	नैनकिंग चीन	32.07	उ.	118.47	पू.	पालामउ बिहार	23.52	उ.	84.17	पू.	फैरोज द्वी. अंधमहासागर	62.00	उ.	07.00	प.	बारामूला ज.और क.	34.10	उ.	74.30	पू.	बाँन एफ आर जी	50.44	उ.	07.04	पू.
डेट्रायट यू.एस.ए.	42.21	उ.	83.03	पू.	धारवाड़ कर्नाटक	15.27	उ.	75.05	पू.	नैनीताल उत्तरप्रदेश	29.23	उ.	79.30	पू.	पाली राज.	25.46	उ.	73.25	पू.	फोरालवर्ग आस्ट्रेलिया	47.13	उ.	10.00	पू.	बालाघाट मध्यप्रदेश	21.48	उ.	80.15	पू.	ब्रसेल्ज	50.52	उ.	04.22	पू.
डेल्प द्वी. श्रीलंका	09.30	उ.	79.40	पू.	ध्रागध्रा गुजरात	22.59	उ.	71.31	पू.	नैट्ज फ्रांस	47.13	उ.	01.32	प.	प्लाईमथ यूके.	50.22	उ.	04.07	पू.	फ्रीमेंटल आस्ट्रेलिया	32.05	उ.	114.40	पू.	बाली द्वी. इंडोनेशिया	08.20	उ.	115.00	पू.	ब्राइटन यू.के.	50.50	उ.	00.10	प.
डेराइस्माईल खाँ पाक.	31.51	उ.	70.56	पू.	धौलपुर राज.	26.42	उ.	77.53	पू.	नैरोबी कीनिया	01.18	द.	36.52	पू.	पिट्सबर्ग यूएसए	40.26	उ.	79.57	पू.	फ्रैकफर्ट एफ.आर.जी	50.06	उ.	08.40	पू.	बाली पं.बंगाल	22.39	उ.	88.21	पू.	ब्राह्मणबेरिया बांग्लादेश	23.59	उ.	91.07	पू.
डेरागांजी खाँ पाक.	30.04	उ.	70.49	पू.	धौलागिरि नेपाल	28.42	उ.	83.31	पू.	नोवगोरोढ़ यूएसएसआर	58.33	उ.	31.20	प.	पिट्रोवपलोस्क यूएसएसआर	53.16	उ.	159.00	पू.	फ्रुंज यू.एस.एस.आर	42.54	उ.	74.36	पू.	बालेश्वर उड़ीसा	21.30	उ.	86.54	पू.	ब्रैजबिल जेयर	04.15	द.	15.20	पू.
डैनसिंग पोलैंड	54.20	उ.	18.45	पू.	धुले महाराष्ट्र	20.58	उ.	74.47	पू.	नोवाअ जिमलिया यूएसए	73.00	उ.	55.00	पू.	पीकिंग चीन	39.55	उ.	116.24	पू.	फ्लोरिडा यू.एस.ए	27.00	उ.	82.00	पू.	बाल्टीमोर ए एस ए	39.18	उ.	76.37	प.	ब्रिडीजी इटली	40.38	उ.	18.00	पू.
डोवर यू.के.	51.08	उ.	01.15	पू.	नखोदका यूएसएस आर	43.10	उ.	132.45	पू.	नोशाटेल स्विट्जरलैंड	46.59	उ.	06.56	पू.	पीडमांट इटली	45.00	उ.	08.00	पू.	फ्यूजीसान शिखर जापान	35.21	उ.	138.43	पू.	बांसवाड़ा राज.	23.30	उ.	74.24	पू.	ब्रिस्वेन आस्ट्रेलिया	27.30	द.	153.00	पू.
ढाका बांग्लोदेश	23.42	उ.	90.26	पू.	नगोया जापान	35.10	उ.	136.55	पू.	नाटिघम यू.के.	49.40	उ.	01.08	पू.	पुदुकोट्टाई तमिलनाडु	10.23	उ.	78.52	पू.	बगदाद ईराक	33.20	उ.	44.27	पू.	वाडमेर राज.	25.45	उ.	71.23	पू.	ब्रिस्टल यू.के.	51.27	उ.	02.35	पू.
ढेकनाल उड़ीसा	20.40	उ.	85.38	प.	नडियाद गुजरात	22.41	उ.	72.55	पू.	नार्थम्प्टन यू.के.	52.14	उ.	00.55	पू.	पुत्तलम श्रीलंका	08.02	उ.	79.50	प.	बटाला पंजाब	31.49	उ.	75.14	पू.	बिलासपुर मध्यप्रदेश	22.05	उ.	82.13	पू.	ब्रुनेई बोर्नियो	04.55	उ.	114.57	पू.
तानानारीव मैलागेसी	18.58	द.	47.30	पू.	नलगोंडा आध्र प्रदेश	17.03	उ.	79.02	पू.	नंगल पंजाब	31.23	उ.	76.23	पू.	पुनाखा भूटान	27.32	उ.	89.53	पू.	बटान द्वी.प्रशांत महासागर	20.25	उ.	121.59	पू.	बिलासपुर हिमाचलप्रदेश	31.19	उ.	76.50	पू.	भटिंडा पंजाब	30.11	उ.	75.00	पू.
तनासरिम बर्मा	12.06	उ.	99.03	पू.	नवद्वीप पं.बंगाल	23.24	उ.	88.23	पू.	नंगा पर्वत पाक.	35.20	उ.	74.40	पू.	पुंछ ज.और क.	33.51	उ.	74.08	पू.	बड्डीकलोआ श्री लंका	07.43	उ.	81.44	पू.	बिल्बाओ स्पेन	43.16	उ.	02.56	प.	भंडारा महाराष्ट्र	21.09	उ.	79.42	पू.
तंजाउर तमिलनाडु	10.47	उ.	79.10	पू.	नवलगढ़ राज.	27.51	उ.	75.18	पू.	नंदा देवी भारत	30.23	उ.	80.01	पू.	पुरी उड़ीसा	19.48	उ.	85.52	पू.	बड़ोदरा गुजरात	22.00	उ.	73.16	पू.	बीकानेर राज.	28.01	उ.	73.22	पू.	भद्रावती कर्नाटक	13.52	उ.	75.40	पू.
तन्नुओला यु.एस.एस.आर.	51.00	उ.	91.00	पू.	नवसारी गुजरात	21.07	उ.	73.40	पू.	न्यू ओरलींज यूएसए	30.00	उ.	90.01	पू.	पुरुलिया पं.बंगाल	23.20	उ.	86.25	पू.	बादामी कर्नाटक	15.55	उ.	75.45	पू.	बीजापुर कर्नाटक	16.50	उ.	75.47	पू.	भरतपुर राज.	27.15	उ.	77.30	पू.
तलाई मन्नार श्रीलंका	09.10	उ.	79.40	पू.	नसीराबाद राज.	26.18	उ.	74.46	पू.	न्यू कासल आस्ट्रेलिया	33.00	उ.	151.40	प.	पुणे महाराष्ट्र	18.31	उ.	73.55	पू.	बदुल्ला श्रीलंका	06.59	उ.	81.05	पू.	बीदर कर्नाटक	17.57	उ.	77.39	पू.	भड़ोच गुजरात	21.41	उ.	73.01	पू.
तवांग अरुणाचलप्रेदश	27.33	उ.	91.48	पू.	नाइस फ्रांस	43.41	उ.	07.18	पू.	न्यूरेलिया श्रीलंका	06.59	उ.	80.47	पू.	पूर्णिया बिहार	25.49	उ.	87.31	पू.	बन्नू पाक.	32.00	उ.	70.39	पू.	बीड़ महाराष्ट्र	19.00	उ.	75.50	पू.	भागलपुर बिहार	25.15	उ.	87.02	पू.
तक्षशिला पाक.	33.40	उ.	72.50	पू.	नागदा मध्यप्रदेश	23.30	उ.	75.29	पू.	न्यूयॉर्क यूएसए	40.43	उ.	74.01	पू.	पूसान द.कोरिया	35.07	उ.	129.02	पू.	बंगलौर कर्नाटक	12.58	उ.	77.38	पू.	बुखारा यूएस एसआर	39.52	उ.	64.30	पू.	भाटापारा पं.बंगाल	22.54	उ.	88.25	पू.
ताइपे ताईवान	25.02	उ.	121.30	पू.	नागपत्तनम् तमिलनाडु	10.46	उ.	79.53	पू.	न्यू हेवन यूएसए	41.20	उ.	72.54	प.	पगू बर्मा	17.20	उ.	96.25	पू.	बंबई महाराष्ट्र	18.55	उ.	72.54	पू.	बुखारेस्ट रुमानिया	44.25	उ.	26.07	पू.	भामो बर्मा	24.16	उ.	97.17	पू.
ताशकंद यु.एस.एस.आर.	41.30	उ.	69.20	प.	नागपुर महाराष्ट्र	21.09	उ.	79.09	पू.	पओशान चीन	25.13	उ.	99.17	पू.	पेपुआ की खांडी पेपुआ	07.00	द.	146.00	पू.	बरनाला पंजाब	30.26	उ.	75.33	पू.	बुडापेस्ट हंगरी	47.29	उ.	19.03	पू.	भावनगर गुजरात	21.46	उ.	72.11	पू.
तिरुचिरापल्ली तमिलनाडु	10.50	उ.	78.46	पू.	नागरकोउल तमिलनाडु	08.11	उ.	77.29	पू	पंचमढ़ी	22.30	उ.	78.22	पू.	पेनांग मलाया	05.25	उ.	100.14	पू.	बरमिंघम यू.के.	52.30	उ.	01.50	प.	बुरह्मनपुर मध्यप्रदेश	21.17	उ.	76.16	पू.	भिंड मध्यप्रदेश	26.35	उ.	78.46	पू.
तिरुपति आन्ध्रप्रदेश	13.40	उ.	79.20	पू.	नागासाकी जापान	32.47	उ.	129.52	पू.	पटकई प.मा. असम	27.00	उ.	95.30	पू.	पेरिस फ्रांस	48.50	उ.	02.20	पू.	बरमूडा द्वी. अंधमहासागर	32.19	उ.	64.45	प.	बुरुंडी अफ्रिका	03.05	द	30.00	पू.	भिलवाड़ा राज.	25.21	उ.	74.40	पू.
तिरुनेलवेली तमिलनाडु	08.44	उ.	77.44	प.	नाभा पंजाब	30.25	उ.	76.09	पू.	पटना बिहार	25.37	उ.	85.13	पू.	पोखरा नेपाल	28.17	उ.	83.58	पू.	बरहमपुर उड़ीसा	19.18	उ.	84.51	पू.	बुलंदशहर उत्तरप्रदेश	28.24	उ.	77.54	पू.	भिवानी हरियाणा	28.46	उ.	76.18	पू.
तूतिकोरन तमिलनाडु	08.48	उ.	78.11	पू.	नांदेड़ महाराष्ट्र	19.09	उ.	77.27	पू.	पटियाला पंजाब	30.20	उ.	76.25	पू.	पोट्सडम जी.डी.आर.	52.24	उ.	13.45	पू.	बरहमपुर पं.बंगाल	24.06	उ.	88.19	पू.	बूदी राज.	25.27	उ.	75.41	पू.	भुज गुजरात	23.15	उ.	69.49	पू.
तेजपुर असम	26.37	उ.	92.50	पू.	नामचा बरबा प. चीन	29.38	उ.	94.04	पू.	पटुआखाली बांग्लादेश	22.20	उ.	90.22	प.	पोरबंदर गुजरात	21.37	उ.	69.49	पू.	बरेली उत्तरप्रदेश	28.22	उ.	79.27	पू.	बेकाल झील यूएसएसआर	54.00	उ.	108.00	पू.	भुसावल महाराष्ट्र	21.02	उ.	75.47	पू.
तेहरान ईरान	35.41	उ.	51.25	पू.	नामपेन कंबोडिया	11.35	उ.	104.57	पू.	पणजी गो.द.दी	15.03	उ.	73.55	पू.	पोर्ट सईद मिश्र	31.16	उ.	32.18	पू.	बर्धमान पं.बंगाल	23.16	उ.	87.54	पू.	बेतिया बिहार	26.48	उ.	84.33	पू.	भुवनेश्वर उड़ीसा	20.15	उ.	85.52	पू.
तैल अवीव इस्राइल	32.04	उ.	34.46	पू.	नारायणगंज बाग्लादेश	23.37	उ.	90.32	पू.	पठानकोट पंजाब	32.17	उ.	75.42	पू.	पोटस्मथ यू.के.	50.47	उ.	01.05	प.	बर्न स्विटजरलैंड	46.55	उ.	07.30	पू.	बेतूल मध्यप्रदेश	21.51	उ.	77.58	पू.	भैरव बाजार बांग्लादेश	24.02	उ.	90.59	पू.
त्रिकोमाली श्रीलंका	08.34	उ.	81.14	प.	नासिक महाराष्ट्र	20.02	उ.	73.50	पू.	पन्ना मध्यप्रदेश	24.44	उ.	80.14	पू.	पोट्रोरीको बेस्ट इंडीज	18.55	उ.	66.20	प.	बर्लिन जीडीआर	52.32	उ.	13.25	पू.	बेन नेबिस यू.के.	56.48	उ.	05.00	प.	भोपाल मध्यप्रदेश	23.16	उ.	77.36	पू.
त्रिपुरा त्रिपुरा	23.45	उ.	91.30	पू.	नाहन हिमाचल प्रदेश	30.33	उ.	77.21	पू.	पंढरपुर महाराष्ट्र	17.41	उ.	75.23	पू.	प्राग चोकोस्लोवेकिया	50.05	उ.	14.25	प.	बल्लारी कर्नाटक	15.09	उ.	76.55	पू.	बेगांजी लीबिया	32.10	उ.	20.10	पू.	मकास्सर सेलीबीज	05.05	द.	119.30	पू.
त्रिवेन्द्रम् केरल	08.29	उ.	76.59	पू.	निकारागुआ मध्य अमेरिका	12.00	उ.	86.00	पू	पर्थ आस्ट्रेलिया	32.00	उ.	115.50	पू.	प्रिटोरिया द.अफ्रीका	25.45	उ.	28.14	पू.	बसरा ईराक	30.28	उ.	47.51	पू.	बेरुत लैबनान	33.50	उ.	35.25	पू.	मक्का साउदी अरब	21.25	उ.	39.54	पू.

मजार-ए-शरीफ अफगा.	36.41 उ.	67.00 पू.	मिदनापुर पं. बंगाल	22.25 उ.	87.21 पू.	मोरवी गुजरात	22.49 उ.	70.54 पू.	रुआ फ्रांस	49.30 उ.	01.00 पू.	लोयांग चीन	34.40 उ.	112.28 पू.	शान राज्य बर्मा	22.30 उ.	98.00 पू.	सिसिनेटी यूएसए	39.06 उ.	84.31 प.
मडकेरी कर्नाटक	12.26 उ.	75.47 पू.	मिनिकाय द्वी. भारत	08.10 उ.	73.00 पू.	मोमलीन बर्मा	16.30 उ.	97.38 पू.	रुबे फ्रांस	50.42 उ.	03.11 पू.	लुहासा चीन तिब्बत	29.40 उ.	91.05 पू.	शांटुंग चीन	36.00 उ.	118.00 पू.	सिरोही राजस्थान	24.53 उ.	72.54 पू.
मतारा श्रीलंका	05.57 उ.	80.33 पू.	मिंडोरी द्वी.फिलिपाइन्स	13.00 उ.	121.00 पू.	मोसल ईराक	36.50 उ.	43.05 पू.	रेसिफे ब्राजील	08.03 द.	34.54 प.	बेगुसराय बिहार	25.25 उ.	86.08 पू.	शिकागो यूएसए	42.00 उ.	87.40 प.	सिलगढ़ी नेपाल	29.12 उ.	81.06 पू.
मताले श्रीलंका	07.28 उ.	80.37 पू.	मिस्क यूएसएस आर	53.55 उ.	27.35 पू.	म्यूनिख एफआर जी	48.08 उ.	11.35 पू.	रोडस द्वी.एजियन सागर	36.30 उ.	28.20 पू.	वर्धा महाराष्ट्र	20.04 उ.	78.39 पू.	शिकोकू द्वी. जापान	33.45 उ.	133.30 पू.	सिलहट बाग्लादेश	24.53 उ.	91.55 पू.
मथुरा उत्तरप्रदेश	27.28 उ.	77.41 पू.	मिबू बर्मा	20.12 उ.	94.59 पू.	यनाम आध्रप्रदेश	16.44 उ.	82.16 पू.	रोम इटली	41.53 उ.	12.28 पू.	वमटि यूएसए	43.40 उ.	72.50 पू.	शिमला हिमाचलप्रदेश	31.06 उ.	77.13 पू.	सिवनी मध्यप्रदेश	22.06 उ.	79.35 प.
मदीना साउदी अरब	24.33 उ.	39.53 पू.	मिर्जापुर उत्तरप्रदेश	25.10 उ.	82.37 पू.	यमन एशिया	16.00 उ.	44.00 पू.	रोपड़ पंजाब	41.55 उ.	76.32 पू.	वल्साड गुजरात	20.36 उ.	72.59 पू.	शिमोगा कर्नाटक	13.56 उ.	75.38 पू.	सिवान बिहार	26.12 उ.	84.13 पू.
मदुरै तमिलनाडु	09.58 उ.	78.10 पू.	मिलवाकी यूएस ए	43.09 उ.	87.55 पू.	यलोनाइफ	62.30 उ.	114.29 पू.	रोहतक हरियाणा	28.94 उ.	76.38 पू.	वार्सा पौलैंड	52.12 द.	21.00 पू.	शियान चीन	34.12 उ.	108.54 पू.	सिसली इटली	37.35 उ.	14.10 पू.
मद्रास तमिलनाडु	13.04 उ.	80.17 पू.	मिलान इटली	45.27 उ.	09.10 पू.	यवतमाल महाराष्ट्र	20.23 उ.	78.11 पू.	रोहरी पाक.	27.41 उ.	68.57 पू.	वर्साई फ्रांस	48.50 उ.	02.10 पू.	शिराज ईरान	29.38 उ.	52.32 पू.	सिहोर मध्यप्रदेश	23.12 उ.	77.00 पू.
मधुबनी बिहार	26.20 उ.	86.08 पू.	मिशिगन झी यूएसए	44.00 उ.	87.00 प.	याकुटस्क यू.एस,आर	62.05 उ.	129.40 पू.	लक्समबर्ग यूरोप	49.38 उ.	06.10 पू.	वानकनेर गुजरात	22.33 उ.	71.00 पू.	शिलांग मेघालय	25.34 उ.	91.56 पू.	सीकर राज.	27.36 उ.	75.15 पू.
मनमाड महाराष्ट्र	20.15 उ.	74.20 पू.	मुकडेन/ शेनयंग मंचूरिया	41.51 उ.	123.25 पू.	यारकंद चीन	38.24 उ.	77.15 पू.	लखनऊ उत्तरप्रदेश	26.55 उ.	80.59 पू.	वारंगल आ.प्रदेश	17.58 उ.	79.40 पू.	शिवालिक प.मा.उ.प्र.	30.00 उ.	78.00 पू.	सीतापुर मध्यप्रदेश	27.32 उ.	80.43 प.
मन्नार की खाड़ी श्रीलंका	08.59 उ.	79.55 पू.	मुजफ्फरपुर बिहार	26.07 उ.	85.27 पू.	यार्क यू.के.	53.57 उ.	01.05 पू.	लंदन यू.के.	51.30 उ.	00.05 प.	वाराणसी उत्तरप्रदेश	25.20 उ.	83.00 पू.	शेफील्ड यू.के.	53.22 उ.	01.30 प.	सुरिनाम् द.अमेरिका	05.00 उ.	55.00 प.
मन्नारगुड़ी तमिलनाडु	10.40 उ.	79.29 पू.	मुजफ्फर नगर उत्तरप्रदेश	29.28 उ.	77.44 पू.	यूकोन अलास्का	63.00 उ.	135.00 प.	लड़नडेरी यू.के.	55.00 उ.	07.20 प.	वालपेरजो चिली	33.02 उ.	71.40 पू.	शेटलैंड द्वी.यू.के.	60.30 उ.	01.00 प.	सुरेन्द्रनगर गुजरात	22.43 उ.	71.43 पू.
मर्गुई द्वी.सं. बर्मा	12.32 उ.	98.07 पू.	मुजफ्फराबाद ज.और क.	34.24 उ.	73.22 पू.	योकोहामा जापान	35.25 उ.	139.36 पू.	लापाँज बोलिविया	16.31 द.	67.58 प.	वाल्याडोलिढ स्पेन	41.39 उ.	04.44 पू.	शेरबूर फ्रांस	49.40 उ.	01.40 पू.	सुंदरगढ उडीसा	22.06 उ.	84.00 पू.
मर्त्तबान की खाडी बर्मा	16.30 उ.	97.40 पू.	मुरैना मध्यप्रदेश	26.30 उ.	78.09 पू.	रकयविक आइसलैंड	64.00 उ.	21.30 प.	लक्षद्वीप हिन्दमहासागर	10.00 उ.	73.00 पू.	वाशिंगटन यूएसए	38.55 उ.	77.04 पू.	शोलापुर महाराष्ट्र	17.40 द.	75.56 पू.	सूरत गुजरात	21.12 उ.	72.52 पू.
मंगलाबांध पाक.	33.09 उ.	73.44 पू.	मुर्शिदाबाद पं.बंगाल	24.11 उ.	88.19 पू.	रंगून वर्मा	16.45 उ.	96.13 पू.	लाओसा एशिया	19.00 उ.	104.00 पू.	ब्लाडीवास्टक यूएसएसआर	43.10 उ.	131.05 पू.	श्रीकाकुलम् आंध्रप्रदेश	18.17 उ.	83.57 पू.	सेतुबंध श्रीलंका	09.05 उ.	79.35 पू.
मंगलौर कर्नाटक	12.52 उ.	74.53 पू.	मुलैतिबु श्रीलंका	09.16 उ.	80.48 पू.	रतलाम मध्यप्रदेश	23.31 उ.	75.07 पू.	लामडिंग असम	25.46 उ.	93.10 पू.	वाल्वोग्राड यूएसएसआर	48.47 उ.	44.25 पू.	श्रीनगर ज.और क.	34.06 उ.	74.51 पू.	से लुई यूएसआर	38.39 उ.	90.13 पू.
मंडी हिमाचलप्रदेश	31.43 उ.	76.58 पू.	मुलतान पाक.	30.12 उ.	71.31 पू.	रत्नगिरि महाराष्ट्र	17.08 उ.	73.19 पू.	लायलपुर पाक.	31.44 उ.	73.05 पू.	विएनटिएन लाओस	17.59 उ.	102.38 पू.	श्रीरंगपट्टम् कर्नाटक	12.26 उ.	76.43 पू.	सेलम तमिलनाडु	11.39 उ.	78.12 प.
मंदसौर मध्य प्रदेश	24.03 उ.	75.08 पू.	मेकाओ चीन	22.13 उ.	113.33 पू.	रत्नपुरम् श्रीलंका	06.42 उ.	80.24 पू.	लाहौर पाक.	31.37 उ.	74.26 पू.	विक्टोरिया द्वी.कैनेडा	71.00 उ.	112.00 पू.	सकालिन यू.एसएसआर	50.00 उ.	143.00 पू.	सेल्वाडोर ब्राजील	12.59 उ.	38.31 प.
मनीला फिलिपाइन्स	14.30 उ.	121.30 पू.	मैड्रिड स्पेन	40.24 उ.	03.42 पू.	राउरकेला उड़ीसा	22.25 उ.	85.00 पू.	लास एंजलिस यूएसए	34.03 उ.	118.17 प.	विजयनगरम् आंध्रप्रदेश	18.07 उ.	83.27 पू.	सतारा महाराष्ट्र	17.42 उ.	74.02 पू.	सेवर्न न. यू.के.	51.40 उ.	02.40 पू.
मलक्का द्वी.इंडोनेशिया	02.00 द.	128.00 पू.	मेदक आध्रप्रदेश	18.03 उ.	78.18 पू.	रांची बिहार	23.23 उ.	85.23 पू.	लिचटेनस्टीन मध्ययूरोप	47.10 उ.	09.50 पू.	विजयवाड़ा आंध्रपदेश	16.31 उ.	80.39 पू.	सदिया असम	27.50 उ.	95.42 पू.	सेवाय फ्रांस	45.40 उ.	06.10 पू.
मलेरकोटला पंजाब	30.31 उ.	75.59 पू.	मेदान इंडोनेशिया	03.35 उ.	98.40 पू.	राजकोट गुजरात	22.18 उ.	70.56 पू.	लिब्रेविल गैबान	00.26 उ.	09.25 पू.	विदिशा मध्यप्रदेश	23.32 उ.	77.51 पू.	समरकंद यूएसएसआर	19.40 उ.	67.05 पू.	सेगाँन द.वियतनाम	10.49 उ.	106.41 प.
मशद इरान	36.16 उ.	59.36 पू.	मनहाईम एफ आर जी	49.29 उ.	08.28 पू.	राजपुरा पंजाब	30.29 उ.	76.35 पू.	लिस्बन पुर्तगाल	38.44 उ.	09.09 पू.	विनिपेग कैनेड़ा	52.00 उ.	97.00 प.	समस्तीपुर बिहार	25.55 उ.	85.50 पू.	सेन्टियागो चिली	33.27 द.	70.40 पू.
मसूरी उत्तरप्रदेश	30.27 उ.	78.06 पू.	मेरठ उत्तर प्रदेश	29.01 उ.	77.45 पू.	राजमुन्द्री आ.प्र.	17.00 उ.	81.48 पू.	लिवरफूल यू.के.	53.24 उ.	02.58 प.	वियान आस्ट्रिया	48.12 द.	16.22 पू.	संबलपुर उड़ीसा	21.28 उ.	84.01 पू.	सोफिया बलगेरिया	42.40 उ.	23.20 पू.
मसूलीपटनम् आन्ध्रप्रदेश	16.09 उ.	81.12 पू.	मेलबोर्न आस्ट्रेलिया	37.50 द.	144.59 पू.	राजशाही बांग्लादेश	24.22 उ.	88.39 पू.	लीड्स यू.के.	53.48 उ.	01.30 प.	विरमगांव गुजरात	23.08 उ.	72.07 पू.	सवाई माधोपुर राज.	25.58 उ.	76.30 पू.	सोमनाथ गुजरात	21.04 उ.	70.26 पू.
मस्कत ओमान	23.37 उ.	58.36 पू.	मेहसाना गुजरात	23.42 उ.	72.37 पू.	रानीखेत उत्तरप्रदेश	29.40 उ.	79.33 पू.	लीपजिंग	51.20 उ.	12.23 पू.	विशाखापटनम् आं.प्र.	17.42 उ.	83.20 पू.	सहरसा बिहार	25.55 उ.	86.35 पू.	सोनीपत हरियाणा	28.59 उ.	77.02 पू.
मस्सावा इथोपिया	15.36 उ.	39.28 पू.	मैगडीबर्ग जी डी आर	52.08 उ.	11.38 पू.	रामनाथ पुरम् तमिलनाडु	09.22 उ.	78.52 पू.	लीमा पीरु	12.02 उ.	77.02 प.	वीरावल गुजरात	20.53 उ.	70.26 पू.	सहारनपुर उत्तर प्रदेश	29.58 उ.	77.23 पू.	सोलोमनद्वी.प्रशांत महासागर	08.00 उ.	158.00 पू.
महबूब नगर आ.प्र.	16.43 उ.	77.58 पू.	मैगनिटोगर्स्क यूएसएसआर	53.30 उ.	59.00 पू.	रामेश्वरम् तमिलनाडु	09.17 उ.	79.22 पू.	लुआंग प्रबंग लाओसा	19.55 उ.	102.05 पू.	बीसवाडन एफआर जी	50.00 उ.	08.14 पू.	साउथैम्पटन यू.के.	50.54 उ.	01.24 प.	स्ट्रासबर्ग फ्रांस	48.35 उ.	07.50 पू.
महाबलेश्वर महाराष्ट्र	17.58 उ.	73.43 पू.	मैमनलिंब बांग्लादेश	24.46 उ.	90.27 पू.	रायपुर छत्तीसगढ	21.15 उ.	81.41 पू.	लुआड़ा अंगोला	08.50 द.	13.14 पू.	वुचाउ चीन	23.30 उ.	111.05 पू.	साओपौलो ब्राजील	23.38 उ.	46.37 प.	स्टाँकहोम स्वीडेन	59.20 उ.	18.00 पू.
महुआ गुजरात	21.10 उ.	71.45 पू.	मैन द्वी. यू.के.	54.15 उ.	04.30 पू.	रायबरेली उत्तर प्रदेश	26.14 उ.	81.16 पू.	लुजान फिलिपाइन्स	16.00 उ.	121.00 पू.	वूहान चीन	30.36 उ.	114.17 पू.	सागर मध्यप्रदेश	23.50 उ.	78.50 पू.	स्विट्जबर्जन आर्कटिक महासागर	78.45 उ.	15.00 प.
महू मध्यप्रदेश	22.34 उ.	75.47 पू.	मैनचेस्टर यू.के.	53.28 उ.	02.12 पू.	रायसेन मध्यप्रदेश	23.15 उ.	77.50 पू.	लुधियाना पंजाब	30.55 उ.	75.54 पू.	वेक्सफोर्ड आयरिश प्रजा.	52.20 उ.	06.28 प.	सान फ्रांसिस्को यूएसए	37.48 उ.	122.25 प.	स्नोडन शिखर बेल्ज	53.04 उ.	04.10 पू.
माइजदी बांग्लोदेश	22.48 उ.	91.09 पू.	मेनिटोबा झी. कैनैडा	52.00 उ.	97.00 पू.	रावलपिंडी पाक	33.37 उ.	73.06 पू.	लुशुन चीन	38.40 उ.	121.15 पू.	वेटिकन सिटी यूरोप	41.54 उ.	12.27 पू.	सांगली महाराष्ट्र	16.52 उ.	74.36 पू.	स्यालकोट पाक.	32.31 उ.	76.36 पू.
मांडला मध्यप्रदेश	22.43 उ.	80.35 पू.	मैसूर कर्नाटक	12.18 उ.	80.50 पू.	रौंस्तोव यूएसएसआर	47.14 उ.	39.15 पू.	लुसाका जैबिया	15.25 द.	28.21 पू.	वेनिस इटली	45.26 उ.	12.20 पू.	सारावाक मलेशिया	02.35 उ.	113.30 पू.	स्वात पाक	35.00 उ.	72.35 प.
मांडवी गुजरात	22.51 उ.	69.32 पू.	मांटबिडियो उरुग्वाय	34.55 द.	56.11 प.	राटरडेम नेदरलैंड	51.56 उ.	04.30 पू.	लुब्लिन पोलैंड	51.15 उ.	22.34 पू.	वेंचाउ चीन	28.00 उ.	120.38 पू.	सार्डीनिया इटली	40.00 उ.	09.00 पू.	स्वान्सी बेल्ज	51.38 उ.	03.55 पू.
मारवाड़ राज.	25.43 उ.	73.45 पू.	मांट्रिआल कैनेडा	45.31 उ.	73.34 प.	रियाद साउदी अरब	24.38 उ.	46.43 पू.	लेगाँस नाइजीरिया	06.25 उ.	03.27 पू.	वेराक्रूज मैक्सिको	19.10 उ.	96.10 प.	माल्जबरी रोडेशिया	17.54 द.	31.30 पू.	स्वेज मिश्र	29.58 उ.	32.33 पू.
मार्सेल्ज फ्रांस	43.20 उ.	03.30 पू.	मापेलीये फ्रांस	43.36 उ.	03.53 पू.	रियुक्यु द्वी.स.जापान	26.00 उ.	128.00 पू.	लैग्यू डाँक फ्रांस	44.00 उ.	04.00 पू.	वेलिग्टन न्यूजीलैंड	41.16 द.	174.47 पू.	सिअटल यूएसए	47.36 उ.	122.20 प.	हजारीबाग बिहार	24.00 उ.	85.23 पू.
मालदीव हिंदमहासागर	03.15 उ.	73.00 पू.	मोकाबा बिहार	25.24 उ.	85.55 पू.	रियो डी जनेरो ब्राजील	22.54 द.	43.12 प.	लेनिनग्राड यूएसएसआर	59.57 उ.	30.20 पू.	वेलोर तमिलनाडु	12.55 उ.	79.11 पू.	सिउदाद बॉलिवर बेनेजुएला	08.08 उ.	63.57 प.	हनुमानगढ़ राज.	29.35 उ.	74.21 पू.
माल्टा यूरोप	36.00 उ.	14.30 पू.	मोगा पंजाब	30.48 उ.	75.10 पू.	रिवाड़ी हरियाणा	28.12 उ.	76.40 पू.	लेशियो बर्मा	22.58 उ.	98.51 पू.	वैंकूवर कैनेडा	49.17 उ.	123.05 प.	सिओल द.कोरिया	37.31 उ.	127.06 पू.	हनोई उ.वियतनाम	21.02 उ.	105.21 पू.
माही केरल	11.42 उ.	75.34 पू.	मोगाढ़िशु सोमालिया	02.05 उ.	45.25 पू.	रीगा यूएसएसआर	56.57 उ.	24.09 पू.	लेह जं. और क.	34.10 उ.	77.40 पू.	व्हाइट हार्स यूकोन	60.42 उ.	134.55 प.	सिकंदरिया मिश्र	31.12 उ.	29.54 पू.	हमीरपुर उत्तरप्रदेश	25.58 उ.	80.12 पू.
मॉरीशस हिंदमहासागर	20.00 द.	57.00 पू.	मोतीहारी बिहार	26.40 उ.	85.57 पू.	रीम्स फ्रांस	49.15 उ.	04.02 पू.	लैंचाउ चीन	36.02 उ.	103.50 पू.	शंवाई चीन	31.14 द.	121.28 पू.	सिडनी आस्ट्रेलिया	33.52 द.	151.12 पू.	हंबंतोता श्रीलंका	06.07 उ.	81.07 पू.
मॉस्को यूएस एस आर	55.45 उ.	37.37 पू.	मोनाको यूरोप	43.45 उ.	07.25 पू.	रीवा मध्यप्रदेश	24.31 उ.	81.19 पू.	लोनावला महाराष्ट्र	18.44 उ.	73.28 पू.	शहडोल मध्यप्रदेश	23.00 उ.	81.30 पू.	सिकियांग चीन	30.15 उ.	113.55 पू.	हरिद्वार उत्तरप्रदेश	29.58 उ.	78.13 पू.
मितकीना बर्मा	25.24 उ.	97.26 पू.	मोम्बासा कीनिया	04.00 उ.	39.40 पू.	रुड़की उत्तरप्रदेश	29.52 उ.	77.53 पू.	लोरिएंट फ्रांस	47.45 उ.	03.21 पू.	शाजापुर मध्यप्रदेश	23.26 उ.	76.18 पू.	सिंगापुर द.एशिया	01.17 उ.	103.51 पू.	हरिहर कर्नाटक	14.31 उ.	75.52 पू.

हवाई द्वी.सं.प्रशांत महा.	20.90	उ.	155.00 पू.
हड़प्पा पाक.	30.35	उ.	72.58 पू.
हार्बिन मंचूरिया	45.46	उ.	126.55 पू.
हाबड़ा पं. बंगाल	22.35	उ.	88.23 पू.
हावर फ्रांस	49.30	उ.	00.07 पू.
हासन कर्नाटक	13.00	उ.	76.10 पू.
हांगकांग चीन	22.12	उ.	114.12 पू.
हिसार हरियाणा	29.10	उ.	75.46 पू.
हीराकुडकुंड उडीसा	21.30	उ.	84.00 पू.
हुगली पं.बंगाल	22.55	उ.	88.26 पू.
हेरात अफगानिस्तान	34.20	उ.	62.07 पू.
हेलसिंकी फिनलैंड	60.09	उ.	24.57 पू.
हैंकाऊ चीन	30.35	उ.	114.20 पू.
हैग्चाउ चीन	30.16	उ.	120.08 पू.
हैफा इस्राइल	32.49	उ.	36.00 पू.
हैटी बेस्टइंजीज	19.00	उ.	72.00 पू.
हैदराबाद आंध्रप्रदेश	17.20	उ.	78.30 पू.
हैदराबाद पाक.	25.25	उ.	68.38 पू.
हैम्बर्ग एफ आर जी	53.35	उ.	10.00 पू.
होकैडो जापान	43.00	उ.	140.00 पू.
होशंगाबाद मध्यप्रदेश	22.46	उ.	77.45 पू.
होशियारपुर पंजाब	31.32	उ.	75.57 प.
ह्यूस्टन यूएसए	29.49	उ.	95.20 प.

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए व मुकद्दमा एवं राजकीय कार्यों में फतह हेतु अद्‌भुत -

श्री बगलामुखीमन्त्र प्रयोग

सिद्धेश्वर तन्त्र के अनुसार सर्पप्रथम माता बगुलामुखी का निम्नांकित रुप से ध्यान करें -

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्गरुचिं शशांकमुकुटां सत्रक्चम्पकस्रक्युताम्।
हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां सम्बिभ्रतीं भूषणै:
व्याप्तां बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।।

इस प्रकार बगलामुखी माता का ध्यान करके निम्नांकित मन्त्र का जाप विनियोग एवं अङ्गन्यासपूर्वक करें।

विनियोगार्थ मन्त्र (दायें हाथ में जल लेकर) - **ह्रीं ॐ अस्य श्री बगलामुखिमन्त्रस्य नारदऋषि:, बृहती छन्द: बगलामुखी देवता, अभीष्टसिद्धयर्थं जपे विनियोग:।**

बगलामुखी मन्त्रजाप से पूर्व अङ्गन्यास इसप्रकार करें - ॐ ह्रीं हृदयाय नम:। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।।

मन्त्र: - **ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।** इस मन्त्र को गुरुमुख से प्राप्त करें और किसी सिद्धस्थल पर गुरु की सन्निधि में इस का पुरुश्चरण करें।

विधि - पीले वस्त्र धारण करके हल्दी की गोटियों की माला बनाकर मन्त्रजाप शुभ मुहूर्त्त में प्रारम्भ करें। पूरी तरह जती-सती रहकर माता बगलामुखी की पूर्व की और मुंह करके प्रियंगु-गेंदा, पीले कनेर आदि (पीतवर्ण) पुष्पों से विधिवत् पूजा करें एवं मन्त्रजाप के बाद हवन की सामग्री में भी पीले पुष्पों का प्रयोग करें - प्रियङ्गुकुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्। मन्त्रजाप से पहले आसनशुद्धि, भूशुद्धि एवं अङ्गन्यास आदि करने चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि सम्पन्न करके मन्त्रजाप करने से सद्य: प्रत्यक्ष फलप्रद देखा गया है। इस अनुष्ठान के करने पर विरोधीपक्ष हतप्रभ हो जाता है।

स्वप्न में अभीष्ट प्रश्न के सही उत्तर जानने के लिए रुद्रमन्त्रप्रयोग

मन्त्र - ॐ नमो भगवते रुद्राय मम कर्णरन्ध्रे प्रविश्य अतीतानागतवर्तमानं सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।

विधि - इस उल्लिखित मन्त्र का दस दिनों में दस दस हजार जाप करें। अनुष्ठान पूर्ण होने पर दशांश आहुतियां देकर रुद्रदेव को प्रसन्न करें। फिर रात्रि में पवित्रावस्था में कुशासन पर बैठें एवं बायीं तरफ नीचे शयन करें। देवता आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर स्वप्न में अवश्य देंगे।

स्वप्नेश्वर मन्त्रप्रयोग - ॐ नमो सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नम:।

संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण में सदैव तत्पर

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर

परिचय - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर की स्थापना वर्ष २००२ में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में हुई थी। मध्यप्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल भाईमहावीर जी ने १६ सितम्बर २००२ ई. को इसका औपचारिक शुभारम्भ किया था। इस परिसर के विकास हेतु मध्यप्रदेश शासन ने बाग सेवनिया में १० एकड़ भूमि नि:शुल्क प्रदान की, जिस पर शैक्षणिक, प्रशासनिक, पुस्तकालय एवं प्रेक्षागार निर्माण हेतु तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय अर्जुन सिंह जी ने १९ सितम्बर २००५ ई. को शिलान्यास किया था। अब वह भवन निर्मित हो चुका है और संस्थापक प्राचार्य प्रो. आजाद मिश्र के मार्गदर्शन में परिसर की सभी शैक्षणिक गतिविधियाँ मई २०१० ई. से इस नव-निर्मित भवन में प्रारम्भ हो गई। इस परिसर में कविभास्कर छात्रावास, दाक्षी छात्रावास, अतिथिगृह एवं कर्मचारी आवास सुव्यवस्थित है। छात्रावास में संस्था एवं छात्रों के सहयोग से नियमित जलपान एवं भोजन की व्यवस्था अव्यवहित रूप से चल रही है।

पाठ्यक्रम - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के भोपाल परिसर में विभिन्न पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध विभाग संचालित हैं। शिक्षण विभाग में प्राक् शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य की कक्षाओं का अध्यापन होता है, जिनमें ज्योतिषशास्त्र, साहित्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, जैनशास्त्र, पुराणेतिहास के साथ-साथ हिन्दी, अंग्रेजी, कम्प्यूटरविज्ञान एवं पर्यावरण की शिक्षा भी दी जाती है। प्रशिक्षण विभाग में शिक्षा आचार्य (एम.एड.) शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) का पाठ्यक्रम राष्ट्रिय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) के मानकों के अनुरूप संचालित किया जाता है। शोध विभाग में ज्योतिषशास्त्र, साहित्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं संस्कृत विद्या की अन्य धाराओं में विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) उपाधि हेतु शोधछात्र अनुसंधान करते हैं। परिसर छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास हेतु यहाँ वाग्वर्धिनी सभा, शास्त्रार्थ प्रशिक्षण, शलाका एवं कण्ठपाठ, विस्तार व्याख्यानमाला, अधिराज्यीय वाक्स्पर्धा, अखिलभारतीय वाक्स्पर्धा, क्रीड़ा एवं योगासन, अखिल भारतीय युव महोत्सव, नाट्याभिनय एवं कलाएँ जैसे आयोजन होते रहते हैं। इसके अतिरिक्त परिसर में अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ भी प्रचलित है, जैसे विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ से सम्बद्ध छात्रों की प्रतिस्पर्धाएँ समय-समय पर आयोजित होती रहती है, जो छात्रों के साथ-साथ समाज के सभी वर्गो के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होती है। परिसर की कुछ मुख्य शैक्षणिक गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं-

१. भारतीय ज्योतिष परिचयपाठ्यक्रम एवं भारतीयवास्तुशास्त्रपरिचयपाठ्यक्रम -

भारतीय फलित ज्योतिष में रुचि रखने वाले साधारण शिक्षितों के लिए भारतीय ज्योतिष परिचय पाठ्यक्रम एवं भारतीय वास्तुशास्त्र परिचय पाठ्यक्रम परिसर के द्वारा संचालित हैं, जिसकी अवधि ३ महीने की होती है। इस पाठ्यक्रम में अध्ययन करके किसी भी उम्र का वयस्क व्यक्ति फलित ज्योतिष व वास्तुशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त कर सकता है। इसकी कक्षाएँ सायंकालीन होती है, जिसमें १००० रु.(एक हजार मात्र) प्रति पाठ्यक्रम पंजीकरण शुल्क देय है। समाचार पत्रों के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की सूचना प्रसारित की जाती है।

२. दूरस्थ शिक्षा - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में मुक्तस्वाध्यायपीठम् स्थापित है, जिसके अन्तर्गत परिसर में दूरस्थ शिक्षण केन्द्र संचालित है। यह केन्द्र पंजीकृत स्वाध्यायी अध्येताओं को पाठ्यसामग्री भेजता है और आवश्यकतानुसार अवकाश के दिनों में स्वाध्यायी छात्रों के लिए कक्षाओं का आयोजन भी करता है। इस प्रकार परिसर के दूर अपने गृह नगर में रहने वाले पंजीकृत स्वाध्यायी छात्र भी इस केन्द्र के माध्यम से अध्ययन करके प्राक्शास्त्री-शास्त्री-आचार्य के पाठ्यक्रमों की परीक्षा दे सकते हैं तथा उत्तीर्ण होने पर पाठ्यक्रमों का प्रमाण पत्र, उपाधि प्राप्त कर सकते हैं।

३. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण - संस्कृत भाषा, संस्कृत के काव्य एवं संस्कृत शास्त्रों को शिक्षक के बिना स्वयं पढ़ने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से संस्थान ने संस्कृत स्वाध्याय पाठ्यक्रम का विकास किया है। इनमें पाँच सत्र दीक्षाएँ हैं। प्रत्येक सत्र दीक्षा में छ: छ: माह अध्ययन करना होता है। इसकी पाठ्यपुस्तकें संस्थान परिसर से निर्धारित मूल्य में उपलब्ध हैं। स्वाध्यायी अभ्यर्थियों की आवश्यकतानुसार दीक्षा में २ बार नि:शुल्क कक्षा आयोजित की जाती है। इसकी सूचना समय-समय पर समाचार पत्रों के माध्यम से दी जाती है।

४ संस्कृत अन्तर्जाल परियोजना- परिसर में संस्कृत के प्राचीन शास्त्रों को अन्तर्जाल में संस्थापित करने हेतु संस्कृत अन्तर्जाल परियोजना प्रचलित है। इस परियोजना के अन्तर्गत परिसर के द्वारा साहित्य दर्पण ग्रन्थ का अन्तर्जाल में स्थापना हो चुकी है। पुस्तकालय की पुस्तकों को अन्तर्जाल में स्थापित किया जा रहा है। इसी प्रकार संस्कृत विद्वत्परिचायिका नाम से संस्कृत विद्वानों की पंजिका का प्रकाशन हो चुका है। जिसे अन्तर्जाल में स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है। संस्कृत के साथ बुन्देली और मालवी उपबोलियों के शब्दकोष प्रकाशित हो चुके है।

५. संङ्गोष्ठी एवं कार्यशाला- परिसर में विभिन्न शास्त्रों पर राष्ट्रिय, क्षेत्रीय शोध संङ्गोष्ठी एवं कार्य शालाओं का आयोजन होता है। शास्त्रीय ज्ञान का आदान-प्रदान शोध तथा वैदुष्य का विकास करना संङ्गोष्ठी एवं कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य होता है।

६. प्रशिक्षण- अनौपचारिक संस्कृत भाषा शिक्षण के शिक्षकों को उनके कौशल तथा पाण्डित्य में विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन होता है। संस्कृत भाषा एवं शास्त्रों के प्रति रुचि उत्पन्न कराना तथा उस दिशा में प्रावीण्य प्राप्त करवाना प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है।

७. वास्तुशास्त्र डिप्लोमा (एक वर्षीय) पाठ्यक्रम - इस वर्ष से इस परिसर में उपर्युक्त पाठ्यक्रम का अध्यापन भी प्रारम्भ हो गया है। इस पाठ्यक्रम में भी समाज के विभिन्न वर्गों के लोग अध्ययनरत हैं। इससे समाज में वास्तुविषयक ज्ञान का लाभ स्वभाविक है।